इकाई 1- बौद्धिक अक्षमता की परिभाषा, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, कारण-कारक और रोकथाम (Definition of Intellectual Disability, Historical Perspective, Etiological Factors, and Prevention)

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 बौद्धिक अक्षमता: परिचय और परिभाषा

1.4 भारत में बौद्धिक अक्षमता का औपनिवेशिक-पूर्व और औपनिवेशिक-पश्चात परिप्रेक्ष्य

1.5 भारत में बौद्धिक अक्षमता (मानसिक मंदता) का इतिहास

1.6 बौद्धिक अक्षमता के कारक- कारण

1.7 बौद्धिक अक्षमता से बचाव/ रोकथाम

1.8 सारांश

1.9 शब्दावली

1.10 अभ्यास प्रश्नो के उत्तर

1.11 संदर्भ ग्रंथ सूची

1.12 निबंधात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

जीवन के हर क्षेत्र में दृष्टिकोण की अहम भूमिका होती है। यह इकाई आपको बौद्धिक अक्षमता का ऐतिहासिक दृष्टिकोण प्रदान करती है, जिसमें भारतीय संदर्भ पर

विशेष ज़ोर दिया गया है। प्रस्तुत इकाई मैं आप बौद्धिक अक्षमता की विभिन्न परिभाषाओं ओर उनके सार के बारे में जान सकेंगे| अध्ययन के इस स्तर पर, बौद्धिक अक्षमता के उद्भव और उसके ऐतिहासिक विकास के बारे में जानना अत्यंत महत्वपूर्ण है।साथ ही बौद्धिक अक्षमता के कारण ओर कारकों ओर इसको होने से कैसे रोका जाये यह जानना भी आवश्यक है | यह इकाई आपको बौद्धिक अक्षमता से ग्रस्त व्यक्तियों की शिक्षा और पुनर्वास से जुड़ी कुछ प्रमुख विशेषताओं और ऐतिहासिक विकास के बारे में जानकारी देती है; यह जानकारी आपके विशेषज्ञता के क्षेत्र में आपके ज्ञान को समृद्ध करने में अत्यंत सहायक सिद्ध होगी।

1.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप-

- बौद्धिक अक्षमता के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य के विषय में जान सकेंगे|
- बौद्धिक अक्षमता को परिभाषित कर पाएंगे|
- बौद्धिक अक्षमता के कारण ओर कारकों के विषय में जान पाएंगे|
- बौद्धिक अक्षमता कों होने ओर बढ़ने से रोकने के विषय में जान पाएंगे|

1.3 बौद्धिक अक्षमता: परिचय और परिभाषा

बौद्धिक अक्षमता (या ID) एक ऐसा शब्द है जिसका इस्तेमाल तब किया जाता है, जब किसी व्यक्ति में सोचने-समझने की क्षमता और कौशलों में कुछ सीमाएँ होती हैं। इन कौशलों में वैचारिक, सामाजिक और व्यावहारिक कौशल शामिल हैं—जैसे कि भाषा, सामाजिक व्यवहार और अपनी देखभाल करने के कौशल। इन सीमाओं के कारण, व्यक्ति का विकास और सीखने की गति, किसी सामान्य रूप से विकसित हो रहे व्यक्ति की

तुलना में धीमी या अलग हो सकती है। बौद्धिक अक्षमता किसी भी व्यक्ति में 22 वर्ष की आयु पूरी होने से पहले, यहाँ तक कि जन्म से पहले भी हो सकती है।

बौद्धिक अक्षमता, विकास से जुड़ी सबसे आम अक्षमता है।

अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ़ इंटेलेक्चुअल एंड डेवलपमेंटल डिसेबिलिटीज़ के अनुसार, किसी व्यक्ति को बौद्धिक अक्षमता तब मानी जाती है, जब वह इन तीन मानदंडों को पूरा करता हो:

- IQ 70 से कम हो।
- अनुकूलन व्यवहार में निम्नलिखित में से किसी एक या अधिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण सीमाएँ हों: वैचारिक, सामाजिक या व्यावहारिक कौशल (ऐसे कौशल जो समुदाय में रहने, काम करने और खेलने के लिए आवश्यक होते हैं)।
- यह स्थिति 22 वर्ष की आयु से पहले ही सामने आ जाती हो।

बौद्धिक अक्षमता—जिसे पहले 'मानसिक मंदता' कहा जाता था—चोट, बीमारी या मस्तिष्क में किसी समस्या के कारण हो सकती है। कई बच्चों में, उनकी बौद्धिक अक्षमता का कारण अज्ञात होता है।

बौद्धिक अक्षमता के कुछ कारण—जैसे कि डाउन सिंड्रोम, फीटल अल्कोहल सिंड्रोम, फ्रैजाइल X सिंड्रोम, जन्मजात दोष और संक्रमण—जन्म से पहले ही हो सकते हैं। कुछ कारण बच्चे के जन्म के समय या जन्म के तुरंत बाद सामने आते हैं।

बौद्धिक अक्षमता की स्थिति का वर्णन करने में आए बदलावों को दर्शाने के लिए, यहाँ इन परिभाषाओं के विकासक्रम पर कालक्रमानुसार चर्चा की गई है। (चव्हाण और रोज़तकर, 2016)

a. अमेरिकन एसोसिएशन ऑन मेंटल रिटार्डेशन (AAMR), 1983 के अनुसार मानसिक मंदता की परिभाषा:

अमेरिकन एसोसिएशन ऑन मेंटल डेफिशिएंसी (जिसे पहले अमेरिकन एसोसिएशन ऑन मेंटल रिटार्डेशन के नाम से जाना जाता था) के अनुसार—"मानसिक मंदता का तात्पर्य सामान्य बौद्धिक कार्यप्रणाली के औसत से काफी नीचे होने से है, जिसके परिणामस्वरूप अनुकूलन कार्यप्रणाली में भी साथ-साथ कमियाँ (deficits) उत्पन्न होती हैं या उससे जुड़ी होती हैं।"

b. विकलांग व्यक्ति अधिनियम 1995 के अनुसार मानसिक मंदता की परिभाषा:

मानसिक मंदता का अर्थ है किसी व्यक्ति के विकास की अवरुद्ध या अपूर्ण अवस्था, जिसकी मुख्य विशेषता 18 वर्ष की आयु से पहले प्रकट होने वाली बौद्धिक क्षमता की सामान्य से कम स्थिति है।

c. अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ़ मेंटल रिटार्डेशन (AAMR) - 1992 के अनुसार मानसिक मंदता की परिभाषा:

मानसिक मंदता का तात्पर्य औसत से काफी कम बौद्धिक कार्यक्षमता से है, जो साथ ही या निम्नलिखित में से एक या अधिक लागू अनुकूलन कौशल क्षेत्रों के साथ मौजूद होती है:

- संचार
- स्वयं की देखभाल
- घरेलू जीवन
- सामाजिक कौशल
- सामुदायिक उपयोग
- आत्म-निर्देशन
- स्वास्थ्य और सुरक्षा
- कार्यात्मक शिक्षा
- मनोरंजन
- कार्य

d. अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ़ मेंटल रिटार्डेशन (AAMR) – 2002 के अनुसार मानसिक मंदता की परिभाषा:

परिभाषा के अनुसार, "मानसिक मंदता एक ऐसी विकलांगता है जिसकी विशेषता बौद्धिक कार्यप्रणाली और अनुकूलन व्यवहार, दोनों में महत्वपूर्ण सीमाएँ होना है; ये सीमाएँ वैचारिक, सामाजिक और व्यावहारिक अनुकूलन कौशलों में परिलक्षित होती हैं, और यह विकलांगता 18 वर्ष की आयु से पहले उत्पन्न होती है।"

मानसिक मंदता की पूरी और सही समझ का मतलब है कि यह कार्य-प्रणाली की एक खास स्थिति है, जो बचपन में शुरू होती है, जिसके कई पहलू होते हैं और जिस पर व्यक्तिगत सहायता का सकारात्मक असर पड़ता है। कार्य-प्रणाली के एक मॉडल के तौर पर, इसमें वह संदर्भ और माहौल शामिल होता है जिसमें व्यक्ति काम करता है, और एक इकोलॉजिकल दृष्टिकोण भी शामिल होता है जो व्यक्ति और उसके माहौल के बीच के तालमेल को दिखाता है। इस तालमेल के नतीजों का संबंध आज़ादी, रिश्तों, सामाजिक योगदान, स्कूल और समुदाय में भागीदारी, और व्यक्तिगत भलाई से होता है।

e. अमेरिकन एसोसिएशन ऑन इंटेलेक्चुअल एंड डेवलपमेंटल डिसेबिलिटीज (AAIDD), 2010 के अनुसार मानसिक मंदता की परिभाषा: वर्तमान में, 'मानसिक मंदता' (mental retardation) के स्थान पर 'ID' शब्द का प्रयोग किया जा रहा है। शब्दावली में इस बदलाव को 'अमेरिकन एसोसिएशन ऑन इंटेलेक्चुअल एंड डेवलपमेंटल डिसेबिलिटीज' (AAIDD) जैसे संगठनों का समर्थन प्राप्त है। AAIDD (2010) के अनुसार, 'बौद्धिक अक्षमता' (Intellectual Disability) को निम्नलिखित प्रकार से परिभाषित और स्पष्ट किया गया है:

बौद्धिक अक्षमता एक ऐसी अक्षमता है, जिसकी विशेषता बौद्धिक कार्यप्रणाली और अनुकूलन व्यवहार—दोनों में ही महत्वपूर्ण सीमाओं का होना है; इसके अंतर्गत दैनिक जीवन के अनेक सामाजिक और व्यावहारिक कौशल शामिल होते हैं। इस अक्षमता की शुरुआत 18 वर्ष की आयु से पूर्व ही हो जाती है।

f. Rights of Persons with Disabilities (RPwD) Act, 2016 के अनुसार परिभाषा: बौद्धिक अक्षमता एक ऐसी स्थिति है, जिसकी पहचान बौद्धिक कार्यप्रणाली (तर्क-वितर्क, सीखना, समस्या-समाधान) और अनुकूलन व्यवहार जिसमें रोज़मर्रा के सामाजिक और व्यावहारिक कौशलों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है दोनों में महत्वपूर्ण सीमाओं से होती है, जिसमें निम्नलिखित शामिल हैं—

(a) "विशिष्ट अधिगम अक्षमताएँ" का अर्थ है स्थितियों का एक विषम समूह, जिसमें बोली जाने वाली या लिखी जाने वाली भाषा को संसाधित करने में कमी होती है; यह कमी समझने, बोलने, पढ़ने, लिखने, वर्तनी करने या गणितीय गणनाएँ करने में कठिनाई के रूप में प्रकट हो सकती है, और इसमें प्रत्यक्षात्मक अक्षमताएँ, डिस्लेक्सिया, डिस्ग्राफिया, डिस्केलकुलिया, डिस्प्रैक्सिया तथा विकासात्मक अफेज़िया जैसी स्थितियाँ शामिल हैं;

(b) "ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर" का अर्थ है एक न्यूरो-डेवलपमेंटल स्थिति जो आमतौर पर जीवन के पहले तीन वर्षों में दिखाई देती है और जो किसी व्यक्ति की संवाद करने, रिश्तों को समझने और दूसरों से जुड़ने की क्षमता को काफ़ी हद तक प्रभावित करती है, और जो अक्सर असामान्य या रूढ़िवादी रीतियों या व्यवहारों से जुड़ी होती है। (RPWD अधिनियम, 2016 की राजपत्र अधिसूचना)

g) Draft ICD-11 के अनुसार परिभाषा: 'इंटरनेशनल क्लासिफिकेशन ऑफ़ डिज़ीज़' (ICD-11) के 11वें संशोधन में, "मेंटल रिटार्डेशन" शब्द को बदलकर "डिसऑर्डर्स ऑफ़ इंटेलेक्चुअल डेवलपमेंट" (DID) करने का प्रस्ताव दिया गया है। ICD-11, ID को केवल एक विकलांगता मानने के बजाय, एक स्वास्थ्य स्थिति या विकार के रूप में देखता है।

यह एक संतुलित दृष्टिकोण प्रदान करता है, जिसमें ID को ICD के अंतर्गत एक विकार के रूप में, और एक ऐसी स्थिति के रूप में देखा जाता है जो विकलांगता की ओर ले जाती

है—जिसका मूल्यांकन 'इंटरनेशनल क्लासिफिकेशन ऑफ़ फंक्शनिंग, डिसेबिलिटी एंड हेल्थ' (ICF) के तहत किया जा सकता है (गिरिमाजी और प्रदीप, 2018)।

1.4 भारत में बौद्धिक अक्षमता का औपनिवेशिक-पूर्व और औपनिवेशिक-पश्चात परिप्रेक्ष्य

औपनिवेशिक काल से पहले का भारत: ऐतिहासिक रूप से, अलग-अलग समय अवधियों में और भारत में औपनिवेशिक शासन के आगमन तक, जिसमें मुस्लिम राजाओं का शासन भी शामिल है, शासकों ने खुद को रक्षक के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने बेसहारा और दिव्यांग व्यक्तियों को भोजन, कपड़े और देखभाल प्रदान करने के लिए दान-गृह (चैरिटी होम्स) स्थापित किए। उस समय की स्थानीय निर्वाचित संस्थाओं, यानी पंचायती व्यवस्था के माध्यम से शासन करने वाले समुदाय ने, दिव्यांग व्यक्तियों के लिए सेवाओं के प्रावधान हेतु पर्याप्त डेटा एकत्र किया; हालाँकि, यह व्यवस्था दान की भावना पर आधारित थी। भारत में औपनिवेशिक शासन की स्थापना के साथ ही, पश्चिमी प्रभाव के कारण दिव्यांग व्यक्तियों को मिलने वाली देखभाल और प्रबंधन के प्रकार में बदलाव स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगे। स्वतंत्रता-पूर्व काल – भारत में बदलती जीवन-शैलियाँ: शहरी जीवन के आगमन के साथ-साथ दिव्यांग व्यक्तियों के प्रति लोगों के दृष्टिकोण में भी बदलाव आए। प्रशासनिक अधिकारियों ने दिव्यांग व्यक्तियों के लिए एक औपचारिक शिक्षा प्रणाली प्रदान करने में रुचि दिखाना शुरू कर दिया, विशेष रूप से उन परिवारों के लिए जो शहरों में आकर बस गए थे। मानसिक मंदता से ग्रस्त व्यक्तियों की जीवन-शैली में भी बदलाव देखे गए; वे उन 'सामुदायिक समावेशी परिवेशों' (community inclusive settings) से निकलकर—जहाँ परिवार ही उनकी देखभाल करते थे—उन 'पागलखानों' (asylums) में चले गए, जिनका संचालन सरकारी या गैर-सरकारी

संस्थाओं द्वारा किया जाता था (जैसे: चेन्नई, जो उस समय मद्रास कहलाता था, का 'लुनैटिक असाइलम', 1841)। मद्रास लुनैटिक असाइलम—जिसका नाम बाद में बदलकर 'इंस्टीट्यूट ऑफ़ मेंटल हेल्थ' कर दिया गया—ही वह स्थान था जहाँ मानसिक बीमारी और मानसिक मंदता से ग्रस्त व्यक्तियों को अलग-अलग रखा गया और उन्हें उचित उपचार प्रदान किया गया। उन बच्चों के लिए विशेष विद्यालयों की शुरुआत की गई, जो मुख्यधारा के सामान्य विद्यालयों की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने में असमर्थ थे (जैसे: कर्सियांग, 1918; त्रावणकोर, 1931; चेन्नई, 1938)। मानसिक मंदता से ग्रस्त व्यक्तियों के लिए पहला आवासीय गृह मुंबई (जो उस समय बॉम्बे कहलाता था) में स्थापित किया गया (चिल्ड्रन्स एड सोसाइटी, मानखुर्द, 1941); इसके बाद, वर्ष 1944 में एक विशेष विद्यालय की भी स्थापना की गई। तत्पश्चात्, भारत के अन्य हिस्सों में भी ऐसे 11 और केंद्र स्थापित किए गए।

स्वतंत्रता के बाद का भारत – वर्तमान परिदृश्य: विशेष विद्यालयों की स्थापना। भारत के संविधान (1950) के अनुच्छेद 41 में, इसके एक खंड के अंतर्गत "14 वर्ष तक की आयु के सभी बच्चों के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार" शामिल किया गया था। मानसिक मंदता से ग्रस्त व्यक्तियों के लिए और भी कई विद्यालय स्थापित किए गए, जिनमें मुंबई में स्थापित एक एकीकृत विद्यालय (सुशीला बेन, 1955) भी शामिल था। बच्चों की मुख्यधारा की शिक्षा से संबंधित इस अनिवार्य प्रावधान के बावजूद, माता-पिता की मांगों को पूरा करने के प्रयास में, गैर-सरकारी संगठनों (NGOs) द्वारा अधिकाधिक संख्या में विशेष विद्यालयों की भी स्थापना की जा रही थी। विशेष विद्यालय: स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से देश में विशेष विद्यालयों की स्थापना का विवरण नीचे दिया गया है:

Year	Number of Special school for Children with IDD (MR)

1950	10
1960	39
1970	120
1980	290
1990	1100
2010	More than 3000

भारतीय शिक्षा आयोग, 1964-66: भारतीय शिक्षा आयोग, 1964-66 ने उस समय पूरे देश में मानसिक मंदता से पीड़ित व्यक्तियों के लिए केवल 27 स्कूलों की मौजूदगी का स्पष्ट उल्लेख किया था। 1953 में, मुंबई में श्रीमती वकील द्वारा मानसिक मंदता से पीड़ित व्यक्तियों को पढ़ाने के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षित करने का कार्य शुरू किया गया। 1971 में, चेन्नई के 'बाला विहार ट्रेनिंग स्कूल' में श्रीमती एम. क्लबवाला जाधव द्वारा मानसिक मंदता से पीड़ित व्यक्तियों को प्रशिक्षित करने हेतु विशेष शिक्षा की शुरुआत की गई। उसी वर्ष, मुंबई में 'दिलखुश स्पेशल स्कूल' की स्थापना की गई, जिसके साथ ही विशेष शिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों का भी शुभारंभ हुआ।

देहरादून में स्थित 'शार्प मेमोरियल स्कूल फॉर द ब्लाइंड' को उत्तराखंड के सबसे शुरुआती, और शायद पहले, विशेष स्कूलों में से एक माना जाता है। 1887 में अमृतसर में स्थापित इस स्कूल को, दृष्टिबाधित बच्चों की सेवा करने के उद्देश्य से 1903 में देहरादून स्थानांतरित कर दिया गया था। यह स्कूल व्यावसायिक प्रशिक्षण, संगीत और शैक्षणिक शिक्षा प्रदान करता है, और दृष्टिबाधित तथा सामान्य दृष्टि वाले—दोनों तरह के विद्यार्थियों को सेवाएँ देता है।ज्योति स्पेशल स्कूल की स्थापना 1993 में 'श्री भरत मंदिर

स्कूल सोसाइटी' द्वारा, उत्तराखंड के मानसिक रूप से दिव्यांग तथा मूक-बधिर बच्चों को प्रशिक्षित करने और उनका पुनर्वास करने के उद्देश्य से की गई थी। ज्योति इस क्षेत्र के मानसिक रूप से दिव्यांग तथा मूक-बधिर बच्चों को विशेष शिक्षा प्रदान करने वाला एक विशेष विद्यालय है।

1.5 भारत में बौद्धिक अक्षमता (मानसिक मंदता) का इतिहास (History of Mental retardation in India)

रामायण काल (संभवतः 5000 ईसा पूर्व के आसपास) में ही मानसिक मंदता का उल्लेख मिलता है। यह दर्ज है कि रानी कैकेयी की दासी मंथरा मंदबुद्धि थी, और इसलिए उसे आसानी से मूर्ख बनाया जा सकता था। मानसिक समस्याओं की अवधारणा का उल्लेख सबसे पहले अथर्ववेद में किया गया था। दर्शनशास्त्र की एक कहीं अधिक प्राचीन प्रणाली, सांख्य में, विभिन्न प्रकार की बौद्धिक अक्षमताओं के बारे में एक कथन मिलता है।

गर्भ उपनिषद (लगभग 1000 ईसा पूर्व)—जो कि भ्रूण-विज्ञान पर आधारित एक ग्रंथ है—यह सुझाव देता है कि जिन माता-पिता का मन अशांत होता है, उनके बच्चे दोषपूर्ण पैदा होते हैं।

विभिन्न प्रकार के विचित्र व्यवहारों के बीच अंतर-निदान करना हमेशा से ही कठिन रहा है; किंतु मानसिक मंदता के लिए एक अधिक सहजता से पहचाने जाने योग्य —'बच्चों जैसा मन' (children mind) — का मॉडल उपनिषदों की एक पहेली में मिलता है, जिनका संकलन संभवतः 500 ईसा पूर्व में हुआ था।

प्राचीन भारतीय साहित्य के गहन अध्ययन से यह पता चलता है कि उसमें मानसिक मंदता से ग्रस्त व्यक्तियों के कुछ संदर्भ मिलते हैं। पतंजलि से जुड़ी पौराणिक कथाओं में हम पढ़ते हैं कि पतंजलि को गौड़पथग को शिक्षा देनी पड़ी थी, जो कि एक मंदबुद्धि व्यक्ति था।

पतंजलि योग सूत्र योग को एक चिकित्सा पद्धति के रूप में प्रस्तुत करते हैं। इन सूत्रों का ध्यानपूर्वक अध्ययन करने पर यह पता चलता है कि इस चिकित्सा के लिए मानसिक मंदता से ग्रस्त व्यक्तियों को भी ध्यान में रखा गया है।

महान चिकित्सक चरक ने मानसिक मंदता के विभिन्न कारण बताए हैं, तथा इसके विभिन्न प्रकारों और वर्गीकरण पर चर्चा की है।

मानसिक मंदता से ग्रस्त व्यक्तियों का स्पष्ट उल्लेख संगम साहित्य (200 ईसा पूर्व - 200 ईस्वी) में एरायनार और अव्वैयार द्वारा, तथा हाल ही में तिरुवल्लुवर द्वारा किया गया है।

राजा अमरशक्ति के तीन पुत्र थे—वसुशक्ति, उग्रशक्ति और अनेकशक्ति—जो 'महामूर्ख' या 'परम जड़बुद्धि' थे। इसी मूर्खता के कारण, उनके पिता के दरबारी विष्णु शर्मा ने ईसा पूर्व पहली शताब्दी के आसपास, दुनिया का पहला विशेष शिक्षा ग्रंथ—'पंचतंत्र'—रचा।

चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में, कौटिल्य ने दिव्यांग व्यक्तियों का अपमान करने वाले शब्दों के प्रयोग पर प्रतिबंध लगा दिया था। उन्होंने अपने जासूसी तंत्र में अनेक दिव्यांग व्यक्तियों को नियुक्त किया था।

अर्थशास्त्र में 'मठों' में दिव्यांग लोगों को दिए जाने वाले उपचार और देखभाल का उल्लेख मिलता है। सम्राट अशोक के शासनकाल के दौरान, पाटलिपुत्र के अस्पतालों में उनका इलाज किया जाता था। चौथी शताब्दी तक, आज के श्रीलंका में दिव्यांग लोगों के लिए सिंहली आश्रय-स्थल स्थापित किए जा चुके थे।

उत्तरी भारत में विशेष शिक्षा की शुरुआत 1826 में हुई, जब राजा काली शंकर घोषाल ने बनारस में अपना 'ब्लाइंड असाइलम' (नेत्रहीनों के लिए आश्रम) खोला। मूक-बधिरों के लिए पहली सुविधा भी उसी स्थान पर 1855 में शुरू की गई।

1918 में, बंगाल के कर्सियांग में एक स्कूल खोला गया, जिसका उद्देश्य 'उन बच्चों को प्रशिक्षित करना था, जो शारीरिक और मानसिक कमियों के कारण सामान्य स्कूलों में दी

जाने वाली शिक्षा से लाभ उठाने में असमर्थ थे'। इसी तरह के कार्य 1931 में त्रावणकोर में और 1936 में चेन्नई में शुरू हुए।

मद्रास के सरकारी मानसिक अस्पताल ने 1939 में मानसिक रूप से मंद बच्चों के लिए एक स्कूल शुरू किया।

मानसिक रूप से मंद बच्चों के लिए पहला घर बॉम्बे (1941) में 'चिल्ड्रन्स एड सोसाइटी' द्वारा खोला गया।

श्रीमती वकील ने 1944 में बॉम्बे में एक और स्कूल शुरू किया। पचास के दशक में, देश के विभिन्न हिस्सों में ग्यारह और केंद्र शुरू किए गए।

1954 में, श्री श्रीनिवासन ने बॉम्बे के अंधेरी में एक सामान्य स्कूल में पहली विशेष कक्षा शुरू की।

प्रसार

भारत में बौद्धिक अक्षमताओं (ID) का प्रसार ठीक से ज्ञात नहीं है। भारत में बच्चों की आबादी दुनिया में सबसे ज़्यादा है, जिन्हें विकासात्मक अक्षमताओं का अधिक जोखिम है। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन (National Sample Survey Organization) की रिपोर्ट (2002) में प्रकाशित विकलांगता डेटा के अनुसार, भारत में ID का प्रसार 10.5/1000 है। शहरी आबादी में इसकी दर (11/1000) ग्रामीण आबादी की तुलना में थोड़ी अधिक है।

जनगणना 2011 के अनुसार, भारत में 20% दिव्यांग व्यक्तियों को चलने-फिरने में दिक्कत है, 19% को देखने में दिक्कत है, और अन्य 19% को सुनने में दिक्कत है। 8% लोगों में एक से ज़्यादा तरह की दिव्यांगताएँ हैं। दिव्यांग पुरुषों में से 22% को चलने-फिरने में दिक्कत है, 18% को देखने या सुनने में दिक्कत है, जबकि 8% लोग एक से ज़्यादा तरह की दिव्यांगताओं से पीड़ित हैं। दिव्यांग महिलाओं के मामले में, 20% को देखने या सुनने में दिक्कत है, 18% को चलने-फिरने में दिक्कत है, और 8% लोगों में एक से ज़्यादा तरह की दिव्यांगताएँ हैं।

2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में दिव्यांग लोगों में से 20.3% को चलने-फिरने में दिक्कत है, 18.9% को सुनने में दिक्कत है, और 18.8% को देखने में दिक्कत है। 2011 की जनगणना में पहली बार मानसिक दिव्यांगता से जुड़ा डेटा भी इकट्ठा किया गया, और पाया गया कि भारत के दिव्यांग लोगों में से 5.6% इसी श्रेणी में आते हैं।

आम आबादी में लगभग 2-3% लोग इंटेलेक्चुअल डिसेबिलिटी से परेशान हैं। इससे परेशान 75 से 90 परसेंट लोगों में हल्की इंटेलेक्चुअल डिसेबिलिटी होती है। लगभग एक चौथाई मामले जेनेटिक डिसऑर्डर की वजह से होते हैं और लगभग 5% मामले व्यक्ति के माता-पिता से विरासत में मिलते हैं। 2013 तक, अनजान वजहों से लगभग 95 मिलियन लोग परेशान हैं। (विकिपीडिया, 2019)

1.5.1 रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये-

1. रानी कैकेयी की दासी मंथरा ..... थी|

2. उत्तरी भारत में विशेष शिक्षा की शुरुआत ..... में हुई

1.6 बौद्धिक अक्षमता (ID) के कारक- कारण (Etiological factors of Intellectual Disability)

हम जानते हैं कि मस्तिष्क मानव तंत्रिका तंत्र का केंद्र है। यह आस-पास के वातावरण से जानकारी प्राप्त करने, उसकी व्याख्या करने और आवश्यकता पड़ने पर उसे पुनः प्राप्त करने (याद करने) के लिए ज़िम्मेदार है। मस्तिष्क की इसी क्षमता के कारण हम अपने वातावरण में प्रभावी ढंग से कार्य कर पाते हैं। हालाँकि, ID (बौद्धिक अक्षमता) से पीड़ित व्यक्ति में, मस्तिष्क की क्षमताएँ सीमित और क्षीण होती हैं; ऐसा मस्तिष्क में किसी क्षति/चोट के कारण, अथवा मस्तिष्क के सीमित/अवरुद्ध/असामान्य विकास के कारण होता है।

बौद्धिक अक्षमता के अनेक कारण अज्ञात हैं, फिर भी इसके मूल कारणों को मुख्यतः आनुवंशिक असामान्यताओं और पर्यावरणीय कारकों में विभाजित किया गया है। आनुवंशिक असामान्यता एक जीन उत्परिवर्तन, जीन संख्या में भिन्नता या गुणसूत्र असामान्यता हो सकती है, जिसके कारण जन्मजात चयापचय संबंधी विकार, तंत्रिका विकास दोष और तंत्रिका अपक्षय हो सकते हैं। पर्यावरणीय कारकों में माता का विषैले/संक्रामक पदार्थों के संपर्क में आना, अनियंत्रित मातृ चिकित्सा स्थितियाँ, प्रसव संबंधी जटिलताएँ और प्रसवोत्तर आघात शामिल हैं। बौद्धिक अक्षमता का सबसे सामान्य ज्ञात, रोके जा सकने वाला या पर्यावरणीय कारण भ्रूण अल्कोहल सिंड्रोम है, सबसे सामान्य गुणसूत्र संबंधी कारण डाउन सिंड्रोम है और सबसे सामान्य आनुवंशिक कारण फ्रजाइल एक्स सिंड्रोम है।

आनुवंशिक (Genetic)

जेनेटिक असामान्यता के कारण मेटाबॉलिज़्म में जन्मजात गड़बड़ी, न्यूरोडेवलपमेंटल दोष, या न्यूरोडीजेनरेशन हो सकता है। मेटाबॉलिज़्म में जन्मजात गड़बड़ी होने पर, ज़हरीले बाय-प्रोडक्ट जमा हो जाते हैं, जिससे बौद्धिक अक्षमता और दूसरी व्यवहार संबंधी समस्याएं पैदा होती हैं। फेनिलकेटोनुरिया (PKU) मेटाबॉलिज़्म में होने वाली उन जन्मजात गड़बड़ियों में से एक है, जो लगभग 0.01% नवजात शिशुओं में पाई जाती है। PKU ज़्यादातर फेनिलएलानिन हाइड्रॉक्सिलेज दोष के कारण होता है, जो ऑटोसॉमल रिसेसिव तरीके से विरासत में मिलता है। इस दोष के कारण लिवर फेनिलएलानिन को पैरा-टायरोसिन में नहीं बदल पाता। फेनिलएलानिन का इस तरह जमा होना ही बौद्धिक अक्षमता का मुख्य कारण है। PKU से होने वाला न्यूरोलॉजिकल नुकसान ठीक नहीं हो सकता, लेकिन इसे रोका जा सकता है। इसलिए, U.S. और दूसरे देशों में नवजात शिशुओं की PKU के लिए स्क्रीनिंग करवाना ज़रूरी है। 3 साल की उम्र से पहले शुरुआती स्क्रीनिंग और उसके बाद तुरंत कम फेनिलएलानिन वाला आहार शुरू करने से बौद्धिक अक्षमता को रोका जा सकता है। हाल ही में, हाइपरफेनिलएलानिनेमिया के अलग-अलग

दुर्लभ प्रकारों के बारे में बताया गया है, जिनमें एंजाइम डाइहाइड्रोपाइरीडीन रिडक्टेस की कमी और कोफ़ैक्टर, बायोपटेरिन की कमी शामिल है।

लेश-नाइहान सिंड्रोम चयापचय (metabolism) की एक X-लिंक्ड जन्मजात त्रुटि है, जो प्यूरीन चयापचय एंजाइम की कमी के कारण होती है। यह स्थिति HGPRT (Hypoxanthine-guanine phosphor ribosyl transferase) में हुए एक म्यूटेशन (उत्परिवर्तन) के परिणामस्वरूप उत्पन्न होती है। इस म्यूटेशन के कारण यूरिक एसिड का जमाव होने लगता है, जिसके चलते व्यक्ति में अपना मुँह और उंगलियाँ काटने जैसा गंभीर आत्म-हानिकारक व्यवहार तथा बौद्धिक अक्षमता (intellectual disability) उत्पन्न हो जाती है। चयापचय की अन्य ज्ञात जन्मजात त्रुटियाँ, जिनके कारण बौद्धिक अक्षमता होती है, वे हैं: नीमैन-पिक रोग, हंटर रोग, हर्लर रोग, मेपल सिरप यूरिन रोग, हार्टनप रोग, होमोसिस्टिनुरिया और गैलेक्टोसेमिया।

फ्रैजाइल X सिंड्रोम में एक न्यूरोडेवलपमेंटल दोष पाया जाता है, जो बौद्धिक अक्षमता का एक प्रमुख आनुवंशिक कारण है। यह FMR1 (Xq27.3) जीन में एक एकल जीन म्यूटेशन के कारण होता है। ज़्यादातर मामलों में, FMR1 जीन का CGG रिपीट 200 गुना से ज़्यादा बढ़ जाता है। इस विस्तार के कारण एक फॉस्फोराइलेटेड CG पैटर्न बनता है, जिससे जीन की मिथाइलेशन इम्प्रिंटिंग हो जाती है, और इस तरह FMR1 जीन का एक्सप्रेशन (अभिव्यक्ति) शांत हो जाता है। FMR1 केंद्रीय तंत्रिका तंत्र में व्यक्त होने वाले सैकड़ों जीनों का एक ट्रांसक्रिप्शन फैक्टर है, और इसके बाधित होने से बौद्धिक अक्षमता के साथ-साथ व्यवहार संबंधी गड़बड़ी और दौरे भी पड़ते हैं। न्यूरोफाइब्रोमैटोसिस टाइप 1 में भी न्यूरोडेवलपमेंटल दोष पाया जाता है, जिसे वॉन रेकलिंगहॉसन सिंड्रोम भी कहा जाता है; यह एक ऑटोसोमल डोमिनेंट स्थिति है जो NF1 के म्यूटेशन के कारण होती है। इसकी विशिष्ट पहचान असामान्य तंत्रिका कोशिका प्रवासन है, जिसके कारण 'कैफे ऑ लेट' स्पॉट (त्वचा पर भूरे धब्बे), गति संबंधी विकार और बौद्धिक अक्षमता होती है।

न्यूरोडीजेनरेशन, जिसके कारण बौद्धिक अक्षमता उत्पन्न होती है, रेट सिंड्रोम (RS) में देखने को मिलता है। यह एक X-लिंक्ड डोमिनेंट डीजेनेरेटिव स्थिति है जो केवल महिलाओं में पाई जाती है और MeCP2 जीन में म्यूटेशन के कारण होती है। RS के मरीज़ों में, सबस्टैंशिया नाइग्रा (substantia nigra) में सेरेब्रल एट्रोफी होती है, जिसके परिणामस्वरूप डोपामिनर्जिक नाइग्रोस्ट्रिएटल पाथवे में दोष उत्पन्न हो जाते हैं; यह प्रक्रिया 6 से 18 महीने की उम्र से शुरू होती है।

IQ में बदलाव अन्य आनुवंशिक सिंड्रोम के नैदानिक लक्षणों के हिस्से के रूप में भी हो सकते हैं। कई मामलों में, बौद्धिक कमी सीमित प्रतीत होती है और यह तंत्रिका विकास के अलग-अलग चरणों में, साथ ही संज्ञानात्मक गिरावट के रूप में भी हो सकती है। उदाहरण के लिए, क्रोमोसोम 22q11.2 डिलीशन सिंड्रोम, DiGeorge सिंड्रोम, या velocardiofacial सिंड्रोम—जो मनुष्यों में पाए जाने वाले सबसे आम बहु-विकृति सिंड्रोम में से एक है—को आमतौर पर शुरुआती दौर की बौद्धिक अक्षमता के बजाय संज्ञानात्मक गिरावट के रूप में वर्णित किया जाता है।

पर्यावरणीय Environmental

गर्भावस्था के दौरान पर्यावरणीय संपर्क के कारण बौद्धिक अक्षमता हो सकती है, जो माँ के किसी विष, संक्रामक कारक, माँ की अनियंत्रित स्वास्थ्य स्थिति या जन्म संबंधी जटिलताओं के संपर्क में आने से उत्पन्न हो सकती है।

गर्भावस्था के दौरान बौद्धिक अक्षमता का एक सामान्य कारण अल्कोहल है। वास्तव में, अल्कोहल के संपर्क में आने से अक्सर बौद्धिक अक्षमता के साथ-साथ अन्य विकासात्मक असामान्यताएं भी उत्पन्न होती हैं, जिसे भ्रूण अल्कोहल सिंड्रोम के रूप में जाना जाता है।[9] भ्रूण में अल्कोहल के संपर्क में आने से रेटिनोइक एसिड का उत्पादन बाधित होता है, जो तंत्रिका तंत्र के विकास के लिए एक आवश्यक संकेत अणु है। गर्भावस्था के किसी भी तिमाही में थोड़ी मात्रा में अल्कोहल भी भ्रूण अल्कोहल सिंड्रोम का कारण बन सकता

है। ओपिओइड, कोकीन और टेराटोजेनिक दवाओं के संपर्क में आने से भी बौद्धिक अक्षमता हो सकती है।

बौद्धिक अक्षमता पैदा करने वाले आम और जाने-पहचाने संक्रामक कारक रूबेला और HIV हैं। गर्भावस्था की पहली तिमाही में माँ को रूबेला संक्रमण होने पर लगभग 10 से 15% मामलों में बौद्धिक अक्षमता हो जाती है; अगर संक्रमण पहले महीने में हो, तो यह दर 50% से भी ज़्यादा हो सकती है। टीकाकरण से माँ को रूबेला संक्रमण से बचाया जा सकता है। HIV माँ से शिशु में सीधे तौर पर (वर्टिकली) फैल सकता है। HIV से संक्रमित शिशुओं में जीवन के पहले वर्ष के भीतर माइक्रोसेफ़ली, इम्यूनोसप्रेशन और न्यूमोसिस्टिस जीरोवेसी न्यूमोनिटिस (PCP) संक्रमण के कारण एन्सेफ़ैलोपैथी, दौरे और बौद्धिक अक्षमता जैसी समस्याएँ हो सकती हैं।[12] अत्यधिक न्यूरो-सूजन () के कारण N-मिथाइल-D-एस्पार्टेट टाइप रिसेप्टर (NMDAR) प्रणाली की अति-उत्तेजना हो जाती है, जिससे तंत्रिका कोशिकाओं को नुकसान पहुँचता है। माँ के लिए एंटीरेट्रोवायरल थेरेपी और HIV के संपर्क में आए नवजात शिशुओं के लिए ज़िडोवुडिन से बचावकारी उपचार ने संक्रमण फैलने की दर को काफ़ी हद तक कम कर दिया है। माँ को होने वाले अन्य ज्ञात संक्रामक संक्रमण, जिनसे नवजात शिशु में बौद्धिक अक्षमता हो सकती है, उनमें साइटोमेगैलिक इन्क्लूजन रोग, सिफ़िलिस और टॉक्सोप्लाज़मोसिस शामिल हैं।

माँ की अनियंत्रित मेडिकल स्थितियाँ बौद्धिक अक्षमता का कारण बन सकती हैं। गर्भावस्था के दौरान हाई ब्लड प्रेशर, अस्थमा, यूरिनरी ट्रैक्ट इन्फेक्शन, गर्भावस्था से पहले का मोटापा और गर्भावस्था से पहले की डायबिटीज़ से यह जोखिम काफ़ी बढ़ जाता है। इसके अलावा, माँ की अनियंत्रित डायबिटीज़, कुपोषण और प्रसव संबंधी ऐसी जटिलताएँ जिनसे एनोक्सिया (ऑक्सीजन की कमी) हो, जैसे कि प्लेसेंटा प्रीविया, प्लेसेंटा एब्रप्शन और गर्भनाल का बाहर निकल आना, भी बौद्धिक अक्षमता का कारण बन सकती हैं।

बौद्धिक अक्षमता बचपन के शुरुआती दिनों में हो सकती है। इसके कारणों में संक्रमण (विशेष रूप से एन्सेफलाइटिस और मेनिनजाइटिस), सिर में चोट, एस्फेक्सिया, इंट्राक्रेनियल ट्यूमर (चाहे सीधे तौर पर या दौरे, सर्जरी और कीमोथेरेपी के ज़रिए), कुपोषण और ज़हरीले पदार्थों के संपर्क में आना शामिल हैं।

गर्भावस्था के दौरान के कारक (प्रसव-पूर्व) (Factors during Pregnancy (Pre-Natal)-

निम्नलिखित कारक बच्चे के माँ के गर्भ में होने के दौरान बौद्धिक अक्षमता का कारण बन सकते हैं:

गर्भावस्था के दौरान बीमारी या संक्रमण

कुछ संक्रमण, जैसे कि रूबेला (जर्मन खसरा), हर्पीज़, सिफिलिस और टीबी, जो माँ को हो जाते हैं—खासकर गर्भावस्था के पहले तीन महीनों के दौरान—वे भ्रूण (माँ के गर्भ में पल रहे शिशु) के विकासशील मस्तिष्क को नुकसान पहुँचा सकते हैं और मानसिक मंदता का कारण बन सकते हैं। माँ को होने वाली बीमारियाँ, जैसे कि मधुमेह (डायबिटीज़), उच्च रक्तचाप (हाई ब्लड प्रेशर) या गुर्दे की समस्याएँ भी गर्भ में पल रहे शिशु को नुकसान पहुँचा सकती हैं। माँ की कुछ शारीरिक स्थितियाँ, जैसे कि हाइपोथायरायडिज्म (जिसमें माँ की थायरॉइड ग्रंथियाँ ठीक से काम नहीं करतीं—उदाहरण के लिए, आहार में आयोडीन की कमी के कारण) या अनियंत्रित मधुमेह, भी शिशु में मानसिक मंदता का कारण बन सकती हैं।

डॉक्टर की सलाह के बिना खुद से दवा लेना

गर्भवती महिला द्वारा ली गई कोई भी दवा या औषधि उसके गर्भ में पल रहे शिशु के रक्त प्रवाह में प्रवेश कर सकती है। इसलिए, गर्भावस्था के दौरान होने वाली स्वास्थ्य समस्याओं पर ध्यान देना ज़रूरी है, लेकिन केवल वही दवाएँ लेनी चाहिए जो डॉक्टर द्वारा बताई गई हों; साथ ही, डॉक्टर को पहले से ही यह बता देना चाहिए कि महिला गर्भवती है। किसी भी परिस्थिति में, गर्भवती महिला को अपनी मर्ज़ी से या डॉक्टर की

सलाह के बिना कोई भी दवा लेने का फ़ैसला नहीं करना चाहिए—भले ही वह दवा बुख़ार, सर्दी या दर्द के लिए ही क्यों न हो।

गर्भपात का प्रयास

अकुशल दाइयों (मिडवाइव्स) या नीम-हकीमों द्वारा गर्भपात का प्रयास भ्रूण और माँ, दोनों के लिए जानलेवा साबित हो सकता है। गर्भपात का असफल प्रयास भ्रूण को चोट या क्षति पहुँचा सकता है, जिसके परिणामस्वरूप मानसिक मंदता हो सकती है।

गर्भपात का खतरा

यदि माँ का पहले कभी गर्भपात या मिसकैरेज हुआ हो, तो उन्हें गर्भावस्था की पूरी अवधि के दौरान चिकित्सकीय देखरेख और सलाह में रहना चाहिए।

खराब पोषण

गर्भवती महिला को संतुलित, पौष्टिक और पर्याप्त आहार न मिलने से बच्चे में मानसिक मंदता भी हो सकती है। एक गर्भवती महिला को अपने आहार में कार्बोहाइड्रेट, वसा, प्रोटीन, विटामिन और खनिजों की अतिरिक्त मात्रा की आवश्यकता होती है, ताकि वह अपने शरीर के साथ-साथ गर्भ में पल रहे शिशु की ज़रूरतों को भी पूरा कर सके। अध्ययनों से पता चला है कि माँ के आहार में आयोडीन की कमी से शिशु के मस्तिष्क को नुकसान पहुँच सकता है और उसमें मानसिक मंदता आ सकती है। आयरन और फोलिक एसिड की कमी से होने वाली एनीमिया जैसी स्थितियाँ, और गर्भवती महिला में अन्य पोषक तत्वों की कमी के कारण भी शिशु के विकास में रुकावट आ सकती है और उसमें कई तरह के दोष उत्पन्न हो सकते हैं, जिनमें मानसिक मंदता भी शामिल है।

शराब या धूम्रपान

गर्भावस्था के दौरान धूम्रपान या शराब का सेवन करने से कई तरह के विकार हो सकते हैं, जिनमें बच्चे में मानसिक मंदता भी शामिल है।

विकिरण

गर्भावस्था के दौरान विकिरण के संपर्क में आने से—उदाहरण के लिए, यदि कोई गर्भवती महिला अपना X-ray करवाती है—भ्रूण में विकार उत्पन्न हो सकते हैं। इन विकारों में शारीरिक विकास का धीमा होना और मस्तिष्क का अविकसित रह जाना शामिल है, जिसके परिणामस्वरूप मानसिक मंदता हो सकती है।

Rh असंगति (Rh Incompatibility)

Rh असंगति को समझने के लिए, हमें सबसे पहले 'ब्लड ग्रुप' (रक्त समूह) की अवधारणा को समझना होगा। आपने ज़रूर ऐसे वाक्य सुने होंगे जैसे: "उसका ब्लड ग्रुप A+ (A पॉज़िटिव) है और उसका ब्लड ग्रुप O- (O नेगेटिव) है।" असल में, इंसानी खून को चार ग्रुप में बांटा गया है: A, B, AB और O। इसके अलावा, खून में एक प्रोटीन होता है जिसे Rh फैक्टर कहते हैं। अगर यह प्रोटीन खून में मौजूद होता है, तो ब्लड टाइप को 'Rh पॉज़िटिव' कहा जाता है। अगर यह मौजूद नहीं होता, तो ब्लड टाइप को 'Rh नेगेटिव' कहा जाता है। इस तरह, Rh असंगति एक ऐसी स्थिति है जो तब पैदा होती है जब गर्भवती महिला का ब्लड टाइप Rh नेगेटिव होता है, जबकि गर्भ में पल रहे शिशु (भ्रूण) का ब्लड टाइप Rh पॉज़िटिव होता है; अगर ऐसा होता है, तो कई जटिलताएं पैदा हो सकती हैं। आमतौर पर पहला बच्चा सुरक्षित रहता है, लेकिन उसके बाद होने वाली हर गर्भावस्था में खतरा बढ़ता जाता है। अगर दूसरा बच्चा Rh पॉज़िटिव होता है, तो Rh असंगति (माँ के ब्लड टाइप, जो कि Rh नेगेटिव है, और गर्भ में पल रहे शिशु के ब्लड टाइप के बीच) के कारण बच्चे के दिमाग को नुकसान, मानसिक मंदता, दिल की मांसपेशियों को नुकसान और यहाँ तक कि बच्चे की मौत भी हो सकती है। अच्छी बात यह है कि ज़्यादातर मामलों में Rh असंगति के हानिकारक प्रभावों को रोका जा सकता है। महिला के लिए गर्भधारण करने से पहले अपने ब्लड ग्रुप के बारे में जानना बहुत ज़रूरी है। Rh पॉज़िटिव शिशु के जन्म के बाद, Rh नेगेटिव ब्लड ग्रुप वाली माँ को एक टीका

लगाया जाता है, जो Rh असंगति के कारण बाद में होने वाले बच्चे को किसी भी तरह के नुकसान से बचाता है।

एक से ज़्यादा गर्भधारण (एक ही समय में दो से ज़्यादा बच्चे) (Multiple Pregnancies)

एक से ज़्यादा बच्चों के जन्म से जुड़ा सबसे बड़ा और तुरंत होने वाला खतरा है समय से पहले डिलीवरी (बच्चों का गर्भधारण के 37 हफ़्तों से पहले पैदा होना)। समय से पहले पैदा हुए बच्चों को सेहत से जुड़ी कई तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है, जैसे कि जन्म के समय वज़न कम होना, पीलिया और तंत्रिका तंत्र से जुड़े विकार, जिनकी वजह से मानसिक मंदता हो सकती है।

प्रदूषक (Pollutants)

कुछ पर्यावरणीय प्रदूषक विकासशील भ्रूण के लिए हानिकारक हो सकते हैं—उदाहरण के लिए, सीसा, पारा और कई तरह के रसायन। आइए, सीसे का उदाहरण लें। एक गर्भवती महिला कार के धुएँ से, पुराने घरों की दीवारों से झड़ते पेंट से, और उद्योगों में इस्तेमाल होने वाली अन्य सामग्रियों से सीसा सोख सकती है—खासकर तब, जब वह किसी औद्योगिक माहौल में काम कर रही हो। सीसे के संपर्क में आने का सीधा संबंध लगातार मस्तिष्क को होने वाली क्षति और कई तरह के शारीरिक दोषों से जोड़ा जाता रहा है।

दुर्घटनाएँ (Accidents)

दुर्घटनाएँ—जैसे कि गिरना—जिनके परिणामस्वरूप गर्भवती महिला के पेट में चोट लगती है, वे गर्भ में पल रहे शिशु को नुकसान पहुँचा सकती हैं और मानसिक मंदता का कारण बन सकती हैं।

भावनात्मक तनाव

जब गर्भावस्था के दौरान महिला को गंभीर भावनात्मक तनाव का अनुभव होता है, तो गर्भपात, समय से पहले जन्म और जन्म के समय बच्चे का वज़न कम होने का जोखिम बढ़

जाता है। समय से पहले जन्मे और कम वज़न वाले बच्चों को कई तरह की जटिलताओं का सामना करना पड़ सकता है, जिसमें मानसिक मंदता भी शामिल है।

1.6.1 रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये-

1. खून में एक प्रोटीन होता है जिसे ..... कहते हैं।

2. गर्भावस्था के दौरान ..... का एक सामान्य कारण अल्कोहल है।

1.7 बौद्धिक अक्षमता से बचाव/ रोकथाम

बौद्धिक अक्षमता का सीधे तौर पर कोई इलाज या उपचार संभव नहीं है। सही उपचार मिलने पर, बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्ति भी एक अच्छी गुणवत्तापूर्ण जीवन जी सकते हैं। इन उपचारों का मुख्य उद्देश्य अनुकूलन व्यवहार और जीवन-कौशल को विकसित करने में सहायता करना होता है।

उपचार के प्रकारों में शामिल हैं:

शैक्षिक सहायता और हस्तक्षेप (Education support and interventions) ये शैक्षिक कार्यक्रमों और संरचना में बदलाव करने में मदद कर सकते हैं। शैक्षिक सहायता, बौद्धिक अक्षमता के प्रबंधन का एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा है। बच्चों में बौद्धिक अक्षमता का पता चलने पर, स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं को तुरंत स्कूल से संपर्क करना चाहिए ताकि विशेष शिक्षा की व्यवस्था की जा सके। विशेष शिक्षा में क्या-क्या शामिल होगा, यह हर स्कूल में थोड़ा अलग हो सकता है; लेकिन आम तौर पर यह पढ़ाई में ज़रूरी बदलाव करने के साथ-साथ, बचपन से जवानी तक के बदलाव की योजना बनाने में भी पूरी मदद करता है—जिसका मुख्य मकसद बच्चों को आत्मनिर्भर बनाना होता है। यह उन्हें यह भी सिखाता है कि ज़रूरत पड़ने पर मदद कैसे मांगें; साथ ही, उनकी व्यक्तिगत ज़रूरतों के

हिसाब से उन्हें सबसे कम पाबंदियों वाले माहौल में रहते हुए व्यवहारिक कौशल, व्यावसायिक कौशल, बातचीत के कौशल, रोज़मर्रा के जीवन के कौशल और सामाजिक कौशल भी सिखाए जाते हैं। बौद्धिक अक्षमता वाले छात्रों के लिए 'सबसे कम पाबंदियों वाला माहौल' बनाने का मतलब है कि उन्हें जितना हो सके, आम कक्षाओं में ही पढ़ाया जाए। हालांकि, विशेष ज़रूरतों वाले छात्रों के लिए अलग कक्षाएं मददगार हो सकती हैं, लेकिन 'सबसे कम पाबंदियों वाले माहौल' की नीति को लागू करने से छात्रों के नतीजों में सुधार देखा गया है। स्कूल में छात्रों की प्रगति पर नज़र रखना ज़रूरी है, क्योंकि सिर्फ़ कक्षा में दी गई शिक्षा ही उनके लिए काफ़ी नहीं हो सकती। अगर किसी बौद्धिक रूप से अक्षम व्यक्ति को स्कूल में मिलने वाली मदद से ज़्यादा सहायता की ज़रूरत होती है, तो उसका परिवार घर पर ही 'पारिवारिक शिक्षा' या किसी अन्य बाहरी संसाधन की मदद से उस ज़रूरत को पूरा कर सकता है। उदाहरण के लिए, अगर किसी दिव्यांग छात्र को सामाजिक कौशल सीखने के लिए ज़्यादा ध्यान देने की ज़रूरत है, तो उसे 'स्पेशल ओलंपिक्स' जैसे कार्यक्रमों में शामिल होने के लिए भेजा जा सकता है; इन कार्यक्रमों से बौद्धिक अक्षमता वाले लोगों में सामाजिक दक्षता में सुधार देखा गया है। आखिर में, सीखने में आने वाली कठिनाइयों के अन्य कारणों की भी जांच करके उन्हें दूर करना ज़रूरी है; साथ ही, बौद्धिक अक्षमता वाले लोगों के लिए सुनने और देखने की क्षमता की उचित जांच करवाना भी बहुत ज़रूरी है। शैक्षिक सहायता का एक उदाहरण 'व्यक्तिगत शैक्षिक योजना' (IEP) है, जो एक विशेष शैक्षिक योजना और अपेक्षाएँ तैयार करती है।

व्यवहारिक सहायता और हस्तक्षेप (Behavioral support and interventions) इस तरह के हस्तक्षेप अनुकूलनशील व्यवहार और उससे जुड़े कौशल सीखने में मदद कर सकते हैं। बौद्धिक अक्षमता के प्रबंधन का एक और महत्वपूर्ण पहलू व्यवहारिक हस्तक्षेप है, और इसे कुछ अलग-अलग तरीकों से किया जा सकता है। व्यवहारिक थेरेपी का उद्देश्य सकारात्मक व्यवहारों को बढ़ावा देना और अवांछित व्यवहारों को हतोत्साहित करना है। सकारात्मक सुदृढीकरण और सौम्य दंड (जैसे, 'टाइम-आउट') देना व्यवहारिक प्रशिक्षण

का एक प्रभावी तरीका है। अन्य पूरक तरीकों में नकारात्मक आचरण के कारणों से बचना, दुर्व्यवहार को रोकना, और किसी भी परेशान करने वाले व्यवहार को रोकने या कम करने के लिए ध्यान भटकाना शामिल हो सकता है। संज्ञानात्मक थेरेपी व्यवहारिक प्रशिक्षण का एक और तरीका है जो बौद्धिक अक्षमता वाले पात्र रोगियों के लिए प्रभावी साबित हुआ है। संज्ञानात्मक थेरेपी इस सिद्धांत पर आधारित है कि किसी व्यक्ति का व्यवहार, भावनाएँ और विचार आपस में जुड़े होते हैं; इसका उद्देश्य नकारात्मक विचारों और भावनात्मक तनाव की पहचान करके और उन्हें समायोजित करके व्यक्ति के नकारात्मक व्यवहारों को ठीक करना है। हालाँकि व्यवहारिक हस्तक्षेप के कई अन्य दृष्टिकोण भी मौजूद हैं, लेकिन व्यवहारिक थेरेपी, संज्ञानात्मक थेरेपी, या इन दोनों के संयोजन का उपयोग सबसे व्यापक रूप से प्रचलित तरीका है, और यह बौद्धिक अक्षमता वाले रोगियों के लिए व्यवहारिक हस्तक्षेप का एक प्रभावी साधन साबित हुआ है।

व्यावसायिक प्रशिक्षण (Vocational training) यह बौद्धिक अक्षमता वाले लोगों को काम से जुड़े कौशल सीखने में मदद कर सकता है। व्यावसायिक प्रशिक्षण किशोरों और युवा वयस्कों को श्रम बाज़ार में प्रवेश करने के लिए ज़रूरी कौशल हासिल करने में मदद करता है। व्यावसायिक प्रशिक्षण में, मरीज़ एक ऐसी इंटरप्रोफेशनल टीम की देखरेख में पहले से तय गतिविधियाँ करते हैं, जिसमें एक सोशल वर्कर, ऑक्यूपेशनल थेरेपिस्ट, शिक्षक, काउंसलर और मनोवैज्ञानिक शामिल होते हैं। मरीज़ खुद को साफ़-सुथरा रखना, सही कपड़े पहनना और अपनी ज़िम्मेदारियाँ निभाना सीखते हैं। एक अध्ययन से पता चला है कि जिन मरीज़ों ने व्यावसायिक प्रशिक्षण लिया, उन्हें अपने साथियों की तुलना में कम मदद की ज़रूरत पड़ी।

पारिवारिक शिक्षा (Family education) यह बौद्धिक अक्षमता वाले लोगों के परिवार और प्रियजनों को बौद्धिक अक्षमता के बारे में अधिक जानने में मदद कर सकता है, और यह भी सिखा सकता है कि ऐसे प्रियजन का समर्थन कैसे करें। पारिवारिक शिक्षा एक ज़रूरी सेवा है जो हेल्थकेयर देने वाले लोग, मानसिक रूप से विकलांग मरीज़ों के परिवार वालों को देते हैं। इसका पहला हिस्सा परिवार वालों को मानसिक विकलांगता

को समझने में मदद करना है: इसकी परिभाषा, इसका मैनेजमेंट और इसका आगे का हाल। इसके बाद, हेल्थकेयर देने वाले लोग परिवार को मरीज़ को कहाँ रखना है, इस बारे में फ़ैसले लेने में मदद कर सकते हैं; उन्हें सही सेवाओं और सामान के बारे में बता सकते हैं; और देखभाल करने वालों को ट्रेनिंग दे सकते हैं। परिवार को मरीज़ के लिए तैयार करने के अलावा, डॉक्टरों को यह भी समझना चाहिए कि परिवार वालों को भी अक्सर बहुत ज़्यादा तनाव होता है। मेडिकल टीम को पूरे परिवार को सामाजिक-मनोवैज्ञानिक समस्याओं से निपटने में मदद करनी चाहिए, जैसे कि इज़्ज़त की ज़रूरत, बेसहारा महसूस करना, डिप्रेशन और एंग्ज़ायटी। कुछ बाहरी साधन भी हैं जिनके बारे में परिवार को जानकारी मिल सकती है। अमेरिकन एसोसिएशन ऑन इंटेलेक्चुअल एंड डेवलपमेंटल डिसेबिलिटीज़ (AAIDD), द आर्क ऑफ़ द यूनाइटेड स्टेट्स, और फ़ैमिली-टू-फ़ैमिली हेल्थ इन्फ़ॉर्मेशन एंड एजुकेशन सेंटर्स कुछ ऐसे साधन हैं जो पूरे देश में उपलब्ध हैं; और सोशल वर्कर परिवार वालों को आस-पास के साधनों से जुड़ने में मदद कर सकते हैं। परिवार के लिए मज़बूत सहारा बनाना, बदले में, मरीज़ के लिए घर में एक प्यार भरा माहौल बनाता है।

सामुदायिक सहायता (Community support) कोई व्यक्ति और/या उसका परिवार स्थानीय सरकारी एजेंसियों या सहायता संगठनों से संपर्क कर सकता है। ऐसा करने से उन्हें उन सेवाओं तक पहुँचने में मदद मिल सकती है जिनसे उन्हें लाभ होता है; इनमें घर या कार्यस्थल पर मिलने वाली सहायता और दिन के समय की गतिविधियों के विकल्प शामिल हैं।

सरकारी सहायता (Government support) बौद्धिक अक्षमता वाले मरीज़ों और उनके परिवारों के लिए सरकारी संसाधन उपलब्ध हैं। बौद्धिक अक्षमता वाले मरीज़ सामाजिक सुरक्षा आय का लाभ पाने के हकदार हैं। मरीज़ विभिन्न सामुदायिक सेवाओं से भी लाभ उठा सकते हैं, जो रहने की जगह और भोजन उपलब्ध कराती हैं। सरकार शिक्षा और रोज़गार के अवसर भी प्रदान करती है,

मनोऔषधीय उपचार (Psychopharmacologic interventions) मनोऔषधीय उपचार बौद्धिक अक्षमता के उपचार का मुख्य घटक नहीं हो सकता है, लेकिन बौद्धिक विकारों और सहवर्ती स्थितियों से जुड़ी व्यवहार संबंधी असामान्यताओं के उपचार में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्तियों में आक्रामक व्यवहार असामान्य नहीं है और इसके कारण उन्हें संस्थागत देखभाल में भर्ती कराना पड़ता है। रिस्पेरिडोन बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों में विघटनकारी, आक्रामक और आत्म-हानिकारक व्यवहारों के उपचार में प्रभावी सिद्ध हुआ है और इसकी सुरक्षा और सहनशीलता का स्तर भी अच्छा है।रिस्पेरिडोन एक एटिपिकल एंटीसाइकोटिक है जिससे टार्डिव डिस्किनेसिया होने की संभावना कम होती है, जो आमतौर पर टिपिकल एंटीसाइकोटिक के कारण होता है। एरिपिप्राज़ोल एक अन्य एटिपिकल एंटीसाइकोटिक है जिसका उपयोग आक्रामकता को नियंत्रित करने के लिए किया जाता है।

विभिन्न दवाएँ उन स्थितियों में मदद कर सकती हैं जो बौद्धिक अक्षमता से संबंधित हैं या उसके साथ-साथ होती हैं। हालाँकि ये दवाएँ सीधे तौर पर बौद्धिक अक्षमता का इलाज नहीं करतीं, लेकिन ये कुछ ऐसे लक्षणों को नियंत्रित करने में मदद कर सकती हैं जो इस स्थिति को प्रभावित कर सकते हैं।

1.8 सारांश

प्रस्तुत इकाई में बौद्धिक अक्षमता की परिभाषा, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, कारण-कारक और रोकथाम के संबंध में इकाई के अध्ययन के उपरांत आप बौद्धिक अक्षमता की परिभाषा, कारण ओर रोकथाम के विषय में समझ चुके होंगे। बौद्धिक अक्षमता (या ID) एक ऐसा शब्द है जिसका इस्तेमाल तब किया जाता है, जब किसी व्यक्ति में सोचने-समझने की क्षमता और कौशलों में कुछ सीमाएँ होती हैं। इन कौशलों में वैचारिक, सामाजिक और व्यावहारिक कौशल शामिल हैं—जैसे कि भाषा, सामाजिक व्यवहार और अपनी देखभाल करने के कौशल। बौद्धिक अक्षमता के अनेक कारण अज्ञात हैं, फिर भी इसके मूल कारणों

को मुख्यतः आनुवंशिक असामान्यताओं और पर्यावरणीय कारकों में विभाजित किया गया है। बौद्धिक अक्षमता का सीधे तौर पर कोई इलाज या उपचार संभव नहीं है। सही उपचार मिलने पर, बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्ति भी एक अच्छी गुणवत्तापूर्ण जीवन जी सकते हैं। इन उपचारों का मुख्य उद्देश्य अनुकूलन व्यवहार और जीवन-कौशल को विकसित करने में सहायता करना होता है।

1.9 शब्दावली

Disorder of Intellectual Devlopment (DID) - बौद्धिक विकास संबंधी विकार

Individual Educational Plan (IEP) - व्यक्तिगत शैक्षिक योजना

Metabolism (मेटाबॉलिज़्म)- चयापचय

1.10 अभ्यास प्रश्नो के उत्तर

1.5.1(1) मंदबुद्धि (2) 1826 1.6.1 (1) Rh फैक्टर, (2) बौद्धिक अक्षमता

1.11 संदर्भ ग्रंथ सूची

https://www.specialolympics.org/about/intellectual-disabilities/what-is-intellectual-disability

Gazette Notification of RPWD Act. (2016). Retrieved on 01/12/2019 from

http://
www.disabilityaffairs.gov.in/upload/uploadfiles/files/RPWD%20ACT%202016pdf

Mental Retardation. (n.d). Retrieved on 02/12/2019 from

http://rehabcouncil.nic.in/ writereaddata/mr.pdf

https://www.wbnsou.ac.in/online_services/SLM/MED/B8_ID.pdf

https://niepid.nic.in/directory-of-institutions/

https://www.ncbi.nlm.nih.gov/books/NBK547654/

https://ndpublisher.in/admin/issues/Icv7n1b.pdf

https://my.clevelandclinic.org/health/diseases/25015-intellectual-disability-id

1.12 निबंधात्मक प्रश्न

1. बौद्धिक अक्षमता को विस्तार से परिभाषित कीजिए?

2. भारत में बौद्धिक अक्षमता (मानसिक मंदता) के इतिहास के विषय में आप क्या जानते हैं? समझाइये|

3. बौद्धिक अक्षमता (ID) के कारक संबंधी कारणों का विस्तार से वर्णन कीजिए?

इकाई 2- बौद्धिक अक्षमता का विभिन्न स्तरों में वर्गीकरण (Classification of Intellectual Disability)

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 वर्गीकरण की आवश्यकता

2.4 बौद्धिक अक्षमता का वर्गीकरण - चिकित्सा, शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक

2.4.1 चिकित्सा

2.4.2 शैक्षिक

2.4.3 मनोवैज्ञानिक

2.4.4 गंभीरता का वर्गीकरण

2.5 अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण

2.5.1 AAMR के अनुसार वर्गीकरण

2.5.2 वर्गीकरण के मापदंड

2.6 सारांश

2.7 शब्दावली

2.8 अभ्यास प्रश्नो के उत्तर

2.9 संदर्भ ग्रंथ सूची

2.10 निबंधात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

जीवन की विशाल विविधता को व्यवस्थित समूहों में बाँटने के लिए वर्गीकरण अत्यंत आवश्यक है| वर्गीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें वस्तुओं, डेटा या अवधारणाओं को उनकी साझा विशेषताओं के आधार पर समूहों, श्रेणियों या वर्गों में व्यवस्थित किया जाता है।प्रस्तुत इकाई में बौद्धिक अक्षमता का चिकित्सीय, शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक आधार पर विभिन्न स्तरों में वर्गीकरण के बारे में बताया गया है| साथ ही अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर किये गए वर्गीकरण की चर्चा भी इस इकाई में की गयी है| वर्तमान में पाठ्यक्रम को प्रत्येक छात्र की विशिष्ट क्षमताओं और आवश्यकताओं को प्रतिबिंबित करने के लिए व्यक्तिगत रूप से तैयार किया जाना चाहिए।

2.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप-

- बौद्धिक अक्षमता के लिए चिकित्सीय आधार पर किये गए वर्गीकरण को समझ जायेंगे|
- बौद्धिक अक्षमता के लिए शैक्षिक आधार पर किये गए वर्गीकरण को समझ जायेंगे|
- बौद्धिक अक्षमता के लिए मनोवैज्ञानिक आधार पर किये गए वर्गीकरण को समझ जायेंगे|
- बौद्धिक अक्षमता के अंतर्राष्ट्रीय आधार पर किये गए वर्गीकरण को समझ जायेंगे|

2.3 वर्गीकरण की आवश्यकता

जीवन की विशाल विविधता को व्यवस्थित समूहों में बाँटने के लिए वर्गीकरण अत्यंत आवश्यक है, जिससे वैज्ञानिक जीवों का अध्ययन, पहचान और उन्हें साझा विशेषताओं के आधार पर समझ सकें। यह विकासवादी संबंधों को उजागर करता है, जटिल पारिस्थितिक तंत्रों के अध्ययन को सरल बनाता है, सार्वभौमिक नामकरण (टैक्सोनॉमी) सुनिश्चित करता है, और जीवन के सभी रूपों का एक व्यवस्थित अवलोकन प्रदान करता है।वर्गीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें वस्तुओं, डेटा या अवधारणाओं को उनकी साझा विशेषताओं के आधार पर समूहों, श्रेणियों या वर्गों में व्यवस्थित किया जाता है। यह जानकारी में व्यवस्था लाने का काम करता है, जिससे उसका विश्लेषण, पहचान और पुनःप्राप्ति आसान हो जाती है। इसके सामान्य उदाहरणों में जैविक वर्गीकरण, पुस्तकालय कैटलॉगिंग और डेटा सुरक्षा शामिल हैं; जबकि इसके पर्यायवाची शब्दों में श्रेणीकरण, छँटाई और ग्रेडिंग शामिल हैं।

अलग-अलग तरह की शारीरिक, मानसिक या संवेदी स्थितियों वाले व्यक्तियों को समझने, उनका समर्थन करने और उनके अधिकारों को सुनिश्चित करने के लिए विकलांगता का वर्गीकरण अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह केवल किसी को कोई लेबल देने तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य सहायता, शिक्षा, रोज़गार और कानूनी अधिकारों से जुड़ी ज़रूरतों की पहचान करके एक समावेशी समाज का निर्माण करना है।

2.4 बौद्धिक अक्षमता का वर्गीकरण - चिकित्सा, शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक

2.4.1 चिकित्सा

मानसिक मंदता को चिकित्सीय लक्षणों और कारकों के आधार पर परिभाषित किया गया है। इसे निम्नलिखित कारणों और लक्षणों के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है :

1. संक्रमण और नशा (Infection and Intoxication)

2. मानसिक और शारीरिक समस्याएं (Mental and physical problems)

3. चयापचय और पोषण (Metabolism and nutrition)

4. मानसिक रोग (Mental diseases)

5. जन्म से जुड़े अज्ञात कारक (Unknown factors from birth)

6. आनुवंशिक विकार (Genetic disorders)

7. गर्भावस्था के दौरान होने वाले रोग (Diseases during pregnancy)

8. मनोविकृति (Psychosis)

9. पर्यावरणीय कारक (Environmental factors)

10. अन्य कारक (Other factors)

2.4.2 शैक्षिक वर्गीकरण

दशकों तक, स्कूलों ने बुद्धि-योग्यता प्रणाली से व्युत्पन्न समानांतर लेबलों का उपयोग किया: शिक्षित करने योग्य, प्रशिक्षित करने योग्य और देखरेख में (educable, trainable, and custodial)। ये शब्द बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों की सीखने की क्षमता और अक्षमता के बारे में धारणाओं को दर्शाते और मजबूत करते थे।

"एजुकेबल" (सिखाने योग्य) लेबल उन छात्रों पर लगाया जाता था जिन्हें हल्की बौद्धिक अक्षमता होती थी; इसका मतलब था कि उन्हें बदले हुए शैक्षणिक निर्देशों से फ़ायदा हो सकता है। "ट्रेनेबल" (प्रशिक्षण योग्य) उन लोगों के लिए इस्तेमाल होता था जिन्हें मध्यम दर्जे की बौद्धिक अक्षमता होती थी; इसका मतलब था कि वे जीवन के बुनियादी कौशल तो सीख सकते हैं, लेकिन शैक्षणिक विषय-वस्तु नहीं। "कस्टोडियल" (देखभाल की ज़रूरत वाले) श्रेणी में वे लोग आते थे जिन्हें गंभीर और बहुत ज़्यादा अक्षमताएँ होती थीं – यह एक ऐसा शब्द था जिसका मूल अर्थ यह था कि ये बच्चे शिक्षा के माध्यम से आगे बढ़ने के

बजाय, केवल देखभाल पाने के ही काबिल हैं। डॉ. गुन्नार डिबवाड के अनुसार, ये लेबल "और भी ज़्यादा नुकसानदेह" साबित हुए, क्योंकि ये किसी बच्चे के परिवार या समुदाय में उसके कामकाज को ध्यान में रखे बिना, केवल एक खास स्कूली माहौल में उसके प्रदर्शन के आधार पर ही उसके लिए जीवन भर की उम्मीदें तय कर देते थे।

शब्दावली (Terminology)	IQ सीमा (IQ Level)	शैक्षिक अपेक्षा (Educational expectation)
शिक्षित करने योग्य, (educable)	५० से ७०	➢ शैक्षणिक विषयों के साथ-साथ पढ़ने, लिखने, वर्तनी, अंकगणित आदि में सीखने की न्यूनतम क्षमता। ➢ सामाजिक समायोजन की इतनी क्षमता कि वह समुदाय में स्वतंत्र रूप से अपना जीवन यापन कर सके। ➢ पेशेवर योग्यता का न्यूनतम स्तर इतना हो कि वह बाद में वयस्क स्तर पर आंशिक रूप से अपना भरण-पोषण स्वयं कर सके।
प्रशिक्षित करने योग्य और (trainable)	२० से ४९	➢ खाने, कपड़े पहनने-उतारने, शौच करने और सोने जैसी गतिविधियों में अपनी देखभाल करना सीखना। ➢ घर या आस-पड़ोस में तालमेल बिठाना सीखना (हालांकि पूरे समुदाय में नहीं) । ➢ घर, किसी सुरक्षित कार्यशाला या किसी संस्था में आर्थिक रूप से उपयोगी बनना सीखना।
देखरेख में (custodial)	२० से कम	➢ स्वयं की देखभाल, सामाजिक मेल-जोल या आर्थिक रूप से उपयोगी होने का प्रशिक्षण

		प्राप्त करने में असमर्थ। ➢ अपनी व्यक्तिगत ज़रूरतों की देखभाल करने में उसे लगातार मदद की आवश्यकता होती है। ➢ उसे अपने पूरे जीवन भर लगभग पूर्ण देखरेख की ज़रूरत होती है, क्योंकि वह बिना किसी की मदद के जीवित नहीं रह सकता।

आधुनिक विद्यालय-आधारित वर्गीकरण पूर्णतः शिक्षायोग्य/प्रशिक्षित/संरक्षित मॉडल से अलग हो गया है। आज का ढांचा वर्गीकरण को विशिष्ट शैक्षिक चरणों – पूर्व विद्यालय, प्राथमिक, माध्यमिक – के अनुरूप बनाता है और इस विचार पर आधारित है कि पाठ्यक्रम को प्रत्येक छात्र की विशिष्ट क्षमताओं और आवश्यकताओं को प्रतिबिंबित करने के लिए व्यक्तिगत रूप से तैयार किया जाना चाहिए। वर्तमान कानून के तहत, प्रत्येक दिव्यांग बच्चे के लिए एक व्यक्तिगत शिक्षा योजना (IEP) लागू की जानी चाहिए, जिसे उस बच्चे के लिए उपयुक्त सबसे कम प्रतिबंधात्मक वातावरण में लागू किया जाए, जिसका अर्थ है कि कई छात्रों को बिना दिव्यांगता वाले सहपाठियों के साथ समावेशी कक्षाओं तक पहुंच प्राप्त हो। ध्यान इस बात पर केंद्रित हो गया है कि क्या कोई छात्र सीख सकता है, बजाय इसके कि प्रत्येक चरण में उनके सीखने में सर्वोत्तम सहायता कैसे की जाए।

भारत में विशेष शिक्षा केंद्रों में, कक्षा-स्थापन (Classroom Placement) पर आधारित वर्गीकरण, जो प्रचलन में है, नीचे दर्शाया गया है:

प्लेसमेंट का स्तर (Level of Placement)	कालानुक्रमिक आयु (Chronological Age)	मानसिक आयु (Mental Age)
प्री-प्राइमरी	3 - 6 वर्ष तक	5 वर्ष तक

प्राथमिक	7 - 10 वर्ष तक	5 - 7 वर्ष तक
माध्यमिक	11 – 14 वर्ष तक	7 - 9 वर्ष तक
पूर्व-व्यावसायिक	15 से 18 वर्ष से कम	9+ वर्ष

पिछले तीन दशकों में बौद्धिक अक्षमता के बारे में सोच में सबसे महत्वपूर्ण बदलाव यह आया है कि अब ध्यान कमियों पर आधारित श्रेणियों से हटकर सहायता-आधारित मॉडल पर केंद्रित हो गया है। अब यह पूछने के बजाय कि "इस व्यक्ति का IQ कितना कम है?", सवाल यह हो गया है: "इस व्यक्ति को रोज़मर्रा के जीवन में पूरी तरह से शामिल होने के लिए किस तरह की सहायता की आवश्यकता है?"

2.4.3 मनोवैज्ञानिक वर्गीकरण

पिछले कुछ दशकों के दौरान, बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों को वर्गीकृत करने के लिए कई तरीके विकसित किए गए हैं। अक्षमता की गंभीरता के आधार पर, बौद्धिक अक्षमता को चार श्रेणियों (हल्की, मध्यम, गंभीर और अत्यधिक गंभीर बौद्धिक अक्षमता) में विभाजित किया गया था।

बुद्धिमत्ता एक सामान्य मानसिक क्षमता है जिसमें तर्क करना, योजना बनाना, समस्याओं को हल करना, अमूर्त रूप से सोचना, जटिल विचारों को समझना, कुशलता से सीखना और अनुभव से सीखना शामिल है (AAIDD, 2010)। ऐतिहासिक रूप से, बौद्धिक अक्षमता (जिसे पहले "मानसिक मंदता" कहा जाता था) को महत्वपूर्ण संज्ञानात्मक कमियों के आधार पर परिभाषित किया गया है—जिसे बुद्धिमत्ता के एक मानकीकृत माप के माध्यम से स्थापित किया गया है, विशेष रूप से, 70 से कम के IQ स्कोर के साथ (जो जनसंख्या में 100 के औसत से दो मानक विचलन नीचे है)—और साथ ही कार्यात्मक और अनुकूलन कौशल में महत्वपूर्ण कमियों के आधार पर भी। अनुकूलन कौशल में उम्र के अनुसार दैनिक जीवन की गतिविधियों को करने की क्षमता शामिल होती है। संयुक्त राज्य

अमेरिका में बौद्धिक अक्षमता (ID) के वर्गीकरण के लिए उपयोग की जाने वाली दो अलग-अलग प्रणालियाँ हैं: अमेरिकन एसोसिएशन ऑन इंटेलेक्चुअल एंड डेवलपमेंटल डिसेबिलिटीज (AAIDD) की प्रणाली, और 'डायग्नोस्टिक एंड स्टैटिस्टिकल मैनुअल ऑफ मेंटल डिसऑर्डर्स, 5th Edition' (DSM-5), जिसे अमेरिकन साइकियाट्रिक एसोसिएशन द्वारा प्रकाशित किया जाता है। ये दोनों प्रणालियाँ ID की गंभीरता को, किसी व्यक्ति के इष्टतम व्यक्तिगत कामकाज को प्राप्त करने के लिए आवश्यक सहायता के स्तरों के अनुसार वर्गीकृत करती हैं।

DSM-5 बौद्धिक अक्षमताओं को ऐसे न्यूरोडेवलपमेंटल विकारों के रूप में परिभाषित करता है जो बचपन में शुरू होते हैं, और जिनकी विशेषता बौद्धिक कठिनाइयों के साथ-साथ जीवन के वैचारिक, सामाजिक और व्यावहारिक क्षेत्रों में आने वाली कठिनाइयाँ होती हैं। ID के DSM-5 निदान के लिए तीन मानदंडों का पूरा होना आवश्यक है:

- बौद्धिक कार्यप्रणाली में कमियाँ—"तर्क-वितर्क, समस्या-समाधान, योजना बनाना, अमूर्त चिंतन, निर्णय लेना, शैक्षणिक सीखना, और अनुभव से सीखना"—जिनकी पुष्टि नैदानिक मूल्यांकन और व्यक्तिगत मानक IQ परीक्षण द्वारा की गई हो (APA, 2013, p. 33);

- अनुकूलन कार्यप्रणाली में कमियाँ, जो किसी व्यक्ति की स्वतंत्रता और अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों को पूरा करने की क्षमता के लिए निर्धारित विकासात्मक और सामाजिक-सांस्कृतिक मानकों के अनुरूप ढलने में काफ़ी बाधा डालती हों; और

- इन कमियों की शुरुआत बचपन के दौरान हुई हो।

ID (बौद्धिक अक्षमता) की DSM-5 परिभाषा, व्यक्ति के बारे में DSM-IV (चौथे संस्करण) की तुलना में ज़्यादा व्यापक दृष्टिकोण अपनाने को बढ़ावा देती है। DSM-IV की परिभाषा में सामान्य मानसिक क्षमताओं में होने वाली उन कमियों को शामिल किया गया था, जो किसी व्यक्ति के वैचारिक, सामाजिक और रोज़मर्रा के जीवन के क्षेत्रों में काम करने के तरीके पर असर डालती हैं। DSM-5 ने निदान के लिए खास IQ स्कोर को एक मापदंड के तौर पर हटा दिया है, हालाँकि इसने सामान्य आबादी की तुलना में दो या उससे ज़्यादा स्टैंडर्ड डेविएशन नीचे काम करने के सामान्य विचार को बनाए रखा है। DSM-5 ने अनुकूलन क्षमता और रोज़मर्रा के जीवन के सामान्य कौशलों के प्रदर्शन पर ज़्यादा ज़ोर दिया है। DSM-IV के विपरीत, जिसमें दो या उससे ज़्यादा कौशल क्षेत्रों में कमियों का ज़िक्र था, DSM-5 के मापदंड एक या उससे ज़्यादा मुख्य कौशल क्षेत्रों (जैसे: वैचारिक, सामाजिक, व्यावहारिक) में कमी की ओर इशारा करते हैं।

2.4.4 गंभीरता का वर्गीकरण

स्थिति की गंभीरता का वर्णन करने के लिए "हल्का," "मध्यम," "गंभीर," और "अत्यंत गंभीर" शब्दों का उपयोग किया गया है (तालिका 9-1 देखें)। यह दृष्टिकोण इस मायने में सहायक रहा है कि हल्के से मध्यम ID (बौद्धिक अक्षमता) के पहलू, गंभीर से अत्यंत गंभीर ID से भिन्न होते हैं। DSM-5 इस वर्गीकरण को बनाए रखता है, जिसमें विशिष्ट IQ सीमा के बजाय दैनिक कौशलों पर अधिक ध्यान केंद्रित किया गया है।

पहला कारक—यानी औसत से काफ़ी कम बुद्धि—को बुद्धि परीक्षणों द्वारा निर्धारित किया जाता है; इन परीक्षणों से ही 'बुद्धि लब्धि' (IQ) प्राप्त की जाती है। किसी व्यक्ति द्वारा प्राप्त IQ अंकों के आधार पर, उसे किसी विशेष स्तर के 'मानसिक मंदन' (mental retardation) से ग्रस्त के रूप में वर्गीकृत किया जाता है; इस वर्गीकरण में 'सीमावर्ती बुद्धि' (जो मंदन नहीं है), 'हल्का मानसिक मंदन', 'मध्यम मानसिक मंदन', 'गंभीर

मानसिक मंदन' और 'अत्यंत गंभीर मानसिक मंदन' शामिल हैं। IQ जितना कम होता है, मंदन की गंभीरता का स्तर उतना ही अधिक होता है।

वर्तमान में IQ पर आधारित वर्गीकरण इस प्रकार है:

90 से 110 औसत बुद्धि

70 से 90 सीमांत बुद्धि

50 से 69 हल्का मानसिक मंदन

35 से 49 मध्यम मानसिक मंदन

20 से 34 गंभीर मानसिक मंदन

20 से कम अत्यधिक गंभीर मानसिक मंदन

वर्गीकरण करते समय यह चेतावनी भी दी जाती है कि केवल बुद्धि-कौशल ही निर्णायक मापदंड नहीं होना चाहिए और अनुकूलन व्यवहार संबंधी कमियों पर भी विचार किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, प्रत्येक कट-ऑफ बुद्धि-कौशल में पाँच अंकों का ओवरलैप दिया जाता है। उदाहरण के लिए, 70-75 को हल्का मानसिक मंदता माना जा सकता है यदि अनुकूलन व्यवहार मूल्यांकन से ऐसा निर्णय लेने की संभावना हो। भारत में बौद्धिक कार्यप्रणाली के आकलन के लिए उपयोग किए जाने वाले कुछ मानकीकृत परीक्षणों में शामिल हैं:

- बिनेट कामत बुद्धि परीक्षण
- भारतीय बच्चों के लिए मैलिन बुद्धि पैमाना
- सेगुइन फॉर्म बोर्ड
- रेवेन्स प्रोग्रेसिव मैट्रिक्स।

परीक्षण केवल प्रशिक्षित मनोवैज्ञानिकों द्वारा ही किया जाना चाहिए, और वर्गीकरण करने से पहले उसका सावधानीपूर्वक विश्लेषण किया जाना चाहिए।

सामान्य या औसत बुद्धि (Normal Intelligence): जिन लोगों का इंटेलिजेंस टेस्ट में स्कोर 84-85 से 115-116 के बीच आता है, उन्हें औसत बुद्धि वाला माना जाता है। इस समूह में लगभग 68 प्रतिशत आबादी शामिल है। जिन लोगों का स्कोर 116 से ज़्यादा होता है, उन्हें औसत से ज़्यादा बुद्धि वाला या प्रतिभाशाली माना जाता है।

सीमांत बुद्धि (Borderline intelligence): अगर किसी व्यक्ति का IQ स्कोर 68-70 से 83-84 के बीच आता है, तो इसका मतलब है कि उसकी बुद्धि सीमांत स्तर की है। इन लोगों को मानसिक रूप से मंद नहीं माना जाता, क्योंकि उन्हें अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी के काम करने में कोई दिक्कत नहीं होती। इस समूह में लगभग 14 प्रतिशत आबादी शामिल है। शिक्षक इन्हें 'धीमे सीखने वाले' (slow learners) के तौर पर पहचानते हैं।

हल्का (Mild लगभग IQ 50-70): इसमें लगभग 85% मामले शामिल हैं। इन व्यक्तियों में अक्सर सामाजिक/संचार कौशल विकसित हो जाते हैं; उन्हें रोज़मर्रा के जटिल कामों में मदद की ज़रूरत होती है, और वे स्वतंत्र रूप से या बहुत कम मदद के साथ रह सकते हैं।

मध्यम (Moderate लगभग IQ 35-50): इसमें लगभग 10% मामले शामिल हैं। इसकी पहचान धीमी गति से होने वाले विकास से होती है; ऐसे व्यक्तियों को रोज़मर्रा के कामों, रोज़गार और सामाजिक मेलजोल के लिए लगातार मदद की ज़रूरत होती है।

गंभीर (Severe लगभग IQ 20-35): इसमें लगभग 4% मामले शामिल हैं। ऐसे व्यक्तियों को रोज़मर्रा के जीवन और सुरक्षा के लिए लगातार, उच्च-स्तरीय मदद की ज़रूरत होती है; अक्सर उनके संचार कौशल सीमित होते हैं।

अत्यंत गंभीर (Profound IQ 20 से कम): इसमें लगभग 1% मामले शामिल हैं। ऐसे व्यक्तियों को रोज़मर्रा के जीवन की सभी गतिविधियों के लिए 24 घंटे नर्सिंग देखभाल, निगरानी और बहुत ज़्यादा मदद की ज़रूरत होती है।

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

शिक्षित करने योग्य श्रेणी का I Q स्तर ..... के मध्य तक होता है|

प्रत्येक दिव्यांग बच्चे के लिए एक ..... लागू की जानी चाहिए|

सीमांत बुद्धि स्तर वाले बच्चे .....के तौर पर पहचाने जाते हैं।

2.5 अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण

2.5.1 AAMR के अनुसार वर्गीकरण

अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ़ मेंटल रिटार्डेशन (AAMR) ने मानसिक मंदता के स्तरों को वर्गीकृत करने के आधार के रूप में बुद्धि परीक्षण (Intelligence Test) के अंकों का उपयोग किया है। मानसिक मंदता की गंभीरता यह बताती है कि कोई व्यक्ति किस संभावित स्तर तक कार्य करने में सक्षम हो सकता है। यह उन समस्याओं के प्रकार का भी संकेत देती है, जिनकी अपेक्षा की जा सकती है कि वे व्यक्ति स्वयं के लिए, अपने परिवार के लिए और अपने समुदाय के लिए उत्पन्न कर सकते हैं। AAMR के अनुसार, मंदता के विभिन्न स्तरों के लिए प्रयुक्त शब्दावली और IQ सीमाएँ नीचे दी गई हैं:

S. No	Degree of Retardation	IQ Range
1.	Profoundly Retarded	0 to 24
2.	Severely Retarded	25 to 39
3.	Moderately Retarded	40 to 54
4.	Mildly Retarded	55 to 69
5.	Borderline	70 to 84

गंभीर रूप से मंदबुद्धि लोगों में आमतौर पर केंद्रीय तंत्रिका तंत्र (Central Nervous System) में काफी ज़्यादा गड़बड़ी होती है, और उनमें शारीरिक विकृतियाँ भी असामान्य रूप से अधिक पाई जाती हैं। मानसिक मंदता के अलावा, इनमें अक्सर अन्य प्रकार की विकलांगताएँ भी देखने को मिलती हैं—जैसे कि अंधापन, बहरापन, मिर्गी और शारीरिक तालमेल में भारी कमी। इनमें बोलने की क्षमता आमतौर पर नहीं होती, और इनका संवेदी-गामक (sensory-motor) विकास भी बहुत कमज़ोर होता है। अक्सर इनमें सिर पटकना, काटना जैसी दोहराव वाली हरकतें देखी जा सकती हैं। इन्हें लगातार देखभाल और निगरानी की ज़रूरत होती है, और अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए ये पूरी तरह से दूसरों पर निर्भर रहते हैं।

गंभीर रूप से मंदबुद्धि लोग भी वही लक्षण और समस्याएँ दिखाते हैं जो अत्यंत मंदबुद्धि लोगों में पाई जाती हैं, लेकिन उनमें ये लक्षण कुछ कम मात्रा में होते हैं। ज़्यादातर मामलों में, उनके केंद्रीय तंत्रिका तंत्र को काफ़ी नुकसान पहुँचा होता है, साथ ही उनमें मस्तिष्क संबंधी विकार और अन्य विकलांगताएँ भी मौजूद होती हैं। उनका शारीरिक विकास, बोलने की क्षमता और भाषा का विकास भी धीमा होता है। वे अक्सर शारीरिक रूप से विकलांग होते हैं, लेकिन हमेशा ऐसा नहीं होता। वे दूसरों पर निर्भर तो होते हैं, लेकिन पूरी तरह से नहीं; और उनमें से कई लोगों को चिकित्सा और नर्सिंग देखभाल की ज़रूरत पड़ती है।

गंभीर और अति-गंभीर रूप से मंदबुद्धि लोगों की तुलना में, मध्यम रूप से मंदबुद्धि लोग कम जटिल तंत्रिका-शारीरिक स्थितियाँ दर्शाते हैं। इनमें अन्य प्रकार की विकलांगताएँ भी कम ही पाई जाती हैं। अधिकांश मामलों में, इनका गत्यात्मक विकास (motor development) ठीक-ठाक होता है। इनमें भाषा और बोलने की क्षमता विकसित की जा सकती है; मस्तिष्क को हुई किसी जैविक क्षति वाले मामलों को छोड़कर, बाकी सभी मामलों में ये लोग कुछ हद तक दूसरों पर निर्भर होते हैं। ये लोग उन विशेष प्रशिक्षणों से

लाभ उठाने में सक्षम होते हैं, जिनका उद्देश्य इनमें 'स्व-सहायता कौशल' और 'सामाजिक जागरूकता' का विकास करना होता है। इन्हें 'प्रशिक्षण-योग्य मानसिक रूप से मंदबुद्धि' (Trainable Mentally Retarded) या संक्षेप में TMR भी कहा जाता है।

कुल मानसिक मंदता में से 85 प्रतिशत हल्के मानसिक मंदता वाले बच्चे होते हैं। शारीरिक विशेषताओं के मामले में वे औसत से कम होते हैं। उनका विकास, चलना-फिरना, बोलना, खाना-पीना और शौचालय का प्रशिक्षण आमतौर पर धीमा होता है। निदान में सहायक कुछ ही शारीरिक लक्षण दिखाई देते हैं, लेकिन किसी बच्चे को मानसिक रूप से मंद के रूप में पहचानना आमतौर पर एक या दो साल की उम्र तक संभव नहीं होता। उनका शारीरिक विकास अपेक्षाकृत सामान्य होता है, आँख-हाथ का समन्वय सामान्य से थोड़ा कम होता है, और विशेष प्रशिक्षण से सामाजिक और संचार कौशल विकसित हो सकते हैं। उन्हें सीमित स्तर तक शिक्षित किया जा सकता है और आमतौर पर उन्हें शिक्षायोग्य मानसिक मंदता (EMR) कहा जाता है। प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद वयस्क प्रतिस्पर्धी रोजगार में काम कर सकते हैं और स्वतंत्र जीवन जी सकते हैं।

2.5.2 वर्गीकरण के मापदंड (Criteria for Classification):

अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण तीन मुख्य स्तंभों पर आधारित है, जिनका मूल्यांकन विस्तृत नैदानिक जांच, केस हिस्ट्री और मानकीकृत परीक्षणों के माध्यम से किया जाता है:

बौद्धिक कार्यक्षमता (Intellectual Functioning): यह सामान्य मानसिक क्षमता (सीखना, तर्क करना, समस्या-समाधान) को संदर्भित करती है। जनसंख्या के सामान्य मानकों से लगभग दो या उससे अधिक मानक विचलन (standard deviations) कम स्कोर (आमतौर पर IQ \(\le \) 70 से 75) एक महत्वपूर्ण सीमा या कमी को दर्शाता है।

अनुकूलक व्यवहार (Adaptive Behavior): यह उन व्यावहारिक, वैचारिक और सामाजिक कौशलों को संदर्भित करता है जो दैनिक जीवन में कार्य करने के लिए सीखे

जाते हैं (जैसे, संचार, स्वच्छता, आवागमन/परिवहन का उपयोग)। इनमें से कम से कम किसी एक क्षेत्र में कमी (माध्य से दो या उससे अधिक मानक विचलन कम) होना आवश्यक है।

शुरुआत की उम्र (Age of Onset): ID के रूप में वर्गीकृत होने के लिए, यह स्थिति विकास की अवधि के दौरान उत्पन्न होनी चाहिए, जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 18 वर्ष की आयु से पहले (या कुछ विशेष ढांचों में 22 वर्ष की आयु तक) के रूप में परिभाषित किया गया है।

वर्तमान वैश्विक प्रथाएँ और दिशानिर्देश: अंतर्राष्ट्रीय प्रमाणन और चिकित्सा वर्गीकरण मुख्य रूप से दो प्रमुख ढाँचों द्वारा निर्देशित होते हैं:

ICD-11: विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) द्वारा संचालित, 'रोगों का अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण, 11वाँ संशोधन' (International Classification of Diseases, 11th Revision), इसे बौद्धिक विकास के विकार के रूप में वर्गीकृत करता है, और कार्यप्रणाली तथा स्वास्थ्य के संतुलित दृष्टिकोण पर ज़ोर देता है।

DSM-5-TR: अमेरिकन साइकियाट्रिक एसोसिएशन (APA) द्वारा प्रकाशित, 'मानसिक विकारों का नैदानिक और सांख्यिकीय मैनुअल' (Diagnostic and Statistical Manual of Mental Disorders), स्थानीयकृत और नैदानिक मानदंड प्रदान करता है, जो सहायता के अनुरूप प्रोफाइल पर केंद्रित होते हैं।

सर्टिफिकेशन में मुद्दे और चुनौतियाँ (Issues and Challenges in Certification)—

सांस्कृतिक और भाषाई पूर्वाग्रह (Cultural and Linguistic Bias): मानकीकृत IQ और अनुकूलन व्यवहार परीक्षणों को अक्सर पश्चिमी आबादी के हिसाब से सामान्यीकृत किया जाता है। अलग-अलग भाषाई या सांस्कृतिक संदर्भों में बिना सत्यापन के इन्हें लागू करने से गलत निदान हो सकता है।

"फ्लिन प्रभाव" (The "Flynn Effect"): मानकीकृत परीक्षणों को समय-समय पर अपडेट किया जाना चाहिए क्योंकि कच्चा IQ स्कोर पीढ़ियों के साथ स्वाभाविक रूप से

बढ़ता है। नवीनतम, फिर से सामान्यीकृत परीक्षण संस्करणों का उपयोग न करने से स्कोर बढ़ा-चढ़ाकर दिखाए जाते हैं।

स्थिर बनाम गतिशील प्रकृति (Static vs. Dynamic Nature): अनुकूलन कौशल स्थिर नहीं होते; निरंतर व्यक्तिगत सहायता से उनमें सुधार हो सकता है। सर्टिफिकेशन प्रक्रियाएँ अक्सर ID (बौद्धिक अक्षमता) को एक स्थायी लेबल मानती हैं, और कभी-कभी इस बात पर ध्यान नहीं देतीं कि पर्यावरणीय कारक और प्रशिक्षण समय के साथ किसी व्यक्ति की क्षमताओं को कैसे बढ़ा सकते हैं।

शीघ्र पहचान में बाधाएँ (Early Identification Hurdles): पाँच वर्ष की आयु से पहले ID का निदान करना अत्यधिक अविश्वसनीय हो सकता है क्योंकि बचपन के शुरुआती विकासात्मक पड़ाव (milestones) बहुत अलग-अलग होते हैं। कई देश पाँच वर्ष से कम उम्र के बच्चों को ID के बजाय 'ग्लोबल डेवलपमेंटल डिले' (GDD) की श्रेणी में रखते हैं। GDD के लिए बार-बार सर्टिफिकेशन की आवश्यकता होती है, जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता है।

2.6 सारांश

प्रस्तुत इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप बौद्धिक अक्षमता के चिकित्सीय, शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक आधार पर किये गए वर्गीकरण के बारे में अवगत हो चुके होंगे| | साथ ही अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर किये गए वर्गीकरण को समझ चुके होंगे| अलग-अलग तरह की शारीरिक, मानसिक या संवेदी स्थितियों वाले व्यक्तियों को समझने, उनका समर्थन करने और उनके अधिकारों को सुनिश्चित करने के लिए दिव्यांगता का वर्गीकरण अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह केवल किसी को कोई लेबल देने तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य सहायता, शिक्षा, रोज़गार और कानूनी अधिकारों से जुड़ी ज़रूरतों की पहचान करके एक समावेशी समाज का निर्माण करना है।

2.7 शब्दावली

Individual Education Plan (IEP) - व्यक्तिगत शिक्षा योजना

Early Identification- शीघ्र पहचान

Intelligence Test - बुद्धि परीक्षण

2.8 अभ्यास प्रश्नो के उत्तर

2.4 (1) 50-70, (2) व्यक्तिगत शिक्षा योजना (IEP), (3) 'धीमे सीखने वाले' (slow learners)

2.9 संदर्भ ग्रंथ सूची

https://www.psychiatry.org/patients-families/intellectual-disability/what-is-intellectual-disability

https://www.ncbi.nlm.nih.gov/books/NBK332877/

https://teachers.institute/interventions-intellectual-disability/classifying-intellectual-disability-iq-education-support/

https://www.ncbi.nlm.nih.gov/books/NBK332877/

2.10 निबंधात्मक प्रश्न

1. बौद्धिक अक्षमता के शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक वर्गीकरण का वर्णन कीजिये?

2. बौद्धिक अक्षमता के अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण से आप क्या समझते हैं? विस्तार से समझाइये?

इकाई 3 बौद्धिक अक्षमता और उससे जुड़ी स्थितियाँ – जैसे सेरेब्रल पाल्सी, ऑटिज़्म, संवेदी अक्षमताएँ, अटेंशन डेफिसिट हाइपरएक्टिविटी डिसऑर्डर (ADHD), मिर्गी

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 बौद्धिक अक्षमता और उससे जुड़ी स्थितियाँ

3.4 बौद्धिक अक्षमता और उससे जुड़ी स्थितियाँ – सेरेब्रल पाल्सी

3.5 बौद्धिक अक्षमता और उससे जुड़ी स्थितियाँ – ऑटिज़्म

3.6 बौद्धिक अक्षमता और उससे जुड़ी स्थितियाँ – संवेदी अक्षमता

3.7 बौद्धिक अक्षमता और उससे जुड़ी स्थितियाँ – अटेंशन डेफिसिट हाइपरएक्टिविटी डिसऑर्डर (ADHD)

3.8 बौद्धिक अक्षमता और उससे जुड़ी स्थितियाँ – मिर्गी

3.9 सारांश

3.10 शब्दावली

3.11 अभ्यास प्रश्नो के उत्तर

3.12 संदर्भ ग्रंथ सूची

3.13 निबंधात्मक प्रश्न

3.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में बौद्धिक अक्षमता ओर उससे जुड़ी स्थितियों के संबंध में चर्चा की गयी है| बौद्धिक अक्षमता के साथ-साथ विकास से जुड़ी अन्य समस्याएं (जैसे ऑटिज़्म और अटेंशन-डेफ़िसिट हाइपरएक्टिविटी डिसऑर्डर) भी हो सकती हैं। एक ही व्यक्ति में कई बीमारियां या स्थितियां (को-मॉर्बिडिटी) होना आम बात है। इनमें समस्यापूर्ण व्यवहार (problem behaviours) विशेष रूप से आम हैं। अनुकूलन कौशल की कमी और विकास के पड़ावों को हासिल करने में देरी - ये ID (बौद्धिक अक्षमता) वाले लोगों की मुख्य विशेषताएं हैं। इनमें से कुछ लोगों को अतिरिक्त अक्षमताएं भी हो सकती हैं, जो उनकी कठिनाइयों को और बढ़ा देती हैं। जब किसी बच्चे को मानसिक विकलांगता के साथ-साथ सेरेब्रल पाल्सी की समस्या भी होती है, तो विकास में देरी और बढ़ जाती है। उसे फिजियोथेरेपी, ऑक्यूपेशनल थेरेपी और स्पीच थेरेपी की ज़रूरत होगी। ऑटिज़्म और बौद्धिक अक्षमता (ID) के बीच काफी समानता या जुड़ाव होता है। इसे 'कोमॉर्बिडिटी' (comorbidity) कहा जाता है और यह जितना लोग सोचते हैं, उससे कहीं ज़्यादा आम है। आपको मानसिक रूप से अक्षम कुछ ऐसे बच्चे मिलेंगे जो देख या सुन नहीं सकते (या दोनों ही दिक्कतें हो सकती हैं)। इसलिए, बौद्धिक अक्षमता के कारण सीखने में आने वाली सीमाओं के अलावा, इन बच्चों की मुश्किलें इसलिए और बढ़ जाती हैं क्योंकि वे सीखने के लिए इन इंद्रियों का इस्तेमाल नहीं कर पाते। मानसिक रूप से पिछड़े बहुत से लोगों को मिर्गी के दौरे पड़ते हैं। हालाँकि, याद रखें कि इसका उल्टा सच नहीं है - जिन लोगों को मिर्गी के दौरे पड़ते हैं, वे सभी मानसिक रूप से पिछड़े नहीं होते। बौद्धिक अक्षमता (ID) वाले बच्चों में ADHD के लक्षणों और कारणों के बारे में बहुत कम जानकारी है, क्योंकि कम सोचने-समझने की क्षमता (IQ स्कोर 70 से कम) वाले बच्चों को अक्सर ADHD से जुड़ी स्टडीज़ में शामिल नहीं किया जाता है। जबकि इस बात के सबूत मौजूद हैं कि ID वाले बच्चों में ADHD ज़्यादा आम है और ID की गंभीरता बढ़ने के साथ इसका जोखिम भी बढ़ जाता है।

3.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप-

- व्यक्ति में बौद्धिक अक्षमता और उससे जुड़ी अन्य स्थितियों/ दिव्यांगताओं के बारे में जान सकेंगे|
- व्यक्ति में बौद्धिक अक्षमता और उससे जुड़ी सेरेब्रल पाल्सी दिव्यांगता के बारे में जान सकेंगे |
- व्यक्ति में बौद्धिक अक्षमता और उससे जुड़ी ऑटिज़्म दिव्यांगता के बारे में जान सकेंगे |
- व्यक्ति में बौद्धिक अक्षमता और उससे जुड़ी विभिन्न संवेदी अक्षमताओं के बारे में जान सकेंगे |
- व्यक्ति में बौद्धिक अक्षमता और उससे जुड़ी अटेंशन डेफिसिट हाइपरएक्टिविटी डिसऑर्डर के बारे में जान सकेंगे |
- व्यक्ति में बौद्धिक अक्षमता और उससे जुड़ी मिर्गी के बारे में जान सकेंगे |

3.3 बौद्धिक अक्षमता और उससे जुड़ी स्थितियाँ

बौद्धिक अक्षमता (या ID) शब्द का इस्तेमाल तब किया जाता है जब किसी व्यक्ति की सोचने-समझने की क्षमता और कौशल में कुछ कमियां होती हैं। इन कौशलों में कॉन्सेप्ट से जुड़े, सामाजिक और व्यावहारिक कौशल शामिल हैं, जैसे कि भाषा, सामाजिक व्यवहार और अपनी देखभाल से जुड़े कौशल।

AAIDD (2010) के अनुसार, बौद्धिक अक्षमता (Intellectual Disability) एक ऐसी अक्षमता है जिसमें बौद्धिक कामकाज और अनुकूलन व्यवहार (adaptive behaviour) दोनों में महत्वपूर्ण सीमाएँ होती हैं; इसमें रोज़मर्रा के कई सामाजिक और व्यावहारिक कौशल शामिल हैं। यह अक्षमता 18 साल की उम्र से पहले शुरू होती है। पहले ID की

परिभाषा केवल व्यक्ति की संज्ञानात्मक क्षमता (cognitive ability) में कमी पर केंद्रित थी। अब इसमें संज्ञानात्मक कामकाज और रोज़मर्रा की ज़िंदगी में कार्यात्मक कौशल (अनुकूलन कौशल), दोनों में कमी शामिल है।

कम आय वाले देशों में बौद्धिक अक्षमता (intellectual disability) काफी ज़्यादा आम है—हर 1,000 लोगों में से 16.41 लोग इससे प्रभावित हैं। प्रभावित लोगों में से लगभग 85% को हल्की बौद्धिक अक्षमता होती है। इसकी सही दर का पता लगाना मुश्किल है क्योंकि हल्की अक्षमताओं की पहचान अक्सर बचपन में देर से हो पाती है। बौद्धिक अक्षमता के मामले 10 से 14 साल की उम्र में सबसे ज़्यादा देखे जाते हैं और यह महिलाओं की तुलना में पुरुषों में 1.5 गुना ज़्यादा आम है। प्रसार (prevalence) से जुड़ी स्टडीज़ में बौद्धिक अक्षमता वाले सभी लोगों की पहचान नहीं हो पाती है। स्कूल जाने की उम्र के कई बच्चों में बौद्धिक अक्षमता के बजाय लर्निंग डिसेबिलिटी (सीखने में अक्षमता), डेवलपमेंटल डिले (विकास में देरी), व्यवहार संबंधी विकार या ऑटिज़्म का पता चलता है। दुनिया की लगभग 1-3% आबादी—यानी 20 करोड़ लोग—बौद्धिक अक्षमता से प्रभावित हैं। नॉन-सिंड्रोमिक या इडियोपैथिक ID के मामले कुल मामलों का 30-50% होते हैं। लगभग एक-चौथाई मामले जेनेटिक विकार (आनुवंशिक विकार) के कारण होते हैं।

बौद्धिक अक्षमता के साथ-साथ विकास से जुड़ी अन्य समस्याएं (जैसे ऑटिज़्म और अटेंशन-डेफ़िसिट हाइपरएक्टिविटी डिसऑर्डर) भी हो सकती हैं। इन स्थितियों के बारे में लोगों में जागरूकता तो बढ़ी है, लेकिन कई स्वास्थ्य सेवाएं इनके हिसाब से ज़रूरी और असरदार सेवा देने में धीमी रही हैं; इसलिए, इन स्थितियों वाले लोगों के परिवारों में सेवाओं को लेकर असंतोष बढ़ा है।

इससे जुड़ी स्थितियां अलग-अलग तरह की होती हैं और अक्सर इनका इलाज नहीं हो पाता; साथ ही, एक ही व्यक्ति में कई बीमारियां या स्थितियां (को-मॉर्बिडिटी) होना आम बात है। इनमें समस्यापूर्ण व्यवहार (problem behaviours) विशेष रूप से आम हैं।

बौद्धिक अक्षमता (ID) विकास से जुड़ी एक स्थिति है, जिसमें सोचने-समझने की क्षमता औसत से कम (आमतौर पर IQ 70 से कम) होती है और रोज़मर्रा के कामों में ढलने या अनुकूलन करने वाले व्यवहार में काफ़ी कमियाँ होती हैं। अक्सर इसके साथ-साथ शारीरिक, न्यूरोलॉजिकल और मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी अन्य समस्याएँ भी होती हैं, जैसे कि ऑटिज़्म, मिर्गी और सेरेब्रल पाल्सी; जिनके लिए कई तरह के विशेषज्ञों की मदद से समग्र चिकित्सा देखभाल की ज़रूरत होती है।

मानसिक क्षमताओं का सीमित होना जिससे बौद्धिक कामकाज कम हो जाता है, अनुकूलन कौशल की कमी और विकास के पड़ावों को हासिल करने में देरी - ये ID (बौद्धिक अक्षमता) वाले लोगों की मुख्य विशेषताएं हैं। इनमें से कुछ लोगों को अतिरिक्त अक्षमताएं भी हो सकती हैं, जो उनकी कठिनाइयों को और बढ़ा देती हैं। नीचे कुछ ऐसी अक्षमताएं दी गई हैं जो आमतौर पर बौद्धिक अक्षमता से जुड़ी होती हैं

3.4 बौद्धिक अक्षमता और उससे जुड़ी स्थितियाँ – सेरेब्रल पाल्सी

सेरेब्रल पाल्सी (CP) ऐसी बीमारियों का एक समूह है जो किसी व्यक्ति की चलने-फिरने और शरीर का संतुलन व सही मुद्रा (पोस्चर) बनाए रखने की क्षमता पर असर डालती हैं।

"सेरेब्रल" का मतलब है दिमाग से जुड़ा हुआ।

"पाल्सी" का मतलब है मांसपेशियों में कमज़ोरी या उनके इस्तेमाल में दिक्कत।

CP (सेरेब्रल पाल्सी) का कारण दिमाग का असामान्य विकास या विकसित हो रहे दिमाग को पहुँची चोट है, जिससे व्यक्ति की मांसपेशियों पर नियंत्रण रखने की क्षमता प्रभावित होती है। CP बचपन में होने वाली सबसे आम मोटर विकलांगता है।

सेरेब्रल पाल्सी (CP) न्यूरोलॉजिकल विकारों का एक समूह है जो शिशु अवस्था या बचपन की शुरुआत में होता है और शरीर की गति और मांसपेशियों के तालमेल पर

स्थायी रूप से असर डालता है। CP की व्यापकता का पता अप्रत्यक्ष रूप से नवजात विकारों और संक्रामक रोगों के सभी परिणामों को जोड़कर लगाया गया था। इनमें समय से पहले जन्म/कम जन्म वजन, जन्म के समय ऑक्सीजन की कमी (asphyxia) और चोट के कारण नवजात मस्तिष्क विकार (encephalopathy), नवजात सेप्सिस, और अन्य नवजात संक्रमण, साथ ही हेमोलिटिक बीमारी और अन्य नवजात पीलिया शामिल हैं, जिनमें मध्यम से गंभीर मोटर विकार का उल्लेख हो। CP के इन मूल कारणों की पहचान 'इंटरनेशनल क्लासिफिकेशन ऑफ डिसीज़, टेंथ रिविज़न' (ICD-10) कोड का उपयोग करके संबंधित साहित्य की व्यवस्थित समीक्षा से की गई थी। हल्के मोटर विकार वाले बच्चों, विशेष रूप से वे जो बिना किसी मदद के चल-फिर सकते हैं, उन्हें डेटाबेस से बाहर रखा गया था क्योंकि यह माना गया था कि उन्हें रिहैबिलिटेशन (पुनर्वास) की आवश्यकता होने की संभावना कम थी।

CP के लक्षण हर व्यक्ति में अलग-अलग होते हैं। गंभीर CP वाले व्यक्ति को चलने-फिरने के लिए खास उपकरणों की ज़रूरत पड़ सकती है या हो सकता है कि वह बिल्कुल भी न चल पाए और उसे जीवन भर देखभाल की ज़रूरत हो। वहीं, हल्के CP वाले व्यक्ति के चलने का तरीका थोड़ा अजीब हो सकता है, लेकिन उन्हें किसी खास मदद की ज़रूरत नहीं पड़ती। CP समय के साथ और खराब नहीं होता, हालांकि व्यक्ति के जीवनकाल में इसके लक्षण बदल सकते हैं।

मानसिक अक्षमता वाले लोगों में मोटर अक्षमता का एक आम कारण सेरेब्रल पाल्सी है। सेरेब्रल पाल्सी और मानसिक अक्षमता के बीच संबंध है। सेरेब्रल पाल्सी वाले कम से कम 25 प्रतिशत लोगों को मानसिक अक्षमता भी होती है। सेरेब्रल पाल्सी एक ऐसी स्थिति है जिसमें दिमाग को नुकसान पहुँचने के कारण शरीर के अंगों और हिलने-डुलने से जुड़ी अन्य गतिविधियों पर असर पड़ता है। इससे शरीर का संतुलन और तालमेल बिगड़ जाता है। दिमाग की चोट शरीर के एक या दोनों तरफ, और एक या ज़्यादा अंगों को प्रभावित कर सकती है। चोट के कारण प्रभावित अंगों की मांसपेशियों में असामान्य रूप से ज़्यादा तनाव (मसल टोन) हो सकता है, जिससे हिलना-डुलना मुश्किल हो जाता है; या तनाव

असामान्य रूप से कम हो सकता है, जिससे अंग ढीले-ढाले हो जाते हैं। कुछ मामलों में, व्यक्ति के शरीर में अनैच्छिक हरकतें (बिना इच्छा के होने वाली हरकतें) भी हो सकती हैं।

इसलिए, जब किसी बच्चे को मानसिक विकलांगता के साथ-साथ सेरेब्रल पाल्सी की समस्या भी होती है, तो विकास में देरी और बढ़ जाती है। उसे फिजियोथेरेपी, ऑक्यूपेशनल थेरेपी और स्पीच थेरेपी की ज़रूरत होगी। ऐसे कई लोगों को खास तरह की सीटों, बदले हुए आकार वाले चम्मच/पेंसिल, और चलने में मदद करने वाले उपकरणों या व्हीलचेयर जैसी चीज़ों की ज़रूरत होती है।

अभ्यास प्रश्न

3.4 .1 रिक्त स्थान –

1- सेरेब्रल" का मतलब है ..... से जुड़ा हुआ।

2- सेरेब्रल पाल्सी (CP) न्यूरोलॉजिकल ..... का एक समूह है

3.5 बौद्धिक अक्षमता और उससे जुड़ी स्थितियाँ – ऑटिज़्म

ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम (AS) और इंटेलेक्चुअल डिसेबिलिटी (ID) दोनों ही न्यूरो-डेवलपमेंटल स्थितियाँ हैं, जिनका कामकाज और सहायता की ज़रूरतों पर अलग-अलग और विविध प्रभाव पड़ता है। सामाजिक मेलजोल और बातचीत में कठिनाई, सीमित या बार-बार दोहराए जाने वाले व्यवहार और सेंसरी प्रोसेसिंग में बदलाव AS की पहचान हैं, जबकि ID की पहचान बौद्धिक (यानी इंटेलिजेंस कोशिएंट (IQ) स्कोर का आबादी के औसत से दो स्टैंडर्ड डेविएशन या उससे ज़्यादा कम होना) और एडेप्टिव कामकाज (यानी रोज़मर्रा के जीवन के कौशल) में कमी के आधार पर की जाती है (अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन, 2013)।

ऑटिज़्म एक ऐसी स्थिति है जिसमें व्यक्ति का सामाजिक और बातचीत का व्यवहार सामान्य नहीं होता। इसकी पहचान सामाजिक कौशल सीखने और दूसरों के साथ घुलने-मिलने में कठिनाई और देरी से होती है। ऑटिज़्म वाले बच्चे लोगों के साथ रहना या उनसे बातचीत करना पसंद नहीं करते - दूसरे शब्दों में, वे सामाजिक रूप से प्रतिक्रिया नहीं देते। आमतौर पर, वे आँखों में आँखें डालकर बात नहीं करते और गले लगने या गोद में उठाए जाने का विरोध करते हैं। भाषा सीखने में देरी हो सकती है या भाषा का विकास नहीं हो पाता, जिससे बातचीत में गंभीर कठिनाइयाँ आती हैं। गंभीर सामाजिक और भाषाई समस्याओं के अलावा, अन्य लक्षणों में समझने-बूझने से जुड़ी समस्याएँ शामिल हैं, जैसे रोशनी, स्पर्श और आवाज़ पर बहुत ज़्यादा प्रतिक्रिया देना; संतुलन बनाने में कठिनाई और असामान्य शारीरिक हरकतें, जैसे हर समय आगे-पीछे हिलना-डुलना; बदलाव का विरोध करना और हर दिन एक ही तरह की चीज़ें करने पर ज़ोर देना, जैसे केवल एक ही तरह का खाना खाना, रोज़ाना की दिनचर्या को बिल्कुल एक ही तरह से निभाना, और घर में फर्नीचर की व्यवस्था में बदलाव को बर्दाश्त न कर पाना। ऑटिज़्म वाले लगभग 75 प्रतिशत लोग मानसिक रूप से भी कमज़ोर (मंदबुद्धि) होते हैं। ऑटिज़्म की शुरुआत तीन साल की उम्र से पहले ही हो जाती है।

असल में, ऑटिज़्म और बौद्धिक अक्षमता (ID) के बीच काफी समानता या जुड़ाव होता है। इसे 'कोमॉर्बिडिटी' (comorbidity) कहा जाता है और यह जितना लोग सोचते हैं, उससे कहीं ज़्यादा आम है।

जब ऑटिज़्म और ID दोनों ही मौजूद हों, तो चुनौतियाँ और बढ़ जाती हैं—सिर्फ़ बच्चे के विकास में ही नहीं, बल्कि शिक्षा, थेरेपी और रोज़मर्रा की ज़िंदगी से जुड़े तौर-तरीकों में भी।

इसीलिए इस संबंध को समझना बहुत ज़रूरी है। इससे परिवारों, शिक्षकों और हम जैसे पेशेवरों को व्यक्ति की ज़रूरतों के हिसाब से सही और व्यक्तिगत मदद देने में मदद मिलती है।

ऑटिज़्म और बौद्धिक अक्षमता से जुड़ी ये परेशानियाँ स्वाभाविक रूप से सीखने की प्रक्रिया में कठिनाई पैदा करती हैं। मल्टी-सेंसरी इनपुट (कई इंद्रियों का इस्तेमाल करने वाली तकनीक) का उपयोग करने वाली शैक्षिक और चिकित्सीय रणनीतियाँ बच्चे में कुछ प्रगति लाने में मदद करती हैं, लेकिन प्रगति की गति बहुत धीमी होती है। यदि बच्चा बिना अक्षमता वाले बच्चों के साथ स्कूल जा पाता है, तो इससे उसकी प्रगति में मदद मिलती है।

3.6 बौद्धिक अक्षमता और उससे जुड़ी स्थितियाँ – संवेदी अक्षमता

बौद्धिक अक्षमता (ID) वाले लोगों को ऐसे लोगों के तौर पर परिभाषित किया जा सकता है जिनका IQ 70 या उससे कम हो, जिनमें अनुकूलन व्यवहार (adaptive behaviour) में कमियां या अक्षमताएं हों, और जिनकी अक्षमता 18 साल की उम्र से पहले शुरू हुई हो (अमेरिकन साइकियाट्रिक एसोसिएशन (APA) 1994)।

बौद्धिक अक्षमता दूसरी अक्षमताओं के साथ भी हो सकती है; जैसे कि सेरेब्रल पाल्सी, मिर्गी, मानसिक बीमारी और संवेदी अक्षमता। संवेदी अक्षमता अलग-अलग स्तरों पर हो सकती है और इसमें कई इंद्रियां शामिल हो सकती हैं। संवेदी अक्षमता पर ध्यान नहीं दिया जा सकता है, खासकर उन लोगों में जिन्हें गंभीर बौद्धिक अक्षमता है और जिनकी बातचीत करने की क्षमता कम है।

देखभाल करने वाले और पेशेवर लोग व्यवहार से जुड़े लक्षणों को किसी अतिरिक्त विकलांगता के बजाय व्यक्ति की ID (बौद्धिक विकलांगता) का ही हिस्सा मान सकते हैं (इसे 'डायग्नोस्टिक ओवरशैडोइंग' कहते हैं)। देखभाल करने वालों और स्टाफ़ को सेंसरी इम्पेयरमेंट (संवेदी अक्षमता) के संभावित संकेतों को पहचानने के लिए प्रशिक्षित करना फ़ायदेमंद है (Yeates 1991)। इसके बाद विशेषज्ञ सेवाओं द्वारा सही जाँच की जानी चाहिए। हालाँकि, ऐसी सेवाएँ हमेशा उपलब्ध नहीं होती हैं (Yeates 1991)।

इंद्रियों से जुड़ी कमियों और बौद्धिक अक्षमता (ID) के एक साथ होने से व्यक्ति में व्यवहार संबंधी समस्याएं और मानसिक बीमारियां होने का खतरा बढ़ सकता है। ऐसी कई तरह की अक्षमताओं वाले बच्चे अपनी कमियों के प्रति माता-पिता और साथियों की प्रतिक्रिया से भी प्रभावित हो सकते हैं। देखभाल करने वाले को कई तरह की अक्षमताओं वाले बच्चे की देखभाल करने की अपनी क्षमता पर भरोसा होना चाहिए। साथ ही, एक स्वस्थ रिश्ते के लिए बच्चे के विकास और बढ़त को लेकर उनकी उम्मीदें भी यथार्थवादी होनी चाहिए।

आपको मानसिक रूप से अक्षम कुछ ऐसे बच्चे मिलेंगे जो देख या सुन नहीं सकते (या दोनों ही दिक्कतें हो सकती हैं)। इसलिए, बौद्धिक अक्षमता के कारण सीखने में आने वाली सीमाओं के अलावा, इन बच्चों की मुश्किलें इसलिए और बढ़ जाती हैं क्योंकि वे सीखने के लिए इन इंद्रियों का इस्तेमाल नहीं कर पाते। अगर बुद्धि पर असर नहीं पड़ा है और सिर्फ़ देखने या सुनने की क्षमता प्रभावित हुई है, तो इंसान दूसरी इंद्रियों का इस्तेमाल करके वैकल्पिक कौशल (compensatory skills) सीख सकता है। उदाहरण के लिए, बिना मानसिक अक्षमता वाले दृष्टिबाधित लोग रोज़मर्रा की ज़िंदगी में काम करने के लिए अपनी दूसरी इंद्रियों को विकसित कर लेते हैं और इस तरह देखने की क्षमता की कमी की भरपाई कर लेते हैं। मानसिक रूप से अक्षम व्यक्ति के लिए ऐसा खुद से करना मुश्किल होता है। इसलिए, मानसिक अक्षमता के साथ-साथ दृष्टिबाधित बच्चों के लिए ट्रेनिंग में स्पर्श (tactile) से जुड़ी ट्रेनिंग और बाकी इंद्रियों का इस्तेमाल शामिल करना ज़रूरी है। मानसिक अक्षमता और सुनने की अक्षमता वाले बच्चे के लिए, ट्रेनिंग का मकसद उसे बातचीत के वैकल्पिक तरीके सीखने में मदद करना होना चाहिए। मानसिक अक्षमता वाले उन लोगों के लिए ट्रेनिंग का मकसद, जिन्हें देखने या सुनने की भी अक्षमता है, उन्हें व्यक्तिगत कौशल, चलने-फिरने (mobility) और बातचीत में आत्मनिर्भर बनने में मदद करना होना चाहिए। रोज़मर्रा के और बार-बार किए जाने वाले काम (vocational activities) भी फ़ायदेमंद होते हैं क्योंकि इनसे व्यक्ति को सीखने में मदद मिलती है और उसका आत्मविश्वास और आत्म-सम्मान भी बढ़ता है। हर बच्चे के लिए शिक्षा का कार्यक्रम अलग-अलग होगा, जो इस बात पर निर्भर करेगा कि उसे किस तरह की और कितनी

ज़्यादा दिक्कतें हैं। ट्रेनिंग शुरू करने से पहले पेशेवर सलाह लें, क्योंकि कुछ लोगों को कम दृष्टि (low vision) में मदद करने वाले उपकरणों और/या सुनने की मशीन (hearing aids) और अनुकूलित उपकरणों (adaptive devices) से फ़ायदा हो सकता है।

3.7 बौद्धिक अक्षमता और उससे जुड़ी स्थितियाँ – अटेंशन डेफिसिट हाइपरएक्टिविटी डिसऑर्डर (ADHD)

अटेंशन डेफिसिट हाइपरएक्टिविटी डिसऑर्डर (ADHD) एक ऐसी स्थिति है जो बच्चों की कार्यक्षमता को प्रभावित करती है और 1.4% से 6% बच्चों में पाई जाती है। बौद्धिक अक्षमता (ID) वाले बच्चों में ADHD के लक्षणों और कारणों के बारे में बहुत कम जानकारी है, क्योंकि कम सोचने-समझने की क्षमता (IQ स्कोर 70 से कम) वाले बच्चों को अक्सर ADHD से जुड़ी स्टडीज़ में शामिल नहीं किया जाता है। जबकि इस बात के सबूत मौजूद हैं कि ID वाले बच्चों में ADHD ज़्यादा आम है और ID की गंभीरता बढ़ने के साथ इसका जोखिम भी बढ़ जाता है।

अटेंशन डेफिसिट हाइपरएक्टिविटी डिसऑर्डर (ADHD) एक लंबे समय तक रहने वाली, गंभीर असर वाली और महंगी न्यूरो-डेवलपमेंटल स्थिति है, जिसका पता आमतौर पर जीवन की शुरुआत में ही चल जाता है और यह आबादी के 5.3% लोगों में पाई जाती है। इसकी पहचान ध्यान न दे पाने और बहुत ज़्यादा सक्रियता या बिना सोचे-समझे काम करने (इम्पल्सिविटी) जैसी समस्याओं से होती है, जो व्यक्ति की उम्र, विकास के स्तर और बौद्धिक क्षमता के हिसाब से उम्मीद से कहीं ज़्यादा होती हैं। इससे रोज़मर्रा के कामकाज में दिक्कतें आती हैं। ADHD का संबंध खराब शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य, पढ़ाई-लिखाई में कमज़ोर प्रदर्शन, निजी रिश्तों में समस्या और सामाजिक जीवन में कठिनाइयों से होता है।

बौद्धिक अक्षमता (intellectual disability) की पहचान बौद्धिक कामकाज और रोज़मर्रा की ज़िंदगी के कौशल में बड़ी और व्यापक कमियों से होती है। इन मुख्य लक्षणों के साथ अक्सर ADHD जैसी अन्य न्यूरो-डेवलपमेंटल स्थितियां भी जुड़ी होती हैं। उदाहरण के लिए, हाल ही में हुई एक व्यवस्थित समीक्षा से पता चलता है कि बौद्धिक अक्षमता वाले 6 से 21 साल के युवाओं में ADHD के निदान की दर 30% है, जबकि बौद्धिक रूप से अक्षम न होने वाले युवाओं में यह दर 5-7% है।

हालांकि, बौद्धिक रूप से अक्षम लोगों में ADHD की ज़्यादा मौजूदगी के बावजूद, रेफरल और डायग्नोसिस (पहचान और निदान) दोनों ही स्तरों पर अक्सर इसकी सही पहचान नहीं हो पाती है। इसका मतलब है कि ADHD और बौद्धिक अक्षमता, दोनों से जूझ रहे कई युवा असरदार उपायों—जैसे घर और पढ़ाई-लिखाई के माहौल में खास बदलाव और साइकोट्रोपिक दवाएं—का लाभ नहीं उठा पाते हैं।

मानसिक रूप से पिछड़े कुछ बच्चों में हाइपरएक्टिविटी (बहुत ज़्यादा चंचलता) की समस्या भी होती है। हाइपरएक्टिव व्यवहार कई तरह की विशेषताओं का समूह है। इसकी सबसे खास बात यह है कि बच्चा लगातार हिलता-डुलता या बेचैन रहता है - वह किसी काम को पूरा करने के लिए एक जगह टिककर नहीं बैठ पाता। इससे जुड़ी अन्य बातें ये हैं कि उसका ध्यान आसानी से भटक जाता है, वह बिना सोचे-समझे काम करता है (इम्पल्सिव), ध्यान नहीं लगा पाता, इधर-उधर घूमता रहता है, बहुत ज़्यादा बातें करता है और 'शांत गतिविधियों' (जैसे पढ़ना) में हिस्सा लेने में उसे परेशानी होती है। हाइपरएक्टिविटी को आसानी से परिभाषित नहीं किया जा सकता क्योंकि यह अक्सर देखने वाले की सहनशीलता पर निर्भर करता है। जो व्यवहार एक व्यक्ति को बहुत ज़्यादा (हाइपरएक्टिव) लग सकता है, वह दूसरे को वैसा न लगे। हालाँकि, कुछ बच्चे दूसरों की तुलना में साफ़ तौर पर ज़्यादा सक्रिय होते हैं और यह समस्या बन सकती है क्योंकि इससे उनके स्कूल के काम और दोस्त बनाने की क्षमता पर असर पड़ सकता है। एक जगह न बैठ पाने के कारण वे अक्सर बुलीइंग (धौंस-पट्टी या तंग किए जाने) का शिकार बन जाते हैं, जिससे दूसरे बच्चों के साथ घुलने-मिलने में उन्हें और मुश्किल होती है। साथ ही,

उनके व्यवहार के कारण उन्हें अक्सर सज़ा भी मिल सकती है। गतिविधियों का शेड्यूल बनाकर और कभी-कभी दवाइयों के ज़रिए इस समस्या को कम किया जा सकता है।

3.8 बौद्धिक अक्षमता और उससे जुड़ी स्थितियाँ – मिर्गी

मिर्गी दिमाग की एक लंबे समय तक रहने वाली बीमारी है जो एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में नहीं फैलती और दुनिया भर में लगभग 5 करोड़ लोगों को प्रभावित करती है। इसकी पहचान बार-बार होने वाले दौरों से होती है, जो बिना इच्छा के होने वाली हलचल के छोटे-छोटे एपिसोड होते हैं। इनमें शरीर का कोई एक हिस्सा (पार्शियल) या पूरा शरीर (जनरलाइज़्ड) शामिल हो सकता है और कभी-कभी इनके साथ बेहोशी या मल-मूत्र पर नियंत्रण खोने जैसी स्थिति भी हो सकती है।

मिर्गी दिमाग की एक लंबे समय तक रहने वाली बीमारी है, जिसमें दिमाग में मौजूद नर्व सेल्स या न्यूरॉन्स के समूह कभी-कभी गलत सिग्नल भेजते हैं और दौरे पड़ते हैं। आम तौर पर न्यूरॉन्स इलेक्ट्रिकल और केमिकल सिग्नल बनाते हैं जो दूसरे न्यूरॉन्स, अंगों और मांसपेशियों पर असर डालकर इंसानी सोच, भावनाओं और कामों को अंजाम देते हैं।

मिर्गी से पीड़ित लोगों में शारीरिक समस्याएं (जैसे दौरे पड़ने पर चोट लगने से हड्डियां टूटना और शरीर पर निशान पड़ना) ज़्यादा होती हैं। साथ ही, उनमें एंग्जायटी और डिप्रेशन जैसी मानसिक समस्याएं होने की संभावना भी ज़्यादा होती है। इसी तरह, आम लोगों की तुलना में मिर्गी के मरीज़ों में समय से पहले मौत का ख़तरा तीन गुना तक ज़्यादा होता है; समय से पहले मौत की दर कम और मध्यम आय वाले देशों और ग्रामीण इलाकों में सबसे ज़्यादा देखी जाती है।

खासकर कम और मध्यम आय वाले देशों में, मिर्गी से जुड़ी मौत के कई कारण ऐसे हैं जिन्हें रोका जा सकता है, जैसे कि गिरना, डूबना, जलना और लंबे समय तक दौरे पड़ना।

दुनिया भर में लगभग 5 करोड़ लोग मिर्गी से पीड़ित हैं, जो दुनिया में बीमारियों के बोझ का एक बड़ा हिस्सा है। आम आबादी में किसी भी समय एक्टिव मिर्गी (यानी लगातार

दौरे पड़ना या इलाज की ज़रूरत होना) वाले लोगों की अनुमानित संख्या प्रति 1,000 लोगों पर 4 से 10 के बीच है।

दुनिया भर में, हर साल लगभग 50 लाख लोगों में मिर्गी की पहचान होती है। ज़्यादा आय वाले देशों में, हर साल प्रति 1,00,000 लोगों में से अनुमानित 49 लोगों में मिर्गी का पता चलता है। कम और मध्यम आय वाले देशों में, यह आंकड़ा प्रति 1,00,000 लोगों पर 139 तक हो सकता है। ऐसा मलेरिया या न्यूरोसिस्टीसर्कोसिस जैसी स्थानिक बीमारियों के ज़्यादा जोखिम; सड़क दुर्घटनाओं में चोट लगने की ज़्यादा घटनाएं; जन्म के समय चोटें; और मेडिकल इंफ्रास्ट्रक्चर, बचाव वाले हेल्थ प्रोग्राम की उपलब्धता और आसानी से मिलने वाली देखभाल में अंतर के कारण हो सकता है। मिर्गी से पीड़ित लगभग 80% लोग कम और मध्यम आय वाले देशों में रहते हैं।

मिर्गी संक्रामक बीमारी नहीं है। हालाँकि कई तरह की बीमारियाँ मिर्गी का कारण बन सकती हैं, फिर भी दुनिया भर में लगभग 50% मामलों में इस बीमारी का कारण अज्ञात है। मिर्गी के कारणों को इन श्रेणियों में बांटा गया है: संरचनात्मक, आनुवंशिक, संक्रामक, चयापचय संबंधी, प्रतिरक्षा-संबंधी और अज्ञात। इनके उदाहरण इस प्रकार हैं:

जन्म से पहले या जन्म के समय हुई समस्याओं के कारण मस्तिष्क की क्षति (जैसे जन्म के समय ऑक्सीजन की कमी या चोट, जन्म के समय कम वज़न);

जन्मजात असामान्यताएं या आनुवंशिक स्थितियां जिनके साथ मस्तिष्क की बनावट में खराबी हो;

- सिर में गंभीर चोट;
- स्ट्रोक जिससे मस्तिष्क तक ऑक्सीजन की आपूर्ति बाधित हो;
- मस्तिष्क का संक्रमण जैसे मेनिन्जाइटिस, एन्सेफलाइटिस या न्यूरोसिस्टीसर्कोसिस;
- कुछ आनुवंशिक सिंड्रोम; और

- ब्रेन ट्यूमर।

अनुमान है कि मिर्गी के लगभग 25% मामलों को रोका जा सकता है।

- सिर की चोट से बचाव – जैसे कि गिरने, सड़क दुर्घटनाओं और खेलों में लगने वाली चोटों को कम करके – 'पोस्ट-ट्रॉमेटिक एपिलेप्सी' (चोट के बाद होने वाली मिर्गी) को रोकने का सबसे असरदार तरीका है।
- जन्म के समय लगी चोट से होने वाली मिर्गी के नए मामलों को सही प्रसव-पूर्व और प्रसव-कालीन देखभाल से कम किया जा सकता है।
- बुखार वाले बच्चे के शरीर का तापमान कम करने के लिए दवाओं और अन्य तरीकों का इस्तेमाल करने से 'फेब्राइल सीज़र' (बुखार के कारण आने वाले दौरे) का खतरा कम हो सकता है।
- स्ट्रोक से जुड़ी मिर्गी को रोकने के लिए मुख्य रूप से हृदय और रक्त वाहिकाओं (कार्डियोवैस्कुलर) से जुड़े जोखिम कारकों को कम करने पर ध्यान दिया जाता है; जैसे कि हाई ब्लड प्रेशर, डायबिटीज और मोटापे को रोकना या नियंत्रित करना, और तंबाकू व अत्यधिक शराब के सेवन से बचना।
- ट्रॉपिकल इलाकों (उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों) में, जहाँ कम और मध्यम आय वाले कई देश स्थित हैं, सेंट्रल नर्वस सिस्टम (केंद्रीय तंत्रिका तंत्र) का संक्रमण मिर्गी का एक आम कारण है। इन इलाकों में पैरासाइट्स (परजीवियों) को खत्म करना और संक्रमण से बचने के बारे में लोगों को जागरूक करना दुनिया भर में मिर्गी के मामलों को कम करने के असरदार तरीके हो सकते हैं, जैसे कि न्यूरोसिस्टीसर्कोसिस के कारण होने वाले मामले।

मानसिक रूप से पिछड़े बहुत से लोगों को मिर्गी के दौरे पड़ते हैं। हालाँकि, याद रखें कि इसका उल्टा सच नहीं है - जिन लोगों को मिर्गी के दौरे पड़ते हैं, वे सभी मानसिक रूप से पिछड़े नहीं होते। ये दौरे कैसे पड़ते हैं? हमारा दिमाग शरीर के अलग-अलग हिस्सों को इलेक्ट्रिकल सिग्नल के रूप में संदेश भेजता और उनसे संदेश प्राप्त करता है। इन इलेक्ट्रिकल सिग्नल में गड़बड़ी होने से नर्वस सिस्टम का

सामान्य कामकाज प्रभावित होता है और दौरे पड़ते हैं। ये दौरे हल्के 'एब्सेंस सीज़र' (यानी, कुछ पल के लिए बेहोशी) से लेकर गंभीर दौरे तक हो सकते हैं, जिनमें व्यक्ति ज़मीन पर गिर जाता है; शरीर अकड़ जाता है और झटके लगते हैं। मुँह से झाग भी निकल सकता है और कभी-कभी पेशाब भी निकल सकता है। दौरे का प्रकार इस बात पर निर्भर करता है कि दिमाग का कौन सा हिस्सा प्रभावित हुआ है। मिर्गी का दौरा कुछ सेकंड से लेकर कई मिनट तक रह सकता है। मिर्गी के लिए मेडिकल इलाज ज़रूरी है। दवाइयों से मिर्गी को कंट्रोल किया जा सकता है। कुछ लोगों को कई सालों तक मिर्गी का दौरा नहीं पड़ता। हालाँकि, भले ही कुछ समय से दौरे न पड़े हों, यह याद रखना चाहिए कि डॉक्टर की सलाह के बिना दवाएँ बंद नहीं करनी चाहिए।दवाएँ ठीक उसी समय और उतनी ही मात्रा में दी जानी चाहिए जितनी डॉक्टर ने बताई हों। इसके अलावा, बच्चे या व्यक्ति को उसकी स्थिति स्वीकार करने और आराम से जीने में मदद करनी चाहिए। उसे उन संवेदनाओं को पहचानना सिखाया जाना चाहिए जो दौरे से पहले महसूस होती हैं। जब वह ऐसा करने में सक्षम हो जाए, तो उसे ऐसी संवेदनाएँ महसूस होने पर सुरक्षित जगह पर जाने या बैठ जाने के लिए कहें, ताकि दौरा पड़ने पर उसे चोट न लगे।

3.8.1 रिक्त स्थान भरिए-

1- मिर्गी ..... बीमारी नहीं है।

2- दुनिया भर में लगभग 5 करोड़ लोग ..... से पीड़ित हैं ।

3.9 सारांश

प्रस्तुत इकाई में बौद्धिक अक्षमता ओर उससे जुड़ी स्थितियों के संबंध में की गयी चर्चा के अध्ययन के उपरांत आप बौद्धिक अक्षमता ओर उससे जुड़ी स्थितियों/दिव्यांगताओं जैसे सेरेब्रल पाल्सी, संवेदी अक्षमताएँ, अटेंशन डेफिसिट

हाइपरएक्टिविटी डिसऑर्डर (ADHD), मिर्गी, ऑटिज़्म जैसी दिव्यांगता के कारण ओर निदान के संबंध में अध्ययन के बाद आप कारण ओर निवारण ओर पुनर्वास के बारे में जान चुके होंगे| किस प्रकार बौद्धिक अक्षमता ओर उससे जुड़ी स्थितियों/दिव्यांगताएँ व्यक्ति को प्रभावित करती हैं| बौद्धिक अक्षमता से जुड़ी स्थितियां अलग-अलग तरह की होती हैं और अक्सर इनका इलाज नहीं हो पाता; साथ ही, एक ही व्यक्ति में कई बीमारियां या स्थितियां (को-मॉर्बिडिटी) होना आम बात है। इनमें समस्यापूर्ण व्यवहार (problem behaviours) विशेष रूप से आम हैं। बौद्धिक अक्षमता और उससे जुड़ी स्थितियाँ

3.10 शब्दावली

Comorbidity (कोमॉर्बिडिटी) - सह-रुग्णता

Cerebral Palsy (सेरेब्रल पाल्सी) - मस्तिष्क पक्षाघात

Attention-Deficit/Hyperactivity Disorder (ADHD)- ध्यान आभाव सक्रियता विकार

3.11 अभ्यास प्रश्नो के उत्तर

3.4 .1 (1) दिमाग, (2) विकारों, 3.8.1 (1) **संक्रामक, (2) मिर्गी**

3.12 संदर्भ ग्रंथ सूची

https://www.researchgate.net/publication/376818974_PEOPLE_WITH_INTELLECTUAL_DISABILITIES-AN_APPROACH_TOWARDS_MANAGEMENT_ISSUES

https://www.sciencedirect.com/science/article/abs/pii/S1357303924001300

https://pmc.ncbi.nlm.nih.gov/articles/PMC9452822/

https://www.littleraysaba.com/blog/autism-and-intellectual-disability

https://www.psyvisnet.nl/files/962/carvill__2001__sensory_impairments__intellectual_disability_and_psychiatry.pdf

https://www.wbnsou.ac.in/online_services/SLM/MED/B8_ID.pdf

https://pmc.ncbi.nlm.nih.gov/articles/PMC4078221/

https://www.kingshealthpartners.org/latest/adhd-and-intellectual-disability

https://www.who.int/news-room/fact-sheets/detail/epilepsy

https://www.ninds.nih.gov/health-information/disorders/epilepsy-and-seizures

3.13 निबंधात्मक प्रश्न

1. व्यक्ति में बौद्धिक अक्षमता और उससे जुड़ी अन्य स्थितियों के विषय में विस्तार से वर्णन कीजिये?

2. व्यक्ति में बौद्धिक अक्षमता और उससे जुड़ी स्थिति यथा मिर्गी के संबंध में आप क्या जानते हैं?

3. व्यक्ति में बौद्धिक अक्षमता और उससे जुड़ी स्थिति यथा संवेदी अक्षमताओं विषय में आप क्या जानते हैं?

इकाई 4: शैशवावस्था और प्रारंभिक बाल्यावस्था: प्रारंभिक हस्तक्षेप और परिवार की भागीदारी; मल्टीडिसिप्लिनरी टीम का सहयोग और विशेष शिक्षा शिक्षक की भूमिका।

4.0 परिचय

4.1 उद्देश्य

4.2 शैशवावस्था एवं प्रारंभिक बाल्यावस्था (Infancy and Early Childhood)

- प्रारंभिक हस्तक्षेप (Early Intervention)
- परिवार की सहभागिता (Family Involvement)

4.3 विद्यालयी आयु (School Age)

- **शैक्षिक प्लेसमेंट के विकल्प** — विशेष विद्यालय (Special School), संसाधन कक्ष (Resource Room), समावेशी कक्षा (Inclusive Classroom) तथा **NEP 2020 के संदर्भ में गृह-आधारित शिक्षा (Home-Based Education)**
- बहुविषयक टीम सहयोग (Multidisciplinary Team Collaboration)
- विशेष शिक्षा शिक्षक की भूमिका (Role of the Special Education Teacher)

4.4 संक्रमण एवं कैरियर विकास (Transition and Career Development)

- व्यक्तिगत संक्रमण योजना (Individualized Transition Plan—ITP)

4.5 सारांश (Summary)

4.6 शब्दावली (Glossary)

4.7 स्व-मूल्यांकन प्रश्नों (SAQs) के उत्तर (Answers to Self-Assessment Questions)

4.8 मॉडल परीक्षा प्रश्न (Model Examination Questions)
4.9 सुझाए गए पठन स्रोत/मुक्त शैक्षिक संसाधन (Suggested Readings/Open Educational Resources—OERs)
4.10 संदर्भ (References)

4.1 परिचय

यह इकाई **बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्तियों** की जीवन-चक्र के विभिन्न चरणों में होने वाली **विकासात्मक, शैक्षिक, संक्रमणकालीन तथा व्यावसायिक आवश्यकताओं** पर केंद्रित है। बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्तियों की आवश्यकताएँ उनकी आयु, विकासात्मक अवस्था तथा उपलब्ध पर्यावरणीय अवसरों के अनुसार भिन्न-भिन्न होती हैं। प्रभावी सहयोग के लिए ऐसी **निरंतर सेवाओं की व्यवस्था** आवश्यक है, जो शैशवावस्था में प्रारंभिक पहचान एवं प्रारंभिक हस्तक्षेप से शुरू होकर विद्यालयी वर्षों में उपयुक्त शैक्षिक प्रावधानों, किशोरावस्था में संक्रमण योजना तथा वयस्कावस्था में व्यावसायिक एवं रोजगार संबंधी सहयोग तक जारी रहती है।

इस इकाई में **परिवार की सहभागिता, शैक्षिक प्लेसमेंट के विभिन्न विकल्पों, बहुविषयक टीम के सहयोग, संक्रमण योजना, व्यावसायिक विकास तथा रोजगार के अवसरों** के महत्व का अध्ययन किया गया है। इसके साथ ही, यह इकाई **समावेशी प्रथाओं तथा सरकारी पहलों** की भूमिका पर भी प्रकाश डालती है, जो बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्तियों की **सार्थक सहभागिता, आत्मनिर्भरता तथा जीवन की गुणवत्ता** को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

4.1 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद, शिक्षार्थी निम्नलिखित में सक्षम होंगे:

1. **बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों** की शैशवावस्था, प्रारंभिक बाल्यावस्था, विद्यालयी आयु, संक्रमणकाल तथा वयस्कावस्था के दौरान विकासात्मक आवश्यकताओं को समझा और स्पष्ट किया जा सकेगा।
2. **बौद्धिक अक्षमता वाले शिशुओं एवं छोटे बच्चों** के लिए प्रारंभिक हस्तक्षेप सेवाओं के महत्व का वर्णन किया जा सकेगा।
3. **बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों** के विकास एवं कल्याण को बढ़ावा देने में परिवार की सहभागिता की भूमिका पर चर्चा की जा सकेगी।
4. **विद्यालयी आयु के बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों** के लिए उपलब्ध विभिन्न शैक्षिक व्यवस्थापन/प्लेसमेंट विकल्पों का समावेशी शिक्षा तथा **राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020** के संदर्भ में परीक्षण किया जा सकेगा।
5. शैक्षिक नियोजन एवं सेवाओं के प्रभावी वितरण में **बहुविषयक टीम (Multidisciplinary Team) के सहयोग** के महत्व का विश्लेषण किया जा सकेगा।
6. **विशेष शिक्षा शिक्षकों** की भूमिकाओं एवं उत्तरदायित्वों को स्पष्ट किया जा सकेगा, जो बौद्धिक अक्षमता वाले शिक्षार्थियों को सहयोग प्रदान करने में सहायक हैं।
7. **व्यक्तिगत संक्रमण योजना (Individualized Transition Plan—ITP)** की संकल्पना एवं इसके विभिन्न घटकों को समझा जा सकेगा।
8. **बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्तियों** के व्यावसायिक विकास एवं रोजगार के अवसरों पर चर्चा की जा सकेगी।
9. बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्तियों के लिए उपयुक्त **विभिन्न प्रकार के रोजगार तथा उभरते हुए रोजगार के अवसरों** की पहचान की जा सकेगी।

10. **व्यावसायिक नियोजन (Vocational Placement), अनुवर्ती सेवाओं (Follow-up Services) तथा कार्यस्थल पर सहयोग** से संबंधित प्रक्रियाओं को स्पष्ट किया जा सकेगा।
11. **बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्तियों** के लिए दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग (Department of Empowerment of Persons with Disabilities—DEPwD) द्वारा संचालित सरकारी योजनाओं एवं रोजगार संबंधी पहलों का वर्णन किया जा सकेगा।
12. शैक्षिक, व्यावसायिक एवं सामुदायिक परिवेशों में **समावेशी प्रथाओं के प्रभावों** का विश्लेषण किया जा सकेगा।
13. **बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्तियों के सफल समावेशन, संक्रमण एवं स्वतंत्र जीवन-यापन** को बढ़ावा देने के लिए उपयुक्त रणनीतियाँ विकसित की जा सकेंगी।

4.2 शैशवावस्था एवं प्रारंभिक बाल्यावस्था

शैशवावस्था एवं प्रारंभिक बाल्यावस्था मानव वृद्धि एवं विकास की सबसे महत्वपूर्ण अवस्थाओं में से हैं। यह अवधि सामान्यतः जन्म से लगभग छह वर्ष की आयु तक मानी जाती है तथा इसमें **शारीरिक, संज्ञानात्मक, भाषा, सामाजिक-भावनात्मक एवं अनुकूलनात्मक विकास** तीव्र गति से होता है। इन वर्षों के दौरान प्राप्त अनुभव तथा पर्यावरणीय उद्दीपन आजीवन सीखने, व्यवहार, स्वास्थ्य और समाज में सहभागिता की नींव रखते हैं। **बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों** के लिए यह विकासात्मक अवधि विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस अवस्था में मस्तिष्क में **अधिकतम न्यूरोप्लास्टिसिटी (Neuroplasticity)** होती है, जिसके कारण मस्तिष्क उपयुक्त हस्तक्षेप एवं सीखने के अनुभवों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होता है।

शैशवावस्था एवं प्रारंभिक बाल्यावस्था के दौरान बच्चे सामान्यतः एक **विशिष्ट क्रम** में विकासात्मक मील के पत्थर प्राप्त करते हैं। इनमें बैठना, रेंगना, चलना और वस्तुओं को

पकड़ना जैसे **सकल एवं सूक्ष्म मोटर कौशल**; बड़बड़ाने, शब्दों को समझने तथा अर्थपूर्ण वाक्य बोलने के माध्यम से **भाषा विकास**; अन्वेषण, स्मृति एवं समस्या-समाधान के माध्यम से **संज्ञानात्मक विकास**; तथा लगाव, खेल एवं देखभाल करने वालों के साथ अंतःक्रिया के माध्यम से **सामाजिक-भावनात्मक विकास** शामिल हैं। इस अवस्था में अनुकूलनात्मक व्यवहार, जैसे स्वयं भोजन करना, कपड़े पहनना, शौचालय का उपयोग करना तथा व्यक्तिगत स्वच्छता बनाए रखना भी विकसित होने लगते हैं। इन विकासात्मक मील के पत्थरों को प्राप्त करने में देरी विकास संबंधी चिंताओं का संकेत हो सकती है, जिसके लिए व्यापक मूल्यांकन एवं सहयोग आवश्यक होता है।

बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों में विकासात्मक विलंब प्रायः जीवन के शुरुआती वर्षों में दिखाई देने लगते हैं। ऐसे बच्चों में संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास अपेक्षाकृत धीमी गति से हो सकता है तथा बोलने एवं भाषा विकास में देरी, अनुकूलनात्मक कार्यप्रणाली में कमी, सामाजिक अंतःक्रिया में कठिनाई और मोटर विकास की धीमी गति देखी जा सकती है। इन विलंबों की गंभीरता एवं अभिव्यक्ति बौद्धिक अक्षमता की तीव्रता तथा सहवर्ती स्थितियों की उपस्थिति के अनुसार भिन्न हो सकती है। इसलिए, जिन बच्चों को विशेष हस्तक्षेप सेवाओं की आवश्यकता हो सकती है, उनकी पहचान के लिए **व्यवस्थित विकासात्मक निगरानी एवं नियमित स्क्रीनिंग** आवश्यक है।

अनुसंधान से स्पष्ट होता है कि विकासात्मक विलंब की **प्रारंभिक पहचान तथा समय पर हस्तक्षेप** करने से विकासात्मक परिणामों में महत्वपूर्ण सुधार होता है। प्रारंभिक पहचान से विशेषज्ञों को विकासात्मक विलंब अधिक स्पष्ट होने से पहले ही साक्ष्य-आधारित हस्तक्षेप शुरू करने में सहायता मिलती है। प्रारंभिक वर्षों में प्रदान किए गए हस्तक्षेप विकासशील मस्तिष्क की न्यूरोप्लास्टिसिटी का लाभ उठाते हैं, जिससे सीखने की क्षमता बढ़ती है तथा भविष्य की कार्यक्षमता पर अक्षमता के प्रभाव को कम किया जा सकता है। प्रारंभिक हस्तक्षेप से **संचार कौशल, संज्ञानात्मक कार्यप्रणाली, अनुकूलनात्मक व्यवहार, विद्यालय तत्परता तथा सामाजिक सहभागिता** में सुधार होता है और बाद के वर्षों में गहन सहयोग की आवश्यकता को कम करने में सहायता मिलती है।

शैशवावस्था एवं प्रारंभिक बाल्यावस्था में विकास को सहयोग प्रदान करने में **परिवार की महत्वपूर्ण भूमिका** होती है। माता-पिता एवं देखभालकर्ता बच्चे के प्रथम शिक्षक होते हैं

और दैनिक अंतःक्रियाओं, दिनचर्या तथा खेल के माध्यम से सीखने के निरंतर अवसर प्रदान करते हैं। **परिवार-केंद्रित दृष्टिकोण** देखभालकर्ताओं को हस्तक्षेप की योजना बनाने एवं उसे लागू करने में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करता है। विशेषज्ञ परिवारों के साथ मिलकर बच्चे के विकास को प्रोत्साहित करने, व्यवहार संबंधी चुनौतियों का प्रबंधन करने, संचार को बढ़ावा देने तथा घर में सहयोगात्मक वातावरण तैयार करने के संबंध में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। इस प्रकार का सहयोग माता-पिता की दक्षता को बढ़ाता है, पारिवारिक तनाव को कम करता है तथा बेहतर विकासात्मक परिणाम प्राप्त करने में योगदान देता है।

खेल वह प्रमुख माध्यम है जिसके द्वारा छोटे बच्चे सीखते हैं। खेल-आधारित गतिविधियों के माध्यम से बच्चे भाषा, संज्ञानात्मक क्षमताएँ, मोटर समन्वय, सृजनात्मकता तथा सामाजिक कौशल विकसित करते हैं। बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों के लिए संरचित तथा प्राकृतिक खेल अनुभव सीखने को सुगम बनाते हैं और साथ ही उनकी प्रेरणा एवं सहभागिता बनाए रखते हैं। इसलिए, प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा कार्यक्रमों में केवल औपचारिक शिक्षण पर निर्भर रहने के बजाय **खेल, अन्वेषण, संचार एवं सामाजिक अंतःक्रिया** पर विशेष जोर दिया जाना चाहिए।

भारत सरकार भी प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं हस्तक्षेप के महत्व को मान्यता देती है। **राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020** में 3–6 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण **प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (Early Childhood Care and Education—ECCE)** तक सार्वभौमिक पहुँच पर जोर दिया गया है तथा यह माना गया है कि छह वर्ष की आयु से पहले मस्तिष्क का 85 प्रतिशत से अधिक विकास हो जाता है। इसी प्रकार, **दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम (RPwD Act), 2016** प्रारंभिक आयु से ही दिव्यांग बच्चों की प्रारंभिक पहचान, स्क्रीनिंग, हस्तक्षेप तथा समावेशी शैक्षिक अवसरों को बढ़ावा देता है। ये नीतिगत पहलें स्वास्थ्य, शिक्षा एवं सामाजिक कल्याण क्षेत्रों के बीच समन्वित सेवाओं की आवश्यकता को रेखांकित करती हैं, ताकि बच्चे का समग्र विकास सुनिश्चित किया जा सके।

प्रारंभिक हस्तक्षेप (Early Intervention)

प्रारंभिक हस्तक्षेप एक **व्यवस्थित एवं समन्वित सेवा-प्रणाली** है, जो विकासात्मक विलंब, दिव्यांगता या विकासात्मक कठिनाइयों के जोखिम वाले शिशुओं एवं छोटे बच्चों को प्रदान की जाती है। अंतरराष्ट्रीय संदर्भ में, अमेरिका में प्रारंभिक हस्तक्षेप कार्यक्रमों की शुरुआत Education for All Handicapped Children Act, 1975 के अंतर्गत हुई और वर्तमान में ये Individuals with Disabilities Education Act (IDEA), Part C के अंतर्गत आते हैं। ये कार्यक्रम 36 माह से कम आयु के उन बच्चों के लिए सेवाएँ प्रदान करते हैं जिनमें दिव्यांगता, विकासात्मक विलंब या विकासात्मक विलंब का जोखिम पाया जाता है।

भारत के संदर्भ में, प्रारंभिक हस्तक्षेप का व्यापक अर्थ **जन्म से लगभग छह वर्ष तक** के विकासात्मक विलंब या दिव्यांगता वाले बच्चों के लिए समय पर पहचान, मूल्यांकन, प्रशिक्षण, चिकित्सीय, शैक्षिक एवं पारिवारिक सहयोग प्रदान करना है।

प्रारंभिक हस्तक्षेप की प्रमुख विशेषताएँ हैं:

- यह वृद्धि एवं विकास की महत्वपूर्ण अवधि में **समय पर पहचान एवं सहयोग** पर जोर देता है, जब मस्तिष्क और शरीर उद्दीपन के प्रति अधिक ग्रहणशील होते हैं।
- इसमें **स्वास्थ्य सेवाएँ, विकासात्मक उपचार, परिवार सहयोग एवं शैक्षिक मार्गदर्शन** शामिल होते हैं।
- इसका उद्देश्य बच्चे के **इष्टतम विकास को बढ़ावा देना तथा दिव्यांगता के प्रभाव को न्यूनतम करना** है।
- प्रारंभिक हस्तक्षेप केवल चिकित्सा या उपचारात्मक सेवाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह **माता-पिता, विशेषज्ञों एवं सामुदायिक संसाधनों** की सहभागिता वाला समग्र दृष्टिकोण है।

प्रारंभिक हस्तक्षेप के उद्देश्य

1. विकासात्मक विलंब की प्रारंभिक पहचान

विकासात्मक मूल्यांकन के माध्यम से शिशुओं की स्क्रीनिंग करना तथा दृष्टि, श्रवण,

मोटर, भाषा एवं सामाजिक विकासात्मक मील के पत्थरों की निगरानी करना, ताकि विकासात्मक विलंब की समय पर पहचान की जा सके।

2. विकासात्मक कौशलों में वृद्धि

संरचित उद्दीपन, खेल-आधारित अधिगम तथा माता-पिता एवं बच्चे के बीच अंतःक्रिया के माध्यम से मोटर, संज्ञानात्मक, भाषा, सामाजिक, भावनात्मक एवं अनुकूलनात्मक विकास को बढ़ावा देना।

3. द्वितीयक दिव्यांगताओं की रोकथाम

कुपोषण, संक्रमण, उपेक्षा आदि जोखिम कारकों को संबोधित करके विकासात्मक विलंब के प्रभाव को कम करना तथा व्यवहारात्मक एवं भावनात्मक समस्याओं की रोकथाम करना।

4. स्वतंत्रता एवं कार्यात्मक क्षमताओं को बढ़ावा देना

भोजन करना, कपड़े पहनना, शौचालय का उपयोग करना, संचार करना तथा अन्य दैनिक जीवन एवं अनुकूलनात्मक कौशल विकसित करना, ताकि बच्चे की स्वतंत्रता बढ़ाई जा सके।

5. परिवार को सहयोग प्रदान करना

माता-पिता को परामर्श, प्रशिक्षण एवं भावनात्मक सहयोग प्रदान करना तथा परिवार को स्वास्थ्य, शिक्षा एवं सामुदायिक संसाधनों से जोड़ना, जिससे परिवार की सहयोग प्रदान करने की क्षमता मजबूत हो सके।

6. विद्यालय तत्परता को सुगम बनाना

पूर्व-शैक्षिक, संचार, ध्यान, सामाजिक एवं व्यवहारात्मक कौशल विकसित करके बच्चों को समावेशी शिक्षा में सफल सहभागिता के लिए तैयार करना।

प्रारंभिक हस्तक्षेप के घटक

1. विकासात्मक मूल्यांकन (Developmental Assessment)

विकासात्मक मूल्यांकन प्रारंभिक हस्तक्षेप का पहला और सबसे महत्वपूर्ण घटक है। यह बच्चे की विकासात्मक प्रगति का **व्यवस्थित मूल्यांकन** करने की प्रक्रिया है, जिसके माध्यम

से बच्चे की क्षमताओं, विकासात्मक विलंब तथा उन विशिष्ट क्षेत्रों की पहचान की जाती है जहाँ सहयोग की आवश्यकता है। मूल्यांकन से विशेषज्ञों को यह निर्धारित करने में सहायता मिलती है कि बच्चे का विकास उसकी आयु के अनुरूप हो रहा है या नहीं तथा **व्यक्तिगत प्रारंभिक हस्तक्षेप कार्यक्रम** की योजना बनाने में मार्गदर्शन मिलता है।
विकासात्मक मूल्यांकन में विभिन्न विकासात्मक क्षेत्रों को शामिल किया जाता है:

- सकल एवं सूक्ष्म मोटर कौशल
- संज्ञानात्मक विकास
- वाक् एवं भाषा विकास
- सामाजिक एवं भावनात्मक विकास
- अनुकूलनात्मक एवं स्व-सहायता कौशल
- संवेदी कार्यप्रणाली (दृष्टि एवं श्रवण)

विकासात्मक मूल्यांकन **बहुविषयक टीम** द्वारा मानकीकृत मूल्यांकन उपकरणों, विकासात्मक चेकलिस्ट, नैदानिक अवलोकन, माता-पिता के साक्षात्कार तथा चिकित्सीय मूल्यांकन के माध्यम से किया जा सकता है। बच्चे के विकास के साथ उसकी प्रगति की निगरानी तथा हस्तक्षेप की रणनीतियों में आवश्यक संशोधन के लिए **निरंतर मूल्यांकन** भी आवश्यक है।
महत्व

- विकासात्मक विलंब की प्रारंभिक अवस्था में पहचान करता है।
- बच्चे की क्षमताओं एवं सीमाओं को निर्धारित करता है।
- यथार्थवादी हस्तक्षेप लक्ष्यों के निर्धारण में सहायता करता है।
- व्यक्तिगत शैक्षिक एवं उपचारात्मक योजना को सुगम बनाता है।
- बच्चे की प्रगति एवं हस्तक्षेप की प्रभावशीलता की निगरानी करता है।

2. उपचारात्मक सेवाएँ (Therapeutic Services)

उपचारात्मक सेवाएँ प्रशिक्षित विशेषज्ञों द्वारा प्रदान किए जाने वाले विशेष हस्तक्षेप हैं, जिनका उद्देश्य बच्चे की विकासात्मक कार्यक्षमता में सुधार करना तथा विकासात्मक विलंब के प्रभाव को कम करना है। उपचार का प्रकार बच्चे की **व्यक्तिगत आवश्यकताओं एवं विकासात्मक प्रोफाइल** पर निर्भर करता है।
प्रमुख उपचारात्मक सेवाएँ निम्नलिखित हैं:

(क) वाक् एवं भाषा चिकित्सा (Speech and Language Therapy)

वाक् एवं भाषा चिकित्सा के माध्यम से वाक् उत्पादन, भाषा की समझ, शब्दावली, अभिव्यक्तिपरक भाषा तथा सामाजिक संचार कौशल में सुधार किया जाता है। आवश्यकता होने पर भोजन एवं निगलने से संबंधित कौशल पर भी कार्य किया जाता है। गंभीर संचार कठिनाइयों वाले बच्चों के लिए **वैकल्पिक एवं संवर्धित संचार (Alternative and Augmentative Communication—AAC)** विधियों का भी उपयोग किया जा सकता है।

(ख) व्यावसायिक चिकित्सा (Occupational Therapy)

व्यावसायिक चिकित्सा बच्चों में **सूक्ष्म मोटर कौशल, नेत्र-हाथ समन्वय, संवेदी प्रसंस्करण, दैनिक जीवन कौशल एवं स्वतंत्रता** विकसित करने में सहायता करती है। इसमें कपड़े पहनना, भोजन करना, लिखना एवं खेलना जैसी गतिविधियों पर कार्य किया जाता है। यह उन संवेदी एकीकरण संबंधी कठिनाइयों को भी संबोधित करती है जो सीखने एवं व्यवहार में बाधा डाल सकती हैं।

(ग) भौतिक चिकित्सा/फिजियोथेरेपी (Physiotherapy)

फिजियोथेरेपी का उद्देश्य **सकल मोटर विकास, शारीरिक मुद्रा, मांसपेशियों की शक्ति, संतुलन, समन्वय, लचीलापन एवं गतिशीलता** में सुधार करना है। यह विशेष रूप से सेरेब्रल पाल्सी, विकासात्मक विलंब, मांसपेशीय विकारों तथा अस्थि-संबंधी स्थितियों वाले बच्चों के लिए उपयोगी है।

(घ) व्यवहारात्मक हस्तक्षेप (Behavioural Intervention)

व्यवहारात्मक हस्तक्षेप का उद्देश्य साक्ष्य-आधारित रणनीतियों के माध्यम से उपयुक्त व्यवहारों को बढ़ावा देना तथा चुनौतीपूर्ण व्यवहारों को कम करना है। इसमें **सकारात्मक पुनर्बलन, व्यवहार संशोधन, संरचित दिनचर्या तथा कार्यात्मक व्यवहार मूल्यांकन** जैसी रणनीतियों का उपयोग किया जाता है। यह ध्यान, निर्देशों का पालन, सामाजिक अंतःक्रिया तथा आत्म-नियमन में भी सुधार करता है।

(ङ) संवेदी एकीकरण चिकित्सा (Sensory Integration Therapy)

संवेदी एकीकरण चिकित्सा बच्चों को **स्पर्श, गति, ध्वनि, दृष्टि एवं शरीर-जागरूकता** जैसी संवेदी सूचनाओं को प्रभावी ढंग से संसाधित करने एवं उनके प्रति उचित प्रतिक्रिया देने में सहायता करती है। इससे ध्यान, भावनात्मक नियमन, मोटर नियोजन, समन्वय तथा दैनिक गतिविधियों में सहभागिता को बढ़ावा दिया जा सकता है।

आपके द्वारा साझा की गई सामग्री **इकाई 4.2 के आगे के भाग** से संबंधित है। इसे उसी शैक्षिक शैली और शब्दावली में हिंदी में इस प्रकार लिखा जा सकता है:

3. शैक्षिक उद्दीपन (Educational Stimulation)

शैक्षिक उद्दीपन से तात्पर्य ऐसी **संरचित एवं उद्देश्यपूर्ण अधिगम-अनुभवों** से है, जो खेल तथा दैनिक गतिविधियों के माध्यम से बच्चे के समग्र विकास को प्रोत्साहित करते हैं। छोटे बच्चे सक्रिय अन्वेषण के माध्यम से सबसे बेहतर सीखते हैं। इसलिए, प्रारंभिक हस्तक्षेप में औपचारिक शिक्षण की अपेक्षा **खेल-आधारित एवं बाल-केंद्रित अधिगम** पर अधिक जोर दिया जाता है।

शैक्षिक उद्दीपन निम्नलिखित क्षेत्रों में विकास को बढ़ावा देता है:

- **संज्ञानात्मक विकास:** समस्या-समाधान, स्मृति, ध्यान एवं संकल्पना-अधिगम के माध्यम से।
- **भाषा विकास:** कहानी सुनाने, गीतों, बातचीत एवं अंतःक्रियात्मक पठन के माध्यम से।
- **सामाजिक विकास:** सामूहिक खेल, साझा करने, सहयोग एवं बारी-बारी से कार्य करने के माध्यम से।
- **खेल कौशल:** कल्पनात्मक, रचनात्मक एवं कार्यात्मक खेल के माध्यम से।
- **अनुकूलनात्मक व्यवहार:** दैनिक दिनचर्या एवं स्व-सहायता गतिविधियों के माध्यम से।

4. स्वास्थ्य एवं पोषण संबंधी सहयोग (Health and Nutritional Support)

अच्छा स्वास्थ्य एवं पर्याप्त पोषण स्वस्थ वृद्धि एवं विकास के आवश्यक आधार हैं। विकासात्मक विलंब वाले बच्चों को अक्सर नियमित **चिकित्सीय निगरानी** की

आवश्यकता होती है, ताकि अंतर्निहित स्वास्थ्य संबंधी स्थितियाँ उनके सीखने एवं विकास में बाधा न डालें।

5. परिवार की सहभागिता एवं माता-पिता का प्रशिक्षण

(Family Involvement and Parent Training)

परिवार की सहभागिता को सफल प्रारंभिक हस्तक्षेप का **आधारभूत घटक** माना जाता है। माता-पिता एवं देखभालकर्ता बच्चे के साथ सबसे अधिक समय बिताते हैं और इसलिए दैनिक दिनचर्या में हस्तक्षेप की रणनीतियों को निरंतर लागू करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

माता-पिता के प्रशिक्षण में मुख्यतः निम्नलिखित शामिल हैं:

- बच्चे की विकासात्मक आवश्यकताओं को समझना।
- घर पर संचार एवं अधिगम को बढ़ावा देने की तकनीकों को सीखना।
- चुनौतीपूर्ण व्यवहारों का सकारात्मक तरीके से प्रबंधन करना।
- स्व-देखभाल गतिविधियों में स्वतंत्रता को प्रोत्साहित करना।
- उद्दीपक एवं सीखने के अनुकूल घरेलू वातावरण तैयार करना।
- लक्ष्यों के निर्धारण एवं प्रगति की निगरानी में सहभागिता करना।

विशेषज्ञ परिवारों को **परामर्श, भावनात्मक सहयोग तथा उपलब्ध शैक्षिक, चिकित्सीय एवं सामाजिक कल्याण सेवाओं** के संबंध में जानकारी भी प्रदान करते हैं।

परिवार की सहभागिता के लाभ

- हस्तक्षेप में निरंतरता एवं एकरूपता बढ़ती है।
- माता-पिता एवं बच्चे के संबंध मजबूत होते हैं।
- माता-पिता का आत्मविश्वास एवं दक्षता बढ़ती है।
- बेहतर विकासात्मक परिणाम प्राप्त होते हैं।
- पारिवारिक तनाव कम होता है।

6. व्यक्तिगत हस्तक्षेप योजना (Individualized Intervention Planning)

प्रत्येक बच्चे का विकास अलग-अलग तरीके से होता है। इसलिए प्रारंभिक हस्तक्षेप को बच्चे की **क्षमताओं, आवश्यकताओं, विकासात्मक स्तर, परिवार की प्राथमिकताओं तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि** के अनुसार व्यक्तिगत बनाया जाना चाहिए। **व्यक्तिगत हस्तक्षेप योजना (Individualized Intervention Plan—IIP)** अथवा, जहाँ लागू हो, **व्यक्तिगत**

परिवार सेवा योजना (Individualized Family Service Plan—IFSP) विशेषज्ञों एवं परिवार के सदस्यों द्वारा सहयोगात्मक रूप से तैयार की जाती है।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न (SAQ)

प्रश्न 1. बौद्धिक अक्षमता वाला एक बच्चा विकासात्मक विलंब प्रदर्शित करता है, लेकिन उपयुक्त उद्दीपन प्रदान किए जाने पर उसमें सीखने की अच्छी क्षमता दिखाई देती है। निम्नलिखित में से कौन-सा सिद्धांत प्रारंभिक बाल्यावस्था में हस्तक्षेप प्रदान करने का सबसे मजबूत आधार है?

(क) विकासात्मक कौशल आयु बढ़ने के साथ स्वतः विकसित हो जाते हैं।

(ख) प्रारंभिक मस्तिष्क विकास उपयुक्त हस्तक्षेप के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होता है।

(ग) औपचारिक शैक्षणिक शिक्षण यथाशीघ्र शुरू कर देना चाहिए।

(घ) बच्चे की अक्षमता पूरी तरह स्थापित होने तक हस्तक्षेप को स्थगित कर देना चाहिए।

4.3 विद्यालयी आयु (School Age)

विद्यालयी आयु **बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चे के जीवन की एक महत्वपूर्ण अवस्था** है, क्योंकि इसी अवधि में औपचारिक शिक्षा, सामाजिक सहभागिता एवं विभिन्न कौशलों का विकास प्रारंभ होता है। इस अवधि में मुख्य उद्देश्य ऐसी उपयुक्त शैक्षिक सुविधाएँ प्रदान करना है, जो **शैक्षणिक अधिगम, कार्यात्मक स्वतंत्रता, संचार, सामाजिक अंतःक्रिया तथा वयस्क जीवन की तैयारी** को बढ़ावा दें। विद्यालयी आयु के बच्चों के लिए शैक्षिक योजना को व्यक्तिगत बनाया जाना चाहिए और यह बच्चे की क्षमताओं, अधिगम संबंधी आवश्यकताओं तथा आवश्यक सहयोग के स्तर पर आधारित होनी चाहिए।

दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम (RPwD Act), 2016 तथा **राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020** दिव्यांगता वाले सभी शिक्षार्थियों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक समान पहुँच, समावेशी प्रथाओं तथा उपयुक्त शैक्षिक सहयोग पर बल देते हैं।

शैक्षिक प्लेसमेंट के विकल्प (Educational Placement Options)

शैक्षिक प्लेसमेंट से तात्पर्य बच्चे की **क्षमताओं, आवश्यकताओं एवं सहयोग की आवश्यकताओं** के आधार पर उसके लिए सबसे उपयुक्त शैक्षिक वातावरण का चयन करना है। इसका उद्देश्य अधिकतम सहभागिता, स्वतंत्रता एवं सामाजिक समावेशन सुनिश्चित करते हुए सार्थक अधिगम अनुभव प्रदान करना है। प्लेसमेंट **लचीला, बाल-केंद्रित तथा बच्चे की प्रगति के अनुसार समय-समय पर पुनरीक्षित** होना चाहिए। प्रमुख शैक्षिक प्लेसमेंट विकल्पों में **विशेष विद्यालय, संसाधन कक्ष, समावेशी कक्षा तथा गृह-आधारित शिक्षा** शामिल हैं।

विशेष विद्यालय (Special School)

विशेष विद्यालय ऐसे शैक्षिक संस्थान हैं, जो विशेष रूप से उन दिव्यांग बच्चों के लिए बनाए जाते हैं जिन्हें **गहन शैक्षिक, उपचारात्मक एवं व्यवहारात्मक सहयोग** की आवश्यकता होती है। इनमें विशेष रूप से प्रशिक्षित शिक्षक कार्य करते हैं तथा बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों की अधिगम संबंधी विशेषताओं के अनुरूप व्यक्तिगत शिक्षण विधियों का उपयोग किया जाता है। शैक्षणिक शिक्षण के अतिरिक्त, विशेष विद्यालयों में **वाक् चिकित्सा, व्यावसायिक चिकित्सा, फिजियोथेरेपी, व्यावसायिक प्रशिक्षण तथा जीवन कौशल शिक्षा** जैसी सेवाएँ भी उपलब्ध हो सकती हैं। पाठ्यचर्या को अक्सर कार्यात्मक शैक्षणिक कौशल, संचार, सामाजिक व्यवहार, स्व-देखभाल एवं व्यावसायिक तैयारी पर केंद्रित करते हुए अनुकूलित किया जाता है।

विशेष विद्यालय **संरचित एवं सहयोगात्मक वातावरण, छोटे वर्ग आकार, व्यक्तिगत ध्यान, विशेष शिक्षण सामग्री तथा सहायक उपकरणों** की सुविधा प्रदान करते हैं। इससे शिक्षकों को विविध अधिगम आवश्यकताओं को अधिक प्रभावी ढंग से संबोधित करने तथा बच्चे की प्रगति की निरंतर निगरानी करने में सहायता मिलती है।

हालाँकि, विशेष विद्यालयों की कुछ सीमाएँ भी हैं। यहाँ बच्चों को सामान्य रूप से विकसित हो रहे साथियों के साथ अंतःक्रिया के अपेक्षाकृत कम अवसर मिलते हैं, जिससे सामाजिक संबंधों एवं समुदाय में सहभागिता के विकास पर प्रभाव पड़ सकता है। लंबे समय तक पृथक शैक्षिक वातावरण में रहने से मुख्यधारा के शैक्षिक एवं सामाजिक परिवेशों में समावेशन के अवसर भी सीमित हो सकते हैं। इसलिए, जहाँ उपयुक्त हो, बच्चों को **समावेशी शैक्षिक वातावरण में सहभागिता के लिए प्रोत्साहित** किया जाना चाहिए।

संसाधन कक्ष (Resource Room)

संसाधन कक्ष नियमित विद्यालय के भीतर स्थित एक **विशेषीकृत शैक्षिक सहयोग सुविधा** है, जहाँ दिव्यांगता वाले विद्यार्थियों को अतिरिक्त शिक्षण एवं व्यक्तिगत सहायता प्रदान की जाती है, जबकि वे नियमित कक्षाओं में नामांकित रहते हैं। विद्यार्थी अपना अधिकांश समय नियमित कक्षा में बिताते हैं और अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार विशिष्ट शैक्षणिक, व्यवहारात्मक, संचार या कार्यात्मक कौशल के सहयोग के लिए संसाधन कक्ष में जाते हैं।

संसाधन कक्ष में **उपचारात्मक शिक्षण, व्यक्तिगत शैक्षिक योजना, पाठ्यचर्या अनुकूलन, विशेष शिक्षण-अधिगम सामग्री का उपयोग तथा पढ़ने, लिखने, गणित, संचार एवं दैनिक जीवन कौशल के विकास** में सहायता प्रदान की जाती है। विशेष शिक्षक कक्षा शिक्षक के साथ मिलकर अधिगम संबंधी कठिनाइयों की पहचान करते हैं, शिक्षण रणनीतियों में आवश्यक संशोधन करते हैं तथा विद्यार्थी की प्रगति की निगरानी करते हैं।

संसाधन कक्ष मॉडल की प्रमुख विशेषता यह है कि यह **विशेषीकृत शैक्षिक सहयोग को नियमित कक्षा में सामाजिक अंतःक्रिया एवं सहभागिता के अवसरों** के साथ जोड़ता है। इस प्रकार, यह समावेशन को बढ़ावा देते हुए आवश्यकता के अनुसार अतिरिक्त सहायता प्रदान करता है और शैक्षणिक उपलब्धि तथा सामाजिक समायोजन दोनों में सुधार करने में सहायक होता है।

समावेशी कक्षा (Inclusive Classroom)

समावेशी कक्षा वह शैक्षिक व्यवस्था है जिसमें **दिव्यांगता वाले एवं बिना दिव्यांगता वाले विद्यार्थी एक ही कक्षा में साथ-साथ सीखते हैं** तथा उन्हें आवश्यक अनुकूलन एवं सहयोग सेवाएँ प्रदान की जाती हैं। समावेशी शिक्षा इस सिद्धांत पर आधारित है कि प्रत्येक बच्चे को दिव्यांगता, लिंग, सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि या सांस्कृतिक भिन्नताओं की परवाह किए बिना **समान सामान्य अधिगम वातावरण में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार** है।

समावेशी कक्षाएँ **समान सहभागिता, विविधता के सम्मान, व्यक्तिगत भिन्नताओं की स्वीकृति तथा सहयोगात्मक अधिगम** को बढ़ावा देती हैं। शिक्षक सभी विद्यार्थियों की विविध अधिगम आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षण विधियों, पाठ्यचर्या, मूल्यांकन प्रक्रियाओं एवं कक्षा वातावरण में आवश्यक अनुकूलन करते हैं।

बौद्धिक अक्षमता वाले विद्यार्थियों की सार्थक सहभागिता के लिए **सरलीकृत शिक्षण सामग्री, सहायक तकनीक, सहपाठी शिक्षण (Peer Tutoring), विभेदीकृत शिक्षण, लचीली मूल्यांकन विधियाँ तथा व्यक्तिगत सहयोग** जैसी व्यवस्थाएँ उपयोगी होती हैं।

समावेशी शिक्षा से दिव्यांगता वाले एवं बिना दिव्यांगता वाले दोनों प्रकार के बच्चों को लाभ होता है। बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चे साथियों के साथ अंतःक्रिया के माध्यम से **संचार कौशल, सामाजिक दक्षता, आत्मविश्वास एवं शैक्षणिक क्षमताओं** का विकास करते हैं। वहीं, सामान्य रूप से विकसित होने वाले विद्यार्थी **सहानुभूति, सहयोग, स्वीकृति एवं**

विविधता के प्रति सम्मान सीखते हैं, जिससे समावेशी विद्यालयी संस्कृति को बढ़ावा मिलता है।

NEP 2020 एवं समावेशी शिक्षा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 सभी शिक्षार्थियों, जिसमें दिव्यांग बच्चे भी शामिल हैं, के लिए **समावेशी, समान एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा** की दृढ़ता से वकालत करती है। यह शिक्षा को एक मौलिक अधिकार के रूप में स्वीकार करती है तथा सहभागिता में बाधा डालने वाली **भौतिक, सामाजिक एवं शैक्षिक बाधाओं को दूर करने** पर जोर देती है। नीति **सार्वभौमिक अधिगम अभिकल्प (Universal Design for Learning—UDL)** को बढ़ावा देती है, जिसमें विविध शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं के अनुरूप लचीली शिक्षण विधियों, अभिव्यक्ति के विभिन्न माध्यमों, सहभागिता एवं मूल्यांकन के तरीकों का उपयोग किया जाता है।

NEP 2020 में **बाधामुक्त विद्यालय, सुगम्य अवसंरचना, सहायक तकनीक, समावेशी शिक्षण-अधिगम सामग्री तथा उपयुक्त सहयोग सेवाओं** के विकास पर बल दिया गया है। यह समावेशी शिक्षा के लिए शिक्षकों की पूर्व-सेवा एवं सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता को भी रेखांकित करती है। इसके साथ ही, व्यापक शैक्षिक सहयोग एवं बेहतर अधिगम परिणामों के लिए **शिक्षकों, परिवारों, विशेषज्ञों एवं सामुदायिक संगठनों के बीच सहयोग** को प्रोत्साहित किया गया है।

गृह-आधारित शिक्षा (Home-Based Education)

गृह-आधारित शिक्षा ऐसी शैक्षिक सेवा है, जो गंभीर या बहु-दिव्यांगता वाले उन बच्चों को प्रदान की जाती है जो **चिकित्सीय, शारीरिक या कार्यात्मक सीमाओं** के कारण नियमित रूप से विद्यालय नहीं जा सकते। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि

दिव्यांगता की गंभीरता या भौगोलिक परिस्थितियों की परवाह किए बिना प्रत्येक बच्चे को शिक्षा तक पहुँच प्राप्त हो।

गृह-आधारित शिक्षा में विशेष शिक्षक या प्रशिक्षित कर्मियों द्वारा बच्चे के घर पर **व्यक्तिगत शिक्षण** प्रदान किया जाता है तथा इसमें माता-पिता एवं देखभालकर्ताओं का सहयोग लिया जाता है। शैक्षिक कार्यक्रम में **कार्यात्मक शैक्षणिक कौशल, संचार, स्व-देखभाल, गतिशीलता, सामाजिक अंतःक्रिया एवं दैनिक जीवन कौशल** पर ध्यान दिया जाता है। माता-पिता घर के वातावरण में अधिगम गतिविधियों को लागू करने तथा शैक्षिक लक्ष्यों को सुदृढ़ करने में सक्रिय भूमिका निभाते हैं।

NEP 2020 के अंतर्गत गृह-आधारित शिक्षा को समावेशी शिक्षा के विकल्प के रूप में नहीं, बल्कि एक पूरक शैक्षिक व्यवस्था के रूप में देखा गया है। जहाँ संभव हो, गृह-आधारित शिक्षा प्राप्त करने वाले बच्चों को साथियों के साथ अंतःक्रिया तथा विद्यालय एवं सामुदायिक गतिविधियों में क्रमिक सहभागिता के अवसर प्रदान किए जाने चाहिए, ताकि **समावेशन एवं सामाजिक विकास** को बढ़ावा मिल सके।

बहुविषयक टीम सहयोग (Multidisciplinary Team Collaboration)

बहुविषयक टीम सहयोग से तात्पर्य विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों द्वारा **बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों** के शैक्षिक एवं विकासात्मक हस्तक्षेपों के **मूल्यांकन, योजना, क्रियान्वयन एवं मूल्यांकन** के लिए किए जाने वाले समन्वित प्रयासों से है। चूँकि बौद्धिक अक्षमता व्यक्ति की कार्यप्रणाली के अनेक क्षेत्रों को प्रभावित करती है, इसलिए कोई एक विशेषज्ञ बच्चे की सभी आवश्यकताओं को प्रभावी रूप से पूरा नहीं कर सकता। सहयोगात्मक टीमवर्क यह सुनिश्चित करता है कि **शैक्षिक, उपचारात्मक, मनोवैज्ञानिक, चिकित्सीय एवं सामाजिक सेवाओं** को एक व्यापक हस्तक्षेप कार्यक्रम में एकीकृत किया जाए।

एक बहुविषयक टीम में सामान्यतः **विशेष शिक्षक, सामान्य शिक्षा शिक्षक, मनोवैज्ञानिक, वाक् एवं भाषा चिकित्सक, व्यावसायिक चिकित्सक, फिजियोथेरेपिस्ट, सामाजिक कार्यकर्ता, चिकित्सीय विशेषज्ञ तथा माता-पिता/देखभालकर्ता** शामिल होते हैं। प्रत्येक सदस्य अपने विशिष्ट ज्ञान एवं विशेषज्ञता का योगदान देता है तथा सभी सदस्य साझा शैक्षिक लक्ष्यों की दिशा में कार्य करते हैं। टीम के सदस्यों के बीच नियमित बैठकें, संयुक्त योजना, सूचनाओं का आदान-प्रदान तथा निरंतर संचार विद्यालय, घर एवं उपचारात्मक परिवेशों में हस्तक्षेप की निरंतरता बनाए रखने में सहायता करते हैं।

बहुविषयक सहयोग से **व्यापक मूल्यांकन, समन्वित हस्तक्षेप, संसाधनों का प्रभावी उपयोग, विशेषज्ञों के बीच बेहतर संचार, परिवार की अधिक सहभागिता तथा बेहतर शैक्षिक एवं विकासात्मक परिणाम** प्राप्त होते हैं। बच्चे की शैक्षणिक, व्यवहारात्मक, संचार, शारीरिक, भावनात्मक एवं सामाजिक आवश्यकताओं को एक साथ संबोधित करके बहुविषयक दृष्टिकोण **समग्र विकास** को बढ़ावा देता है तथा जीवन की समग्र गुणवत्ता में सुधार करता है।

विशेष शिक्षा शिक्षक की भूमिका (Role of the Special Education Teacher)

विशेष शिक्षा शिक्षक **बौद्धिक अक्षमता वाले शिक्षार्थियों** के शैक्षिक कार्यक्रम में केंद्रीय भूमिका निभाता है। शिक्षक की जिम्मेदारियों में शिक्षार्थी की शैक्षिक आवश्यकताओं का मूल्यांकन करना, व्यक्तिगत शिक्षण की योजना बनाना, साक्ष्य-आधारित शिक्षण रणनीतियों को लागू करना, प्रगति की निगरानी करना तथा सहयोगी सेवाओं का समन्वय करना शामिल है। परिवार एवं अन्य विशेषज्ञों के साथ सहयोग करते हुए विशेष शिक्षक यह सुनिश्चित करता है कि शैक्षिक कार्यक्रम बच्चे की **क्षमताओं, कठिनाइयों एवं भविष्य के लक्ष्यों** के अनुरूप हो।

विशेष शिक्षा शिक्षक की प्रमुख जिम्मेदारियों में से एक है कि वह औपचारिक एवं अनौपचारिक मूल्यांकन विधियों का उपयोग करके **अधिगम संबंधी आवश्यकताओं की पहचान एवं मूल्यांकन** करे। मूल्यांकन के निष्कर्षों के आधार पर शिक्षक **व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रम (Individualized Education Programme—IEP)** तैयार करता है और उसे लागू करता है। IEP में मापनीय लक्ष्य, शिक्षण रणनीतियाँ, आवश्यक अनुकूलन तथा मूल्यांकन प्रक्रियाएँ शामिल होती हैं। **पाठ्यचर्या अनुकूलन** भी एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है, जिसमें विषय-वस्तु, शिक्षण विधियों, अधिगम सामग्री, कक्षा गतिविधियों तथा मूल्यांकन तकनीकों में आवश्यक संशोधन किए जाते हैं, ताकि शिक्षार्थी सार्थक रूप से सहभागिता कर सके।

विशेष शिक्षा शिक्षक शैक्षणिक, संचार, सामाजिक, व्यवहारात्मक एवं **कार्यात्मक कौशलों में प्रत्यक्ष शिक्षण** भी प्रदान करता है तथा स्वतंत्रता एवं स्व-अधिवक्तृत्व (Self-Advocacy) को बढ़ावा देता है। हस्तक्षेप में विभिन्न परिवेशों में निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए माता-पिता, कक्षा शिक्षकों, चिकित्सकों, मनोवैज्ञानिकों एवं विद्यालय प्रशासन के साथ सहयोग आवश्यक है। विद्यार्थी की प्रगति की नियमित निगरानी एवं दस्तावेजीकरण से शैक्षिक योजनाओं में समय पर आवश्यक संशोधन किए जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त, विशेष शिक्षा शिक्षक **समावेशी प्रथाओं को बढ़ावा देने, दिव्यांग शिक्षार्थियों के अधिकारों की वकालत करने, कक्षा शिक्षकों को सहयोग देने तथा सकारात्मक, स्वीकारात्मक एवं सुगम्य अधिगम वातावरण विकसित करने** में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिससे प्रत्येक बच्चा अपनी अधिकतम क्षमता प्राप्त कर सके।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न (SAQ)

प्रश्न 2. बौद्धिक अक्षमता वाला एक शिक्षार्थी नियमित विद्यालय में नामांकित है, लेकिन विद्यालय के भीतर एक अलग विशेषीकृत सुविधा में विशिष्ट कौशलों के लिए व्यक्तिगत

शिक्षण प्राप्त करता है। इस व्यवस्था को सबसे उपयुक्त रूप से किस नाम से जाना जाता है?

(क) विशेष विद्यालय प्लेसमेंट

(ख) गृह-आधारित शिक्षा

(ग) संसाधन कक्ष सहयोग

(घ) पूर्ण पृथक्करण

4.4 संक्रमण एवं कैरियर विकास (Transition and CareerDevelopment)

NIMH संक्रमण मॉडल (NIMH Transition Model):

संक्रमण योजना **विशेष शिक्षा एवं व्यावसायिक पुनर्वास** का एक महत्वपूर्ण घटक है। इसका तात्पर्य बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्ति को **विद्यालय से वयस्क जीवन** की ओर संक्रमण के लिए व्यवस्थित रूप से तैयार करने की प्रक्रिया से है। इसमें रोजगार, स्वतंत्र जीवन-यापन, सामुदायिक सहभागिता तथा सामाजिक समायोजन जैसे क्षेत्र शामिल होते हैं।

भारतीय संदर्भ में **NIMH संक्रमण मॉडल** बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्तियों को विद्यालय से **व्यावसायिक प्रशिक्षण एवं रोजगार** की ओर संक्रमण में सहायता प्रदान करने के लिए विकसित एक संरचित रूपरेखा है। यह मॉडल इस बात पर जोर देता है कि रोजगार की तैयारी विद्यालयी शिक्षा के दौरान ही शुरू हो जानी चाहिए तथा मूल्यांकन, रोजगार प्लेसमेंट एवं प्लेसमेंट के बाद सहयोग तक जारी रहनी चाहिए।

मॉडल में **चार प्रमुख चरण** शामिल हैं:

चरण 1: विद्यालय-आधारित तैयारी

(School-Based Preparation)

- व्यवस्थित विद्यालयी शिक्षण एवं कार्यात्मक शिक्षा प्रदान करना।
- **दैनिक जीवन, पूर्व-व्यावसायिक एवं कार्य-तत्परता कौशल** विकसित करना।
- विद्यार्थियों को भविष्य के व्यावसायिक प्रशिक्षण एवं रोजगार के लिए तैयार करना।

चरण 2: मूल्यांकन एवं संक्रमण योजना

(Assessment and Transition Planning)

सामुदायिक मूल्यांकन (Community Assessment)

- रोजगार के अवसरों की पहचान करना।
- सामुदायिक संसाधनों एवं चुनौतियों का विश्लेषण करना।
- सामुदायिक सहभागिता के लिए रणनीतियाँ विकसित करना।

व्यावसायिक मूल्यांकन (Vocational Assessment)

- परिवार की आवश्यकताओं का मूल्यांकन करना।
- सामान्य एवं विशिष्ट व्यावसायिक कौशलों का मूल्यांकन करना।

व्यक्तिगत संक्रमण योजना

(Individualized Transition Plan—ITP)

- कार्य विश्लेषण एवं कार्य-उपयुक्तता का निर्धारण (Job Matching)।
- कार्यस्थल पर प्रशिक्षण (On-the-Job Training)।

- विद्यार्थी के भविष्य के रोजगार की योजना बनाने में माता-पिता की सक्रिय सहभागिता।

चरण 3: वास्तविक रोजगार में प्लेसमेंट

(Placement in Actual Job)

विद्यार्थियों को **सिमुलेटेड एवं वास्तविक कार्य परिवेशों** में प्रशिक्षण दिया जाता है तथा उनकी क्षमताओं एवं आवश्यकताओं के अनुरूप उपयुक्त रोजगार में नियुक्त किया जाता है, जैसे:

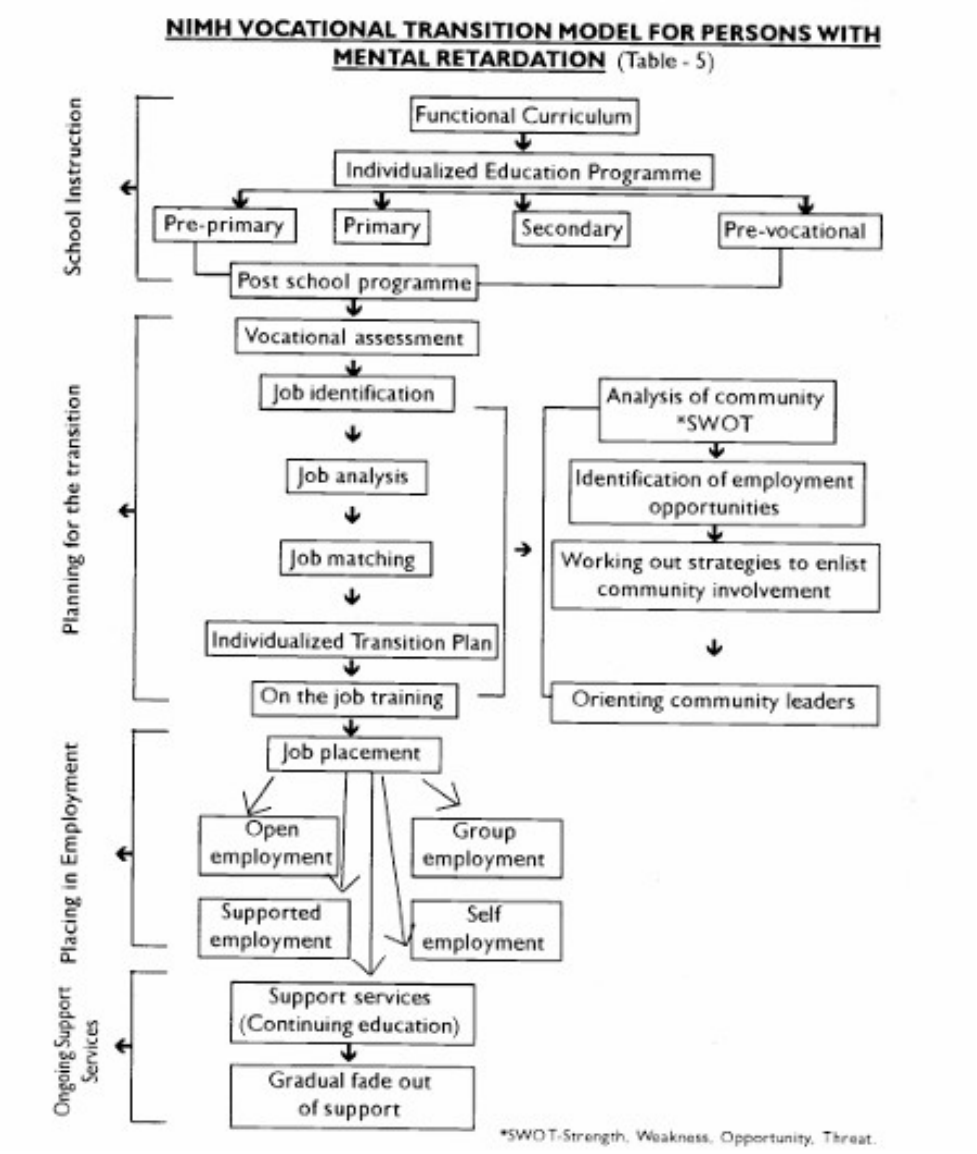
- **खुला प्रतिस्पर्धात्मक रोजगार (Open Competitive Employment)**
- **सहायित रोजगार (Supported Employment)**
- **संरक्षित/समूह रोजगार (Sheltered/Group Employment)**
- **स्व-रोजगार/गृह-आधारित रोजगार (Self/Home-Based Employment)**

चरण 4: सहयोगी सेवाएँ

(Support Services)

व्यक्तियों को रोजगार बनाए रखने तथा स्वतंत्रता प्राप्त करने में सहायता देने के लिए **निरंतर सहयोग** प्रदान किया जाता है। इसमें शामिल हैं:

- अतिरिक्त व्यावसायिक एवं शैक्षणिक प्रशिक्षण।
- कार्यस्थल की निगरानी।
- कौशलों का पुनःप्रशिक्षण/सुधारात्मक प्रशिक्षण।
- नियोक्ता के साथ समन्वय।
- स्वतंत्र जीवन-यापन के लिए सहयोग।
- सामाजिक कार्य एवं सामुदायिक सहयोग।


NIMH VOCATIONAL TRANSITION MODEL FOR PERSONS WITH MENTAL RETARDATION (Table - 5)
School Instruction
Functional Curriculum
Individualized Education Programme
Pre-primary
Primary
Secondary
Pre-vocational
Post school programme
Planning for the transition
Vocational assessment
Job identification
Job analysis
Job matching
Individualized Transition Plan
On the job training
Analysis of community *SWOT
Identification of employment opportunities
Working out strategies to enlist community involvement
Orienting community leaders
Placing in Employment
Job placement
Open employment
Group employment
Supported employment
Self employment
Ongoing Support Services
Support services (Continuing education)
Gradual fade out of support
*SWOT-Strength, Weakness, Opportunity, Threat.

स्रोत (Source): Thressiakutty, A. T., & Govinda Rao, L. ***Transition of Persons with Mental Retardation from School to Work: A Guide***. Secunderabad: National Institute for the Mentally Handicapped (NIMH).

स्व-मूल्यांकन प्रश्न 3 (Q3)

NIMH संक्रमण मॉडल में, एक विद्यार्थी ने व्यावसायिक मूल्यांकन एवं कार्य-उपयुक्तता निर्धारण पूरा कर लिया है और अब वास्तविक कार्यस्थल पर कार्यों को सीख रहा है। विद्यार्थी मुख्यतः संक्रमण के किस चरण में प्रवेश कर रहा है?

(क) विद्यालय-आधारित तैयारी

(ख) मूल्यांकन एवं संक्रमण योजना

(ग) वास्तविक रोजगार में प्लेसमेंट

(घ) सहयोगी सेवाएँ

4.5 सारांश (Summary)

यह इकाई **बौद्धिक अक्षमता (Intellectual Disability)** वाले व्यक्तियों की शिक्षा, संक्रमण, व्यावसायिक विकास तथा समावेशन को **जीवन-चक्र के दृष्टिकोण** से प्रस्तुत करती है। शैशवावस्था एवं प्रारंभिक बाल्यावस्था को विकास की महत्वपूर्ण अवस्थाएँ माना गया है, क्योंकि प्रारंभिक पहचान एवं समय पर हस्तक्षेप से **संज्ञानात्मक, भाषा, मोटर, सामाजिक, भावनात्मक तथा अनुकूलनात्मक कौशलों** के विकास में सुधार किया जा सकता है। विकासात्मक मूल्यांकन, उपचारात्मक सेवाएँ, शैक्षिक उद्दीपन, स्वास्थ्य एवं पोषण संबंधी सहयोग, परिवार की सहभागिता तथा व्यक्तिगत हस्तक्षेप योजना बेहतर विकास एवं विद्यालय-तत्परता में योगदान देते हैं।

विद्यालयी आयु के दौरान उपयुक्त **शैक्षिक प्लेसमेंट** का निर्धारण शिक्षार्थी की क्षमताओं, आवश्यकताओं एवं सहयोग की जरूरतों के अनुसार किया जाता है। **विशेष विद्यालय, संसाधन कक्ष, समावेशी कक्षा तथा गृह-आधारित शिक्षा** विभिन्न प्रकार की शैक्षिक सहायता प्रदान करते हैं। समावेशी शिक्षा में समान सहभागिता, विविधता का सम्मान, पाठ्यचर्या अनुकूलन, सहायक तकनीक, सहपाठी सहयोग तथा व्यक्तिगत सहायता पर जोर दिया जाता है। मूल्यांकन, **IEP निर्माण, शिक्षण, पाठ्यचर्या अनुकूलन, प्रगति की निगरानी तथा सेवाओं के समन्वय** के लिए बहुविषयक सहयोग एवं विशेष शिक्षा शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण है।

यह इकाई **संक्रमण एवं कैरियर विकास** को बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्तियों को वयस्क जीवन के लिए तैयार करने की एक व्यवस्थित प्रक्रिया के रूप में भी स्पष्ट करती है। इसमें रोजगार, स्वतंत्र जीवन-यापन, सामुदायिक सहभागिता तथा सामाजिक समायोजन शामिल हैं। **NIMH संक्रमण मॉडल** में विद्यालय-आधारित तैयारी, मूल्यांकन एवं संक्रमण योजना, रोजगार में प्लेसमेंट तथा प्लेसमेंट के बाद सहयोग शामिल हैं। व्यावसायिक विकास में व्यक्ति की क्षमताओं एवं रुचियों के अनुसार **कार्य-संबंधी ज्ञान, कौशल, अभिवृत्तियों, कार्य आदतों, अनुकूलनात्मक व्यवहार एवं रोजगारपरक कौशलों** का विकास किया जाता है।

इकाई में रोजगार के विभिन्न विकल्पों तथा दिव्यांगजनों के कौशल विकास एवं रोजगार को समर्थन देने वाली सरकारी पहलों पर भी चर्चा की गई है। **संरक्षित रोजगार, खुला रोजगार तथा स्व-रोजगार** अलग-अलग स्तर का सहयोग प्रदान कर सकते हैं। कौशल विकास कार्यक्रम **बाजारोन्मुख प्रशिक्षण, कार्य-उपयुक्तता, रोजगार प्लेसमेंट तथा निरंतर सहयोग** पर जोर देते हैं। समग्र रूप से, यह इकाई स्पष्ट करती है कि प्रभावी समावेशन केवल शैक्षिक प्लेसमेंट तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य **स्वतंत्रता, गरिमा, सार्थक सहभागिता, रोजगार, सामाजिक एकीकरण तथा जीवन की गुणवत्ता** को बढ़ावा देना है।

4.6 शब्दावली (Glossary)

- **प्रारंभिक हस्तक्षेप:** विकासात्मक विलंब वाले छोटे बच्चों को उनके विकास को बढ़ाने के लिए प्रदान की जाने वाली सेवाएँ।
- **समावेशी शिक्षा:** ऐसी शिक्षा व्यवस्था जिसमें दिव्यांगता वाले एवं बिना दिव्यांगता वाले शिक्षार्थी एक साथ शिक्षा प्राप्त करते हैं।
- **संसाधन कक्ष:** नियमित विद्यालय के भीतर उपलब्ध एक विशेषीकृत सहयोगात्मक शैक्षिक व्यवस्था।
- **बहुविषयक टीम:** विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों का ऐसा समूह जो सहयोगात्मक रूप से कार्य करता है।
- **संक्रमण योजना :** विद्यालय से वयस्क जीवन की ओर संक्रमण के लिए की जाने वाली तैयारी की प्रक्रिया।
- **व्यक्तिगत संक्रमण योजना :** वयस्क जीवन की ओर संक्रमण के लिए तैयार की गई एक संरचित व्यक्तिगत योजना।
- **समर्थित रोजगार :** ऐसे रोजगार की व्यवस्था जिसमें व्यक्ति को निरंतर सहयोगात्मक सेवाएँ प्रदान की जाती हैं।
- **व्यावसायिक विकास :** व्यक्तियों को रोजगार एवं कैरियर के लिए तैयार करने की प्रक्रिया।
- **प्लेसमेंट:** व्यक्ति की क्षमताओं एवं आवश्यकताओं के अनुरूप उपयुक्त रोजगार अवसर से उसका मिलान करना।
- **अनुवर्ती सेवाएँ :** रोजगार में सफलता सुनिश्चित करने के लिए प्लेसमेंट के बाद प्रदान की जाने वाली सहयोगात्मक सेवाएँ।

4.7 स्व-मूल्यांकन प्रश्नों के उत्तर

उत्तर 1: (ख) प्रारंभिक मस्तिष्क विकास उपयुक्त हस्तक्षेप के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होता है।

उत्तर 2: (ग) संसाधन कक्ष सहयोग

उत्तर 3: (ग) वास्तविक रोजगार में प्लेसमेंट

4.8 मॉडल परीक्षा प्रश्न

A. अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. प्रारंभिक हस्तक्षेप (Early Intervention) को परिभाषित कीजिए।
2. IEP क्या है?

B. लघु उत्तरीय प्रश्न

1. समावेशी कक्षा में विशेष शिक्षा शिक्षक की भूमिका स्पष्ट कीजिए।
2. बहुविषयक टीम सहयोग के महत्व का वर्णन कीजिए।

C. दीर्घ उत्तरीय/निबंधात्मक प्रश्न

1. बौद्धिक अक्षमता वाले शिक्षार्थियों के लिए उपलब्ध शैक्षिक प्लेसमेंट विकल्पों की चर्चा कीजिए तथा समावेशी शिक्षा के सिद्धांतों की व्याख्या कीजिए।
2. व्यावसायिक विकास की व्याख्या कीजिए तथा बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्तियों को रोजगार एवं स्वतंत्र जीवन-यापन के लिए तैयार करने में इसके महत्व की चर्चा कीजिए।

D. अनुप्रयोग-आधारित प्रश्न

1. बौद्धिक अक्षमता वाला एक शिक्षार्थी कक्षा की गतिविधियों में सहभागिता करने में कठिनाई का अनुभव करता है। उसके लिए उपयुक्त शैक्षिक अनुकूलन एवं सहयोगात्मक रणनीतियों का सुझाव दीजिए।
2. बौद्धिक अक्षमता वाला एक युवा वयस्क रोजगार की तैयारी कर रहा है। उपयुक्त रोजगार की पहचान करने के लिए व्यावसायिक मूल्यांकन एवं व्यक्ति–कार्य अनुकूलता (Person–Job Fit) का उपयोग किस प्रकार किया जा सकता है, समझाइए।

4.9 सुझाए गए पठन स्रोत/मुक्त शैक्षिक संसाधन (Suggested Readings/Open Educational Resources—OERs)

1. Hallahan, D. P., Kauffman, J. M., & Pullen, P. C. *Exceptional Learners: An Introduction to Special Education.*

2. Heward, W. L. *Exceptional Children: An Introduction to Special Education.*
3. Smith, D. D. *Introduction to Special Education: Teaching in an Age of Opportunity.*
4. National Education Policy (2020), Government of India.
5. Rights of Persons with Disabilities Act (2016).
6. Rehabilitation Council of India (RCI) publications.
7. National Institute for the Empowerment of Persons with Intellectual Disabilities (NIEPID) resources.
8. SWAYAM and e-PG Pathshala OER modules on Special Education.

4.10 संदर्भ (References)

Government of India. (2020). *National Education Policy 2020*. Ministry of Education.

1. Government of India. (2016). *Rights of Persons with Disabilities Act, 2016*.
2. Hallahan, D. P., Kauffman, J. M., & Pullen, P. C. (2022). *Exceptional Learners: An Introduction to Special Education*. Pearson.
3. Heward, W. L. (2023). *Exceptional Children: An Introduction to Special Education*. Pearson.
4. Smith, D. D. (2020). *Introduction to Special Education: Making a Difference*. Pearson.

5. National Institute for the Empowerment of Persons with Intellectual Disabilities (NIEPID). Training and resource materials.
6. Rehabilitation Council of India (RCI). Guidelines and publications on Special Education.
7. Department of Empowerment of Persons with Disabilities (DEPwD). Government schemes and programme documents.

इकाई 5- ट्रांज़िशन और करियर डेवलपमेंट - ITP (इंडिविजुअलाइज़्ड ट्रांज़िशन प्लान), वोकेशनल डेवलपमेंट; रोज़गार, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय (MSJ&E) के दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग (DEPwD) की रोज़गार योजनाएं, खासकर बौद्धिक दिव्यांगता वाले लोगों के संदर्भ में

5.1 प्रस्तावना

5.2 उद्देश्य

5.3 व्यक्तिगत बदलाव योजना (Individualized Transition Plan)

5.3.1 ITP में क्या-क्या शामिल होना चाहिए?

5.3.2 ITP टीम के सदस्य

5.4 व्यावसायिक विकास (vocational development)

5.5 व्यावसायिक बदलाव की प्रक्रिया

5.6 व्यावसायिक विकास एवं रोजगार

5.7 समावेशी संदर्भों में निहितार्थ

5.8 सारांश (Summary)

5.9 शब्दावली (Glossary)

5.10 स्व-मूल्यांकन प्रश्नों (SAQs) के उत्तर (Answers to Self-Assessment Questions)

5.11 संदर्भ (References)

5.12 निबंधात्मक प्रश्न (Model Examination Questions)

5.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में स्कूल से नौकरी की ओर बढ़ने में होने वाले बदलाव के संबंध में बताया गया है| ITP, IEP का एक हिस्सा है जो दिव्यांग छात्रों के लिए बदलाव के लक्ष्यों और सेवाओं की रूपरेखा तैयार करता है। दिव्यांग छात्रों के लिए वयस्क जीवन में बदलाव चुनौतीपूर्ण होता है। मार्गदर्शन के बिना, छात्र अक्सर असफल हो जाते हैं या समुदाय से अलग-थलग पड़ जाते हैं। बदलाव की योजना छात्र, परिवार और शिक्षकों को असल दुनिया के लिए तैयार करती है। अक्सर दिव्यांग लोगों को नौकरी पाने में मुश्किलों का सामना करना पड़ता है, जिसकी वजह है कौशल का सीमित अनुभव, अपर्याप्त ट्रेनिंग और समुदाय से सहयोग की कमी। वोकेशनल ट्रांज़िशन (व्यावसायिक बदलाव की प्रक्रिया) इन कमियों को दूर करता है; यह काम से जुड़े कौशल, लोगों के साथ घुलने-मिलने की क्षमता और असल ज़िंदगी की समस्याओं को सुलझाने के लिए व्यवस्थित ट्रेनिंग देता है। व्यावसायिक विकास **बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्तियों** के विद्यालय से वयस्क जीवन की ओर संक्रमण का एक महत्वपूर्ण घटक है। यह **कार्य से संबंधित ज्ञान, कौशल, अभिवृत्तियों, कार्य आदतों, अनुकूलनात्मक व्यवहार तथा रोजगारपरक कौशलों** के विकास की एक व्यवस्थित एवं निरंतर प्रक्रिया है, जो व्यक्ति को सार्थक एवं उत्पादक गतिविधियों में सहभागिता के लिए आवश्यक होती है।

5.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई का अध्ययन करने के पश्चात विद्यार्थी –

- दिव्यांग छात्रों के लिए व्यक्तिगत बदलाव योजना के विषय में जान सकेंगे |
- बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्तियों के लिए उपलब्ध रोजगार मॉडलों के विषय में जान सकेंगे |
- व्यावसायिक कौशल प्रशिक्षण के संचालन में आने वाली चुनौतियाँ के विषय में जान सकेंगे |

- बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्तियों के लिए उपलब्ध विभिन्न रोजगार के विषय में जान सकेंगे|

5.3 व्यक्तिगत बदलाव योजना (Individualized Transition Plan)

'इंडविजुअल ट्रांज़िशन प्लान: स्कूल से नौकरी की ओर बढ़ने में मदद' - यह खास शैक्षिक ज़रूरतों वाले युवाओं के लिए स्कूल से नौकरी की ओर बढ़ने पर हुई पिछली इकाई का ही अगला हिस्सा है।

ट्रांज़िशन प्लानिंग एक ऐसी प्रक्रिया है जो 'इंडिविजुअलाइज़्ड एजुकेशन प्रोग्राम' (IEP) वाले छात्रों को यह तय करने में मदद करती है कि वे हाई स्कूल के बाद क्या करना चाहते हैं। यह उन्हें उस लक्ष्य तक पहुँचने का तरीका समझने में भी मदद करती है। इसका मकसद किशोरों को आत्मनिर्भर युवा बनने के लिए तैयार होने में मदद करना है।

ITP, IEP का एक हिस्सा है जो दिव्यांग छात्रों के लिए बदलाव के लक्ष्यों और सेवाओं की रूपरेखा तैयार करता है। IDEA के अनुसार, 16 साल की उम्र तक सभी छात्रों के लिए ITP होना ज़रूरी है। ITP एक ऐसा खाका है जिससे कम समय से लेकर लंबे समय तक के वयस्क जीवन के नतीजों की योजना बनाई जाती है और सालाना लक्ष्य और उद्देश्य तय किए जाते हैं।

ITP के दो अहम हिस्से होते हैं। एक हिस्सा दिव्यांग बच्चे के लिए स्कूल छोड़ने के बाद स्वतंत्र वयस्क जीवन जीने के लिए शैक्षिक लक्ष्यों की योजना बनाना है। इसमें स्वतंत्र जीवन, रोज़गार (सपोर्टेड रोज़गार सहित), हाई स्कूल के बाद की शिक्षा और खुद से फ़ैसले लेने के कौशल जैसे क्षेत्र शामिल होने चाहिए। कानून के अनुसार, ITP की योजना में समुदाय में अनुभव शामिल होना चाहिए। स्कूल 16-22 साल की उम्र के उन छात्रों के लिए कई खास कार्यक्रम चलाते हैं जो हाई स्कूल से वयस्क जीवन की ओर बढ़ रहे होते हैं।

ITP का दूसरा हिस्सा अलग-अलग एजेंसियों के बीच तालमेल बिठाना है। स्कूल को केस मैनेजर की भूमिका निभानी चाहिए और स्कूल तथा अन्य सरकारी और सार्वजनिक सेवा संगठनों के बीच एक सहयोगी टीम बनानी चाहिए। माता-पिता भविष्य की सेवा देने वाले संगठनों के पेशेवरों से संपर्क कर सकते हैं और उन्हें बुला सकते हैं। यह अंतर-एजेंसी तालमेल दिव्यांग लोगों के लिए स्कूल से वयस्क जीवन तक आसानी से बदलाव सुनिश्चित करने का एक अहम हिस्सा है।

5.3.1 ITP में क्या-क्या शामिल होना चाहिए?

- छात्र की पसंद, रुचियां, खूबियां और ज़रूरतें
- माता-पिता की भागीदारी
- खास लक्ष्यों के लिए शामिल होने वालों की सूची
- विभिन्न रणनीतियों, समुदाय और वयस्क जीवन के अनुभवों के इस्तेमाल को दिखाने वाली गतिविधियों का एक समन्वित सेट
- सालाना लक्ष्य
- माता-पिता और छात्रों की ज़िम्मेदारियां
- बदलाव की योजना बनाना क्यों ज़रूरी है?

दिव्यांग छात्रों के लिए वयस्क जीवन में बदलाव चुनौतीपूर्ण होता है। मार्गदर्शन के बिना, छात्र अक्सर असफल हो जाते हैं या समुदाय से अलग-थलग पड़ जाते हैं। बदलाव की योजना छात्र, परिवार और शिक्षकों को असल दुनिया के लिए तैयार करती है। लक्ष्य छात्र की खूबियों के अनुसार तय किए जाते हैं और उसके भविष्य के लिए विकल्प प्रदान करते हैं।

5.3.2 ITP टीम के सदस्य

- छात्र
- माता-पिता और परिवार के सदस्य

- विशेष शिक्षा शिक्षक
- स्कूल प्रशासक
- व्यावसायिक शिक्षक
- सामान्य शिक्षा शिक्षक
- काउंसलिंग शिक्षक
- वयस्क सेवा संगठनों के पेशेवर
- जॉब डेवलपर
- नियोक्ता और समुदाय के नेता
- जॉब कोच
- बदलाव विशेषज्ञ (ट्रांज़िशन स्पेशलिस्ट)

IEP ट्रांज़िशन प्लानिंग सिर्फ़ उम्मीदों पर आधारित कोई गतिविधि या विचारों के आदान-प्रदान का सत्र (ब्रेनस्टॉर्मिंग सेशन) नहीं है। प्लानिंग के दौरान, किशोर खास लक्ष्यों पर काम करते हैं। इन लक्ष्यों को पाने के लिए उन्हें सेवाएँ मिलती हैं और वे कई तरह की गतिविधियाँ करते हैं।

ट्रांज़िशन प्रक्रिया का मुख्य हिस्सा 'ट्रांज़िशन प्लान' होता है। छात्र के 16 साल का होने तक, यह उनके IEP का एक ज़रूरी हिस्सा बन जाता है। इसे तैयार करने के लिए, IEP टीम छात्र के साथ मिलकर उनकी खूबियों और रुचियों की पहचान करती है। इन्हीं के आधार पर आगे की प्लानिंग की जाती है।

IEP ट्रांज़िशन प्लान के दो अहम हिस्से होते हैं: स्कूल के बाद के लक्ष्य (पोस्ट-सेकेंडरी गोल्स) और ट्रांज़िशन सेवाएँ (साथ ही गतिविधियाँ)।

ट्रांज़िशन प्लानिंग क्या है?

ट्रांज़िशन प्लानिंग एक ऐसी प्रक्रिया है जिसे 'इंडिविजुअल्स विद डिसएबिलिटीज एजुकेशन एक्ट' (IDEA 2004) के तहत उन सभी छात्रों के लिए ज़रूरी बनाया गया है,

जिनका K-12 शिक्षा में 'इंडिविजुअलाइज्ड एजुकेशन प्रोग्राम' (IEP) है। इसका मकसद छात्र को स्कूल से स्कूल के बाद की गतिविधियों की ओर बढ़ने में मदद करना है।

ट्रांज़िशन प्लानिंग में ये बातें होनी चाहिए:

- यह छात्र के 16 साल का होने से पहले शुरू होनी चाहिए;
- यह हर छात्र के हिसाब से अलग-अलग (इंडिविजुअलाइज्ड) होनी चाहिए;
- यह छात्र की खूबियों, पसंद और रुचियों पर आधारित होनी चाहिए; और
- इसमें काम और कम्युनिटी लाइफ के लिए ज़रूरी व्यावहारिक कौशल (functional skills) विकसित करने के मौके शामिल होने चाहिए।

ट्रांज़िशन प्लान कौन बनाता है?

- IEP टीम;
- विद्यार्थी;
- माता-पिता;
- वैकल्पिक– नियोक्ता, कॉलेज के प्रतिनिधि, विद्यार्थी के समर्थक

ट्रांज़िशन टीम का काम क्या है?

- हाई स्कूल के बाद के जीवन के लिए विद्यार्थी के विज़न (सोच) की पहचान करना;
- इस बात पर चर्चा करना कि विद्यार्थी अभी पढ़ाई और रोज़मर्रा के कामों में क्या-क्या कर सकता है;
- उम्र के हिसाब से सही और मापे जा सकने वाले लक्ष्य तय करना;

- विद्यार्थी की खूबियों को और बेहतर बनाने और ज़रूरी सुविधाओं की पहचान करने के लिए सेवाएँ शुरू करना;
- IEP में हर ट्रांज़िशन गतिविधि के बारे में यह तय करना कि उसके लिए कौन ज़िम्मेदार है और वह गतिविधि कब शुरू और खत्म होगी।

विद्यार्थी ट्रांज़िशन प्लानिंग के लिए सबसे अच्छी तैयारी कैसे कर सकते हैं?

स्कूल को विद्यार्थी को ये बातें सिखानी चाहिए:

- IEP का मकसद और फ़ायदे;
- IEP मीटिंग की प्रक्रिया, जिसमें यह भी शामिल है कि कौन-कौन मौजूद होगा और क्यों;
- IEP मीटिंग के ट्रांज़िशन प्लानिंग वाले हिस्से का मकसद;
- विद्यार्थी की राय का महत्व;
- अपनी खूबियों और चुनौतियों (पढ़ाई और पढ़ाई से अलग) के बारे में बताना;
- अपने भविष्य के विज़न को शब्दों में बयां करना;
- अपने लक्ष्य तय करने में हिस्सा लेना; और
- अपने लक्ष्यों को पाने के लिए ज़रूरी मदद के बारे में खुद आवाज़ उठाना (self-advocate करना)।

अभ्यास प्रश्न

1.दिव्यांग छात्रों के लिए ..... जीवन में बदलाव चुनौतीपूर्ण होता है।
2. ट्रांज़िशन प्लानिंग छात्र के ..... साल का होने से पहले शुरू होनी चाहिए

5.4 व्यावसायिक विकास (vocational development)

अक्सर दिव्यांग लोगों को नौकरी पाने में मुश्किलों का सामना करना पड़ता है, जिसकी वजह है कौशल का सीमित अनुभव, अपर्याप्त ट्रेनिंग और समुदाय से सहयोग की कमी। वोकेशनल ट्रांज़िशन (व्यावसायिक बदलाव की प्रक्रिया) इन कमियों को दूर करता है; यह काम से जुड़े कौशल, लोगों के साथ घुलने-मिलने की क्षमता और असल ज़िंदगी की समस्याओं को सुलझाने के लिए व्यवस्थित ट्रेनिंग देता है। थ्रेसिया कुट्टी (2006) के अनुसार, एक व्यापक व्यावसायिक कार्यक्रम व्यक्तिगत, सामाजिक, भावनात्मक और व्यावसायिक क्षेत्रों को शामिल करते हुए सर्वांगीण विकास में मदद करता है।

सर्वप्रथम 'इंडिविजुअल्स विद डिसएबिलिटीज एजुकेशन एक्ट' (IDEA) और इसमें किए गए बदलावों (पब्लिक लॉ 101-476, 1990; 1997 में दोबारा मंज़ूरी) के तहत यह ज़रूरी किया गया कि 14 साल और उससे ज़्यादा उम्र के छात्रों के लिए 'इंडिविजुअलाइज़्ड एजुकेशन प्रोग्राम' (IEP) में ट्रांज़िशन सर्विस (एक अवस्था से दूसरी अवस्था में जाने के लिए ज़रूरी सेवा) की ज़रूरतों को शामिल किया जाए। 16 साल की उम्र तक, IEP में शिक्षा, सामाजिक सेवाओं और व्यावसायिक पुनर्वास से जुड़ी अलग-अलग एजेंसियों की मिली-जुली कोशिशों का ज़िक्र होना चाहिए। ये कानूनी नियम शुरुआती प्लानिंग और अलग-अलग सेक्टर के बीच सहयोग पक्का करते हैं।

व्यावसायिक मूल्यांकन

- नौकरी की पहचान और विश्लेषण
- नौकरी का मिलान
- व्यक्तिगत व्यावसायिक बदलाव योजना (IVTP)
- काम के दौरान प्रशिक्षण

• रोज़गार प्लेसमेंट (ओपन, सपोर्टेड, शेल्टर्ड या स्वरोज़गार)

• लगातार सहायता और धीरे-धीरे सहायता कम करना

5.5 व्यावसायिक बदलाव की प्रक्रिया (Vocational Transition Process)

व्यावसायिक बदलाव की प्रक्रिया में आम तौर पर ये चरण शामिल होते हैं:

1. बदलाव के लिए एक औपचारिक योजना बनाना

2. व्यावहारिक और व्यावसायिक प्रशिक्षण के ज़रिए इसे लागू करना

3. काम की जगह का आकलन और नौकरी का विश्लेषण

4. प्लेसमेंट और सहायता-प्राप्त रोज़गार

5. फ़ॉलो-अप और लगातार सहायता।

बदलाव की योजना बनाने में छात्र की खूबियों और ज़रूरतों की पहचान करना, शैक्षिक कार्यक्रमों को करियर के लक्ष्यों के अनुरूप बनाना और प्रशिक्षण को धीरे-धीरे नकली माहौल से असली काम की जगहों पर ले जाना शामिल है।

5.6 व्यावसायिक विकास एवं रोजगार (Vocational Development and Employment)

व्यावसायिक विकास (Vocational Development)

व्यावसायिक विकास **बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्तियों** के विद्यालय से वयस्क जीवन की ओर संक्रमण का एक महत्वपूर्ण घटक है। यह **कार्य से संबंधित ज्ञान, कौशल, अभिवृत्तियों, कार्य आदतों, अनुकूलनात्मक व्यवहार तथा रोजगारपरक कौशलों** के विकास की एक

व्यवस्थित एवं निरंतर प्रक्रिया है, जो व्यक्ति को सार्थक एवं उत्पादक गतिविधियों में सहभागिता के लिए आवश्यक होती है। बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्तियों के लिए व्यावसायिक विकास को उनकी **बौद्धिक एवं अनुकूलनात्मक कार्यप्रणाली, संचार क्षमताओं, मोटर एवं संवेदी कौशलों, रुचियों, अभिक्षमता, कार्य व्यवहार तथा आवश्यक सहयोग के स्तर** के अनुसार व्यक्तिगत बनाया जाना चाहिए। व्यावसायिक विकास का अंतिम उद्देश्य **अधिकतम स्वतंत्रता, आर्थिक सहभागिता, गरिमा, आत्म-सम्मान, सामाजिक सहभागिता तथा समुदाय में समावेशन** को बढ़ावा देना है।

व्यावसायिक विकास एक **निरंतर विकासात्मक प्रक्रिया** है, जो बाल्यावस्था से प्रारंभ होकर विभिन्न चरणों में आगे बढ़ती है। इसमें आधारभूत कौशलों का विकास, पूर्व-व्यावसायिक तैयारी, व्यावसायिक प्रशिक्षण, रोजगार तथा रोजगार बनाए रखने की प्रक्रिया शामिल है। **प्रारंभिक बाल्यावस्था** में स्व-देखभाल, संचार, मोटर विकास, ध्यान, अनुकरण, निर्देशों का पालन, सामाजिक अंतःक्रिया तथा घर की सरल गतिविधियों में सहभागिता जैसे आधारभूत कौशलों के विकास पर जोर दिया जाता है। ये कौशल भविष्य के व्यावसायिक विकास की नींव तैयार करते हैं। **विद्यालयी आयु एवं किशोरावस्था** में ध्यान धीरे-धीरे **पूर्व-व्यावसायिक कौशलों** की ओर स्थानांतरित होता है। इनमें छँटाई, मिलान, वर्गीकरण, क्रम निर्धारण, वस्तुओं एवं उपकरणों का उपयोग, निर्देशों का पालन, ध्यान बनाए रखना, कार्य-सहनशीलता विकसित करना, दिए गए कार्यों को पूरा करना, स्वच्छता बनाए रखना तथा सुरक्षा प्रक्रियाओं का पालन करना शामिल हैं।

अगले चरण में **व्यावसायिक मूल्यांकन एवं प्रशिक्षण** किया जाता है, ताकि उपयुक्त व्यावसायिक क्षेत्रों की पहचान की जा सके और व्यवस्थित प्रशिक्षण प्रदान किया जा सके। व्यावसायिक प्रशिक्षण व्यक्ति की **क्षमताओं, रुचियों, योग्यताओं, अभिक्षमता, पूर्व अनुभवों तथा सहयोग की आवश्यकताओं** पर आधारित होना चाहिए। व्यापक व्यावसायिक मूल्यांकन में बौद्धिक एवं अनुकूलनात्मक कार्यप्रणाली, संचार एवं मोटर क्षमताएँ, संवेदी कौशल, व्यावसायिक रुचि एवं अभिक्षमता, ध्यान अवधि, कार्य-

सहनशीलता, कार्य व्यवहार, परिवार की अपेक्षाएँ, उपलब्ध सामुदायिक संसाधन तथा स्थानीय रोजगार के अवसरों को ध्यान में रखा जाना चाहिए। इसलिए व्यवसाय का चयन **व्यक्ति–कार्य अनुकूलता (Person–Job Fit)** के सिद्धांत पर आधारित होना चाहिए। इसका अर्थ है कि व्यवसाय का चयन केवल अक्षमता के प्रकार के आधार पर न करके व्यक्ति की क्षमताओं, प्राथमिकताओं एवं सहयोग की आवश्यकताओं का कार्य की आवश्यकताओं के साथ मिलान करके किया जाए।

व्यावसायिक विकास को **व्यक्तिगत संक्रमण योजना (Individualized Transition Plan—ITP)** का अभिन्न अंग होना चाहिए। संक्रमण योजना किशोरावस्था के दौरान प्रारंभ की जानी चाहिए और इसमें व्यक्ति की **क्षमताओं, रुचियों, व्यावसायिक लक्ष्यों, प्रशिक्षण आवश्यकताओं, रोजगार संबंधी प्राथमिकताओं, कार्य अनुभवों तथा सहयोग की आवश्यकताओं** की पहचान की जानी चाहिए। इसके साथ ही **स्वतंत्र जीवन-यापन, परिवहन, संचार, सामाजिक कौशल, स्व-अधिवक्तृत्व (Self-Advocacy), सामुदायिक सहभागिता तथा वित्तीय प्रबंधन** जैसे संबंधित क्षेत्रों को भी शामिल किया जाना चाहिए। उपयुक्त कार्य-अनुभव, इंटर्नशिप, कार्य-परीक्षण (Job Trials) तथा समुदाय-आधारित प्रशिक्षण व्यक्ति को वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में सीखे हुए कौशलों का प्रयोग करने के अवसर प्रदान करते हैं।

इस प्रकार, व्यावसायिक विकास को **क्षमताओं के मूल्यांकन एवं पहचान से पूर्व-व्यावसायिक तैयारी, व्यावसायिक प्रशिक्षण, कार्य-अनुभव, रोजगार तथा रोजगार बनाए रखने एवं अनुवर्ती सेवाओं तक की एक नियोजित प्रगति** के रूप में देखा जा सकता है। सुव्यवस्थित व्यावसायिक विकास कार्यक्रम बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्तियों को अपनी क्षमताओं का विकास करने, कार्यबल में सार्थक सहभागिता करने, अधिक स्वतंत्रता प्राप्त करने तथा अधिक उत्पादक एवं सामाजिक रूप से समावेशित वयस्क जीवन जीने में सक्षम बनाता है।

रोजगार के प्रकार (Types of Employment)

रोजगार **बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्तियों के वयस्क जीवन में संक्रमण** का एक महत्वपूर्ण घटक है, क्योंकि यह **आर्थिक स्वतंत्रता, आत्म-सम्मान, सामाजिक सहभागिता, गरिमा तथा सामुदायिक समावेशन** को बढ़ावा देता है। उपयुक्त रोजगार का निर्धारण व्यक्ति की **क्षमताओं, रुचियों, कार्यात्मक कौशलों, प्रशिक्षण तथा सहयोग की आवश्यकताओं** के आधार पर किया जाना चाहिए। व्यावसायिक प्रशिक्षण एवं रोजगार के अवसरों को व्यापक रूप से **संरक्षित रोजगार, खुले रोजगार तथा स्व-रोजगार** में वर्गीकृत किया जा सकता है। प्रत्येक प्रकार में सहयोग एवं पर्यवेक्षण का स्तर अलग-अलग होता है और इसका चयन व्यक्ति की क्षमताओं, सहयोग की आवश्यकताओं तथा परिवार एवं समुदाय में उपलब्ध संसाधनों के आधार पर किया जाना चाहिए।

1. संरक्षित रोजगार (Sheltered Employment)

संरक्षित रोजगार ऐसा रोजगार है जिसमें बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्तियों को **पर्यवेक्षित एवं सहयोगात्मक वातावरण** में व्यावसायिक प्रशिक्षण एवं कार्य प्रदान किया जाता है। संरक्षित कार्यशाला (Sheltered Workshop) में विशिष्ट व्यवसायों के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है तथा व्यक्ति को उसी कार्यशाला में रोजगार भी दिया जा सकता है।

हल्की एवं मध्यम बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्ति संरक्षित रोजगार से लाभान्वित हो सकते हैं, क्योंकि उन्हें उनकी क्षमताओं के अनुरूप विशिष्ट कार्यों का प्रशिक्षण दिया जा सकता है और वे पर्यवेक्षण के अंतर्गत उन कार्यों को कर सकते हैं। कार्य वातावरण की संरचित एवं पूर्वानुमेय प्रकृति कार्य-संबंधी एवं सामाजिक कौशलों के विकास में भी सहायक हो सकती है।

उदाहरण:

- असेंबली एवं पैकिंग इकाइयाँ

- बढ़ईगीरी कार्यशालाएँ
- स्प्रे-पेंटिंग इकाइयाँ

2. खुला रोजगार (Open Employment)

खुला रोजगार नियमित कार्यस्थलों पर अन्य कर्मचारियों के साथ रोजगार को संदर्भित करता है, जहाँ रोजगार की सामान्य परिस्थितियाँ अन्य कर्मचारियों के समान होती हैं। जिन बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्तियों ने उपयुक्त **व्यावसायिक एवं सामाजिक कौशल** विकसित कर लिए हैं, वे खुले श्रम बाजार में नियमित एवं दोहराव वाले कार्य सफलतापूर्वक कर सकते हैं। प्रारंभिक अवस्था में उन्हें व्यावसायिक प्रशिक्षक, **जॉब कोच (Job Coach)** या अन्य सहयोगी कर्मियों से मार्गदर्शन एवं सहायता की आवश्यकता हो सकती है।

सफल खुले रोजगार के लिए कार्यों का चयन व्यक्ति की **क्षमताओं, रुचियों, कार्यात्मक कौशलों एवं सहयोग की आवश्यकताओं** के आधार पर सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए। उचित कार्यस्थल सहयोग भी आवश्यक है, ताकि शोषण को रोका जा सके तथा रोजगार को बनाए रखने में सहायता मिल सके। कुछ व्यक्तियों के लिए ऐसी नौकरियाँ अधिक उपयुक्त हो सकती हैं जिनमें **पूर्वानुमेय दिनचर्या एवं सीमित परिवर्तन** हों, जबकि अपरिचित ग्राहकों के साथ लगातार बातचीत या बार-बार बदलने वाली कार्य आवश्यकताओं वाले कार्य उनके लिए अपेक्षाकृत अधिक चुनौतीपूर्ण हो सकते हैं।

हल्की बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत क्षमताओं एवं सहयोग की आवश्यकताओं के आधार पर खुले रोजगार के लिए अपेक्षाकृत अधिक उपयुक्त हो सकते हैं।

उदाहरण:

- कार्यालय सहायक
- कैंटीन सहायक

- स्टेशनरी एवं किराना दुकानों में सहायक
- वाहन कार्यशालाओं में सहायक
- प्रिंटिंग सहायक

3. स्व-रोजगार (Self-Employment)

स्व-रोजगार से तात्पर्य स्वतंत्र रूप से अथवा परिवार के सदस्यों, देखभालकर्ताओं या अन्य सामुदायिक संसाधनों के सहयोग से **आय अर्जित करने वाली गतिविधि** में संलग्न होने से है। जब बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्ति को उपयुक्त **व्यावसायिक प्रशिक्षण, पर्यवेक्षण एवं निरंतर सहयोग** प्राप्त होता है, तब स्व-रोजगार एक उपयुक्त रोजगार विकल्प हो सकता है।

उपयुक्त कार्य की पहचान करने, आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराने, व्यवसाय के प्रबंधन तथा व्यक्ति को कार्य करने में सहयोग देने में **परिवार की सहभागिता** विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो सकती है।

ग्रामीण क्षेत्रों में स्व-रोजगार

ग्रामीण क्षेत्रों में स्व-रोजगार बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्तियों के लिए सार्थक रोजगार के अवसर प्रदान कर सकता है। व्यक्ति की क्षमताओं एवं परिवार में उपलब्ध संसाधनों के आधार पर निम्नलिखित गतिविधियों पर विचार किया जा सकता है:

- डेयरी फार्मिंग
- मुर्गी पालन
- बागवानी
- कृषि संबंधी कार्य

शहरी क्षेत्रों में स्व-रोजगार

शहरी क्षेत्रों में कुछ परिवार अपने संसाधनों के माध्यम से बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्तियों को छोटे स्तर की आय-सृजन गतिविधियों में सहयोग प्रदान करते हैं। उदाहरण के रूप में:

- लिफाफे बनाना
- अगरबत्ती बनाना
- मोमबत्ती बनाना
- छोटे पान की दुकान का संचालन करना या उसमें सहयोग करना

मुख्य बिंदु: रोजगार के प्रकार का चयन व्यक्ति की अक्षमता की श्रेणी के आधार पर ही नहीं, बल्कि उसकी **वास्तविक क्षमताओं, रुचियों, कार्यात्मक कौशलों, प्रशिक्षण, कार्य-पर्यावरण तथा आवश्यक सहयोग** के समग्र मूल्यांकन के आधार पर किया जाना चाहिए।

4. स्व-रोजगार एवं आजीविका के लिए वित्तीय सहायता (Financial Support for Self-Employment and Livelihood)

स्व-रोजगार **बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्तियों** के लिए रोजगार का एक महत्वपूर्ण विकल्प है, विशेषकर उन व्यक्तियों के लिए जिन्हें नियमित वेतन वाले रोजगार को प्राप्त करने या बनाए रखने में कठिनाई हो सकती है। सरकार द्वारा समर्थित दिव्यांगता-वित्तीय तंत्र के माध्यम से आय-सृजन गतिविधियों, व्यावसायिक प्रशिक्षण, सहायक उपकरणों तथा सूक्ष्म ऋण (Micro-credit) के लिए सहायता प्रदान की जाती रही है। ऐसे बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्ति जो स्वतंत्र रूप से वित्तीय अनुबंध करने में सक्षम नहीं हो सकते, उनके लिए संबंधित योजना की शर्तों के अनुसार **माता-पिता, पति/पत्नी या कानूनी अभिभावक** के माध्यम से भी सहभागिता का प्रावधान हो सकता है।

इस प्रकार की वित्तीय सहायता से व्यक्ति की क्षमताओं एवं उपलब्ध सहयोग के आधार पर **लघु उद्यम, उत्पादन कार्य, हस्तशिल्प, खाद्य-संबंधी गतिविधियाँ, पैकेजिंग,**

बागवानी, सेवा संबंधी गतिविधियाँ तथा अन्य स्थानीय रूप से उपयुक्त व्यवसायों को बढ़ावा दिया जा सकता है।

5. व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए सहयोग (Support for Vocational Training)

DEPwD का कौशल विकास ढाँचा दिव्यांगजनों के लिए निर्धारित विभिन्न **रोजगार भूमिकाओं में प्रशिक्षण, मूल्यांकन एवं प्रमाणन** का समर्थन करता है। विभाग NAP-SDP के अंतर्गत मान्यता प्राप्त प्रशिक्षण संगठनों एवं रोजगार भूमिकाओं से संबंधित जानकारी भी उपलब्ध कराता है।

बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्तियों के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण में निम्नलिखित को प्राथमिकता दी जानी चाहिए:

- कार्यात्मक एवं व्यावसायिक मूल्यांकन;
- व्यक्तिगत प्रशिक्षण लक्ष्यों का निर्धारण;
- कार्य विश्लेषण एवं व्यवस्थित शिक्षण;
- बार-बार अभ्यास एवं पुनर्बलन;
- कार्य व्यवहार का विकास;
- संचार एवं सामाजिक कौशलों का विकास;
- कार्यस्थल का अभिमुखीकरण;
- रोजगार में प्लेसमेंट; तथा
- प्लेसमेंट के बाद अनुवर्ती सेवाएँ एवं निरंतर सहयोग।

6. कौशल प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट के माध्यम से रोजगार (Employment through Skill Training and Placement Linkages)

DEPwD के वर्तमान दृष्टिकोण में प्रशिक्षण को **वास्तविक रोजगार से जोड़ने** पर विशेष जोर दिया जाता है, ताकि कार्यक्रम केवल प्रमाण-पत्र आधारित व्यावसायिक प्रशिक्षण तक सीमित न रहें। **PM-DAKSH-DEPwD** प्रशिक्षण भागीदारों एवं रोजगार से संबंधित जानकारी तक पहुँच प्रदान करता है, जबकि **NAP-SDP** का ढाँचा बाजार की आवश्यकताओं के अनुरूप पाठ्यक्रम एवं रोजगारपरक कौशलों पर जोर देता है।

बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्तियों के लिए यह दृष्टिकोण विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि सफल रोजगार केवल व्यावसायिक कौशल प्राप्त करने पर निर्भर नहीं करता। इसके लिए **उचित कार्य-उपयुक्तता (Person–Job Fit), कार्यस्थल पर आवश्यक अनुकूलन, नियोक्ता में जागरूकता तथा निरंतर सहयोग** भी आवश्यक होते हैं।

7. सहायक उपकरण एवं सुगम्यता के लिए सहयोग (Assistive Devices and Accessibility Support)

यद्यपि **ADIP योजना** स्वयं कोई रोजगार योजना नहीं है, फिर भी सहायक उपकरण व्यक्ति की **शिक्षा, प्रशिक्षण, कार्य एवं सामुदायिक जीवन में सहभागिता** की क्षमता को बढ़ा सकते हैं। DEPwD की प्रमुख योजनाओं में ADIP को दिव्यांगजनों को सहायक उपकरण एवं गतिशीलता संबंधी साधन उपलब्ध कराने वाली योजना के रूप में शामिल किया गया है।

कुछ बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्तियों के लिए उपयुक्त **सहायक तकनीक (Assistive Technology) एवं संचार सहयोग** संचार, कार्य निष्पादन, गतिशीलता, कार्यस्थल पर सहभागिता तथा स्वतंत्रता को बढ़ावा देने में सहायक हो सकते हैं।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न 1

एक व्यावसायिक प्रशिक्षक बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्ति के लिए मुख्य रूप से उसकी **क्षमताओं, रुचियों, कार्यात्मक योग्यताओं एवं सहयोग की आवश्यकताओं** के आधार पर रोजगार का चयन करता है, न कि केवल उसकी अक्षमता की श्रेणी के आधार पर। यहाँ कौन-सा सिद्धांत लागू किया जा रहा है?

(क) पहले रोजगार, बाद में प्रशिक्षण
(ख) व्यक्ति–कार्य अनुकूलता
(ग) संरक्षित प्लेसमेंट
(घ) अक्षमता-आधारित प्लेसमेंट

5.7 समावेशी संदर्भों में निहितार्थ (Implications in Inclusive Contexts)

बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्तियों के लिए समावेशी शिक्षा का उद्देश्य केवल शिक्षार्थी को सामान्य कक्षा में स्थान देना नहीं होना चाहिए, बल्कि **सार्थक सहभागिता, अधिगम, स्वतंत्रता एवं सामाजिक समावेशन** सुनिश्चित करना होना चाहिए। प्रारंभिक पहचान एवं हस्तक्षेप संचार, अनुकूलनात्मक व्यवहार, सामाजिक कौशल तथा विद्यालय-तत्परता के विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं। समावेशी कक्षा में शैक्षिक कार्यक्रम शिक्षार्थी की **क्षमताओं, योग्यताओं, रुचियों एवं सहयोग की आवश्यकताओं** के अनुसार व्यक्तिगत बनाए जाने चाहिए। पाठ्यचर्या अनुकूलन, विभेदित शिक्षण, सरल अधिगम सामग्री, दृश्य सहयोग, सहायक तकनीक, सहपाठी शिक्षण, लचीला मूल्यांकन तथा व्यक्तिगत सहायता कक्षा की गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता को सुगम बना सकते हैं।

सफल समावेशन के लिए **विशेष शिक्षक, सामान्य शिक्षा शिक्षक, माता-पिता, चिकित्सक, मनोवैज्ञानिक, विद्यालय प्रशासन तथा अन्य विशेषज्ञों** के बीच सहयोग एवं साझा जिम्मेदारी आवश्यक है। विशेष शिक्षक मूल्यांकन, **IEP विकास, पाठ्यचर्या अनुकूलन, प्रत्यक्ष शिक्षण, प्रगति की निगरानी तथा सहयोगी सेवाओं के समन्वय** में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। परिवार के साथ सहयोग से घर एवं विद्यालय के बीच निरंतरता बनाए रखने में सहायता मिलती है, जबकि सहपाठियों के साथ सहभागिता से **संचार, सामाजिक दक्षता, आत्मविश्वास, सहयोग तथा विविधता की स्वीकृति** विकसित करने के अवसर मिलते हैं। इसलिए समावेशी विद्यालयों को ऐसा **सकारात्मक, सुगम्य, सहयोगात्मक एवं भेदभाव-मुक्त वातावरण** प्रदान करना चाहिए, जहाँ बौद्धिक अक्षमता वाले शिक्षार्थी अपने साथियों के साथ सहभागिता कर सकें।

समावेशी शिक्षा को बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्तियों को **वयस्क जीवन, व्यावसायिक प्रशिक्षण, रोजगार, स्वतंत्र जीवन-यापन एवं सामुदायिक सहभागिता** के लिए भी तैयार करना चाहिए। संक्रमण योजना में व्यक्ति की **क्षमताओं, रुचियों, व्यावसायिक लक्ष्यों, प्रशिक्षण आवश्यकताओं, रोजगार संबंधी प्राथमिकताओं तथा सहयोग की आवश्यकताओं** की पहचान की जानी चाहिए। कार्य-अनुभव, इंटर्नशिप, समुदाय-आधारित प्रशिक्षण तथा उपयुक्त रोजगार प्लेसमेंट के अवसर शिक्षार्थियों को वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में अपने कौशलों का प्रयोग करने में सहायता करते हैं।

व्यावसायिक विकास में **व्यक्ति–कार्य अनुकूलता (Person–Job Fit)** के सिद्धांत का पालन किया जाना चाहिए तथा आवश्यकतानुसार कार्यस्थल पर उपयुक्त अनुकूलन एवं निरंतर सहयोग प्रदान किया जाना चाहिए। इस प्रकार का दृष्टिकोण **स्वतंत्रता, आर्थिक सहभागिता, गरिमा, आत्म-सम्मान, सामाजिक सहभागिता एवं जीवन की गुणवत्ता** को बढ़ावा देता है।

5.8 सारांश (Summary)

प्रस्तुत इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप स्कूल से नौकरी की ओर बढ़ने में होने वाले बदलाव के संबंध में जान चुके होंगे| दिव्यांग छात्रों के लिए वयस्क जीवन में बदलाव चुनौतीपूर्ण होता है। व्यावसायिक विकास **बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्तियों** के विद्यालय से वयस्क जीवन की ओर संक्रमण का एक महत्वपूर्ण घटक है। यह **कार्य से संबंधित ज्ञान, कौशल, अभिवृत्तियों, कार्य आदतों, अनुकूलनात्मक व्यवहार तथा रोजगारपरक कौशलों** के विकास की एक व्यवस्थित एवं निरंतर प्रक्रिया है, जो व्यक्ति को सार्थक एवं उत्पादक गतिविधियों में सहभागिता के लिए आवश्यक होती है। ट्रांज़िशन प्लानिंग एक ऐसी प्रक्रिया है जिसे 'इंडिविजुअल्स विद डिसएबिलिटीज एजुकेशन एक्ट' (IDEA 2004) के तहत उन सभी छात्रों के लिए ज़रूरी बनाया गया है, जिनका K-12 शिक्षा में 'इंडिविजुअलाइज्ड एजुकेशन प्रोग्राम' (IEP) है। इसका मकसद छात्र को स्कूल से स्कूल के बाद की गतिविधियों की ओर बढ़ने में मदद करना है। व्यावसायिक विकास एक **निरंतर विकासात्मक प्रक्रिया** है, जो बाल्यावस्था से प्रारंभ होकर विभिन्न चरणों में आगे बढ़ती है। इसमें आधारभूत कौशलों का विकास, पूर्व-व्यावसायिक तैयारी, व्यावसायिक प्रशिक्षण, रोजगार तथा रोजगार बनाए रखने की प्रक्रिया शामिल है। **प्रारंभिक बाल्यावस्था** में स्व-देखभाल, संचार, मोटर विकास, ध्यान, अनुकरण, निर्देशों का पालन, सामाजिक अंतःक्रिया तथा घर की सरल गतिविधियों में सहभागिता जैसे आधारभूत कौशलों के विकास पर जोर दिया जाता है। ये कौशल भविष्य के व्यावसायिक विकास की नींव तैयार करते हैं। **विद्यालयी आयु एवं किशोरावस्था** में ध्यान धीरे-धीरे **पूर्व-व्यावसायिक कौशलों** की ओर स्थानांतरित होता है।

5.9 शब्दावली (Glossary)

- Individualized Transition Plan- व्यक्तिगत बदलाव योजना
- Vocational Transition Process- व्यावसायिक बदलाव की प्रक्रिया

- Assistive Devices and Accessibility Support- सहायक उपकरण एवं सुगम्यता के लिए सहयोग

5.10 स्व-मूल्यांकन प्रश्नों (SAQs) के उत्तर

5.3 (1) वयस्क, (2) 16

5.6 **(ख)** व्यक्ति–कार्य अनुकूलता

5.11 संदर्भ (References)

https://www.understood.org/en/articles/iep-transition-planning-preparing-for-young-adulthood

https://www.calstatela.edu/coe/cats/individualized-transition-plan-itp

https://ldaamerica.org/info/transition-planning-requirements-of-idea-2004/

https://books.kdpublications.in/index.php/kdp/catalog/download/578/659/5276?inline=1

https://pmc.ncbi.nlm.nih.gov/articles/PMC10866252/

5.12 निबंधात्मक प्रश्न (Model Examination Questions)

1. व्यक्तिगत बदलाव योजना से आप क्या समझते हैं? विस्तार से बताईए|

2. बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्तियों के लिए क्या क्या विभिन्न रोजगार उपलब्ध हो सकते हैं? विस्तार से बताईए|

3. दिव्यांग लोगों के लिए व्यवसायिक विकास से आप क्या समझते हैं?

इकाई 6 बौद्धिक अक्षमता के क्षेत्र में विद्यमान जांच , पहचान और आकलन तकनीकों और रुझानों का परिचय/An introduction to existing screening, identification, and assessment techniques and trends in the field of intellectual disability.

6.1 प्रस्तावना

6.2 उद्देश्य

6.3बौद्धिक अक्षमता के क्षेत्र में विद्यमान जांच , पहचान और आकलन तकनीकों और रुझानों का परिचय

6.3.1जांच की परिभाषा

6.3.2पहचान की परिभाषा

6.3.3जांच तकनीकें

6.3.4 आकलन

6.3.5 आकलन की तकनीकें

6.3.6 वर्तमान रुझान

6.4आकलन के उपागम और प्रकार/Approaches and types of Assessment

6.5 सारांश

6.6 शब्दावली

6.7अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

6.8 संदर्भ

6.9 निबंधात्मक प्रश्न

6.1 प्रस्तावना:

बौद्धिक अक्षमता (Intellectual Disability) एक विकासात्मक अवस्था है जिसमें व्यक्ति की बौद्धिक कार्यक्षमता (Intellectual Functioning) जैसे सीखना, तर्क करना, समस्या समाधान और निर्णय लेने की क्षमता तथा अनुकूलन व्यवहार (Adaptive Behavior) जैसे संचार, सामाजिक कौशल और दैनिक जीवन कौशल में महत्वपूर्ण सीमाएँ दिखाई देती हैं। यह अवस्था सामान्यतः विकास काल (Developmental Period) में प्रारंभ होती है बौद्धिक अक्षमता की जाँच, पहचान, आकलन और निदान एक बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसमें बच्चे के विकासात्मक इतिहास, व्यवहार, बौद्धिक क्षमता, अनुकूलन कौशल और शैक्षिक आवश्यकताओं का व्यवस्थित मूल्यांकन किया जाता है। केवल IQ परीक्षण के आधार पर निदान नहीं किया जाता, बल्कि व्यक्ति की दैनिक जीवन में कार्य करने की क्षमता को भी ध्यान में रखा जाता है।प्रारंभिक पहचान (Early Identification) से बच्चे को समय पर प्रारंभिक हस्तक्षेप (Early Intervention), विशेष शिक्षा, प्रशिक्षण और पुनर्वास सेवाएँ प्रदान की जा सकती हैं। इसके लिए मनोवैज्ञानिक परीक्षण, विकासात्मक जांच ,अनुकूलन व्यवहार मापन, चिकित्सीय जाँच और शैक्षिक मूल्यांकन जैसे विभिन्न तरीकों एवं उपकरणों का उपयोग किया जाता है। इस प्रकार, बौद्धिक अक्षमता की सही जाँच और निदान बच्चे की क्षमताओं को समझने, उसकी आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षा योजना बनाने और उसके स्वतंत्र जीवन कौशल के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

6.2 उदेश्य :

इस इकाई के अध्यन के पस्चात आप :

- जांच ,पहचान और आकलन का अर्थ , परिभाषा और उदेश्य को परिभाषित कर सकेगें
- बौद्धिक अक्षमता की जांच ,पहचान और आकलन में प्रयोग होने वाली तकनीकों का प्रयोग सकेगें
- आकलन के उपागम और प्रकार को परिभाषित कर सकेगें
- आकलन के उपागम और प्रकार की व्याख्या कर सकेगें
- आकलन के उपागम और प्रकार का प्रयोग कर सकेगें

6.3 बौद्धिक अक्षमता के क्षेत्र में विद्यमान जांच , पहचान और आकलन तकनीकों और रुझानों का परिचय/Introduction to existing screening, identification and assessment techniques, trends in the field of intellectual disability:

बौद्धिक अक्षमता (ID)— बौद्धिक अक्षमता एक ऐसी स्थिति है जिसमें बौद्धिक कामकाज और अनुकूलन व्यवहार (adaptive behavior), दोनों में ही महत्वपूर्ण सीमाएँ होती हैं और यह स्थिति 22 साल की उम्र से पहले शुरू होती है(अमेरिकन एसोसिएशन ऑन इंटेलेक्चुअल एंड डेवलपमेंटल डिसएबिलिटीज) इसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अब बौद्धिक विकासात्मक विकार (IDD) के रूप में अधिक जाना जाता हैवर्तमान में इस क्षेत्र में एक बड़ा बदलाव आया है। यह बदलाव ऐतिहासिक और पूरी तरह से चिकित्सकीय दृष्टिकोण से हटकर, अब एक समग्र और सहायता-आधारित प्रारूप की ओर बढ़ा है। किसी व्यक्ति की पहचान और आकलन की प्रक्रिया को समझने के लिए तीन अलग-अलग और क्रमवार

चरणों पर ध्यान देना ज़रूरी है जांच, पहचान और आकलन । इसके साथ हीउन प्रमुख आधुनिक रुझानों को भी समझना होगा जो आज इस क्षेत्र को आकार दे रहे हैं।बौद्धिक अक्षमता (ID) की जांच, पहचान और आकलन की तकनीकों में व्यक्ति की बौद्धिक कार्यक्षमता और अनुकूलन व्यवहारों का आकलन करना शामिल है। यह क्षेत्र अब केवल नैदानिक साक्षात्कार से हटकर डिजिटल, जेनेटिक और वास्तविक जीवन की स्थितियों पर आधारित (Ecologically valid) आकलन की ओर बढ़ रहा हैजो कठोर वर्गीकरण के बजाय व्यक्ति-केंद्रित और उनकी खूबियों पर आधारित सहायता पर ज़ोर देते हैं।

6.3.1 जांच की परिभाषा:

बच्चे के विकास के बारे में एक छोटी सी चेकलिस्ट या सर्वेजिससे यह पता चल सके कि क्या और जाँच की ज़रूरत है।

जांच एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें किसी व्यक्ति, समूह या आकड़ों का आकलन किया जाता है ताकि खास विशेषताओं की पहचान की जा सके या छिपे हुए जोखिमों का पता लगाया जा सके। जाँच से शुरुआती चरण में ही बीमारियों का पता चल सकता हैइसलिए बीमारी को ठीक करने की बेहतर संभावना हो सकती है। जाँच में किसी व्यक्ति में वंशानुगत बीमारी विकसित होने के जोखिम की जांच करने के लिए आनुवंशिक परीक्षण करना भी शामिल है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार, जांच का अर्थ है कि जो लोग ऊपर से स्वस्थ दिखते हैं, उन पर आसान परीक्षण किए जाएं ताकि ऐसे लोगों की पहचान की जा सके जिनमें बीमारी का जोखिम या शुरुआती लक्षण तो हैंलेकिन अभी तक बीमारी के स्पष्ट लक्षण दिखाई नहीं दिए हैं।

WHO की परिभाषा की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं:

बिना लक्षण वाले लोग: यह उन लोगों पर केंद्रित है जिनमें उस बीमारी के कोई स्पष्ट संकेत या लक्षण नहीं दिखते, जिसकी जांच की जा रही है।

तेज़ और आसान: जांच की प्रक्रियाएं तेज़, अपेक्षाकृत सस्ती और बड़े पैमाने पर करने के लिए सुरक्षित होनी चाहिए।

निदान नहीं: जांच टेस्ट कोई पक्का निदान नहीं है; यह केवल बीमारी की संभावना का पता लगाता है।

जाँच का उदेश्य:स्क्रीनिंग का उदेश्य ऐसी आबादी में उन लोगों की पहचान करना है जो देखने में तो स्वस्थ लगते हैं, लेकिन उन्हें किसी स्वास्थ्य समस्या या बीमारी का ज़्यादा ख़तरा होता है। इससे समय रहते इलाज या ज़रूरी कदम उठाए जा सकते हैं, और इस तरह आबादी में उस स्वास्थ्य समस्या या बीमारी के मामलों और/या उससे होने वाली मौतों को कम किया जा सकता है। (WHO)

संभावित खतरों या चेतावनी के संकेतों का जल्दी पता लगाना। यह सवाल करती है, "क्या कोई समस्या होने की संभावना है?"

प्रकृति: संक्षिप्त, आमतौर पर मानक, और अक्सर पूरी आबादी पर की जाती है (जैसे, किसी क्लास के सभी छात्र या अस्पताल में सभी नवजात शिशु)।

नतीजा: लोगों को "खतरे में" या "खतरे में नहीं" के तौर पर चिह्नित करती है।

अगला कदम: सकारात्मक जाँच का मतलब कभी भी निदान या कोई लेबल नहीं होता; यह सिर्फ़ औपचारिक जांच के लिए रेफरल का कारण बनती है। उदाहरण: पूरे स्कूल में पढ़ने का परीक्षण जो किसी छात्र को ग्रेड लेवल से नीचे होने के कारण चिह्नित करता है

6.3.2 पहचान:

पहचान जांच का परिणाम है।पहचान का उदेश्य किसी खास स्थिति का आधिकारिक निदान,परिभाषित और मूल्यांकन करना। इसमें पूछा जाता है, "असल में क्या हो रहा है और यह कितना गंभीर है?" पहचान गहराई से, बहुत व्यक्तिगत और आमतौर पर एक

विशेषज्ञ बहु-विषयक टीम (जैसे मनोवैज्ञानिक, चिकित्सक या विशेष शिक्षक) करती है। यह एक औपचारिक निदान, व्यक्ति की ताकत और कमजोरियों का विस्तृत विवरण, और सहायता समर्थन के लिए योग्यता देता है।

बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों की पहचान करना विशेष शिक्षा सेवाएँ शुरू करने का पहला कदम है। पहचान की प्रक्रिया के ज़रिए बच्चे में बौद्धिक अक्षमता की स्थिति का पता लगाया जाता है। पहचान के लिए विकास के सामान्य पड़ावों और बौद्धिक अक्षमता की विशेषताओं की जानकारी होना ज़रूरी है।बौद्धिक अक्षमता (ID) की पहचान कुछ खास प्रश्नावली या चेकलिस्ट का इस्तेमाल करके की जाती हैजिन्हें जांच अनुसूची (screening schedule)कहा जाता है। पहला जांच अनुसूची (screening schedule) 3 साल से कम उम्र के बच्चों के लिए है। दूसराजांच अनुसूची 3 से 6 साल की उम्र के बच्चों के लिए है। तीसरा जांच अनुसूची 7 साल और उससे ज़्यादा उम्र के बच्चों के लिए है।

6.3.3 जांच तकनीकें:

विकास संबंधी जांच

विकास संबंधी जांचका मुख्य उदेश्य उस समय को कम करना है जो किसी भी तरह की मदद या इलाज शुरू होने से पहले बीत जाता है। अगर जांच को असरदार बनाना है, तो इसे सटीक, व्यापक और किफायती होना चाहिए। जांच कई तरीकों से की जा सकती है। इनमें माता-पिता से बातचीत, बच्चे को देखना-परखना, या किसी खास उपकरण या चेकलिस्ट का इस्तेमाल शामिल हो सकता है।

चिकत्सकीय जांच

इलाज से बेहतर बचाव है। माँ और बच्चे को कई तरह के इन्फेक्शन और बीमारियों से बचाने के लिए, जिनसे शारीरिक कमज़ोरी या विकलांगता हो सकती है, गर्भवती माताओं, नवजात शिशुओं और बढ़ते बच्चों के लिए चिकत्सकीय जांच की सुविधा होनी चाहिए।

A. प्रसव-पूर्व जांच की प्रक्रियाएँ: माताओं के ब्लड टेस्ट, जिनमें शामिल हैं:

(a) एनीमिया का पता लगाने के लिए हीमोग्लोबिन का स्तर (Hb%),

(b) डायबिटीज का पता लगाने के लिए ब्लड ग्लूकोज का स्तर,

(c) सिफलिस का पता लगाने के लिए ब्लड VDRL टेस्ट,

(d) ब्लड ग्रुप में अंतर (incompatibility) का पता लगाने के लिए ब्लड ग्रुप और Rh टाइपिंग,

(e) खास इन्फेक्शन का पता लगाने के लिए ब्लड एंटीबॉडी टेस्ट,

(f) भ्रूण में न्यूरल ट्यूब की खराबी का पता लगाने के लिए अल्फा-फीटो-प्रोटीन टेस्ट।

अल्ट्रासोनोग्राफी

गर्भावस्था के दौरान अल्ट्रासाउंड तकनीक से गर्भावस्था की दूसरी तिमाही (II trimester) में भ्रूण (foetus) में कई तरह की बीमारियों या असामान्यताओं का पता लगाया जा सकता है। इनमें न्यूरल ट्यूब डिफेक्ट्स, हाइड्रोसिफ़ली (सिर में पानी भरना), माइक्रोसिफ़ली (सिर का आकार छोटा होना) वगैरह शामिल हैं।

एमनियोसेंटेसिस

यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें पेट के रास्ते भ्रूण के चारों ओर का तरल पदार्थ निकाला जाता है। फिर इस फ्लूइड की बायोकेमिकल और सेलुलर जांच की जाती है। एमनियोसेंटेसिस की सलाह तब दी जाती है जब भ्रूण में क्रोमोसोम की गड़बड़ी, जन्मजात मेटाबोलिक गड़बड़ी, ओपन न्यूरल ट्यूब डिफेक्ट्स और गंभीर Rh इनकम्पैटिबिलिटी का शक हो। इस तरह, एमनियोसेंटेसिस शुरुआती पहचान और बचाव की एक तकनीक है।

फीटोस्कोपी

गर्भावस्था की दूसरी तिमाही में पेट के रास्ते (trans-abdominal route) की जाती है। फाइबर ऑप्टिक डिवाइस का इस्तेमाल करके, भ्रूण की बाहरी बनावट को देखा जाता है और भ्रूण से खून और टिश्यू के सैंपल लिए जाते हैं। यह प्रक्रिया कुछ शारीरिक असामान्यताओं, मेटाबोलिक विकारों या बायोकेमिकल असामान्यताओं का पता लगाने में मदद करती है।

ग्रुप B स्ट्रेप स्क्रीनिंग

ग्रुप B स्ट्रेप्टोकोकस (GBS) एक तरह का बैक्टीरिया है जो गर्भवती महिलाओं और नवजात शिशुओं में गंभीर संक्रमण का कारण बन सकता है। GBS अक्सर स्वस्थ महिलाओं के मुंह और गले, निचली आंत और योनि में पाया जाता है। यह नवजात शिशु के लिए बहुत हानिकारक हो सकता है, क्योंकि उसका इम्यून सिस्टम अभी पूरी तरह विकसित नहीं हुआ होता है।

B . प्रसव-बाद जांच की प्रक्रियाएँ

जन्म के बाद और शुरुआती 3 महीनों के दौरानविकलांगता का कारण बनने वाली स्थितियों का पता लगाने के लिए कई प्रक्रियाएँ की जा सकती हैजैसे कि

जन्म के बाद जांच की प्रक्रियाएं

- एप्गार स्कोर (Apgar score)।
- मेटाबोलिक गड़बड़ियों के लिए यूरिन स्क्रीनिंग – जैसे PKU।
- क्रेटिनिज़्म, रिकेट्स, पीलिया आदि के लिए ब्लड बायोकेमिस्ट्री टेस्ट।
- संक्रमण का पता लगाने के लिए ब्लड एंटीबॉडी टाइटर्स।
- डाउन सिंड्रोम, डिलीशन सिंड्रोम आदि के लिए क्रोमोसोमल एनालिसिस।
- नवजात शिशु के न्यूरॉन और व्यवहार का आकलन।
- दौरे (सीज़र) की समस्या के लिए EEG (इलेक्ट्रोएन्सेफलोग्राम)।

- दृष्टि संबंधी समस्याओं के लिए विज़ुअल स्क्रीनिंग (विज़ुअल एक्यूटी, फंडस जांच, रेटिनोस्कोपी आदि)।
- सुनने की क्षमता की जांच – सुनने में दिक्कत का पता लगाने के लिए (टिम्पैनोग्राम, BERA आदि)।
- अल्ट्रा सोनोग्राम।
- CT स्कैन (कंप्यूटराइज़्ड टोमोग्राफी)।
- MRI (मैग्नेटिक रेजोनेंस इमेजिंग) – दिमाग के अंदर की बीमारियों और संरचनात्मक असामान्यताओं के लिए।

APGAR स्कोर

अपगार ने स्कोरिंग का एक ऐसा तरीका बनाया है जो प्रैक्टिकल तौर पर बहुत काम का है। अगर जन्म के 5 मिनट बाद यह स्कोर लिया जाए, तो इससे बच्चे की मौत या न्यूरोलॉजिकल समस्याओं (दिमाग या नसों से जुड़ी दिक्कतें) की संभावना का ज़्यादा सही अंदाज़ा मिलता है। जन्म के एक मिनट बाद, यह दम घुटने (asphyxia) और सांस लेने में मदद (वेंटिलेशन) की ज़रूरत का संकेत देता है।

अपगार (APGAR) का मतलब है - "अपियरेंस (दिखावट), पल्स (नाड़ी की गति), ग्रिमेस (चेहरे के हाव-भाव/रिफ्लेक्स), एक्टिविटी (मांसपेशियों की हरकत) और रेस्पिरेशन (सांस लेने की गति और कोशिश)।"

इस टेस्ट में बच्चे की सेहत की जाँच के लिए पाँच चीज़ों का इस्तेमाल किया जाता है। हर चीज़ को 0 से 2 के पैमाने पर स्कोर किया जाता है, जिसमें 2 सबसे अच्छा स्कोर होता है:

1. अपियरेंस (त्वचा का रंग)

2. पल्स (दिल की धड़कन)

3. ग्रिमेस रिस्पॉन्स (रिफ्लेक्स/प्रतिक्रिया)

4. एक्टिविटी (मांसपेशियों की हरकत/टोन)

5. रेस्पिरेशन (सांस लेने की गति और कोशिश)

बायोकेमिकल टेस्ट

मेटाबोलिक विकारों की पहचान करने के लिए नवजात अवस्था में खून और पेशाब की जाँच की जाती है। यह रूटीन जाँच के तौर पर नहीं किया जाता, बल्कि उन सभी मामलों में किया जाता है जहाँ शक हो या परिवार में बौद्धिक अक्षमता (Intelllectual Disability) का पिछला इतिहास रहा हो।

कंप्यूटेड टोमोग्राफी (CT)

दिमाग की कंप्यूटेड टोमोग्राफी (CT) यह बताती हैअलग-अलग रेडियो डेंसिटी वाली संरचनाओं को देखकर खोपड़ी के अंदर की बनावट का पता लगाया जाता है। इस तकनीक में एक ही क्रॉस-सेक्शनल योजना में अलग-अलग एंगल से अटैन्यूएशन डेटा इकट्ठा किया जाता है और फिर उसे प्रोसेस करके एक साफ़ इमेज बनाई जाती है। CNS (सेंट्रल नर्वस सिस्टम) के CT स्कैन से कई तरह की असामान्यताओं का पता लगाया जा सकता है, जैसे टिश्यू में ऑक्सीजन की कमी, दिमाग के अंदर ब्लीडिंग, हाइड्रोसिफ़लस और जन्मजात कमियां जैसे कॉर्पस कैलोसम का न बनना (ACC) वगैरह।

मैग्नेटिक रेजोनेंस इमेजिंग (MRI)

दिमाग की बनावट को देखने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली इमेजिंग तकनीक है। इसमें मैग्नेटिक फील्ड की मौजूदगी में रेडियो फ्रीक्वेंसी रेडिएशन और डेटा कंप्यूटेशन का इस्तेमाल किया जाता है। यह मौजूदा कई तकनीकों की तुलना में बेहतर तरीका लगता

है। विशेषज्ञों की एक बहु-विषयक टीम कैंप चलाती है ताकि ज़रूरत के हिसाब से विकलांगता की पुष्टि की जा सके या आगे की विस्तृत जांच के लिए रेफर किया जा सके। इस तरह, स्क्रीनिंग से सीमित समय में बड़ी संख्या में ऐसे लोगों की पहचान करने में मदद मिलती है जिनमें विकलांगता की आशंका हो सकती है

इलेक्ट्रो-एन्सेफालोग्राफी (EEG)

न्यूरोलॉजिकल रूप से कमज़ोर नवजात शिशुओं की जांच में EEG की अहम भूमिका होती है। यह तेज़ी से विकसित हो रहे नवजात शिशु के दिमाग का अध्ययन करने और सामान्य मानकों से अलग चीज़ों का पता लगाने का एक आसान तरीका है। सामान्य नवजात शिशुओं में नींद के पैटर्न अच्छी तरह से विकसित होते हैं और ये दिमाग के विकास के स्तर को दर्शाते हैं। EEG में इनका न होना असामान्य माना जाता है। नवजात शिशु के दिमाग पर पड़ने वाले तनाव और दबाव भी EEG में दिखाई देते हैं।मिर्गी, एन्सेफलाइटिस, गंभीर बौद्धिक अक्षमता और जन्म से पहले या नवजात अवस्था में दिमाग को हुए नुकसान से जुड़ी बौद्धिक अक्षमता के मामलों में असामान्य EEG की संभावना ज़्यादा होती है।

रक्त संबंधित जांच

बच्चे के जन्म के लगभग एक हफ़्ते बाद बच्चे की एड़ी से खून का सैंपल लिया जाता हैं ताकि सिकल सेल बीमारी और सिस्टिक फाइब्रोसिस जैसी दुर्लभ लेकिन गंभीर बीमारियों की जाँच की जा सके।

शारीरिक जाँच

जांच एक तेज़ और शुरुआती प्रक्रिया है जिसका मकसद यह पता लगाना है कि क्या बच्चे में विकास में देरी (developmental delays) का कोई जोखिम है। इससे कोई पक्की बीमारी का पता नहीं चलता बल्कि यह एक फ़िल्टर की तरह काम करता है जिससे यह तय किया जा सके कि आगे और जाँच की ज़रूरत है या नहीं। जन्म के बाद नवजात शिशु

की दो पूरी शारीरिक जाँचें की जाएँगी। पहली जाँच जन्म के 72 घंटों के भीतर होगी। दूसरी जाँच तब की जाएगी जब बच्चा छह से आठ हफ़्ते का हो जाएगा।

सुनने की क्षमता की जाँच (हियरिंग स्क्रीनिंग)

नवजात शिशुओं के सुनने की क्षमता में किसी भी तरह की कमी का पता लगाने के लिए हियरिंग स्क्रीनिंग टेस्ट भी किए जाते हैं। सुनने की क्षमता में कमी का जितनी जल्दी पता चल जाए, उतना ही अच्छा होता है क्योंकि इससे बच्चे के विकास पर असर पड़ सकता है। अगर कोई समस्या पाई जाती है, तो बच्चे को मदद और अभिभावकों को जानकारी दी जा सकती है।

जब जांच से ज़्यादा जोखिम का पता चलता हैतो बौद्धिक अक्षमता (intellectual disability) की आधिकारिक पहचान के लिए एक औपचारिक नैदानिक प्रक्रिया शुरू की जाती है। DSM-5-TR और ICD-11 जैसे फ्रेमवर्क के आधार परID की पहचान तीन मुख्य पहलुओं के आधार पर की जाती है

A. बौद्धिक कामकाज में कमी: इसकी पुष्टि चिकित्सकीयआकलन और व्यक्तिगत रूप से किए गएमानकीकृत बुद्धि परीक्षण से होती है। लगभग 70 या उससे कम का IQ स्कोर इसका बेंचमार्क है।

सामान्य उपकरण: Wechsler Intelligence Scale for Children (WISC-V), Stanford-Binet Intelligence Scales, या Kaufman Assessment Battery for Children (KABC)।

B. अनुकूलीत कार्यप्रणाली (adaptive functioning) में कमी: यह मापता है कि कोई व्यक्ति अपनी उम्र के अन्य लोगों की तुलना में रोज़मर्रा की ज़िंदगी को तीन अलग-अलग क्षेत्रों में कितनी अच्छी तरह संभालता है

वैचारिक: भाषा, पढ़ना, लिखना, गणित, तर्कशक्ति, याददाश्त।

सामाजिक: सहानुभूति, सामाजिक समझ, लोगों के साथ बातचीत का कौशल, दोस्ती करने की क्षमता।

व्यावहारिक: खुद को संभालना, अपनी देखभाल करना, नौकरी की ज़िम्मेदारियाँ, पैसे का प्रबंधन, स्कूल/काम के कामों को व्यवस्थित करना।

सामान्य उपकरण: Vineland Adaptive Behavior Scales (Vineland-3) और Diagnostic Adaptive Behavior Scale (DABS), Behavioral Assessment Scales for Indian Children with Mental Retardation (BASIC-MR), Vineland Social Maturity Scale (VSMS) - Indian Adaptation, Adaptive Behavior Assessment System, Third Edition (ABAS-3)

C. विकासात्मक शुरुआत (Developmental Onset): बौद्धिक और अनुकूलीत कमियाँ विकास की अवधि (आमतौर पर 22 साल की उम्र से पहले) के दौरान ही सामने आनी चाहिए।

6.3.4 आकलन-

आकलन (assessment) किसी चीज़ की कीमत, गुणवत्ता या स्थिति के बारे में अनुमान लगाने या औपचारिक निर्णय लेने की प्रक्रिया है। इसमें किसी स्थिति का विश्लेषण करने और उसके आधार पर अंतिम निष्कर्ष या निर्णय लेने दोनों ही बातें शामिल हैं। शिक्षा के क्षेत्र में आकलन शब्द का अर्थ उन कई तरह के तरीकों या साधनों से है जिनका प्रयोग शिक्षक छात्रों की पढ़ाई-लिखाई की तैयारी, सीखने की प्रगति, कौशल हासिल करने की क्षमता या शैक्षिक ज़रूरतों का आकलन, माप और रिकॉर्ड रखने के लिए करते हैं।

आकलन की शुरुआत जानकारी इकट्ठा करने से होती है और यह व्यक्ति के सुधार के लिए सही कदम उठाने के फ़ैसले तक जारी रहती है। यह प्रक्रिया कई ज़रूरी सेवाओं जैसे शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य, मार्गदर्शन और परामर्श, शिक्षा, ट्रेनिंग, रोज़गार

और परफ़ॉर्मेंस के मूल्यांकन आदि में बहुत काम आती है। इन सभी सेवाओं में किसी खास मक़सद के लिए जानकारी इकट्ठा करना, जानकारी का विश्लेषण करना और सुधार के लिए भविष्य की कार्रवाई का फ़ैसला करना ज़रूरी बातें हैं।

आकलन (Assessment) एक ऐसी व्यवस्थित प्रक्रिया हैजिसके माध्यम से किसी व्यक्ति की बौद्धिक क्षमताओं (Intellectual Functioning), अनुकूल व्यवहार (Adaptive Behavior), सीखने की क्षमता, और दैनिक जीवन के कौशलों का पता लगाया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य व्यक्ति की ताकत (Strengths) और जरूरतों (Needs) की पहचान करके उसे उचित सहायता और शिक्षा प्रदान करना है।आकलन हमें हस्तक्षेप (उपचार या सहायता) के लिए शुरुआती जानकारी देता है जबकि मूल्यांकन हस्तक्षेप के नतीजों की जांच है। इसलिए, नैदानिक प्रैक्टिस में हमें आकलन और मूल्यांकन दोनों तरीकों की ज़रूरत होती है।

परिभाषा

आमतौर परआकलन किसी व्यक्ति या समूह के बारे में जानकारी इकट्ठा करने और उस व्यक्ति या समूह के लिए भविष्य की कार्रवाई के बारे में फ़ैसला लेने की प्रक्रिया है। असेसमेंट का मतलब है जानकारी इकट्ठा करना और उसका विश्लेषण करना, ताकि किसी व्यक्ति के बारे में या उसके लिए शिक्षण, प्रशासन और/या मार्गदर्शन से जुड़े फ़ैसले लिए जा सकें (वॉलेस, लार्सन और एल्क्सनिन, 1992)।

आकलन की परिभाषा तीन पहलुओं पर केंद्रित है:

1. जानकारी इकट्ठा करना।

2. जानकारी का विश्लेषण करना।

3. शिक्षण, प्रशासन और मार्गदर्शन के लिए फ़ैसला लेना।

आकलन का उद्देश्य

आकलन किसी विशेष उदेश्य से किया जाता है। आम तौर पर, आकलन प्रशासनिक फैसलों या सुधारात्मक उपायों के लिए मददगार होता है। खासकर, विशेष शिक्षा सेवाओं में, आकलन के ज़रिए कुछ खास मकसद पूरे किए जाते हैं। आकलन का मकसद ही यह तय करता है कि किस तरह के आकलन टूल इस्तेमाल किए जाएँगे, आकलन का कौन सा तरीका चुना जाएगा और जानकारी इकट्ठा करने की प्रक्रिया कैसी होगी। आकलन के कुछ मकसद नीचे दिए गए हैं:

1. शुरुआती जांच और पहचान।

2. पात्रता तय करना।

3. मौजूदा प्रदर्शन स्तर और शैक्षिक ज़रूरतों का पता लगाना।

4. वर्गीकरण और कार्यक्रम में जगह देने के बारे में फैसला लेना।

5. शिक्षण कार्यक्रम और रणनीतियों का निर्धारण और मूल्यांकन।

6. शैक्षिक कार्यक्रम (व्यक्तिगत या समूह) तैयार करना।

7. छात्र की प्रगति पर नज़र रखना।

8. शैक्षिक हस्तक्षेप कार्यक्रम की प्रभावशीलता का आकलन करना।

आकलन का महत्व

दिव्यंगता के क्षेत्र में आकलन का अत्याधिक महत्व हैं इस प्रक्रिया के दौरान किसी छात्र के बारे में लिए गए फैसले उसकी पूरी ज़िंदगी पर असर डाल सकते हैं।ये फैसले उसकी मौजूदा और भविष्य की शिक्षा से जुड़ी ज़रूरतों को पूरा करने में बहुत अहम होते हैं। विशेष शिक्षा में छात्रों के साथ काम करते समयआप अलग-अलग क्षेत्रों केव्यवसायिक के साथ काम करते हैं। आप एक ऐसी टीम का हिस्सा होते हैं जिसे बहु - विषयक टीम कहा जाता हैयह टीम यह पता लगाने की कोशिश करती है कि छात्र में कोई विकलांगता है या नहीं।

बौद्धिक अक्षमता के मामले में सहायता की ज़रूरतों को पहचानने के लिए बौद्धिक क्षमता (IQ) और अनुकूलन व्यवहार (वैचारिक, सामाजिक और व्यावहारिक कौशल) दोनों का आकलन किया जाता है। यह कई क्षेत्रों के विशेषज्ञों—जैसे मनोवैज्ञानिकों, बाल रोग विशेषज्ञों और सामाजिक कार्यकर्ताओं—द्वारा संचालित एक प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य व्यक्ति-विशेष के लिए ज़रूरी मदद, शिक्षा और सामाजिक सहयोग के बारे में मार्गदर्शन करना है।

संभावित विकलांगता का पता लगाने के लिए, इन कौशल के विकास में आकलन प्रक्रिया के निम्नलिखित घटकों की व्यावहारिक जानकारी शामिल होनी चाहिए:

जानकारी इकट्ठा करना(Collection.): किसी छात्र की पृष्ठभूमि के बारे में जानकारी कई स्रोतों—जैसे स्कूल रिकॉर्ड, अवलोकन, माता-पिता से मिली जानकारी और शिक्षक के अभिलेख से जानकारी को इकट्ठा करने की प्रक्रिया।

विश्लेषण(Analysis): छात्र के शिक्षा, सामाजिक, विकासात्मक,पर्यावणीय,चिकित्सकीय और भावात्मक इतिहास केनमूने को समझने और उन पर काम करने की प्रक्रिया।

मूल्यांकन(Evaluation): छात्र की ताकत और कमज़ोरी वाले क्षेत्रों का पता लगाने के लिए उसके शैक्षिक, बौद्धिक, मनोवैज्ञानिक, भावात्मक, प्रत्यक्ष-संबंधी ,भाषा, संज्ञानात्मक और चिकित्सकीय विकास का मूल्यांकन करना।

निर्धारण (Determination): किसी संभावित विकलांगता की मौजूदगी का पता लगाना और यह जानना कि हर श्रेणी के लिए क्या मानदंड हैं।

सिफारिश(Recommendation): विद्यालय,अध्यापक और माता-पिता या अभिभावकों को शैक्षिक प्लेसमेंट और कार्यक्रम के बारे में दी जाने वाली सिफारिशें।

6.3.5 आकलनकी तकनीकें

एक विस्तृत निदानात्मक जांच में कई नैदानिक और मानक तरीकों का प्रयोग किया जाता हैमानकीकृत आकलन किसी व्यक्ति की क्षमताओं, खूबियों और चुनौतियों का व्यापक और बहुआयामी मापन है। यह मुख्य रूप से दो मुख्य आधारों पर केंद्रित होता है।

बौद्धिक क्षमता (IQ): इसमें तर्क करने, समस्या सुलझाने और अमूर्त सोच की क्षमता का आकलन किया जाता है। मानक परीक्षण में बच्चों के लिए वेक्सलर इंटेलिजेंस स्केल (WISC) या स्टैनफोर्ड-बिनेट इंटेलिजेंस स्केल शामिल हैं।

अनुकूलीत व्यवहार (Adaptive Behavior): यह रोज़मर्रा के व्यावहारिक कौशल को मापता है, जिसमें वैचारिक (भाषा, संख्या), सामाजिक (सहानुभूति, नियमों का पालन) और व्यावहारिक (अपनी देखभाल, व्यक्तिगत स्वच्छता) पहलू शामिल हैं। आमतौर पर इस्तेमाल किए जाने वाले स्टैंडर्ड टूल्स में वाइनलैंड सोशल मैच्योरिटी स्केल (VSMS) और वाइनलैंड एडेप्टिव बिहेवियर स्केल और एडेप्टिव बिहेवियर असेसमेंट सिस्टम (ABAS) शामिल हैं।

बौद्धिक कामकाज और अनुकूलनशील व्यवहार का आकलन

ICD 10 और DSM 5 दोनों ही मानक उपकरणोंसे बौद्धिक स्तर का आकलन करने की ज़रूरत को मानते हैंजिनसे बुद्धिलब्धि (IQ) का पता चलता है। DSM 5बौद्धिक अक्षमताकी पहचान के लिए 65–75 (IQ 70 ± 5 की स्टैंडर्ड एरर) के IQ कटऑफ़ का इस्तेमाल करने तक सीमित है। इसके विपरीत, ICD 10 बौद्धिक अक्षमताकी पहचान के लिए 70 के IQ कटऑफ़ और गंभीरता के चार स्तरों सौम्य (IQ: 50–69),मध्यम (IQ: 35–49), गंभीर (IQ: 20–34), और बहुत गंभीर (IQ <20) को वर्गीकृत करने के लिए अलग-अलग IQ रेंज की वकालत करता है। ICD 11 वर्किंग ग्रुप ने सुझाव दिया कि बौद्धिकविकासात्मक अक्षमता (IDD)के लिए गंभीरता का स्तर हर सब-श्रेणी की विशेषताओं केनैदानिकविवरण पर आधारित होने चाहिएलेकिन IQ स्कोर को गंभीरता के स्तर को तय करने में महत्वपूर्ण नैदानिक विवरणों में से एक माना जा सकता है।

इसलिएजब तक ICD 11 लागू नहीं हो जातातब तक ICD 10 गाइडलाइंस का पालन किया जाना चाहिएजो स्थिति की पहचान करने और बौद्धिक अक्षमताकी गंभीरता के स्तर का पता लगानेदोनों के लिए IQ पर निर्भर करती हैं। भारतीय संदर्भ में टेस्ट का चुनाव सीमित हैभले ही कई मामलों में मानकको अपडेट नहीं किया गया है। यह 'फ्लिन इफ़ेक्ट' के सबूतों को देखते हुए एक बड़ी चिंता का विषय हैजो समय के साथ IQ स्कोर में देखी गई बढ़ोतरी और उससे जुड़े मानक के पुराने पड़ने की ओर इशारा करता है। इसलिए IQ स्कोर की व्याख्या बहुत सख्ती से नहीं की जानी चाहिए।जब कम उम्र (जैसे, 3 साल से कम उम्र के बच्चे) या उससे जुड़ी संवेदी गत्यात्मक समस्याओं और बहुत कम उत्तेजना के कारण IQ टेस्ट लागू नहीं हो पाते हैं, तो मानक विकासात्मक पैमाना (जैसे, विकासात्मक जांच परीक्षण और भारतीय शिशुओं के लिए विकासात्मक आकलन पैमाना) का इस्तेमाल किया जा सकता है। विकासात्मक परीक्षण से "डेवलपमेंटल कोशिएंट" मिलते हैंजिनकी व्याख्या IQ स्कोर की तरह ही की जाती है।

अनुकूली व्यवहारके आकलन के संबंध मेंवाइनलैंड सोशल मैच्योरिटी स्केल (VSMS) ही एकमात्र स्टैंडर्डाइज़्ड पैमाना है जो अभी भारत में उपलब्ध है। VSMS से सामाजिक लब्धि (SQ) और अनुकूली व्यवहार के आठ महत्वपूर्ण क्षेत्रों का प्रोफ़ाइल मिलता है। अगर किसी वजह से VSMS का इस्तेमाल मुमकिन न होतो चिकित्सक अनुकूलनशील व्यवहार के लेवल को समझने के लिए सामाजिक-सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक सवाल पूछ सकते हैं।अगर ज़रूरत होतो ICD-11 गाइडलाइंस आने तक ID की गंभीरता के लेवल का आकलन करने के लिए DSM-5 की स्पेसिफायर लिस्ट का इस्तेमाल किया जा सकता है।

जब बुद्धिलब्धि(IQ)और सामाजिक लब्धि(SQ) बौद्धिक अक्षमता की गंभीरता के अलग-अलग स्तर दिखाते हैंतो SQ स्कोर को प्राथमिकता दी जाती है क्योंकि यह बताता है कि व्यक्ति रोज़मर्रा की ज़िंदगी की सांस्कृतिक रूप से उचित मांगों को किस हद तक पूरा कर पाता है। इस तरहसामान्य परिस्थितियों में SQ, IQ की तुलना में बौद्धिक अक्षमता की गंभीरता को बेहतर ढंग से दर्शाता है।जब सामान्य तरीकों से बौद्धिक अक्षमताकी

गंभीरता का आकलन करनाजुड़ी हुई संवेदी या शारीरिक कमियों और गंभीर व्यवहार संबंधी गड़बड़ियों के कारण मुश्किल या असंभव होतो इस स्थिति को "अन्य बौद्धिक अक्षमता" (Other Intellectual Disability) के रूप में पहचाना जाना चाहिए। यदि व्यक्ति को चार श्रेणियों या "अन्य बौद्धिक अक्षमता" में से किसी एक में रखने के लिए पर्याप्त जानकारी उपलब्ध नहीं हैतो इसे "अनिर्दिष्ट बौद्धिक अक्षमता" (unspecified Intellectual Disability) के रूप में पहचाना जा सकता है।अगर व्यक्ति में सह-रुग्ण (co-morbid) संवेदी गत्यात्मक कमियाँ हैंतो परीक्षण का चयन सही होना चाहिए

6.3.6 वर्तमान रुझान: हाल के वर्षों में बौद्धिक अक्षमताके आकलन औरउपचार/सहायताके तरीके में काफी बदलाव आया है:

स्व-रिपोर्ट माप/ Self-Report Measures: पहले, डॉक्टर मुख्य रूप से प्रॉक्सी रिपोर्ट (माता-पिता/देखभाल करने वालों से मिली जानकारी) पर निर्भर रहते थे। अब यह क्षेत्र हल्के से मध्यम स्तर की ID वाले लोगों के खुद के नज़रिए को बहुत महत्व देता है। इसके लिए आसान तरीकों और सरल भाषा का इस्तेमाल करके सीधे उनके जीवन की गुणवत्ता और निजी अनुभवों को मापा जाता है।

जीनोमिक मेडिसिन/Genomic Medicine: बीमारी का पता लगाने के तरीके अब शुरुआती स्तर पर ही कारण का पता लगाने की ओर बढ़ रहे हैं।आधुनिक जीनोमिक टेक्नोलॉजीजैसे क्रोमोसोमल माइक्रोएरे (CMA) और होल-एक्सोम सीक्वेंसिंग (WES)से सटीक निदान संभव हो पाता है जिससे चिकित्सकीय देखभाल को बेहतर बनाने और भविष्य में होने वाली अन्य जटिलताओं को रोकने में मदद मिलती है।

डिजिटल फेनोटाइपिंग और पहनने योग्य डिवाइस/Digital Phenotyping & Wearables: जटिल संचार ज़रूरतों वाले लोगों की मदद के लिए नई तकनीकों का इस्तेमाल किया जा रहा है जैसे स्मार्ट-वियरेबल शर्ट से लगातार शारीरिक स्थिति की निगरानी करना और दर्द या परेशानी का पता लगाने के लिए देखभाल करने वालों के लिए बने ऐप्स का उपयोग करना।

कमियों के बजाय सहायता की ज़रूरतों पर ज़ोर /Emphasis on Support Needs Rather Than Deficits: गंभीरता का कोई लेबल लगाने के बजाय आधुनिक आकलन गाइडलाइंस (जैसे अमेरिकन एसोसिएशन ऑन इंटेलेक्चुअल एंड डेवलपमेंटल डिसेबिलिटीज - AAIDD की गाइडलाइंस) इस बात पर ध्यान देती हैं कि किसी व्यक्ति को समुदाय में सफलतापूर्वक शामिल होने के लिए किस स्तर की "सहायता की तीव्रता" (Intensity of Supports) की ज़रूरत है।

सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त आकलन: यह क्षेत्र अलग-अलग भाषाई और सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि वाले लोगों के गलत निदान को रोकने के लिए सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त परीक्षण मानकों की आवश्यकता पर तेज़ी से ध्यान दे रहा है।

इटियोलॉजिकल/जेनेटिक आकलन: क्रोमोसोमल माइक्रोएरे (CMA) या होल एक्सोम सीक्वेंसिंग (WES) जैसी एडवांस्ड जेनेटिक टेस्टिंग का इस्तेमाल करके जेनेटिक कारणों (जैसे डाउन सिंड्रोम, फ्रैजाइल X सिंड्रोम) का सटीक पता लगानाजिससे चिकित्सकीय देखभाल और भविष्य की स्थिति (प्रोग्नोसिस) के बारे में सही जानकारी मिल सके।

न्यूरोसाइकोलॉजिकल आकलन: एग्जीक्यूटिव फ़ंक्शंस (जैसे प्लानिंग, ध्यान देना, वर्किंग मेमोरी) की जांच करना ताकि यह समझा जा सके कि व्यक्ति जानकारी को कैसे प्रोसेस करता है।

पाठ्यक्रम-आधारित और पारिस्थितिकीय आकलन: व्यक्ति का उनके स्वाभाविक माहौल (जैसे कक्षा , घर, काम की जगह) में सीधे आकलन करनाताकि यह देखा जा सके कि वे खास स्थितियों या कामों को कितनी अच्छी तरह कर पाते हैं।

आधुनिक रुझान और बदलाव

ऐतिहासिक दृष्टिकोण	आधुनिक रुझान / बदलाव
बुद्धिलब्धि (IQ)-पर आधारित गंभीरता: गंभीरता को सख्ती से संख्यात्मक IQ कट-ऑफ के आधार पर बांटा गया है (जैसे, हल्की = 50-69 IQ)।	अनुकूलन-पर आधारित गंभीरता: DSM-5-TR गंभीरता (हल्की, मध्यम, गंभीर, बहुत गंभीर) को केवल IQ स्कोर के बजाय अनुकूलन क्षमता (adaptive functioning) के स्तर के आधार पर वर्गीकृत करता है।
कमी-आधारित मॉडल: इस बात पर ध्यान देना कि व्यक्ति क्या नहीं कर सकता है।	सहायता-ज़रूरत मॉडल: इस बात पर ध्यान देना कि समुदाय में पूरी तरह से शामिल होने के लिए किस तरह की सहायता की ज़रूरत है (जैसे, सपोर्ट्स इंटेंसिटी स्केल (SIS) का इस्तेमाल करना)।
स्थिर परीक्षण: एक बार का मानकीकृत मनोवैज्ञानिक परीक्षण।	गतिशील और पारिस्थितिक मूल्यांकन: समय के साथ प्राकृतिक वातावरण (घर, स्कूल, कार्यस्थल) में वास्तविक दुनिया के कार्यात्मक कौशल का मूल्यांकन करना।
कठोर पेपर परीक्षण : मैन्युअल रूप से परीक्षण लेना।	डिजिटल और सहायक तकनीक: कंप्यूटर-आधारित अनुकूली परीक्षण, डिजिटल स्क्रीनिंग ऐप्स, और आकलन के दौरान सहायक तकनीक (AAC डिवाइस) का प्रारंभिक एकीकरण।

पृथक निदान: केवल ID का निदान करना। अलग से डायग्नोसिस: सिर्फ़ ID का डायग्नोसिस करना।	सह-रुग्णता और न्यूरोडायवर्सिटी जागरूकता: ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (ASD), ADHD, चिंता या मनोदशा विकारों जैसी सह-घटित स्थितियों के लिए नियमित जांच।

अभ्यास प्रश्न :सही/गलत (True/False)

1-जांच का उद्देश्य किसी व्यक्ति में विकास संबंधी समस्या की संभावना का प्रारंभिक पता लगाना होता है। (सही/गलत)

2-जांच के आधार पर ही अंतिम निदान (Diagnosis) किया जाता है। (सही /गलत)

3 –आकलन (Assessment) केवल एक बार किया जाता है और दोबारा आवश्यकता नहीं होती। (सही /गलत)

4 -कार्यात्मक आकलन (Functional Assessment) बच्चे की दैनिक जीवन की क्षमताओं का आकलन करता है। (सही/गलत)

6.4 आकलन के उपागम और प्रकार/Approaches and types of Assessment

जीवन के अहम क्षेत्रों में आकलन बहुत महत्वपूर्ण हो गया है क्योंकि इसमें किसी व्यक्ति के व्यवहार के किसी खास पहलू के बारे में पूरी और व्यवस्थित जानकारी देने की क्षमता होती है। आकलन कई उद्देश्यों के लिए किया जाता है जैसे बुद्धिमत्ता का अनुमान लगाना, योग्यता, व्यवहार और खास कौशलों का पता लगाना आदि ।

- मानक-संदर्भित परीक्षण (NRT)
- मानदंड-संदर्भित परीक्षण(CRT)
- पाठ्यक्रम-आधारित आकलन (CBA)
- शिक्षक-निर्मित परीक्षण (TMT)
- व्यवहार संबंधी आकलन
- पारिस्थितिकी-आधारित आकलन
- रचनात्मक आकलन (Formative Assessment)
- योगात्मक आकलन (Summative Assessment)-

मानक-संदर्भित आकलन (Norm Referenced Assessment):

मानक-संदर्भित आकलन (NRT)एक पारंपरिक तरीका है। इन परीक्षणों और मापन प्रक्रियाओं में ऐसे परीक्षण-सामग्री का उपयोग किया जाता है जिन्हें लोगों के एक नमूना समूह (sample population) पर मानकीकृत (standardized) किया गया होऔर इनका उपयोग दूसरों की तुलना में परीक्षण देने वाले की क्षमता का पता लगाने के लिए किया जाता है। इसे औपचारिक आकलन भी कहा जाता है।हर मानकीकृत आकलन उपकरण के साथ कुछ निर्देश होते हैं जिनका पालन करना ज़रूरी होता है। ये निर्देश परीक्षण लेने की प्रक्रिया और परिणामों का विश्लेषण, व्याख्या और रिपोर्टिंग करने के तरीकों के बारे में बताते हैउदाहरण: वेक्सलर इंटेलिजेंस स्केल - संशोधित (WISC-R),

इलिनोइस टेस्ट ऑफ़ साइकोलिनग्विस्टिक एबिलिटी (ITPA), स्टैनफोर्ड-बिनेट इंटेलिजेंस टेस्ट, पीबॉडी पिक्चर वोकैबुलरी टेस्ट - संशोधित (PPVT-R) और पीबॉडी इंडिविजुअल अचीवमेंट टेस्ट (PIAT)।

मानक-आधारित आकलन के लाभ:

- यह किसी ग्रुप में सबसे अच्छा और सबसे खराब प्रदर्शन करने वालों की पहचान करने में मदद करता हैजिससे यह कॉलेज में दाखिले और स्कॉलरशिप जैसे प्रत्ययोगी माहौल के लिए उपयोगी हो जाता है।
- यह किसी छात्र के प्रदर्शन की तुलना एक बड़े ग्रुप से करके साफ़ रैंकिंग देता है।
- यह असाधारण प्रतिभाओं और ऐसे लोगों को सामने लाता है जिन पर शायद ध्यान न दिया जाता।

मानक-आधारित आकलन के हानि:

- यह एक यांत्रिक प्रक्रिया (mechanical process) है।
- यह मूल्यांकन के दौरान ज़रूरी अन्य पहलुओं का आकलन करने में मदद नहीं कर सकता।
- यह पूरी जानकारी इकट्ठा करने में विफल रहता है क्योंकि हो सकता है कि व्यक्ति ठीक से प्रतिक्रिया न दे।
- इसमें बढ़ा-चढ़ाकर या औसत से कम जानकारी मिलने की संभावना होती है।

मानदंड-संदर्भित परीक्षण(CRT):

मानदंड-संदर्भित परीक्षण(CRT) का संबंध इस बात से है कि क्या कोई बच्चा तय किए गए मानदंडों (criteria) के अनुसार कोई कौशल (skill) दिखा पा रहा है या नहीं। मानक-संदर्भित परीक्षण (NRT) के विपरीतजो एक व्यक्ति के प्रदर्शन की तुलना दूसरों से करता है मानदंड-संदर्भित परीक्षण(CRT) किसी व्यक्ति के प्रदर्शन की तुलना पहले से तय

मानदंडों से करता है। मानदंड-संदर्भित परीक्षण(CRT) मेंकिसी विषय के कौशलों को एक क्रम (hierarchy) में व्यवस्थित किया जाता है ताकि जिन कौशलों को पहले सीखना ज़रूरी हैउनका परीक्षण भी पहले किया जा सके।

ग्लेज़र ने मानदंड-संदर्भित परीक्षण(CRT)शब्द पेश किया और इसे एक ऐसे माप के रूप में परिभाषित किया जो किसी मानदंड मानक (criterion standard) के आधार पर छात्र की उपलब्धि का आकलन करता है। इस प्रकार, यह किसी विशेष छात्र द्वारा हासिल की गई दक्षता (competence) के स्तर के बारे में जानकारी देता है, जो दूसरों के प्रदर्शन से स्वतंत्र होती है (ग्लेज़र, 1963)। उदाहरण के लिएगणित में गुणा (multiplication) के कौशल सिखाने से पहले जोड़ (addition) के कौशलों का आकलन (और शिक्षण) किया जाएगा। ये टेस्ट आमतौर पर मानदंड-संदर्भित परीक्षण(CRT)होते हैं क्योंकि उच्च स्तर पर सिखाए जाने से पहले छात्र को एक स्तर पर दक्षता हासिल करनी होती है।

मानदंड-संदर्भित परीक्षण(CRT) के लाभ:

- उन विशिष्ट कौशलों की पहचान करना जिन पर ध्यान देने (intervention) की ज़रूरत है।
- सिखाने के लिए अगले सबसे तार्किक कौशल का निर्धारण करनाक्योंकि मानदंड-संदर्भित परीक्षण(CRT) में शिक्षण के निहितार्थ (implications) अधिक सीधे होते हैं।
- रचनात्मक मूल्यांकन (formative evaluation) करनायानी जब कौशल सिखाए जा रहे होंतब छात्र के प्रदर्शन को नियमित रूप से या रोज़ाना रिकॉर्ड करना।
- यह विशिष्ट व्यवहार संबंधी उद्देश्यों (behavioural objectives) के संदर्भ में प्रगति की सीधी व्याख्या करने की अनुमति देता है।
- यह व्यक्तिगत शिक्षण (individualized instruction) को आसान बनाता है।

- यह शिक्षक को नियमित अंतराल पर छात्र की प्रगति की जांच करने में सक्षम बनाता है।
- यह शिक्षक पर "सिर्फ़ टेस्ट के लिए पढ़ाने" का दबाव खत्म करता है।
- यह शिक्षकों को प्रत्येक बच्चे के विकास का व्यापक रिकॉर्ड तैयार करने में सक्षम बनाता है।

मानदंड-संदर्भित परीक्षण(CRT)की हानि:

- CRT केवल यह बताता है कि क्या शिक्षार्थी ने किसी कार्य क्षेत्र में दक्षता हासिल कर ली है, लेकिन यह नहीं दिखाता कि शिक्षार्थी की क्षमता का स्तर कितना अच्छा या खराब है।
- CRT में शामिल कार्य किसी शिक्षक की रुचि या पूर्वाग्रहों से बहुत अधिक प्रभावित हो सकते हैंजिससे सामान्य वैधता (validity) की समस्या पैदा हो सकती है।
- यह महत्वपूर्ण शैक्षिक उपलब्धियों के केवल एक छोटे हिस्से के लिए ही महत्वपूर्ण है। इसके विपरीत, अलग-अलग कौशलों को बढ़ावा देना और उनका मूल्यांकन करना स्कूल का एक बहुत महत्वपूर्ण काम है और इसके लिए NRT की ज़रूरत होती है।
- CRT तैयार करना मुश्किल होता है क्योंकि इसके लिए व्यवहार के संदर्भ में उद्देश्यों या परिणामों का विस्तार से विवरण देना ज़रूरी होता है।

पाठ्यक्रम-आधारित आकलन (CBA):

पाठ्यक्रम-आधारित आकलन 1970 और 1980 के दशक की शुरुआत में आकलन के एक नए तरीके के रूप में सामने आया। CBA को शिक्षकों द्वारा पाठ्यक्रम सामग्री और शिक्षण प्रक्रियाओं के चयन और उपयोग से संबंधित शैक्षिक निर्णयों में मार्गदर्शन के लिए विकसित किया गया था। प्रासंगिक शैक्षिक अभ्यास पर आधारित होने के कारणCBA

समस्या-समाधान के ढांचे के भीतर छात्रों के मूल्यांकन और शिक्षण संबंधी निर्णयों में एक बहुत उपयोगी उपकरण हो सकता है।

CBA उन छात्रों के लिए खास तौर पर फ़ायदेमंद है जिन्हें सीखने में दिक्कतें हैं या जिन्हें अतिरिक्त सपोर्ट की ज़रूरत हैक्योंकि यह आकलन और निर्देश के बीच सीधा संबंध बनाता है।CBA का मकसद बच्चों की शैक्षिक ज़रूरतों और उन ज़रूरतों को पूरा करने के सबसे सही तरीकों की पहचान करना है। सैलिटी और बेल (1987) शैक्षिक ज़रूरतों को ऐसे व्यवहारों के तौर पर बताते हैं जो किसी व्यक्ति में नहीं होतेलेकिन वर्तमान और भविष्य दोनों में प्रभावी ढंग से और स्वतंत्र रूप से काम करने के लिए ज़रूरी होते हैं।

पाठ्यक्रम-आधारित आकलन के मुख्य सिद्धांत

सीधा मापन: CBA सीधे तौर पर पाठ्यक्रम में सिखाए गए कौशल और विषय-वस्तु पर छात्र के प्रदर्शन को मापता है। यह उन अप्रत्यक्ष तरीकों से अलग है जो छात्र की सीख के बारे में अनुमानों पर निर्भर करते हैं।

लगातार निगरानी: CBA को बार-बार इस्तेमाल करने के लिए बनाया गया हैजिससे शिक्षक समय के साथ छात्रों की प्रगति पर नज़र रख सकते हैं। डेटा इकट्ठा करने की इस प्रक्रिया से सीखने में आने वाली मुश्किलों का जल्दी पता चल जाता है और समय रहते ज़रूरी कदम उठाए जा सकते हैं।

पढ़ाई-लिखाई से जुड़ाव: CBA का पाठ्यक्रम से गहरा तालमेल होता हैजिससे यह पक्का होता है कि आकलन में वही परखा जा रहा है जो पढ़ाया गया है। इस जुड़ाव की वजह से आकलन छात्रों और शिक्षकोंदोनों के लिए ज़्यादा सार्थक बन जाता है।

मानकीकृत प्रक्रियाएँ: हालाँकि CBA प्रक्रियाएँ पाठ्यक्रम के अनुसार तैयार की जाती हैंलेकिन एकरूपता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए उन्हें आमतौर पर कक्षा,विद्यालय या जिला स्तर पर मानकीकृत किया जाता है। इसमें मानकीकृतअंकन रूब्रिक्स, प्रशासनिक नियमऔर आंकड़ा अभिलेख करने के तरीके शामिल हैं।

CBA तैयार करने की प्रक्रिया

- इस प्रक्रिया के पहले चरण में पाठ्यक्रम को ऐसे कार्यों की एक श्रृंखला के रूप में परिभाषित करना होता हैजो क्रमबद्ध हों और जिन्हें व्यवहार-संबंधी उद्देश्यों के रूप में व्यक्त किया गया हो।
- पाठ्यक्रम में बच्चे की स्थिति जानने से यह पता चलता है कि उसने कौन-कौन से कौशल सीख लिए हैं और भविष्य में उसे क्या सिखाने की आवश्यकता है। इससे यह बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है कि बच्चा पाठ्यक्रम में किस स्तर पर है।
- शिक्षण के लिए उपयुक्त शिक्षण विधियों, सामग्रियों और कक्षा-व्यवस्था के तरीकों का चयन करना।
- बच्चों की प्रगति का मूल्यांकन करना – यह शिक्षण विधियों, कक्षा-व्यवस्था के तरीकों और पाठ्यक्रम के चयन से संबंधित है।
- पाठ्यक्रम-आधारित मूल्यांकन (CBA) को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में देखा जा सकता है जो ऐसी स्थितियाँ बनाती है जिनमें विभिन्न शिक्षण-पद्धतियों और विद्यार्थी की प्रगति के बीच संबंध स्थापित होते हैं।

शिक्षक-निर्मित परीक्षण (TMT):

एक ऐसा आकलन परीक्षण है जिसे खास तौर पर शिक्षक ने कक्षा में पढ़ाए गए विषय की छात्रों की समझ को परखने के लिए बनाया है।मानक परीक्षण के विपरीतजिन्हें बाहरी संस्थाएं बनाती हैं और बड़े पैमाने पर आयोजित करती हैं शिक्षक-निर्मित परीक्षण किसी विशेष कक्षा या पाठ्यक्रम सामग्री, उद्देश्यों और ज़रूरतों के हिसाब से तैयार किए जाते हैं।

ये परीक्षण पढ़ाने की प्रक्रिया का एक ज़रूरी हिस्सा हैंक्योंकि इनसे शिक्षक छात्रों के सीखने का पता लगा सकते हैंसुधार की गुंजाइश वाली जगहों की पहचान कर सकते हैं और उसी के अनुसार अपनी पढ़ाने की रणनीतियों में बदलाव कर सकते हैं। शिक्षक-निर्मित परीक्षण के प्रारूप अलग-अलग हो सकते हैंजिनमें विषय और सीखने के उद्देश्यों के आधार पर बहुविकल्पीय सवाल,निबंधात्मक, सही/गलत, छोटे जवाब वाले सवाल और आकलन के अन्य तरीके शामिल हो सकते हैं।

शिक्षक-निर्मित परीक्षण (TMTकी मुख्य विशेषताएं

पाठचर्या के अनुसार: अध्यापक द्वारा बनाए गए परीक्षण खास तौर पर किसी पाठ्यक्रम के पाठचर्या और सीखने के लक्ष्यों के हिसाब से तैयार किए जाते हैं। ये कक्षा में पढ़ाए गए विषय-वस्तु पर ध्यान-केंद्रित करते हैंजिससे ये छात्रों के अनुभवों से जुड़े रहते हैं।

लचीलापन: परीक्षण की विषय वस्तु ,प्रारूप और कठनाई के स्तर पर अध्यापक का पूरा नियंत्रण होता है। इस लचीलेपन की वजह से वे ऐसे आकलन बना सकते हैं जो उनके पढ़ाने के तरीके को दिखाते हैं और छात्रों की ज़रूरतों को पूरा करते हैं।

तुरंत प्रतिपुष्टि:अध्यापक द्वारा बनाए गए परीक्षण से तुरंत प्रतिपुष्टि मिलता हैजिससे शिक्षक छात्र केप्रदर्शन का जल्दी से पता लगा सकते हैं और ज़रूरत पड़ने पर अपने पढ़ाने के तरीके में बदलाव कर सकते हैं।

रचनात्मक और योगात्मक: इन परीक्षण का प्रयोग रचनात्मक आकलन (किसी इकाई के दौरान छात्र की प्रगति को देखने के लिए) और योगात्मक आकलन (किसी इकाई या कार्यक्रमके आखिर में सीखने का मूल्यांकन करने के लिए) दोनों के लिए किया जा सकता है।

अलग-अलग तरह के प्रश्न: शिक्षक उन कौशलों के आधार पर अलग-अलग तरह के प्रश्न सम्मिलित कर सकते हैं जिनका वे आकलन करना चाहते हैंजैसे कि आलोचनात्मक सोच(Critical Thinking), समस्या समाधान (Problem-solving) या याद रखने की क्षमता।

शिक्षक द्वारा निर्मित परीक्षण का महत्व

सीखने के खास लक्ष्यों का आकलन:

शिक्षक द्वारा बनाए गए परीक्षण से कक्षा में सिखाए गए खास कौशल या ज्ञान का आकलन किया जा सकता है। इससे असल में जो पढ़ाया गया है, उसके आधार पर छात्र की सीख का ज़्यादा सटीक माप मिलता है।

छात्रों की ज़रूरतों के हिसाब से बदलाव:

शिक्षक अपने छात्रों की सीखने की ज़रूरतों, भाषा की समझ या सीखने के तरीकों के आधार पर परीक्षण में बदलाव कर सकते हैंताकि यह पक्का किया जा सके कि आकलन निष्पक्ष और सबके लिए सुलभ हो।

सक्रिय रूप से सीखने को बढ़ावा देना:

अपने परीक्षण स्वयं बनाकर, शिक्षक छात्रों को विषय वस्तु लागू करने, आलोचनात्मक सोच रखने और पढ़ाई की सामग्री के साथ सार्थक तरीके से जुड़ने के लिए प्रेरित करके सक्रिय रूप से सीखने को बढ़ावा दे सकते हैं।

सीखने में कमियों की पहचान करना:

शिक्षक द्वारा बनाए गए परीक्षण उन क्षेत्रों की पहचान करने में मदद करते हैं जहाँ छात्रों को मुश्किल हो सकती है, जिससे शिक्षक खास निर्देश या अतिरिक्त सहायता दे पाते हैं।

शिक्षण और सीखने के बीच तालमेल को बढ़ावा देना:

चूँकि शिक्षक द्वारा बनाए गए परीक्षण कक्षा में दी जाने वाली शिक्षा के अनुरूप होते हैं, इसलिए वे जो पढ़ाया गया है और जिसका आकलन किया जा रहा है, उनके बीच एक स्पष्ट कड़ी बनाते हैं, जिससे सीखने की प्रक्रिया में निरंतरता और तालमेल बना रहता है

शिक्षक निर्मित परीक्षण के लाभ:

प्रासंगिकता:यह परीक्षण कक्षा में पढ़ाए गए विषय-वस्तु से सीधे जुड़ा होता हैजिससे यह छात्र के सीखने के अनुभव के लिए बहुत प्रासंगिक होता है।

तुरंत बदलाव: शिक्षक परिणामों के आधार पर परीक्षण या अपनी पढ़ाने की रणनीतियों में तेज़ी से बदलाव कर सकते हैं ताकि छात्रों की सीखने की कमियों को दूर किया जा सके।

शिक्षक का अधिकनियंत्रण: शिक्षक उन खास सीखने के नतीजों को चुन सकते हैं जिनका वे आकलन करना चाहते हैं और ऐसा करने के लिए सबसे अच्छे तरीके अपना सकते हैं, जिससे परीक्षण उनकी शैक्षिक सोच के अनुसार हो।

वैयक्तिकरण: परीक्षण को छात्रों की अलग-अलग क्षमताओं,पृष्ठभूमि और ज़रूरतों के हिसाब से तैयार किया जा सकता हैजिससे अलग-अलग तरह से पढ़ाने की सुविधा मिलती है।

शिक्षक निर्मित परीक्षण की सीमाएं :

व्यक्तिपरकता (Subjectivity): शिक्षक द्वारा बनाए गए परीक्षण में व्यक्तिपरकता आ सकती हैखासकर निबंध वाले सवालों या ओपन-एंडेड जवाबों के मामले मेंयह इस बात पर निर्भर करता है कि श्रेणी निर्धारण (Grading) के नियम कितने स्पष्ट और निष्पक्ष हैं।

असंगति (Inconsistency):शिक्षक द्वारा बनाए गए परीक्षण की क्वालिटी और मुश्किल का स्तर एक टीचर से दूसरे टीचर के बीच बहुत अलग हो सकता हैजिससे अलग-अलग कक्षा या विद्यालयों के छात्रों के कार्य की तुलना करना मुश्किल हो जाता है।

ज़्यादा समय लगना:पढ़ाई के लक्ष्यों के अनुसार अच्छी गुणवत्ता आधारित परीक्षण बनाना शिक्षक के लिए समय लेने वाला काम हो सकता हैखासकर तब जब यह पक्का करना हो कि परीक्षण सही और भरोसेमंद हो।

पक्षपात की संभावना:सवाल चुनने में पक्षपात का जोखिम होता हैजहाँ शिक्षक अनजाने में कुछ विषय पर ध्यान दे सकते हैं और दूसरों को नज़रअंदाज़ कर सकते हैंजिससे आकलन असंतुलित हो सकता है।

व्यवहार संबंधी आकलन(Behavioral assessment)

यह कौशल-संबंधी व्यवहारों और समस्या-संबंधी व्यवहारों सहित सभी तरह के व्यवहारों को समझने में मदद करता है। यह आकलन व्यवहार को पर्यावरणीय स्थितियों (जैसे उत्तेजना, सकारात्मक और नकारात्मक परिणाम) के आधार पर समझाता है और कौशल-संबंधी व्यवहारों व समस्या-संबंधी व्यवहारों के बीच एक सार्थक संबंध स्थापित करता है। उदाहरण के लिए, बिना अनुमति के दूसरों की वस्तु लेना (यानी समस्या-संबंधी व्यवहार) भाषा कौशल की कमी (यानी कौशल की कमी) के कारण हो सकता है। यदि किसी बच्चे की उपस्थिति कम हैतो यह देखना ही काफी नहीं है कि यह अपेक्षित सीमा

(यानी मानदंडों की तुलना में) या मानक से अधिक है या नहींबल्कि इसे मापना और उसके पर्यावरण के दृष्टिकोण से परिभाषित करने का प्रयास करना भी महत्वपूर्ण है। ऐसा करने के लिए न तो मानदंड-संदर्भित और न ही मानक-संदर्भित तरीके उपयुक्त हैं। यहाँ शिक्षक व्यवहार की आवृत्ति (frequency) को नोट करने और पर्यावरणीय कारकोंजैसे कि पूर्व-घटनाओं (antecedents) और परिणामों (consequences)के दृष्टिकोण से उसका विश्लेषण करने का प्रयास करते हैं।

पारिस्थितिक आकलन (Ecological Assessment)

पारिस्थितिक आकलन यह देखता है कि दिव्यांग छात्र असल ज़िंदगी के माहौल—जैसे कक्षा, घर या समुदाय—में कैसे काम करते हैं। यह छात्र की अंदरूनी कमियों से आगे बढ़कर यह समझने की कोशिश करता है कि आस-पास का माहौल, साथियों के साथ बातचीत और रोज़मर्रा की उम्मीदें उनके सीखने, व्यवहार और आत्मनिर्भरता पर कैसे असर डालती हैं।यह आकलन पर्यावरण पर आधारित पाठ्यक्रम की चीज़ों के महत्व पर ज़ोर देता है। यह तरीका उन विषय-क्षेत्रों को शामिल करने पर ज़ोर देता है जो व्यक्ति के लिए अपने पर्यावरण में स्वतंत्र रूप से रहने के लिए ज़रूरी हैं।यहविशेष ज़रूरतों वाले बच्चों के पर्यावरण के आकलन पर ज़ोर देता है। पारिस्थितिक इन्वेंट्री (ecological inventory) में कार्यात्मक कौशल (functional skills) की पहचान करने से पहले पर्यावरण के कई स्तरों का विश्लेषण शामिल होता है।विश्लेषण का पहला स्तर पाठ्यक्रम क्षेत्रों की पहचान करना है। विषय वस्तु क्षेत्र के बजाय परिस्थितियाँ/स्थान होते हैं। पाठ्यक्रम के चार क्षेत्र हैं व्यावसायिक (vocational),मनोरंजन (leisure/recreational), घरेलू (domestic), औरसामुदायिक उपयोग (community utilization)। अगला स्तर हर क्षेत्र के साथ प्राकृतिक पर्यावरण की पहचान करना हैऔर उसके बाद हर प्राकृतिक पर्यावरण के भीतर उप-पर्यावरण (sub-environments) की पहचान करना है। अगले चरण के रूप मेंयोजना बनाने वाला हर उप-पर्यावरण के भीतर गतिविधियों की पहचान करता है और फिर हर गतिविधि के भीतर कौशलों की पहचान करता है। इनमें भाषा, शारीरिक गति, अंकगणित, स्वयं की देखभाल और सामाजिक

कौशल जैसे क्षेत्र शामिल हैं। हालाँकिइनका होना सामाजिक पारिस्थितिकी (यानी, चार क्षेत्र के भीतर) के संदर्भ में मापा जाता है।

रचनात्मक आकलन (Formative Assessment)-यह शिक्षण प्रक्रिया के दौरान नियमित रूप से किया जाता है। इसका उद्देश्य बच्चे की प्रगति की निगरानी करना तथा आवश्यकता अनुसार शिक्षण विधियों में सुधार करना है।

योगात्मक आकलन (Summative Assessment)-यह किसी पाठ्यक्रम, सत्र या प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंत में किया जाता है। इसका उद्देश्य यह जानना होता है कि बच्चे ने निर्धारित अधिगम उद्देश्यों को किस सीमा तक प्राप्त किया है।

बौद्धिक अक्षमता (Intellectual Disabilities) वाले बच्चों के आकलन का उद्देश्य केवल उनकी कमियों की पहचान करना नहीं, बल्कि उनकी क्षमताओं, आवश्यकताओं, रुचियों और सहायता की जरूरतों को समझना भी है। इसके लिए निम्नलिखित उपागम अपनाए जाते हैं

1. बहु-विषयक उपागम (Multidisciplinary Approach)-इस उपागम में मनोवैज्ञानिक, विशेष शिक्षक, चिकित्सक, भाषण एवं भाषा विशेषज्ञ, व्यावसायिक चिकित्सक (Occupational Therapist) तथा सामाजिक कार्यकर्ता मिलकर बच्चे का आकलन करते हैं। प्रत्येक विशेषज्ञ अपने क्षेत्र के अनुसार जानकारी प्रदान करता है, जिससे बच्चे की समग्र स्थिति का पता चलता है।

2. अंतःविषयक उपागम (Interdisciplinary Approach)-इस उपागम में विभिन्न विशेषज्ञ एक-दूसरे के साथ समन्वय स्थापित करके संयुक्त रूप से आकलन करते हैं। सभी विशेषज्ञ अपनी रिपोर्ट साझा करते हैं और मिलकर बच्चे के लिए उपयुक्त हस्तक्षेप योजना तैयार करते हैं।

3. व्यक्ति-केंद्रित उपागम (Person-Centred Approach)-इस उपागम में बच्चे की व्यक्तिगत क्षमताओं, रुचियों, आवश्यकताओं और लक्ष्यों को केंद्र में रखा जाता है।

आकलन का उद्देश्य बच्चे की संभावनाओं को विकसित करना और उसकी स्वतंत्रता को बढ़ावा देना होता है।

4. कार्यात्मक उपागम (Functional Approach)-इसमें यह देखा जाता है कि बच्चा दैनिक जीवन के कार्य, जैसे स्वयं की देखभाल, संचार, सामाजिक व्यवहार और विद्यालयी गतिविधियाँ किस स्तर तक कर सकता है। यह उपागम बच्चे की वास्तविक जीवन में कार्य करने की क्षमता पर आधारित होता है।

5. पारिस्थितिक उपागम (Ecological Approach)-इस उपागम में बच्चे का आकलन उसके विभिन्न परिवेश—घर, विद्यालय और समुदाय—में किया जाता है। इससे यह समझने में सहायता मिलती है कि अलग-अलग परिस्थितियाँ बच्चे के व्यवहार और सीखने को कैसे प्रभावित करती हैं।

6. सतत एवं व्यापक आकलन उपागम (Continuous and Comprehensive AssessmentApproach))-इस उपागम में बच्चे की प्रगति का नियमित और निरंतर आकलन किया जाता है। इसके माध्यम से समय-समय पर शिक्षण और हस्तक्षेप योजनाओं में आवश्यक सुधार किए जाते हैं।

7. शक्ति-आधारित उपागम (Strength-Based Approach)-इस उपागम में बच्चे की कमियों के बजाय उसकी क्षमताओं, प्रतिभाओं और सकारात्मक गुणों पर अधिक ध्यान दिया जाता है। इससे बच्चे का आत्मविश्वास बढ़ता है और उसके विकास के लिए बेहतर अवसर मिलते हैं।

अभ्यास प्रश्न : रिक्त स्थान भरिए (Fill in the Blanks)

5- आकलन का मुख्य उद्देश्य केवल अंक देना नहींबल्कि _____ में सुधार करना है।

6- विद्यार्थियों के प्रदर्शन की तुलना एक-दूसरे से करने वाले उपागम को _____ संदर्भित आकलन कहते हैं।

7- शिक्षण प्रक्रिया के दौरान किया जाने वाला आकलन _____ आकलन कहलाता है।

8- शिक्षण सत्र के अंत में उपलब्धि जानने के लिए _____ आकलन किया जाता है।

9- विद्यार्थी की शक्तियों और कमजोरियों की पहचान करने वाला आकलन _____ कहलाता

6.5 सारांश:

बौद्धिक एवं विकासात्मक दिव्यांगता (IDD) वाले बच्चों के लिए जांच, पहचान (Identification), आकलन (Assessment) और निदान (Diagnosis) एक क्रमबद्ध और अत्यंत महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। प्रारंभिक जांच से विकास संबंधी समस्याओं का समय पर पता लगाया जा सकता है, जबकि सही पहचान और व्यापक आकलन बच्चे की क्षमताओं, आवश्यकताओं तथा चुनौतियों को समझने में सहायता करते हैं। सटीक निदान के आधार पर उपयुक्त शैक्षिक, चिकित्सीय और पुनर्वास सेवाओं की योजना बनाई जा सकती है। समय पर हस्तक्षेप (Early Intervention), परिवार का सहयोग, विद्यालय की सक्रिय भूमिका तथा बहु-विषयक विशेषज्ञों (Multidisciplinary Team) की सहभागिता से बच्चे के संपूर्ण विकास, आत्मनिर्भरता, सामाजिक समायोजन और जीवन की गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार संभव है। इसलिए प्रत्येक बच्चे का वैज्ञानिक, निष्पक्ष और व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप आकलन किया जाना चाहिए, ताकि उसे उसकी क्षमता के अनुसार सीखने और विकास के समान अवसर प्राप्त हो सकें।

6.6 शब्दावली :

जांच – किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थिति या कार्य के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए ध्यानपूर्वक निरीक्षण, परीक्षण या अध्ययन करने की प्रक्रिया।

पहचान –किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थिति की विशेषताओं को समझकर उसे पहचानना या निर्धारित करना।

आकलन –किसी व्यक्ति की क्षमताओं, ज्ञान, कौशल, व्यवहार और आवश्यकताओं को व्यवस्थित रूप से जानने और समझने की प्रक्रिया।

शीघ्र पहचान – बच्चे में विकासात्मक देरी, दिव्यांगता या अन्य समस्याओं के संकेतों को कम उम्र में ही पहचान लेना।

6.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर :

1-सही

2-गलत

3-गलत

4-सही

5-अधिगम

6-मानक

7-रचनात्मक

8-योगात्मक

9-निदानात्मक

6.8 संदर्भ ग्रंथ सूची :

https://www.extramarks.com/blogs/schools/norm-referenced-assessment/

https://sk.sagepub.com/ency/edvol/sage-encyclopedia-of-educational-research-measurement-evaluation/chpt/curriculumbased-assessment#

https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/23412/1/Unit-1.pdf

tps://notesvandar.com/course/bict/fifth-semester/assessment-in-teaching-and-learning/unit/unit-3-construction-of-teacher-made-test/

https://www.aaidd.org/intellectual-disability/definition

https://www.who.int/europe/teams/ncd-management/screening

https://www.rehabilitationjournals.com/autism-journal/article/11/1-2-6-809.pdf

https://www.rehabilitationjournals.com/autism-journal/article/11/1-2-6-809.pdf

6.9 निबंधात्मक प्रश्न :

1- बौद्धिक अक्षमता (ID) के क्षेत्र में जांच , पहचान और आकलन की अवधारणा तथा महत्व का विस्तार से वर्णन कीजिए।

2- जांच, पहचान एवं आकलन की विभिन्न तकनीकों और उपकरणों का विस्तार से वर्णन कीजिए।

3- प्रारंभिक पहचान की प्रक्रिया, उद्देश्य और उपकरणों का वर्णन कीजिए।

4- बौद्धिक अक्षमता (ID)के क्षेत्र में आकलन की प्रक्रिया, प्रकार एवं उद्देश्यों की व्याख्या कीजिए।

5- बौद्धिक अक्षमता (ID)वाले बच्चों के प्रभावी आकलन में शिक्षक, अभिभावक और विशेषज्ञों की भूमिका का वर्णन कीजिए।

इकाई 7 आकलन के तरीके और उपकरण

7.1 प्रस्तावना

7.2 उदेश्य

7.3 आकलन के तरीके और उपकरण

7.3.1 आकलन के तरीके

7.3.2 आकलन के उपकरण

7.4 जांच एवं प्रारम्भिक पहचान

7.4.1 जांच के तरीके और उपकरण

7.4.1.1 जांच के तरीके

7.4.1.2 जांच के उपकरण

7.5 विकासात्मक आकलन और उपयुक्त उपकरणों का उपयोग

7.5.1 विकासात्मक आकलन के उपकरण

7.6 बौद्धिक-विभिन्न मानकीकृतआकलन उपकरण

7.6.1 भारतीय संदर्भ मेंबौद्धिक आकलन उपकरण

7.6.2 पश्चिमी संदर्भ में बौद्धिक आकलन उपकरण

7.7 सामाजिक,व्यवहारिक, भाषा एवं वाणी आकलन उपकरण तथा अन्य भारतीय उपकरण

7.7.1 सामाजिक,व्यवहारिक आकलन उपकरण

7.7.2 भाषा एवं वाणी आकलन उपकरण

7.8 विशेष शिक्षा: CRT का उपयोग, निर्माण, और कार्यक्रम निर्माण के संदर्भ में विकास के लिए बरती जाने वाली सावधानियां।

7.9 सारांश

7.10 शब्दावली

7.11 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

7.12 संदर्भ

7.13 निबंधात्मक प्रश्न

7.1 प्रस्तावना

आकलन प्रक्रिया में अलग-अलग तरीकों से आकड़ें इकट्ठा किया जाता है। यह आवश्यक है क्योंकि आकलन करने वाले या शिक्षक का उदेश्य बच्चे के विकास के सभी क्षेत्रों में जानकारी इकट्ठा करना होता हैजिससे शिक्षक/आकलनकर्ता को सही फ़ैसले लेने में मदद मिलती है। आकलन में जानकारी प्राथमिक और द्वितीयक स्रोत से इकट्ठा की जा सकती है। प्राथमिक स्रोत वे होते हैं जिनसे हमें सीधी जानकारी मिलती है। छात्र द्वारा दी गई जानकारी और शिक्षक का अवलोकन प्राथमिक स्रोत हैं। किसी व्यक्ति का अवलोकन करने और उसका साक्षात्कार लेने के अलावा किसी अन्य स्रोत से जानकारी इकट्ठा करना द्वितीयक स्रोत के अंतर्गत आता हैजैसे माता-पिता, शिक्षक, परिवार के सदस्य, केस फ़ाइलें, परीक्षण रिपोर्ट आदि। प्राथमिक स्रोत ज़्यादा भरोसेमंद होते हैं क्योंकि वे सीधी और तुरंत जानकारी देते हैं। द्वितीयक स्रोत प्राथमिक स्रोतों से इकट्ठा की गई जानकारी को और बढ़ाते हैं। क्या दोनों की ज़रूरत हैयह स्थिति पर निर्भर करता है। इसलिए, वे एक-दूसरे से अलग नहीं हैं बल्कि एक-दूसरे के पूरक हैं।

बौद्धिक अक्षमता (Intellectual Disabilities – ID) से प्रभावित बच्चों का आकलन एक सतत, व्यापक और बाल-केंद्रित प्रक्रिया है। इसका उद्देश्य केवल बच्चे की शैक्षणिक उपलब्धि को मापना नहीं, बल्कि उसकी बौद्धिक क्षमता, अनुकूलन व्यवहार, भाषा,

संचार, सामाजिक कौशल, दैनिक जीवन कौशल, व्यवहार तथा कार्यात्मक क्षमताओं का समग्र आकलन करना है। इस प्रकार का आकलन प्रत्येक बच्चे की व्यक्तिगत आवश्यकताओं, क्षमताओं और सीखने की गति को ध्यान में रखकर किया जाता हैइन बच्चों के लिए पारंपरिक लिखित परीक्षाएँ हमेशा उपयुक्त नहीं होतीं। इसलिए उनके आकलन में विभिन्न वैकल्पिक तरीकों और उपकरणों का उपयोग किया जाता है, ताकि उनकी वास्तविक क्षमता और प्रगति का सही आकलन हो सके। यह आकलन शिक्षकों, विशेष शिक्षकों, मनोवैज्ञानिकों, भाषा चिकित्सकों, व्यावसायिक चिकित्सकों तथा अभिभावकों के सहयोग से किया जाता है।

7.2 उदेश्य:

इस इकाई के अध्यन के पस्चात आप :

- आकलन के तरीके और उपकरण को परिभाषित करसकेंगे
- आकलन के तरीके और उपकरण की व्याख्या कर सकेंगे
- आकलन के तरीके और उपकरण को वर्गीकृत कर सकेंगे
- आकलन के तरीके और उपकरण का प्रयोग कर सकेंगे
- आकलन के उपकरणों का निर्माण कर सकेंगे

7.3 आकलन के तरीके और उपकरण

बौद्धिक एवं विकासात्मक दिव्यांगता (Intellectual and Developmental Disabilities – IDD) वाले बच्चों की सीखने की गति, संज्ञानात्मक क्षमता, संचार कौशल, सामाजिक व्यवहार तथा दैनिक जीवन कौशल सामान्य बच्चों से भिन्न हो सकते हैं। इसलिए इन बच्चों के आकलन के लिए केवल पारंपरिक आकलन पर्याप्त नहीं होती। इनके लिए ऐसे आकलन तरीकों और उपकरणों की आवश्यकता होती है जो उनकी वास्तविक क्षमताओं, आवश्यकताओं, रुचियों और प्रगति का समग्र एवं निरंतर आकलन कर सकें।

7.3.1 आकलन के तरीके

अवलोकन:

अवलोकन आकंडे इकट्ठा करने का एक तरीका है जिसमें व्यवहार, घटनाओं या शारीरिक विशेषताओं को उनके स्वाभाविक माहौल में देखा या नोट किया जाता है। अवलोकन आकड़ें इकट्ठा करने का एक बुनियादी तरीका हैं जिसमें लोगों के व्यवहार को देखना और सुनना, बिना उसमें कोई बदलाव या नियंत्रण किए। साथ ही इसमें परिणामों को इस तरह से रिकॉर्ड किया जाता है कि उनका विश्लेषणात्मक अर्थ निकाला जा सके और उन पर विचार हो सके। इस तरह अवलोकन में मोटे तौर पर व्यवहार को चुनना, रिकॉर्ड करना और उसे एनकोड करना शामिल है ताकि उसका अनुभव-आधारित विवरण तैयार किया जा सके।

अवलोकन के प्रकार

औपचारिक बनाम अनौपचारिक अवलोकन

औपचारिक अवलोकन पूर्वनिर्धारित, संरचित मूल्यांकन होते हैं जो विशिष्ट मानदंडों के आधार पर प्रदर्शन का आकलन करते हैं, अक्सर आधिकारिक रोजगार या शैक्षणिक मूल्यांकन के लिए। अनौपचारिक अवलोकन सहज, लचीली विधियाँ हैं जिनका उपयोग मानकीकृत स्कोरिंग के बिना तत्काल, वास्तविक समय की प्रतिक्रिया या गुणात्मक डेटा एकत्र करने के लिए किया जाता है। अनौपचारिक अवलोकन (informal observation) व्यवहार, कौशल और विकास के बारे में रियल-टाइम डेटा इकट्ठा करने का एक बिना स्क्रिप्ट वाला और लचीला तरीका है। शिक्षा और कार्यस्थल के मूल्यांकन में आमतौर पर इस्तेमाल होने वाले इस तरीके में स्वाभाविक माहौल में लोगों के कामों को देखना, सुनना और उन्हें रिकॉर्ड करना शामिल है। इससे अवलोकन करने वालों को लोगों को बिना किसी जांच-पड़ताल या पूर्वाग्रह के स्वाभाविक रूप में देखने का मौका मिलता है।

प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष अवलोकन

अवलोकन प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष भी हो सकता है। प्रत्यक्ष अवलोकन तब होता है जब आप बातचीत, प्रक्रियाओं या व्यवहारों को होते हुए देखते हैं। उदाहरण के लिए किसी बच्चे के समस्यात्मक व्यवहार को देखना हैं ताकि समस्यात्मक व्यवहार का पता चल सके अप्रत्यक्ष अवलोकन तब होता है जब आप बातचीत, प्रक्रियाओं या व्यवहारों के नतीजों को देखते हैं। उदाहरण के लिए बच्चे के समस्यात्मक व्यवहार के कारण जो परिणाम आया ताकि यह पता चल सके कि बच्चे की समस्या का क्या स्तर हैं

सहभागी अवलोकन

सहभागी अवलोकन गुणात्मक आकड़ों के लिए सबसे आम तरीकों में से एक है। यह अवलोकन की सबसे ज़्यादा मेहनत वाली तकनीकों में से एक है। इसमें अवलोकनकर्ता उस माहौल का हिस्सा बनता हैं जिसका अवलोकन किया जा रहा है। सहभागी अवलोकन में अक्सर महीनों या सालों तक बहुत ज़्यादा मेहनत करनी पड़ती है क्योंकि अवलोकनकर्ता को उस वातावरण का एक स्वाभाविक हिस्सा माना जाना ज़रूरी होता है, ताकि यह पक्का किया जा सके कि अवलोकन असल घटनाओं का हो रहा है।

साक्षात्कार:

साक्षात्कार (Interview) एक ऐसी औपचारिक प्रक्रिया है जिसमें किसी व्यक्ति से आमने-सामने, फोन या ऑनलाइन माध्यम से प्रश्न पूछकर उसकी योग्यता, ज्ञान, कौशल, अनुभव और व्यक्तित्व का मूल्यांकन किया जाता है। इसका उद्देश्य किसी विशेष पद, शिक्षा, शोध या अन्य कार्य के लिए उपयुक्त व्यक्ति का चयन करना होता है। साक्षात्कार वह व्यवस्थित प्रक्रिया है जिसमें साक्षात्कारकर्ता (Interviewer) और अभ्यर्थी (Interviewee) के बीच प्रश्नोत्तर के माध्यम से आवश्यक जानकारी प्राप्त की जाती है, ताकि अभ्यर्थी की योग्यता, क्षमता और व्यक्तित्व का आकलन किया जा सके। साक्षात्कार किसी भी चयन प्रक्रिया का महत्वपूर्ण चरण है। इसके माध्यम से उम्मीदवार के ज्ञान, कौशल, व्यक्तित्व, आत्मविश्वास और कार्य करने की क्षमता का मूल्यांकन किया जाता है। विभिन्न उद्देश्यों के अनुसार साक्षात्कार के अलग-अलग प्रकार अपनाए जाते हैं।

साक्षात्कार के प्रकार (Types of Interview)

संरचित साक्षात्कार (Structured Interview)-इसमें पहले से निर्धारित प्रश्न पूछे जाते हैं। सभी उम्मीदवारों से समान प्रश्न पूछे जाते हैं।

असंरचित साक्षात्कार (Unstructured Interview)-इसमें प्रश्न पहले से तय नहीं होते। बातचीत के आधार पर प्रश्न पूछे जाते हैं।

अर्ध-संरचित साक्षात्कार (Semi-Structured Interview)-इसमें कुछ प्रश्न पहले से निर्धारित होते हैं और कुछ प्रश्न बातचीत के अनुसार पूछे जाते हैं।

व्यक्तिगत साक्षात्कार (Personal/One-to-One Interview)-इसमें एक साक्षात्कारकर्ता और एक उम्मीदवार के बीच बातचीत होती है।

पैनल साक्षात्कार (Panel Interview- इसमें कई साक्षात्कारकर्ता मिलकर एक उम्मीदवार का साक्षात्कार लेते हैं।

समूह साक्षात्कार (Group Interview)-इसमें एक साथ कई उम्मीदवारों का साक्षात्कार लिया जाता है।

टेलीफोन साक्षात्कार (Telephone Interview)-यह फोन के माध्यम से लिया जाता है, प्रायः प्रारंभिक चयन के लिए।

ऑनलाइन/वीडियो साक्षात्कार (Online/Video Interview)-यह इंटरनेट और वीडियो कॉलिंग प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से आयोजित किया जाता है।

रेटिंग स्केल:

रेटिंग स्केल एक ऐसी मापन विधि है जिसके द्वारा किसी व्यक्ति के विचार, व्यवहार, प्रदर्शन, कौशल, संतुष्टि या दृष्टिकोण का मूल्यांकन विभिन्न स्तरों (जैसे 1 से 5 या उत्कृष्ट से कमजोर) पर किया जाता है। रेटिंग स्केल का प्रयोग शिक्षा, मनोविज्ञान, सामाजिक

अनुसंधान तथा सर्वेक्षण में व्यापक रूप से किया जाता है। रेटिंग स्केल विशेष शिक्षा में एक महत्वपूर्ण आकलन उपकरण है। इसके माध्यम से विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के व्यवहार, कौशल, सीखने की प्रगति और आवश्यकताओं का व्यवस्थित एवं वस्तुनिष्ठ आकलन किया जाता है जिससे प्रभावी शिक्षण और उचित हस्तक्षेप की योजना बनाई जा सकती है।

रेटिंग स्केल के प्रकार (Types of Rating Scale)

संख्यात्मक रेटिंग स्केल (Numerical Rating Scale)-इसमें 1–5, 1–10 जैसी संख्याओं का उपयोग किया जाता है।

उदाहरण: 1 = बहुत असंतुष्ट, 5 = बहुत संतुष्ट।

वर्णनात्मक/मौखिक रेटिंग स्केल (Descriptive/Verbal Rating Scale)-इसमें प्रत्येक स्तर को शब्दों द्वारा व्यक्त किया जाता है।

उदाहरण: उत्कृष्ट, अच्छा, औसत, संतोषजनक, कमजोर।

ग्राफिक रेटिंग स्केल (Graphic Rating Scale)

इसमें एक सीधी रेखा या निरंतर पैमाना होता है, जिस पर उत्तरदाता अपनी स्थिति अंकित करता है।

उदाहरण: कमजोर ———————— उत्कृष्ट

लाइकेर्ट रेटिंग स्केल (Likert Rating Scale)- इसका उपयोग किसी कथन से सहमति या असहमति मापने के लिए किया जाता है।

उदाहरण:पूर्णतः सहमत,सहमत,तटस्थ,असहमत,पूर्णतः असहमत

आवृत्ति रेटिंग स्केल (Frequency Rating Scale)- इसका उपयोग यह जानने के लिए किया जाता है कि कोई कार्य कितनी बार होता है।

उदाहरण:,हमेशा,अक्सर,कभी-कभी,बहुत कम,कभी नहीं

परीक्षण

परीक्षण का अर्थ है किसी व्यक्ति के ज्ञान, कौशल, योग्यता, बुद्धि, रुचि, व्यक्तित्व या क्षमता का व्यवस्थित रूप से मूल्यांकन करना। परीक्षण का उपयोग शिक्षा, रोजगार, मनोविज्ञान और शोध जैसे क्षेत्रों में किया जाता है। बच्चे का परीक्षण करना और उसकी काबिलियत को खुद जानना हमेशा सही माना जाता है क्योंकि इससे सीधे जानकारी मिलती है। उदाहरण के लिए किसी माता-पिता से यह पूछने के बजाय कि क्या उनका बच्चा शब्द या नंबर पढ़ और लिख सकता है आप सही चीज़ों का इस्तेमाल करके खुद बच्चे का परीक्षण लें। अगर हम जानकारी के लिए माता-पिता पर निर्भर रहते हैं तो हो सकता है कि हम कुछ खास समस्याओं या विषय वस्तु की पहचान न कर पाएं जिससे आगे सीखने में रुकावट आ सकती है। जैसे माता-पिता कह सकते हैं कि उनका बेटा 10 तक के नंबर पढ़ और लिख लेता है। जब आप लड़के से पूछते हैं तो पाते हैं बच्चा कार्य नहीं कर पा रहा हैं अगर हम माता-पिता की जानकारी को ही सच मान लेते तो हम 11 से 20 तक नंबर सिखाने का लक्ष्य चुनते जो बच्चे की काबिलियत के हिसाब से सही नहीं होता। इसलिए, बच्चे के वर्तमान स्तर को जानने के लिए परीक्षण लेना हमेशा ज़रूरी होता है। हालाँकि, कुछ गतिविधियाँ ऐसी हो सकती हैं जिनके लिए शिक्षक बच्चे का सीधे प्रत्यक्ष परीक्षण न ले पाए (जैसे नहाना, परिवार या समाज में होने वाले कार्यक्रमों के दौरान बच्चे का व्यवहार, दोस्तों और पड़ोसियों के साथ बातचीत) और उसे परिवार के सदस्यों से जानकारी लेनी पड़े। परीक्षण चुनते समय यह देखना ज़रूरी है कि क्या वह उस उदेश्य के लिए सही है जिसके लिए उसका प्रयोग किया जा रहा है क्या वह भरोसेमंद, निष्पक्ष, आसान, कम खर्चीला और माहौल के हिसाब से सही है या नहीं। परीक्षण बच्चे की स्तर के हिसाब से होना चाहिए।

परीक्षण के प्रकार (Types of Test)

बुद्धि परीक्षण (Intelligence Test)-व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता (IQ) का मापन करता है।

योग्यता परीक्षण (Aptitude Test)-किसी विशेष कार्य या क्षेत्र में भविष्य की सफलता की संभावना का आकलन करता है।

उपलब्धि परीक्षण (Achievement Test)-किसी विषय में अर्जित ज्ञान और उपलब्धि का मूल्यांकन करता है।

व्यक्तित्व परीक्षण (Personality Test)-व्यक्ति के स्वभाव, व्यवहार और व्यक्तित्व की विशेषताओं का अध्ययन करता है।

रुचि परीक्षण (Interest Test)-व्यक्ति की रुचियों और पसंद के क्षेत्रों की पहचान करता है।

अभिक्षमता परीक्षण (Ability Test)-व्यक्ति की किसी कार्य को करने की क्षमता का मूल्यांकन करता है।

नैदानिक परीक्षण (Diagnostic Test)-सीखने या प्रदर्शन में आने वाली कठिनाइयों के कारणों का पता लगाने के लिए किया जाता है।

मानकीकृत परीक्षण (Standardized Test)-निर्धारित नियमों और मानकों के अनुसार तैयार एवं संचालित किया जाता है।

अमानकीकृत परीक्षण (Non-Standardized Test)-स्थानीय या विशेष आवश्यकताओं के अनुसार तैयार किया जाता है और इसके लिए निश्चित मानक नहीं होते।

प्रयोग (Experimentation)

प्रयोग (Experimentation) का अर्थ है किसी तथ्य, सिद्धांत या परिकल्पना (Hypothesis) की सत्यता की जाँच करने के लिए नियंत्रित परिस्थितियों में योजनाबद्ध

तरीके से परीक्षण करना। प्रयोग के माध्यम से कारण–परिणाम (Cause and Effect) संबंधों का अध्ययन किया जाता है। प्रयोग एक वैज्ञानिक अनुसंधान विधि है, जिसमें किसी समस्या या परिकल्पना की जाँच के लिए एक या अधिक चरों (Variables) को नियंत्रित एवं परिवर्तित करके उनके प्रभाव का अध्ययन किया जाता है।

कभी-कभी हमें अवलोकन, साक्षात्कार या परीक्षण से जानकारी नहीं मिल पाती है। तो हम प्रयोग विधि द्वारा जानकारी एकत्र करते हैं उदाहरण के लिए अधिगम पर पुरस्कार के प्रभाव को समझने के लिए शिक्षक दो स्थितियों में छात्र के प्रदर्शन को देख सकता है एक जिसमें पुरस्कार दिए जाते हैं और दूसरा जिसमें पुरस्कार नहीं दिए जाते हैं। आखिर में शिक्षक छात्रों के प्रदर्शन के आधार पर ज़रूरी नतीजे निकाल सकता है। हालाँकि प्रयोग उतने आसान नहीं होते जितने यहाँ बताए गए हैं। इनके लिए व्यवस्थित योजना और जानकारी के कड़े विश्लेषण की ज़रूरत होती है। अगर सही तरीके से योजना बनाई जाए, तो प्रयोग कारण-और-प्रभाव (cause-and-effect) संबंधों के बारे में जानकारी देते हैं।

प्रयोग के प्रकार (Types of Experimentation)

प्रयोगशाला प्रयोग (Laboratory Experiment)-नियंत्रित वातावरण (प्रयोगशाला) में किया जाता है। इसमें बाहरी कारकों पर नियंत्रण रखा जाता है।

क्षेत्रीय प्रयोग (Field Experiment)-वास्तविक जीवन या प्राकृतिक परिस्थितियों में किया जाता है।

इसके परिणाम अधिक व्यावहारिक होते हैं।

नैदानीक जांच (Clinical investigation):

नैदानिक जाँच का अर्थ है किसी व्यक्ति की समस्या, बीमारी, कठिनाई या कमजोरी के वास्तविक कारणों का पता लगाने के लिए की जाने वाली व्यवस्थित जाँच और मूल्यांकन प्रक्रिया। इसका उद्देश्य केवल समस्या की पहचान करना ही नहीं, बल्कि उसके कारणों को समझकर उचित समाधान या उपचार निर्धारित करना भी है। यह तरीका आम तौर पर

चिकित्सकीय जांच से जुड़ा है। इसलिए विशेष शिक्षा में इसकी प्रासंगिकता कम है। इसके उदाहरण हैं CT स्कैन, EEG, MRI, थायरॉयड प्रोफ़ाइल, क्रोमोसोमल एनालिसिस, सीरम एस्टीमेशन, सुनने और देखने की क्षमता की जांच आदि। हालाँकि, इन जांचों से मिली जानकारी का कक्षा की कुछ गतिविधियों पर अप्रत्यक्ष असर पड़ सकता है। देखने की क्षमता पर प्रतिवेदन(report) निश्चित रूप से शिक्षक को बैठने की व्यवस्था, रंग और शिक्षण अधिगम सामग्री का प्रदर्शन कक्षा में रोशनी के बारे में फ़ैसले लेने में मदद करेगी।

नैदानिक जाँच के प्रकार (Types of Diagnostic Examination)

चिकित्सीय नैदानिक जाँच (Medical Diagnostic Examination)-रोगों का पता लगाने के लिए की जाती है। उदाहरण: रक्त परीक्षण, एक्स-रे, एमआरआई, सीटी स्कैन।

शैक्षिक नैदानिक जाँच (Educational Diagnostic Test)-विद्यार्थियों की सीखने संबंधी कठिनाइयों की पहचान के लिए की जाती है।

मनोवैज्ञानिक नैदानिक जाँच (Psychological Diagnostic Examination)-मानसिक स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और व्यवहार संबंधी समस्याओं का मूल्यांकन करती है।

व्यावसायिकनैदानिक जाँच (Vocational Diagnostic Assessment)-किसी व्यक्ति की कार्य-कुशलता, क्षमता और सुधार की आवश्यकता का आकलन करती है।

केस स्टडी (Case Study)

केस स्टडी असल दुनिया के माहौल में किसी खास मामले या मामलों की गहराई से की गई जांच है, जिसका मकसद विस्तृत समझ और सैद्धांतिक जानकारी देना है। केस स्टडी एक रिसर्च का तरीका है जिसमें असल ज़िंदगी के माहौल में किसी घटना या स्थिति की विस्तार से जांच की जाती है। यह किसी एक व्यक्ति, समूह, संगठन, घटना या प्रक्रिया पर केंद्रित हो सकती है, या फिर बड़े पैटर्न और जानकारी का पता लगाने के लिए इसमें कई मामलों को शामिल किया जा सकता है। केस स्टडी रिसर्च का मुख्य मकसद विस्तृत और

वर्णनात्मक जानकारी देना और सैद्धांतिक महत्व बताना है जिससे रिसर्च करने वालों को जटिल घटनाओं को केवल अमूर्त सांख्यिकीय या सैद्धांतिक व्याख्याओं से परे जाकर समझने में मदद मिलती है। विशेष शिक्षा में इसका प्रयोग प्रचुर मात्रा में होता है। क्यों कि यह व्यवहार की जांच का एक तरीका है जिसमें हम किसी व्यक्ति के व्यवहार के सभी ज़रूरी पहलुओं का अध्ययन करने की कोशिश करते हैं उसके पिछले रिकॉर्ड, मौजूदा स्थिति और भविष्य की संभावनाओं का विश्लेषण आदि । इस तरह व्यवस्थित जानकारी उस व्यक्ति से जुड़ी खास स्थितियों और समस्याओं के कारणों के बारे में सार्थक जानकारी देगी। केस स्टडी तैयार करना किसी एक व्यक्ति का काम नहीं है बल्कि सामाजिक कार्यकर्ता, शिक्षक, माता-पिता, मनोवैज्ञानिक,चिकित्सक और ज़रूरत के अनुसार अन्य व्यवसायिक का मिला-जुला प्रयास होता है।

7.3.2आकलन के उपकरण

बौद्धिक अक्षमत से प्रभावितबच्चों के आकलन में एक ही उपकरण पर्याप्त नहीं होता। सटीक आकलन के लिए बुद्धि (IQ)परीक्षण, अनुकूलन व्यवहार पैमाना, विकासात्मक परीक्षण, शैक्षणिक उपलब्धि परीक्षण, व्यवहार आकलन तथा भाषा एवं गत्यात्मक कौशल के परीक्षण का संयुक्त रूप से उपयोग किया जाता है।

A. बुद्धिलब्धि (IQ) परीक्षण	बौद्धिक कामकाज को मापने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। उदाहरण: स्टैनफोर्ड-बिनेट इंटेलिजेंस स्केल बच्चों के लिए वेक्सलर इंटेलिजेंस स्केल (WISC) बिनेट-कामट टेस्ट भारतीय बच्चों के लिए मालिन का इंटेलिजेंस स्केल (MISIC)
B. अनुकूली व्यवहार मापनी	रोज़मर्रा की ज़िंदगी और सामाजिक कामकाज का आकलन करते हैं। उदाहरण:

	वाइनलैंड एडेप्टिव बिहेवियर स्केल एडेप्टिव बिहेवियर असेसमेंट सिस्टम (ABAS) मद्रास डेवलपमेंटल प्रोग्रामिंग सिस्टम (MDPS)
C. विकासात्मक आकलन उपकरण	विकास के पड़ावों (माइलस्टोन्स) का आकलन करते हैं। उदाहरण: डेवलपमेंटल स्क्रीनिंग टेस्ट (DST) डेनवर डेवलपमेंटल स्क्रीनिंग टेस्ट (DDST) बेली स्केल ऑफ़ इन्फेंट एंड टॉडलर डेवलपमेंट
D. भाषा आकलन उपकरण	उदाहरण: लैंग्वेज असेसमेंट टूल (LAT) रिसेप्टिव-एक्सप्रेसिव इमर्जेंट लैंग्वेज स्केल (REELS) स्पीच और लैंग्वेज स्किल्स के लिए असेसमेंट चेकलिस्ट (AC-SLS)
E. शैक्षिक आकलन उपकरण	शैक्षणिक तैयारी और स्कूल में प्रदर्शन का आकलन करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। उदाहरण: क्राइटेरियन-रेफरेंस्ड टेस्ट (CRT) पाठ्यक्रम-आधारित आकलन (CBA)
F. व्यावसायिक आकलन	IDD वाले किशोरों और वयस्कों के लिए इस्तेमाल किया जाता है। उदाहरण: व्यावसायिक आकलन उपकरण (VAPS)

अभ्यास प्रश्न:

1- अवलोकन (Observation) किस प्रकार का आकलन उपकरण है?

A. लिखित परीक्षा

B. अनौपचारिक आकलन उपकरण

C. केवल बुद्धि परीक्षण

D. चिकित्सा परीक्षण

2- IDD के क्षेत्र में कार्यात्मक आकलन (Functional Assessment) किसका मूल्यांकन करता है?

A. केवल IQ

B. दैनिक जीवन की क्षमताओं का

C. केवल शारीरिक वजन

D. केवल भाषा ज्ञान

3- स्केल (Rating Scale) का उपयोग किसके लिए किया जाता है?

A. व्यवहार या प्रदर्शन की मात्रा निर्धारित करने के लिए

B. केवल उपस्थिति के लिए

C. केवल उम्र जानने के लिए

D. केवल नाम लिखने के लिए

7.4 जांच एवं प्रारंभिक पहचान (Screening and Early Identification)

बौद्धिक विकासात्मक दिव्यांगता (Intellectual Developmental Disabilities - IDD) ऐसी स्थिति है जिसमें बच्चे के बौद्धिक कार्य (Intellectual Functioning) तथा अनुकूलन व्यवहार (Adaptive Behaviour) का विकास सामान्य बच्चों की तुलना में धीमा होता है। समय पर जांच (Screening) और प्रारंभिक पहचान (Early Identification) से बच्चे को शीघ्र हस्तक्षेप (Early Intervention) एवं उचित शिक्षा प्रदान की जा सकती है।

जांच एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें किसी व्यक्ति, समूह या आकड़ों का मूल्यांकन किया जाता है ताकि खास विशेषताओं की पहचान की जा सके या छिपे हुए जोखिमों का पता लगाया जा सके। जाँच से शुरुआती चरण में ही बीमारियों का पता चल सकता है इसलिए बीमारी को ठीक करने की बेहतर संभावना हो सकती है। जाँच में किसी व्यक्ति में वंशानुगत बीमारी विकसित होने के जोखिम की जांच करने के लिए आनुवंशिक परीक्षण करना भी शामिल है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार, जांच का अर्थ है कि जो लोग ऊपर से स्वस्थ दिखते हैंउन पर आसान परीक्षण किए जाएं ताकि ऐसे लोगों की पहचान की जा सके जिनमें बीमारी का जोखिम या शुरुआती लक्षण तो हैं लेकिन अभी तक बीमारी के स्पष्ट लक्षण दिखाई नहीं दिए हैं।

प्रारंभिक पहचान (Early Identification) प्रारंभिक पहचान (Early Identification) वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से बच्चे के जीवन के शुरुआती वर्षों (विशेषकर जन्म से 6 वर्ष की आयु तक) में उसके विकास, व्यवहार, सीखने, भाषा, संचार या बौद्धिक क्षमताओं में होने वाली किसी भी असामान्यता या विकासात्मक विलंब (Developmental Delay) की समय रहते पहचान की जाती है। इसका उद्देश्य बच्चे को शीघ्र निदान

(Diagnosis), प्रारंभिक हस्तक्षेप (Early Intervention) तथा आवश्यक शैक्षिक एवं चिकित्सीय सेवाएँ उपलब्ध कराना है

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार, 'शुरुआती पहचान' (early identification) का मतलब है किसी बच्चे में किसी भी तरह की विकलांगता, विकार या विकास से जुड़ी भिन्नता का जल्द से जल्द पता लगाना, ताकि शुरुआती मदद (early intervention) की ज़रूरत तय की जा सके। इसका मकसद शारीरिक, मानसिक (कॉग्निटिव), बातचीत करने की क्षमता और सामाजिक-भावनात्मक विकास में होने वाली देरी का पता लगाना और उसे ठीक करना है।

हमने देखते है कि एक सामान्य बच्चा कैसे विकसित होता है। बौद्धिक अक्षमता की शुरुआती पहचान यह देखकर की जाती है कि बच्चा विकास के पड़ावों को हासिल करने में कितना पीछे है। बौद्धिक अक्षमता की पहचान कुछ खास प्रश्नावली या चेकलिस्ट का इस्तेमाल करके की जाती है, जिन्हें जांच अनुसूची कहा जाता है। पहला जांच अनुसूची 3 साल से कम उम्र के बच्चों के लिए है। दूसरा जांच अनुसूची 3-6 साल की उम्र के बच्चों के लिए है। तीसरा जांच अनुसूची 7 साल और उससे ज़्यादा उम्र के बच्चों के लिए है। विकास के सामान्य पड़ावों के विवरण में उन्हें हासिल करने की औसत उम्र ही दी गई है। हालाँकि विकास में देरी की जांच करते समय उम्र की सीमा को ध्यान में रखना ज़रूरी है। इसलिए जांच अनुसूची -1 में उम्र की सीमा दी गई है।

जांच अनुसूची नंबर 1 (3 साल से कम उम्र के लिए)

क्रम संख्या	पद	सामान्य उम्र सीमा	अगर इस उम्र तक न हो तो विकास के ज़रूरी पड़ाव में देरी मानी जाएगी
1	नाम/आवाज़ पर प्रतिक्रिया	1-3 महीने	चौथा महीना

	देना		
2	दूसरों को देखकर मुस्कुराना	1-4 महीने	छठा महीना
3	सिर सीधा रखना	2-6 महीने	छठा महीना
4	बिना सहारे के बैठना	5-10 महीने	12वां महीना
5	बिना सहारे के खड़ा होना	9-14 महीने	18वां महीना
6	ठीक से चलना	10-20 महीने	20वां महीना
7	2-3 शब्दों के वाक्यों में बात करना	16-30 महीने	तीसरा साल
8	खुद से खाना/पीना	2-3 साल	चौथा साल
9	अपना नाम बताना	2-3 साल	चौथा साल
10	टॉयलेट पर नियंत्रण	3-4 साल	चौथा साल
11	साधारण खतरों से बचना	3-4 साल	चौथा साल
अन्य बातें			
1	दौरे पड़ते हैं	हाँ	नहीं
2	शारीरिक विकलांगता	हाँ	नहीं

अगर बच्चे में 1-11 तक दी गई बातों में से किसी में भी देरी दिखे और उसे दौरे पड़ते हों या कोई शारीरिक विकलांगता हो, तो बौद्धिक अक्षमता का शक करें।

जांच अनुसूची नंबर 2 (3 से 6 साल)

इन बातों पर ध्यान दें:

1. दूसरे बच्चों की तुलना में, क्या बच्चे को बैठने, खड़े होने या चलने में बहुत ज़्यादा देरी हुई? हाँ / नहीं

2. क्या बच्चे को सुनने में परेशानी होती है?हाँ/नहीं

3. क्या बच्चे को देखने में परेशानी होती है? हाँ / नहीं

4. जब आप बच्चे को कुछ करने के लिए कहते हैं, तो क्या उसे आपकी बात समझने में परेशानी होती है?हाँ/नहीं

5. क्या बच्चे के हाथ-पैरों में कमज़ोरी और/या अकड़न है और/या उसे चलने या हाथ हिलाने में परेशानी होती है? हाँ / नहीं

6. क्या बच्चे को कभी-कभी दौरे पड़ते हैं, शरीर अकड़ जाता है, या वह बेहोश हो जाता है? हाँ / नहीं

7. क्या बच्चे को अपनी उम्र के दूसरे बच्चों की तरह काम सीखने में परेशानी होती है? हाँ / नहीं

8. क्या बच्चा बिल्कुल भी बोल नहीं पाता? (शब्दों में अपनी बात नहीं समझा पाता/कोई पहचाने जाने लायक शब्द नहीं बोल पाता)हाँ / नहीं

9. क्या बच्चे की बोली सामान्य से अलग है? (इतनी साफ़ नहीं कि परिवार के अलावा दूसरे लोग समझ सकें) हाँ / नहीं

10. अपनी उम्र के दूसरे बच्चों की तुलना में, क्या बच्चा किसी तरह पिछड़ा, सुस्त या धीमा लगता है? हाँ / नहीं

अगर ऊपर दी गई बातों में से किसी का भी जवाब 'हाँ' है, तो बौद्धिक अक्षमता का शक करें।

जांच अनुसूची नंबर 3 (7 साल और उससे ज़्यादा उम्र)

1. दूसरे बच्चों की तुलना में, क्या बच्चे को बैठने, खड़े होने या चलने में बहुत ज़्यादा देरी हुई? हाँ/नहीं

2. क्या बच्चा अपने काम खुद नहीं कर पाता, जैसे खाना खाना, कपड़े पहनना, नहाना और तैयार होना? हाँ/नहीं

3. क्या बच्चे को यह समझने में परेशानी होती है जब आप कहते हैं 'यह करो या वह करो'? हाँ/नहीं

4. क्या बच्चे की बोली साफ़ नहीं है? हाँ/नहीं

5. क्या बच्चे को बिना पूछे यह बताने में परेशानी होती है कि उसने क्या देखा/सुना है? हाँ/नहीं

6. क्या बच्चे के हाथ-पैरों में कमज़ोरी और/या अकड़न है, या उसे चलने या हाथ हिलाने में कठिनाई होती है? हाँ/नहीं

7. क्या बच्चे को कभी-कभी दौरे पड़ते हैं, शरीर अकड़ जाता है या वह बेहोश हो जाता है? हाँ/नहीं

8. अपनी उम्र के दूसरे बच्चों की तुलना में, क्या बच्चा किसी तरह से पिछड़ा, सुस्त या धीमा लगता है? हाँ/नहीं

अगर ऊपर दी गई बातों में से किसी का भी जवाब 'हाँ' है, तो बौद्धिक अक्षमता (intellectual disability) का संदेह हो सकता है।

7.4.1 जांच के तरीके और उपकरण

बौद्धिक अक्षमता (ID) की जांच कई चरणों वाली प्रक्रिया है। सबसे ज़रूरी बात यह है कि जांच से पक्की बीमारी का पता नहीं चलता। बल्कि यह उन लोगों की पहचान करने का एक तरीका है जो विकास के ज़रूरी पड़ाव (माइलस्टोन) पार नहीं कर पा रहे हैं या रोज़मर्रा के कामों में मुश्किलों का सामना कर रहे हैं ताकि उन्हें औपचारिक और पूरी तरह से मनोवैज्ञानिक और चिकित्सकीय जांच के लिए भेजा जा सके। बौद्धिक अक्षमता की सही पहचान करने के लिए डॉक्टर DSM-5-TR और ICD-11 जैसे मानक नैदानिक फ्रेमवर्क में बताए गए तीन मुख्य आधारों को देखते हैं बौद्धिक कमियां, अनुकूलन क्षमता (Adaptive functioning) में कमियां, और विकास के शुरुआती दौर में इनकी शुरुआत। बौद्धिक अक्षमता की जाँच केवल बुद्धिलब्धि(IQ) से नहीं होती, बल्कि संज्ञानात्मक क्षमता, अनुकूलन व्यवहार और विकासात्मक इतिहास का भी आकलन किया जाता है।

7.4.1.1. जाँच के तरीके (Methods of screening)

- अवलोकन (Observation)- बच्चे के व्यवहार, सीखने की क्षमता और सामाजिक कौशल का निरीक्षण।
- साक्षात्कार (Interview)- माता-पिता, शिक्षक और बच्चे से जानकारी प्राप्त करना।
- केस हिस्ट्री (Case History)- गर्भावस्था, जन्म, विकास, स्वास्थ्य और शिक्षा संबंधी जानकारी।
- मानकीकृत परीक्षण (Standardized Tests)- IQ, संज्ञानात्मक क्षमता और अनुकूलन व्यवहार का परीक्षण।
- प्रश्नावली (Questionnaire Method)
- विकासात्मक स्क्रीनिंग परीक्षण (Developmental Screening Tests)
- चिकित्सीय एवं मनोवैज्ञानिक जाँच (Medical and Psychological Assessment

- बहु-विषयक जाँच (Multidisciplinary)
- जांच अनुसूची (Screening Schedule)

7.4.1.2 जांच के उपकरण

आमतौर पर जांच उपकरण इस तरह बनाए जाते हैं कि उन्हें कम या बिना परीक्षण वाला कोई भी व्यक्ति इस्तेमाल कर सके। उन्हें प्रयोग करना या उनका पालन करना भी आसान होता है। आमतौर पर जिन मामलों में जांच के परिणाम सकारात्मक आते हैउनकी आगे जांच की जाती है। इस तरह संसाधनों का बेहतर इस्तेमाल होता है। बौद्धिक अक्षमता की पहचान के लिए कई जांच उपकरण हैं जो इस प्रकार हैं:

अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ में विकासात्मक जांच उपकरण/Developmental Screening Tools of International Origin

उपकरण	बेली एनफएन्ट न्यूरोडेवलपमेंटल स्क्रीनर/ Bayley Infant Neuro-developmental Screen (BINS)	माता-पिता के विकासात्मक स्थिति का मूल्यांकन (पीईडीएस) /Parents Evaluationof Developmental Status (PEDS)	डेन्वर डेवलपमेंटल स्क्रीनिंग टेस्ट II /Denver DevelopmentalScreening Test II	आयु और अवस्था प्रश्नावली (ASQ) /Ages and stages questionnaire (ASQ)	विकासात्मक प्रोफ़ाइल II/ III /Developmental* Profile II/ III

उम्र	3-24 सीधे तौर पर दिया जाने वाला(monthDirectly administered)	0-8 माता-पिता की रिपोर्ट (yearsParent-report)	0-6 सीधे तौर पर संचालित (yearsDirectly administered)	1 -66 /3-66mमाता-पिता की रिपोर्ट (Parent report)	0-9 y/ 12 y11m माता-पिता की रिपोर्ट (Parent report)
क्षेत्र	न्यूरोलॉजिकल प्रक्रियाएं, अभिव्यंजक और ग्रहणशील कार्य और संज्ञानात्मक (Neurological processes, expressive and receptive functions & cognitive)	संज्ञानात्मक, अभिव्यंजक और ग्रहणशील भाषा, स्थूल और सूक्ष्म गत्यात्मकक, सामाजिक-भावनात्मक, व्यवहार, खुद से जुड़े काम और स्कूल। (Cognitive, expressive&	अभिव्यंजक और ग्रहणशील भाषा, स्थूल और सूक्ष्म गत्यात्मकक, व्यक्तिगत सामाजिक (Expressive & receptivelanguage, gross motor, fine motor, personalsocial)	सम्प्रेषण , स्थूल और सूक्ष्म गत्यात्मकक कौशल, समस्या सुलझाने की क्षमता और व्यक्तिगत अनुकूलन कौशल। (Communication, gross motor, fine motor,pr	शारीरिक, आत्म-सहायता/अनुकूलन क्षमता, सामाजिक/सामाजिक-भावनात्मक, शैक्षणिक/संज्ञानात्मक और संचार (Physical, Self-help/ Adaptive, Social/Social-emotional, Academic/ cognitivean

		receptive language fine & gross motor, social-emotional, behavior, self-help& school)		oblem-solving, andpersonal adaptive skills)	d Communication)
अंकन Scoring/ Result	जोखिम श्रेणी: उच्च/कम/मध्यम /Risk category: high/ low moderate	जोखिम श्रेणी: कम/ मध्यम/ अधिक /Risk category: low/ medium/ high	जोखिम श्रेणी: सामान्य/असामान्य/संदिग्ध /Risk category: normal/abnormal/ questionable	पास/फ़ेल अंक /Pass/fail scores	कुल अंक क्षेत्र के अनुसार उम्र के बराबर का मान बताता है।/Total score gives domain wise age equivalents
समय	10 min	2-10 min	10-20 min	10-15	10 /20-40

/Time				min	min
भाषा /Language	English	English	English, Spanish	English, Hindi	English
भारत में प्रमाणित /Validated in India	मान्य नहीं /Not validated	Sensitivity 62% Specificity 65%	मान्य नहीं /Not validated	Sensitivity 83.3% Specificity 75.4%	मान्य नहीं लेकिन बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया जाता है। Not validated but used extensively

भारतीयसंदर्भ में जांच उपकरण

उपकरण	बड़ौदा डेवलपमेंटल स्क्रीनिंग टेस्ट (BDST)/Ba	त्रिवेंद्रम डेवलपमेंटल स्क्रीनिंग चार्ट (TDSC)/Tri	ICMR मनोसामाजिक विकास स्क्रीनिंग टेस्ट	विकासात्मक जांच उपकरण /Developmental	भारतीय शिशुओं के लिए विकासात्मक आकलन

	roda Developmentalscreening Test (BDST)	vandrum Developmental Screening Chart (TDSC)	/ICMR Psychosocial developmental screening Test	Screening Tools (DST)	पैमाना /Developmental Assessment Scale for Indian Infants (DASII)
विकसित हुआ /Developed from	बेली स्केल्स ऑफ़ इन्फेंट डेवलपमेंट, भारतीय बच्चों से प्राप्त मानक डेटा /Bayley Scales of Infant Development, Normative data from Indian children	बेली स्केल्स ऑफ़ इन्फेंट डेवलपमेंट (बड़ौदा नॉर्म्स)/Bayley Scales of Infant Development (Baroda Norms)	पीस-वाइज़ पॉलिनोमियल का इस्तेमाल करके उम्र के हिसाब से सेंटाइल का अनुमान लगाने का प्रोग्राम *भारतीय बच्चों का नॉर्मेटिव डेटा/Programme for Estimating Age-related	डॉ. भारत राज (Bharatraj)	बेली स्केल्स ऑफ इन्फेंट डेवलपमेंट (BSID)

			Centiles Using Piece-wise Polynomials*Normative data from Indian children		
उम्र /Age	0 - 30 mo	0 - 24 mo	0-6 y	जन्म से 15 वर्ष तक	जन्म से 30 माह
प्रारूप /Format	सीधे तौर पर दिया गया /Directly administered	सीधे तौर पर दिया गया /Directly administered	माता-पिता का साक्षात्कार: 66 प्रश्न/बिंदु /Parent interview 66 items	सीधे तौर पर दिया गया और माता-पिता का साक्षात्कार	
क्षेत्र /Do	Motor and Cognitive	Mental and Motor	ग्रॉस मोटर, दृष्टि और	गत्यात्मक विकास,	गत्यात्मक विकास और मानसिक

mains			फाइन मोटर, सुनना, भाषा और अवधारणा का विकास, आत्म-सहायता और सामाजिक कौशल /Gross Motor, Vision & Fine motor, Hearing, language & concept development, Self Help & Social skills	भाषा, सामाजिक एवं व्यक्तिगत कौशल।	विकास।
अंकन	आयु समतुल्य	उम्र सीमा के	तीसरे,	बच्चे के प्रदर्शन	बच्चे के प्रदर्शन

/Scoring/ Result	और विकासात्मक भागफल /Age equivalent and D evelopmentalq uotient	भीतर /Within age range	पांचवें, 25वें, 50वें, 75वें, 95वें और 97वें सेंटाइल दिए गए हैं; महत्वपूर्ण देरी <तीसरा शतांशक (2 S.D) के रूप में कैलकुलेट की गई।/3rd, 5th, 25th, 50th, 75th, 95th &97th centiles given Significant delay <3rd centile calculated (2 S.D)	के आधार पर हर आइटम को पास (✓) या फ़ेल (✗) के तौर पर दर्ज /Record each item as Pass (✓) or Fail (✗) based on the child's performance.	के आधार पर हर आइटम को पास (✓) या फ़ेल (✗) के तौर पर दर्ज/Record each item as Pass (✓) or Fail (✗).

परीक्षण /Training	न्यूनतम प्रशिक्षण / Minimal training	न्यूनतम प्रशिक्षण /Minimal training	कोई नहीं/None	प्रशिक्षित पेशेवर /trained professionals	प्रशिक्षित पेशेवर /trained professionals
सेटिंग /Setting	समुदाय/कार्यालय/Community/ office	समुदाय/कार्यालय/Community/ office	समुदाय/कार्यालय/Community/ office	समुदाय/कार्यालय/Community/ office	समुदाय/कार्यालय/Community/ office
समय अवधि /Time taken	10 min	5 min	Minimal	35 to 40	30 to 40

प्रशस्त (PRASHAST)

प्रशस्त (Pre-Assessment Holistic Screening Tool) भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय और NCERT द्वारा विकसित एक स्कूल-आधारित जांच उपकरण है। इसका उद्देश्य स्कूलों में ऐसे बच्चों की प्रारंभिक पहचान (Early Identification) करना है जिन्हें किसी प्रकार की दिव्यांगता या विशेष शैक्षिक सहायता की आवश्यकता हो सकती है। यह RPwD Act, 2016 के तहत मान्यता प्राप्त 21 प्रकार की दिव्यांगताओं के संकेतों की प्रारंभिक जाँच में मदद करता है।यह दो भागों में विभक्त हैं भाग-1: सामान्य शिक्षक द्वारा प्रारंभिक अवलोकन और जांच ।भाग-2: विशेष शिक्षक/विशेषज्ञ द्वारा सत्यापन और आगे की अनुशंसा

अभ्यास प्रश्न :सही/गलत/True and False

4- प्रारम्भिक पहचान (Early Identification) से स्थिति की गंभीरता को कम करने में मदद मिलती है।(सही /गलत)

5- शिक्षकों और माता-पिता को प्रारम्भिक पहचान टीम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है। (सही/गलत)

7.5 विकासात्मक आकलन एवं उपयुक्त उपकरणों का उपयोग

विकासात्मक आकलन

विकासात्मक आकलन (Developmental Assessment) एक व्यवस्थित प्रक्रिया है जिसके माध्यम से किसी बच्चे या व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, भाषाई, सामाजिक, भावनात्मक तथा संज्ञानात्मक (बौद्धिक) विकास का व्यवस्थित आकलन किया जाता है। इसका उद्देश्य विकास की वर्तमान स्थिति, संभावित कठिनाइयों तथा आवश्यक सहायता की पहचान करना है। बौद्धिक अक्षमता (Intellectual Disability) वाले बच्चों के आकलन में विकासात्मक आकलन और उपयुक्त बौद्धिक उपकरणों का उपयोग अत्यंत महत्वपूर्ण है। इससे बच्चे की बौद्धिक क्षमता, अनुकूलन व्यवहार, विकास के स्तर तथा

आवश्यक शैक्षिक एवं पुनर्वास सेवाओं का निर्धारण किया जाता है। बौद्धिक अक्षमता के सही निदान और प्रभावी हस्तक्षेप के लिए विकासात्मक आकलन तथा मानकीकृत बौद्धिक उपकरणों का उपयोग आवश्यक है। केवल IQ परीक्षण पर्याप्त नहीं होत इसके साथ अनुकूलन व्यवहार, विकासात्मक इतिहास और व्यवहार संबंधी जानकारी का समग्र आकलन किया जाता है। इससे बच्चे की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा, प्रशिक्षण और सहायता प्रदान करना संभव होता है।

विकासात्मक आकलन के उद्देश्य

- विकासात्मक देरी की पहचान करना।
- बौद्धिक एवं विकासात्मक विकलांगता (IDD) का प्रारंभिक पता लगाना।
- बच्चे की शक्तियों (Strengths) और आवश्यकताओं (Needs) का मूल्यांकन।
- व्यक्तिगत शिक्षा योजना (IEP) और हस्तक्षेप (Intervention) की योजना बनाना।
- बच्चे की प्रगति की नियमित निगरानी करना।

विकासात्मक आकलन के प्रमुख क्षेत्र

- स्थूल गत्यात्मक (Gross Motor) – बैठना, चलना, दौड़ना।
- सूक्ष्म गत्यात्मक (Fine Motor) – पकड़ना, लिखना, चित्र बनाना।
- भाषा एवं संचार (Language & Communication) – सुनना, बोलना, समझना।
- संज्ञानात्मक (Cognitive) – सीखना, स्मृति, समस्या समाधान।
- सामाजिक एवं भावनात्मक (Social–Emotional) – दूसरों से व्यवहार, भावनाओं की अभिव्यक्ति।

- अनुकूलन व्यवहार (Adaptive Behaviour) – दैनिक जीवन कौशल, आत्म-देखभाल, सामाजिक जिम्मेदारी

7.5.1 विकासात्मक आकलन के उपकरण:

'एजेज़ एंड स्टेजज़ प्रश्नावली' (ASQ) (ब्रिकर और स्क्वायर्स, 1995)

4 से 60 महीने की उम्र के बच्चों में विकासात्मक चिंताओं की जांच के लिए एक मानक जांच उपकरण है। इसमें 19 अलग-अलग प्रश्नावली हैं जो उम्र के अलग-अलग भागों को कवर करती हैं। हर प्रश्नावली विकास के क्षेत्रों - जैसे सूक्षम गत्यात्मक (बारीक शारीरिक गतिविधियां), स्थूल गत्यात्मक (बड़ी शारीरिक गतिविधियां), समस्या-समाधान, संचार और व्यक्तिगत-सामाजिक कौशल - को शामिल करती है। हर उप-भाग को पास/फेल के आधार पर आंका जाता है। बाल रोग विशेषज्ञ सामान्य विकास के बारे में जानने के लिए इस उपकरण का उपयोग करते हैं। इसे माता-पिता खास महीनों के अंतराल पर (जैसे, 9, 18, 24, 30 महीने) भरते हैं। इसमें बातचीत करने की क्षमता,गत्यात्मक कौशल, समस्या सुलझाने की क्षमता और व्यक्तिगत-सामाजिक विकास की जाँच के लिए आसान सवाल पूछे जाते हैं। यह चिकित्सक द्वारा 15 मिनट की छोटी सी मुलाक़ात में देखी गई चीज़ों और माता-पिता द्वारा रोज़ाना देखी जाने वाली चीज़ों के बीच के अंतर को कम करता है।

पेरेंट्स इवैल्यूएशन ऑफ़ डेवलपमेंटल स्टेटस (PEDS)

यह सबूत-आधारित जांच का एक तरीका है जो माता-पिता की चिंताओं को जोखिम के स्तरों के आधार पर वर्गीकृत करता है। अगर भाषा, सोचने-समझने की क्षमता या गत्यात्मक कौशल से जुड़ी खास चिंताएँ सामने आती हैं तो यह अपने आप विशेषज्ञ के पास भेजने की प्रक्रिया शुरू कर देता है।

डेनवर डेवलपमेंटल स्क्रीनिंग टेस्ट (Denver II)

यह बच्चों के विकास से जुड़े जोखिमों और देरी की शुरुआती पहचान करने वाला दुनिया भर में सबसे व्यापक रूप से इस्तेमाल किया जाने वाला अंतर्राष्ट्रीय स्क्रीनिंग टूल है।मूल रूप से 1967 में फ्रैंकनबर्ग और डॉड्स (Frankenburg & Dodds) द्वारा विकसित किए गए DDST को 1990 में अपग्रेड करके Denver II का नाम दिया गया।इसे सीधे स्वस्थ व्यवसायिक द्वारा किया जाता है। चिकित्सक बच्चे के साथ बातचीत करता है और स्थूल गत्यात्मकगतिविधियाँ(gross motor) , सूक्षम गत्यात्मक गतिविधियाँ (fine motor), भाषा और व्यक्तिगत-सामाजिक कार्यों में उनके प्रदर्शन को देखता है।

मुख्य विशेषताएँ

- आयु सीमा (Age Group): जन्म (0 महीने) से लेकर 6 वर्ष तक के बच्चों के लिए।
- परीक्षण का समय: लगभग 15 से 20 मिनट।
- कुल पद: इसमें कुल 125 आइटम्स/टास्क होते हैं, जिन्हें 4 अलग-अलग क्षेत्रों में बांटा गया है।

बेली स्केल्स ऑफ़ इन्फेंट डेवलपमेंट II और III/ IV)

बेली छोटे बच्चों (1-42 महीने) के लिए एक मानक विकासात्मक आकलन है जिसे पूरा करने में लगभग 45-60 मिनट लगते हैं। बेली एक मानसिक विकास सूचकांक (MDI) और एक मनो-प्रेरक विकास सूचकांक (PDI) प्रदान करता है। प्रत्यक्ष आकलन में माता-पिता द्वारा भरी जाने वाली अतिरिक्त चेकलिस्ट भी शामिल होती हैं। इसमें साइकोमेट्रिक विशेषताएँ मज़बूत हैं और सामग्री बच्चों के अनुकूल है। इसे सही और मानक तरीके से इस्तेमाल करने के लिए परीक्षण की ज़रूरत होती है।

मुलेन स्केल्स ऑफ़ अर्ली लर्निंग (MSEL; मुलेन, 1995)

MSEL जन्म से 68 महीने तक के शिशुओं और बच्चों के विकास का एक मानक और व्यापक पैमाना है। इसमें पांच उप-पैमाने (sub scale) शामिल हैं: दृश्य (यानी, बिना भाषा के समस्याओं को हल करना),स्थूल और सूक्ष्म गत्यात्मक, ग्रहणशील (समझने

वाली) और अभिव्यंजक (व्यक्त करने वाली) भाषा। इसके पद किसी भी क्रम में किए जा सकते हैं जिससे परीक्षक बच्चे की रुचि और प्रेरणा के अनुसार बदलाव कर सकता है। MSEL मौखिक और गैर-मौखिक समस्या-समाधान क्षमताओं का अनुमान देता है। विकासात्मक अक्षमताओं वाले छोटे बच्चों के अध्ययन में इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। MSEL गत्यात्मक, भाषा और संज्ञानात्मक विकास के अन्य प्रसिद्ध विकासात्मक परीक्षणों के साथ मजबूत समवर्ती वैधता (concurrent validity) दिखाता है।

भारतीय शिशुओं के लिए विकासात्मक आकलन पैमाना /Developmental Assessment Scale for Indian Infants (DASII)

यह भारतीय बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास का सटीक आकलन करने वाला एक प्रमुख नैदानिक (diagnostic) पैमाना है। यह परीक्षण अमरीकी मानक उपकरण बेली स्केल्स ऑफ इन्फेंट डेवलपमेंट (BSID) का भारतीय संदर्भ में रूपांतरित और मानकीकृत रूप है, जिसे प्रमिला पाठक द्वारा महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय (M.S. University), बड़ौदा में विकसित किया गया था

1. मुख्य विशेषताएँ

- आयु सीमा (Age Group): जन्म से लेकर 30 महीने (2.5 वर्ष) तक के बच्चों के लिए उपयुक्त।
- परीक्षण का समय: लगभग 30 से 40 मिनट।
- सामग्री: इस किट में भारतीय माहौल और संस्कृति के अनुकूल खिलौने और सामग्रियां इस्तेमाल की जाती हैं।

मुख्य क्षेत्र (Domains)

DASII में बच्चे के विकास को 2 प्रमुख स्केल्स में बांटकर कुल 230 आइटम्स के जरिए आंका जाता है:

1. गत्यात्मक पैमाना (Motor Scale) — 67 आइटम्स

- स्थूल गत्यात्मक (Gross Motor)
- सूक्ष्म गत्यात्मक (Fine Motor)

2. मानसिक पैमाना (Mental Scale) — 163 आइटम्स

- यह बच्चे की बौद्धिक और सामाजिक समझ को मापता है
- अंकन और गणना कैसे होती है?

आकलन के बाद बच्चे की गत्यात्मक आयु (MoA) और मानसिक आयु (MeA) निकाली जाती है। इसके आधार पर दो मुख्य सूचकांक (Quotients) प्राप्त होते हैं

बड़ौदा डेवलपमेंट जांच परीक्षण /Baroda Development Screening Test (BDST)

भारत में विकसित प्रारंभिक विकास जांच उपकरणों में से एक। छोटे बच्चों में विकासात्मक देरी की पहचान के लिए उपयोग किया जाता है। बड़ौदा डेवलपमेंट जांच परीक्षण (Baroda Development Screening Test - BDST) बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास की त्वरित जांच (Screening) के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक बेहद सरल और लोकप्रिय भारतीय टूल है। इसे 1991 में डॉ. प्रमिला पाठक और बी. खुराना द्वारा एमएस यूनिवर्सिटी (M.S. University), बड़ौदा में विकसित किया गया था। यह DASII (Developmental Assessment Scale for Indian Infants) का ही एक छोटा, आसान और त्वरित रूप है।

मुख्य विशेषताएँ- आयु सीमा (Age Group): जन्म से लेकर 30 महीने (2.5 वर्ष) तक के बच्चों के लिए। कुल पद: इसमें कुल 54 प्रश्न/पद होते हैं: गत्यात्मक (Motor): 22 पद (शारीरिक गतिविधियों के लिए) मेंटल (Mental): 32 पद (मानसिक और बौद्धिक

विकास के लिए) समय: इसे पूरा करने में केवल 10 से 15 मिनट का समय लगता है। सामग्री: इसके लिए किसी जटिल किट या महंगे उपकरणों की आवश्यकता नहीं होती; सामान्य घरेलू वस्तुओं या साधारण टिप्पणियों (observations) से परीक्षण किया जाता है।

विकासात्मक जांच परीक्षण/ Developmental Screening Test (DST)

विकासात्मक जांच परीक्षण (डीएसटी) एक संक्षिप्त मनोवैज्ञानिक और नैदानिक उपकरण है जिसका उपयोग बच्चे के मानसिक और शारीरिक विकास का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह जन्म से लेकर लगभग 15 वर्ष की आयु तक के बच्चों में तीन मुख्य क्षेत्रों में महत्वपूर्ण पड़ावों का आकलन करता है गति विकास, वाक् एवं भाषा विकासऔर व्यक्तिगत-सामाजिक कौशल। इसका उद्देश्य यह पहचानना है कि बच्चे का विकास उसकी आयु के अनुसार हो रहा है या उसमें विकासात्मक विलंब (Developmental Delay) की संभावना है। यह परीक्षण डॉ. जे. भरत राज (Dr. J. Bharath Raj) द्वारा विकसित किया गया था और भारत में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। यह एक व्यक्तिगत (Individual) मनोवैज्ञानिक परीक्षण यह परीक्षण विशेष रूप से उन बच्चों की पहचान के लिए उपयोगी है जिनमें विकासात्मक देरी, बौद्धिक अक्षमता या अन्य तंत्रिका-विकासात्मक(Neuro-developmental)समस्याओं की आशंका हो।

2. उद्देश्य (Objectives)-DST के मुख्य उद्देश्य हैं—

- बच्चे के विकासात्मक स्तर का आकलन करना।
- विकासात्मक विलंब (Developmental Delay) की शीघ्र पहचान करना।
- विकासात्मक लब्धि /Developmental Quotient (DQ) का अनुमान लगाना।
- यह निर्धारित करना कि बच्चे को विस्तृत मनोवैज्ञानिक आकलन की आवश्यकता है या नहीं।

- उपचार, पुनर्वास तथा विशेष शिक्षा की योजना बनाने में सहायता करना।

3. आयु सीमा (Age Range)- जन्म (Birth) से 15 वर्ष तक के बच्चों के लिए उपयुक्त। प्रारंभिक आयु के बच्चों के लिए अधिक संख्या में विकासात्मक पद (item) शामिल हैं जिससे शुरुआती विकास का बेहतर आकलन किया जा सके।

4. परीक्षण की विशेषताएँ (Characteristics) यह एक व्यक्तिगत (Individual) जांच प्रकृति का परीक्षण हैं इसके प्रशासन का समय लगभग 35–40 मिनट हैं इसमें मुख्यत अंग्रेज़ी भाषा प्रयोग की जाती हैं एक प्रशिक्षित मनोवैज्ञानिक या बाल रोग विशेषज्ञ बच्चे का प्रत्यक्ष अवलोकन करता है और प्राथमिक देखभालकर्ता के साथ एक संरचित साक्षात्कार आयोजित करता है।

5. परीक्षण के क्षेत्र:

- गत्यात्मक विकास (Motor Development): इसमें शरीर पर स्थूल गतिक नियंत्रण और सूक्ष्म गतिक समन्वय (जैसे सिर का संतुलन, शरीर की मुद्रा से जुड़ी प्रतिक्रियाएं और चलना-फिरना) शामिल हैं।
- अनुकूलन व्यवहार(Adaptive Behavior): इसमें समझ-बूझ, दिशा-ज्ञान, हाथों का इस्तेमाल और बातचीत से जुड़े वे बदलाव शामिल हैं जो बच्चे की नई शुरुआत करने और पुराने अनुभवों से सीखने की क्षमता को दिखाते हैं।
- भाषा का विकास(Language Development): इसमें बातचीत के सभी तरीके शामिल हैं, जैसे चेहरे के हाव-भाव, इशारे, शरीर की मुद्रा में बदलाव और आवाज़ निकालना।
- व्यक्तिगत-सामाजिक व्यवहार(Personal-Social Behavior): इसमें दूसरों के प्रति बच्चे की व्यक्तिगत प्रतिक्रियाएं, खेलने का तरीका, सामाजिक मुस्कान, खाना-पीना और टॉयलेट परीक्षण जैसी चीज़ें शामिल हैं।

6. सामग्री:

- DST मैनुअल
- DST प्रश्नावली
- लिखने के उपकरण

7 . स्कोरिंग (Scoring)- DST में बच्चे की विकासात्मक आयु (Developmental Age (DA)) का अनुमान लगाया जाता है। इसके बाद निम्न सूत्र से विकासात्मक लब्धि [Developmental Quotient (DQ)] निकाला जाता है—

DQ = (Developmental Age ÷ Chronological Age) × 100

उदाहरण:

वास्तविक आयु = 48 माह

विकासात्मक आयु = 36 माह

DQ = (36 ÷ 48) × 100 = 75

त्रिवेंद्रम डेवलपमेंटल स्क्रीनिंग चार्ट (Trivandrum Developmental Screening Chart – TDSC)

यह भारत में विकसित एक सरल, कम लागत वाला विकासात्मक जांच उपकरण (Developmental Screening Tool) है, जिसका उपयोग छोटे बच्चों में विकासात्मक देरी (Developmental Delay) की प्रारंभिक पहचान के लिए किया जाता है। इसे विशेष रूप से समुदाय स्तर (Community Level) पर उपयोग के लिए विकसित किया गया है।

विकासकर्ता (Developers)

मुख्य विकासकर्ता: डॉ. M. K. C. Nair, सहयोगी: B. George, E. Philip, M. A. Lekshmi, J. C. Haran और N. Sathy

विकास वर्ष: 1991,Child Development Centre, S.A.T. Hospital, Government Medical College, Trivandrum (वर्तमान तिरुवनंतपुरम), केरल।

आयु सीमा

मूल TDSC (1991): 0–2 वर्ष (17 विकासात्मक आइटम)

संशोधित TDSC (0–6): 0–6 वर्ष (51 विकासात्मक आइटम), प्रकाशित 2013।

उद्देश्य

- विकासात्मक देरी की प्रारंभिक पहचान।
- जोखिम वाले बच्चों को आगे विस्तृत आकलन (Diagnostic Assessment) के लिए भेजना।
- प्रारंभिक हस्तक्षेप (Early Intervention) शुरू करने में सहायता करना।

मूल्यांकन के क्षेत्र

- स्थूल गत्यात्मक (Gross Motor)
- सूक्ष्म गत्यात्मक (Fine Motor)
- भाषा एवं वाणी (Language/Speech)
- व्यक्तिगत–सामाजिक विकास (Personal–Social)
- संज्ञानात्मक विकास (Cognitive Development)

NIMHANS इंटेलेक्चुअल डिसेबिलिटी स्क्रीनिंग इंस्ट्रूमेंट (NID-Screener)

यह एक भारतीय जांच उपकरण हैजिसे बच्चों और किशोरों (6–17 वर्ष) में बौद्धिक दिव्यांगता (Intellectual Disability - ID) की प्रारंभिक पहचान के लिए विकसित किया गया है। यह नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ मेंटल हेल्थ एंड न्यूरो साइंसेज (NIMHANS), बेंगलुरु का चाइल्ड एंड एडोलसेंट साइकियाट्री विभाग (National Institute of Mental Health and Neuro Sciences (NIMHANS), Bengaluru के Department of Child and Adolescent Psychiatry) द्वारा विकसित किया गया।जो अंग्रेज़ी, हिंदी और कन्नड़ भाषाओं में उपलब्ध है। इसने उन बच्चों की पहचान करने में अच्छी सेंसिटिविटी (84.7%) और स्पेसिफिसिटी (89%) दिखाई हैजिन्हें पूरी नैदानिक जांच की ज़रूरत हो सकती है।

डिसेबिलिटी स्क्रीनिंग शेड्यूल (DSS)

यह भारत में बच्चों में शुरुआती स्तर पर विकलांगता और विकास संबंधी देरी की पहचान करने के लिए बनाया गया एक सरल और प्रभावी जांच पैमाना है। इसे मुख्य रूप से डॉ. गीता चोपड़ा (Delhi University) द्वारा विकसित किया गया था। इसका प्राथमिक उद्देश्य यह है कि आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं, प्राथमिक स्वास्थ्य कर्मचारियों और शिक्षकों जैसे गैर-विशेषज्ञ लोग भी बच्चों में प्रमुख अक्षमताओं की पहचान बहुत ही शुरुआती चरण में कर सकें।यह टूल भारत सरकार के ECCE (Early Childhood Care and Education) पाठ्यक्रम और आंगनवाड़ी प्रोटोकॉल (जैसे नवचेतना और आधारशिला) में एकीकृत है। इसका इस्तेमाल भारत में कम्युनिटी हेल्थ और आंगनवाड़ी कार्यकर्ता विकास से जुड़े "रेड फ्लैग्स" (चेतावनी के संकेतों) की पहचान करने के लिए करते हैं।

अभ्यास प्रश्न :

6- विकासात्मक आकलन में 'मील का पत्थर' (Milestone) शब्द का क्या अर्थ है?

A.विशिष्ट आयु में अपेक्षित कौशल

B.सीखने की सबसे धीमी गति

C.परीक्षा में प्राप्त उच्चतम अंक

D.बच्चे की अंतिम ऊंचाई का माप

7- इनमें से कौन सा उपकरण (Tool) विकासात्मक स्क्रीनिंग के लिए व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है?

A.स्टेथोस्कोप और थर्मामीटर

B.आयु और चरण प्रश्नावली (ASQ)

C.सामान्य ज्ञान की लिखित परीक्षा

D.पीरियोडिक टेबल चार्ट

7.6 बौद्धिक- विभिन्न मानकीकृत आकलन उपकरण/ Intellectual - standardized assessment tools:

7.6.1 भारतीय संदर्भ में बौद्धिक आकलन उपकरण

भारतीय संदर्भ में MISIC, Binet–Kamat Test, DST, VSMS और BASIC-MR बौद्धिक अक्षमता के आकलन के प्रमुख उपकरण हैं। इन उपकरणों की सहायता से बच्चे की बौद्धिक क्षमता, सामाजिक अनुकूलन, विकासात्मक स्तर और व्यवहार का समग्र मूल्यांकन किया जाता है जिससे उचित शैक्षिक एवं पुनर्वास योजना तैयार की जा सकती है। पश्चिमी संदर्भ में Wechsler Scales, Stanford–Binet, Raven's Progressive Matrices, Vineland Adaptive Behavior Scales, ABAS और

Woodcock–Johnson Tests बौद्धिक अक्षमता के आकलन के प्रमुख उपकरण हैं। आधुनिक मानकों के अनुसार, केवल IQ परीक्षण पर्याप्त नहीं माना जाता; अनुकूलन व्यवहार का मूल्यांकन भी निदान का आवश्यक भाग है। भारत में बौद्धिक अक्षमता के आकलन के लिए निम्नलिखित मानकीकृत उपकरणों का उपयोग किया जाता है—

बुद्धि का बिनेट-कामट परीक्षण /Binet–Kamat Test of Intelligence (BKT)

स्टैनफोर्ड-बिनेट बुद्धि परीक्षण (1916 के टर्मन संस्करण) का भारतीय संस्करण, जिसे 'बॉम्बे-कर्नाटक संस्करण ', 'बिनेट-कामट परीक्षण या 'BKT' के नाम से भी जाना जाता है 1934 में तैयार किया गया था।बॉम्बे विश्वविद्यालय के डॉ. कामथ नेबिनेट परीक्षण का यह नया संस्करण जारी किया जिसका प्रयोग मराठी और कन्नड़ बोलने वाले बच्चों पर किया जा सकता था। यह भारत में कई दशकों से प्रयोग हो रहे पुराने बुद्धि परीक्षण में से एक है यह परीक्षण 3 से 22 साल की उम्र के लोगों पर लागू होता है और इसमें उम्र के हिसाब से छह परीक्षण शामिल हैं। वेक्सलर (Wechsler) जैसे दूसरे लोकप्रिय और व्यापक बुद्धि परीक्षण की तुलना में, BKT को करना, स्कोर करना और समझना आसान है यह सस्ता भी है और कई दशक पहले मानकीकरण होने के बावजूद यह बुद्धि को मापने का एक सही तरीका है। इन्हीं वजहों से कई नैदानिक मनोविज्ञानी बुद्धि परीक्षण के लिए BKT का इस्तेमाल करते हैं।

मुख्य विशेषताएँ (Key Features)

•व्यक्ति की सामान्य मानसिक क्षमता (General Intelligence/IQ) को मापना और बौद्धिक अक्षमता (Intellectual Disability) या विलक्षणता (Giftedness) की पहचान करना।

•यह परीक्षण 3 वर्ष से लेकर 22 वर्ष तक के बच्चों और वयस्कों के लिए उपयुक्त है।

•यह एक व्यक्तिगत परीक्षण है यानी एक समय में केवल एक ही व्यक्ति पर इसे प्रयोग किया जा सकता है। इसमें शाब्दिक प्रश्न ज्यादा होते हैं लेकिन कुछ अशाब्दिक कार्य भी शामिल हैं।

•BKT के माध्यम से मुख्य रूप से निम्नलिखित 6 मानसिक क्षमताओं (Functions) का आकलन किया जाता है

अंकन

- हर सही जवाब को महीनों के हिसाब से ग्रेड किया जाता है।
- हर उम्र के स्तर के लिए 6 आइटम होते हैं और सबके लिए अंक के अलग-अलग नियम होते हैं।
- 3 से 10 साल की उम्र के लिए हर सही जवाब पर 2 महीने का क्रेडिट दिया जाता है।
- वहीं 12, 14 और 16 साल की उम्र के लिए हर सही जवाब पर 4 महीने का क्रेडिट मिलता है।
- 19 और 22 साल की उम्र के लिए हर सही जवाब पर 6 महीने का क्रेडिट दिया जाता है।
- अगर किसी व्यक्ति के जवाब लगातार 2 उम्र के स्तर पर किसी भी आइटम के स्कोरिंग नियमों को पूरा नहीं करते हैं, तो 'सीलिंग एज' (अधिकतम उम्र सीमा) तय हो जाती है और परीक्षण लेना बंद कर दिया जाता है।
- मानसिक उम्र (MA) निकालते समय, मिले हुए स्कोर में 24 महीने (1 और 2 साल की उम्र के लिए) का अतिरिक्त क्रेडिट जोड़ा जाता है। इस तरह

मानसिक उम्र (MA)= महीनों में मिला स्कोर + 24 महीने

BKT से मिलने वाले इंटेलिजेंस कोशिएंट (IQ) की गणना इस तरह की जाती है

IQ = [मानसिक उम्र (MA) / वास्तविक उम्र(CA)] x 100

यहाँ 15 साल से ज़्यादा उम्र के किसी भी व्यक्ति की उम्र को 15 साल ही माना जाता है क्योंकि माना जाता है कि इस उम्र के बाद बुद्धि का वर्टिकल विकास एक स्तर पर आकर रुक जाता है।

हालांकि इस तरह मिले IQ को ठीक करना ज़रूरी है क्योंकि BKT का स्टैंडर्ड डेविएशन (SD) 18.7 है जो 15 के SD वाले ग्लोबल स्टैंडर्ड (जैसे Wechsler का 1939, 1946 वाला स्केल) से मेल नहीं खाता है। WHO भी बुद्धि खासकर बौद्धिक अक्षमता को वर्गीकृत करने के लिए 100 के मीन (औसत) और 15 के SD की सलाह देता है (Roopesh, 2020)। इसलिए, BKT IQ का इस तरह समायोजन किया जाता है कि यह 15 के SD के हिसाब से हो जाए।

भारतीय बच्चों के लिए मालिन का बुद्धि परीक्षण (MISIC)/Malin's Intelligence Scale for Indian Children (MISIC)

वेक्सलर इंटेलिजेंस स्केल फॉर चिल्ड्रेन (Wechsler Intelligence Scale for Children – WISC) विश्व के सबसे प्रसिद्ध व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षणों में से एक है। इसका निर्माण अमेरिकी मनोवैज्ञानिक डेविड वेक्सलर (David Wechsler) ने बच्चों की बौद्धिक क्षमता का आकलन करने के लिए किया था। भारत में इस परीक्षण का सांस्कृतिक एवं भाषाई रूपांतरण डॉ. आर्थर जे. मालिन (Dr. Arthur J. Malin) ने किया, जिसे Malin's Intelligence Scale for Indian Children (MISIC) कहा जाता है। यह भारतीय बच्चों के लिए सबसे अधिक उपयोग किए जाने वाले बुद्धि परीक्षणों में से एक है।

भारतीय रूपांतरण (Adaptation) की आवश्यकता

अमेरिका में विकसित WISC के कई प्रश्न, चित्र एवं परिस्थितियाँ भारतीय बच्चों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश से मेल नहीं खाती थीं। यदि उसी परीक्षण का सीधे

भारत में उपयोग किया जाता, तो बच्चों के वास्तविक बौद्धिक स्तर का सही आकलन नहीं हो पाता। इसलिए भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप परीक्षण का संशोधन आवश्यक था

आर्थर जे. मैलिन ने अपनी डॉक्टरेट थीसिस (मैलिन, 1966) के लिए बच्चों के लिए वेक्सलर इंटेलिजेंस स्केल (WISC वेक्सलर, 1949) को अनुकूलित (adapt) किया। इस अनुकूलन (adaptation) को भारत में बच्चों की बुद्धिमत्ता के आकलन की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर और योगदान माना गया हैं। बाद में इस अनुकूलन (adaptation) का नाम 'मैलिन इंटेलिजेंस स्केल फॉर इंडियन चिल्ड्रन' (मैलिन, 1969) रखा गया और इसे आम तौर पर MISIC के नाम से जाना जाने लगा। MISIC (Malin's Intelligence Scale for Indian Children) भारत में बच्चों की बुद्धिलब्धि (IQ) का आकलन करने के लिए उपयोग की जाने वाली एक मानकीकृत मनोवैज्ञानिक परीक्षण (Standardized Intelligence Test) है।

भारतीय रूपांतरण में किए गए प्रमुख परिवर्तन

(क) सांस्कृतिक संशोधन-WISC के अनेक प्रश्न अमेरिकी जीवन, संस्कृति, इतिहास एवं सामाजिक परिवेश पर आधारित थे। इन्हें भारतीय बच्चों की भाषा, शिक्षा और सामान्य ज्ञान के अनुरूप बदला गया।

(ख) भाषा में परिवर्तन-प्रारम्भ में परीक्षण अंग्रेज़ी-भाषी भारतीय बच्चों के लिए तैयार किया गया। बाद में इसे हिंदी और मराठी में भी अनुकूलित किया गया, ताकि अधिक बच्चों का निष्पक्ष मूल्यांकन किया जा सके।

(ग) Picture Arrangement उप-परीक्षण हटाया गया- WISC में कुल 12 उप-परीक्षण थे, जबकि MISIC में केवल 11 रखे गए। Picture Arrangement उप-परीक्षण को इसलिए हटाया गया क्योंकि उसमें सांस्कृतिक पक्षपात (Cultural Bias) पाया गया और वह भारतीय बच्चों के लिए उपयुक्त नहीं माना गया।

आयु सीमा- 6 वर्ष से 15 वर्ष 11 माह तक के बच्चों के लिए उपयुक्त।

परीक्षण की संरचना- MISIC में 11 उप-परीक्षण (Subtests) होते हैं जिन्हें दो भागों में बाँटा गया है।

(A) मौखिक परीक्षण (Verbal Scale)- यह भाषा-आधारित तर्क, समझ और तथ्यात्मक ज्ञान को मापता है। इसके मुख्य सब-परीक्षण में शामिल हैंजानकारी/Information,सामान्य समझ/General Comprehension,अंकगणित/Arithmetic,समानताएँ और सादृश्य/Analogies and Similarities,शब्दावली/Vocabulary,अंक विस्तार/Digit Span

(B) प्रदर्शन पैमाना /Performance Scale: अशाब्दिक बुद्धिमत्ता (non-verbal intelligence), स्थानिक तर्क (spatial reasoning) और दृश्य-गति समन्वय(Visual-motor coordination)का आकलन करता है। इसके मुख्य सब-परीक्षण में शामिल हैंचित्र पूरा करना/Picture Completion, ब्लॉक डिज़ाइन/Block Design, वस्तु संयोजन/ Object Assembly, कोडिंग/Coding,मेज़/ Mazes

मूल WISC के Picture Arrangement उप-परीक्षण को भारतीय संस्करण (MISIC) में शामिल नहीं किया गया क्योंकि उसे सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त नहीं माना गया।

अकंन/score: इन उप-परीक्षण से मिले मूल प्राप्तांक को परीक्षण कोशिएंट (TQ) में बदला जाता है। इससे एक विस्तृत बौद्धिक प्रोफ़ाइल के लिए तीन मुख्य अंक (score) मिलते हैं:

- मौखिक IQ /Verbal IQ (VIQ): भाषा-आधारित संज्ञानात्मक क्षमताओं को दर्शाता है।
- कार्यकुशलता IQ /Performance IQ (PIQ): व्यावहारिक, गैर-मौखिक स्थानिक और गत्यात्मक क्षमताओं को दर्शाता है।

- पूर्ण पैमाने पर IQ /Full Scale IQ (FIQ): बच्चे की कुल सामान्य बुद्धिमत्ता का एक समग्र माप प्रदान करता है।

प्रशासन (Administration)- यह व्यक्तिगत परीक्षण (Individual Test) है।केवल प्रशिक्षित मनोवैज्ञानिक (Clinical/Educational Psychologist) द्वारा लिया जाता है। पूरा परीक्षण सामान्यतः 2–3 घंटे में पूरा होता है।

NIEPID Indian Test of Intelligence (NITI)

NIEPID इंडियन टेस्ट ऑफ़ इंटेलिजेंस (NIEPID-ITI; 2023) एक व्यक्तिगत बौद्धिक परीक्षण है जिसे सिकंदराबाद में राष्ट्रीय बौद्धिक दिव्यांगजन सशक्तिकरण संस्थान (NIEPID) की एक टीम द्वारा विकसित किया गया है। इस पूरे परीक्षण में 5 कारक {facter) के तहत 112 पद (Item) शामिल हैं। यह परीक्षण 11 आयाम (dimensions) के साथ पांच कारक का आकलन करता है ज्ञान, प्रवाही तर्क (Fluid Reasoning), मात्रात्मक तर्क (quantitative reasoning), दृश्य-स्थानिक तर्क (visual spatial reasoning),और कार्यशील स्मृति (working memory) यह स्टैनफोर्ड-बिनेट के पांच फ़ैक्टर पर आधारित है। इस परीक्षण के लिए उम्र की सीमा 3 साल से 18 साल है। इस परीक्षण में 4 उप परीक्षण हैं जो गति (स्पीड) के आधार पर व्यवहार (Performance) मापते हैं और 7 उप परीक्षण हैं जो सटीकता (एक्यूरेसी) के आधार पर व्यवहार मापते हैं। व्यक्तिगत रूप से किए जाने पर इस परीक्षण को पूरा करने में लगभग 2-2.5 घंटे लगते हैं। FSIQ परीक्षण के सभी 11 आयाम के लिए मानक अंक (Scaled score) के योग से निकाला जाता है। पूर्ण पैमाने पर बुद्धिलब्धि (IQ) को संख्यात्मक रूप से बताया जाता है। यह परीक्षण बॉर्डरलाइन, हल्के और मध्यम बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्तियों पर किया जा सकता है। इसे गंभीर बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्तियों पर भी आज़माया जा सकता है ऐसी स्थिति में यह 40 तक का स्कोर दे सकता है यानी NIEPID रेंज के अनुसार गंभीर श्रेणी की ऊपरी सीमा। लेकिन इसे बहुत गंभीर (प्रोफ़ाउंड) ID ऊपरी अंगों की

गतिशीलता संबंधी विकलांगता, बोलने की समस्या सुनने की समस्या या दृष्टि दोष वाले लोगों पर नहीं किया जा सकता है। NIEPID-ITI में मानक (नॉर्म्स) 17 साल और 11 महीने तक के लिए हैं इसलिए जो लोग 17 साल के 12वें महीने में हैं, उन पर इसके लागू होने को लेकर संदेह है। यह एक मानक उपकरण है जिस पर काफी अनुसंधान हुई है यह अच्छी विश्वसनीयता (reliability) और वैधता (validity) देता है और इसमें बेहतरीन साइकोमेट्रिक गुण हैं। यह परीक्षण बौद्धिक अक्षमता (intellectual disability) वाले व्यक्तियों के प्रमाणन (Certification)के लिए बहुत ज़रूरी है

NIEPID इंडियन टेस्ट ऑफ़ इंटेलिजेंस पाँच मुख्य कारकों के ज़रिए संज्ञानात्मक क्षमताओं (Cognitive abilities) का आकलन करता है। हर कारक में कुछ उप-क्षेत्र हैं

1. ज्ञान (Gc) - संचित ज्ञान (Crystallized Intelligence)

यह घर, स्कूल या काम पर रोज़मर्रा के अनुभवों से हासिल किए गए ज्ञान को दर्शाता है। इसमें तीन उप-परीक्षण शामिल हैं

शब्दावली (Vocabulary) - इसमें तस्वीरों में मौजूद चीज़ों के नाम बताना और शब्दों को उनके गुणों और इस्तेमाल के आधार पर परिभाषित करना होता है। (स्कोर: 2, 1, या 0)

जानकारी (Information) - इसमें 11 सवालों के ज़रिए लोगों, जगहों और सामान्य अवधारणाओं के बारे में तथ्यात्मक ज्ञान का आकलन किया जाता है। (स्कोर: 1 या 0)

समझ (Comprehension) - इसमें 12 सवालों के ज़रिए सामाजिक स्थितियों और सामान्य सिद्धांतों की समझ का मूल्यांकन किया जाता है। (स्कोर: 2, 1, या 0)

2. प्रवाही तर्क (Gf) -प्रवाही बुद्धि/ Fluid Reasoning (Gf) - Fluid Intelligence

यह नए कामों में समस्या सुलझाने और पैटर्न पहचानने के लिए आगमनात्मक (inductive) और निगमनात्मक (deductive) तर्क का इस्तेमाल करने की क्षमता को मापता है। इसमें दो उप परीक्षण शामिल हैं:

मौखिक समानताएं/ Verbal Analogies - शब्दों के जोड़ों की समानता को पूरा करके तार्किक सोच की जाँच करता है। (स्कोर: 1 या 0)

वस्तुओं की श्रृंखला/Object Series- इसमें ज्यामितीय या वस्तुओं पर आधारित पैटर्न के क्रम को पूरा करना होता है। (स्कोर: 1 या 0)

3. मात्रात्मक तर्क (quantitative reasoning)

इसमें संख्या-संबंधी तर्क और समस्या सुलझाने की क्षमता को परखा जाता है। इसमें एक उप परीक्षण शामिल है:

अंकगणित (Arithmetic) - इसमें असल ज़िंदगी से जुड़े 13 संख्या-संबंधी शब्द-आधारित सवाल हल करने होते हैं। (स्कोरिंग: 1 या 0)

4. दृश्य-स्थानिक तर्क (visual spatial reasoning) (Gv) - दृश्य प्रसंस्करण(Visual Processing)

इसमें जगह या स्पेस से जुड़े संबंधों को समझने और उनमें बदलाव करने की क्षमता को परखा जाता है। इसमें दो उप परीक्षण शामिल हैं:

स्थानिक अवधारणाएँ (Spatial Concepts) - इसमें 8 सवालों के ज़रिए दिशा-संबंधी समझ (जैसे बाएँ-दाएँ का पता लगाना) को मापा जाता है। (स्कोरिंग: 1 या 0)

वर्ग निर्माण (Square Construction) - इसमें एक चौकोर फ्रेम के अंदर लकड़ी के तिकोने टुकड़ों का इस्तेमाल करके दिए गए डिज़ाइन को दोबारा बनाना होता है। (स्कोरिंग: 2, 1, या 0; समय सीमा: मुश्किल के हिसाब से 45-180 सेकंड)

5. कार्यशील स्मृति (working memory) (Ggsm) - अल्पकालिक स्मृति(Short-Term Memory)-इसमें जानकारी को कुछ समय के लिए याद रखने और उस पर काम करने की क्षमता को परखा जाता है। इसमें तीन उप परीक्षण शामिल हैं:

7.6.2 पश्चिमी संदर्भ में बौद्धिक आकलन उपकरण

1.डिफरेंशियल एबिलिटीज़ स्केल(DAS एलियट, 1990)/Differential Abilities Scale (DAS; Eliot, 1990)

DAS बुद्धि का एक मानक परीक्षण है जिसके संस्करण 2 1/2 से 18 साल की उम्र के बच्चों के लिए उपयुक्त हैं और जो उम्र के बराबर अंक और मानक अंक देते हैं। DAS उन बच्चों पर किया जा सकता है जो बोल नहीं पाते हैं आशा की जाती है कि ज़्यादातर बच्चे DAS पर बेस-लाइन स्कोर हासिल करेंगे अगर उस संस्करण पर नहीं, तो प्रीस्कूल संस्करण पर। इस में छह मुख्य उप परीक्षण शामिल हैं जो इनके लिए परिणाम सारांश (Summary Score) देते हैं: मौखिक प्रदर्शन, गैर-मौखिक और स्थानिक प्रदर्शन साथ ही एक कुल स्कोर जिसे सामान्य वैचारिक क्षमता (GCA) कहा जाता है। जबकि उप परीक्षण T स्कोर (M 50, SD 10) देते हैं मौखिक प्रदर्शन, गैर-मौखिक,स्थानिक और GCA स्कोर मानक अंक के रूप में बताए जाते हैं जिनका औसत 100 और मानक विचलन (Standard Deviation)15 होता है। हर उप परीक्षण के लिए क्षमता अंक (Ability Score), T-स्कोर और उम्र के बराबर अंक कंप्यूटर से निकाले जाते हैं और तीन संयुक्त और सामान्य अवधारणात्मक (Composite and General Conceptual) क्षमता अंक (Ability Score) के लिए मानक अंक दिए जाते हैं। मौखिक प्रदर्शन और गैर-मौखिक प्रदर्शन का इस्तेमाल आमतौर पर बच्चे की संज्ञानात्मक कार्यप्रणाली (cognitive functioning) की प्रोफ़ाइल को दिखाने के लिए किया जाता है।

2 .वेक्सलर प्रीस्कूल एंड प्राइमरी स्केल ऑफ़ इंटेलिजेंस-रिवाइज़्ड (WPPSI-R) (वेक्सलर; 1989)

छोटे बच्चों की बुद्धिलब्धि (Intelligence) और संज्ञानात्मक क्षमताओं (Cognitive Abilities) का आकलन करने के लिए विकसित एक मानकीकृत व्यक्तिगत (Individual) बुद्धि परीक्षण है। इसका विकास प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक David Wechsler ने किया था। WPPSI-R इसका संशोधित (Revised) संस्करण है, जो 1989 में प्रकाशित हुआ। WPPSI-R 3 से 7 साल के बच्चों की बौद्धिक क्षमता का एक मानकीकृत परीक्षण है। इसमें 12 उप परीक्षण होते हैं जो या तो मौखिक या प्रदर्शन मिश्रित अंक (Verbal Composite or Performance Composite) पर आधारित होते हैं। यह फुल IQ का अनुमान भी देता है।

उद्देश्य- WPPSI-R का उपयोग निम्नलिखित उद्देश्यों के लिए किया जाता है:

बच्चों की बुद्धिलब्धि (IQ) का मापन।

संज्ञानात्मक शक्तियों और कमजोरियों की पहचान।

सीखने में कठिनाई (Learning Difficulties) का प्रारंभिक आकलन।

बौद्धिक दिव्यांगता (Intellectual Disability) तथा प्रतिभाशाली (Gifted) बच्चों की पहचान।

शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक योजना बनाने में सहायता।

परीक्षण की संरचना

WPPSI-R में दो मुख्य भाग होते हैं

1-Verbal Scale (मौखिक मापनी)

2-Performance Scale (प्रदर्शन मापनी)

प्रमुख स्कोर

WPPSI-R से तीन मुख्य स्कोर प्राप्त होते हैं:

मौखिक बुद्धिलब्धि(Verbal IQ (VIQ)

प्रदर्शन बुद्धिलब्धि(Performance IQ (PIQ)

समग्र बुद्धिलब्धि(Full Scale IQ (FSIQ)

इनका औसत (Mean) 100 तथा मानक विचलन (Standard Deviation) 15 होता है।

उपयोगी।

उपयोग

- प्री-स्कूल एवं प्राथमिक विद्यालयों में
- बाल मनोविज्ञान क्लीनिकों में
- विशेष शिक्षा (Special Education)
- विकासात्मक एवं बौद्धिक मूल्यांकन

सीमाएँ

- यह परीक्षण पश्चिमी देशों के मानकों पर आधारित है।
- विभिन्न भाषाओं एवं संस्कृतियों में उपयोग करते समय स्थानीय मानकों और सांस्कृतिक संदर्भों का ध्यान रखना आवश्यक है।

- परीक्षण का संचालन एवं व्याख्या केवल प्रशिक्षित मनोवैज्ञानिक द्वारा की जानी चाहिए।

3 . वेक्सलर इंटेलिजेंस स्केल्स फॉर चिल्ड्रन-IV (WISC-IV) (वेक्सलर; 2003)

WISC-IV 6-16 साल के बच्चों की बुद्धिमत्ता का एक मानकीकृत परीक्षण है। यह मौखिक और गैर-मौखिक बुद्धिमत्ता प्रदर्शन (Verbal and Non-verbal Intelligence Performance) दोनों की जांच करता है और हर एक के लिए उम्र के बराबर का स्तर और मानक अंक देता है। WISC-IV आम तौर पर अच्छी साइकोमेट्रिक खूबियां दिखाता है और WASI और DAS दोनों के साथ स्वीकार्य अभिसारी विश्वसनीयता (Convergent reliability)दिखाता है यह परीक्षण 6 से 16 वर्ष 11 माह के बच्चों की बुद्धिलब्धि (Intelligence) एवं संज्ञानात्मक क्षमताओं (Cognitive Abilities) का मूल्यांकन करने के लिए विकसित एक मानकीकृत व्यक्तिगत (Individual) बुद्धि परीक्षण है। इसका मूल विकास David Wechsler द्वारा किया गया था जबकि WISC-IV का संशोधित संस्करण 2003 में प्रकाशित हुआ।

उद्देश्य- WISC-IV का उपयोग निम्नलिखित उद्देश्यों के लिए किया जाता है:

- बच्चों की IQ (बुद्धिलब्धि) का मापन।
- संज्ञानात्मक शक्तियों एवं कमजोरियों की पहचान।
- बौद्धिक दिव्यांगता (Intellectual Disability) का आकलन।
- सीखने की कठिनाइयों (Learning Disabilities) का मूल्यांकन।
- प्रतिभाशाली (Gifted) बच्चों की पहचान।
- शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक परामर्श में सहायता।

- WISC-IV के चार प्रमुख सूचकांक (Index Scores)

WISC-IV में बुद्धि का मूल्यांकन चार प्रमुख क्षेत्रों में किया जाता है:

1. मौखिक समझ सूचकांक/Verbal Comprehension Index (VCI) –

2. अवधारणात्मक/दृश्य तर्क सूचकांक/Perceptual Reasoning Index (PRI) –

3.–कार्यशील स्मृति सूचकांक/ Working Memory Index (WMI)-

4. प्रसंस्करण गति सूचकांक/Processing Speed Index (PSI)-

मुख्य स्कोर WISC-IV से निम्नलिखित स्कोर प्राप्त होते हैं:

- Full Scale IQ (FSIQ)
- Verbal Comprehension Index (VCI)
- Perceptual Reasoning Index (PRI)
- Working Memory Index (WMI)
- Processing Speed Index (PSI)

उपयोग

- विद्यालयों में मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन
- विशेष शिक्षा (Special Education)
- बाल मनोविज्ञान चिकित्सालय
- सीखने की कठिनाइयों एवं बौद्धिक दिव्यांगता का आकलन

- प्रतिभाशाली बच्चों की पहचान

4 . वेक्सलर एब्रिविएटेड स्केल्स ऑफ़ इंटेलिजेंस (WASI) (वेक्सलर; 2002)

यह बुद्धिलब्धि (IQ) स्क्रीनर बच्चे की मौखिक और गैर-मौखिक क्षमताओं का अंदाज़ा बहुत कम समय में देता है। WASI में चार उप परीक्षण (शब्दावली, समानताएं, ब्लॉक डिज़ाइन और मैट्रिसेस) होते हैं इसे पूरा करने में लगभग 30 मिनट लगते हैं और यह 6 साल से ज़्यादा उम्र के बच्चों और वयस्कों के लिए उपयुक्त है।ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर वाले बच्चों के सैंपल में WASI के स्कोर पूरी बैटरी (यानी, WISC-IV) के स्कोर के साथ विश्वसनीय पाए गए हैं। WASI आबादी-आधारित नमूने (Sample) में WISC-IV और DAS दोनों के साथ स्वीकार्य अभिसारी विश्वसनीयता (Convergent reliability) भी दिखाता है यह एक संक्षिप्त (Brief) एवं मानकीकृत बुद्धिलब्धि (IQ) परीक्षण है जिसका उपयोग किसी व्यक्ति की सामान्य बौद्धिक क्षमता (General Intelligence) का कम समय में आकलन करने के लिए किया जाता है। इसका विकास David Wechsler के वेक्सलर बुद्धि परीक्षणों की परंपरा पर आधारित है। WASI का पहला संस्करण 2002 में प्रकाशित हुआ। आयु सीमा: 6 वर्ष से 89 वर्ष तक यह एक व्यक्तिगत (Individual) बुद्धिलब्धि परीक्षण

उद्देश्य

- WASI का उपयोग निम्नलिखित उद्देश्यों के लिए किया जाता है:
- सामान्य बुद्धिलब्धि (IQ) का त्वरित आकलन।
- विस्तृत IQ परीक्षण से पहले प्रारंभिक स्क्रीनिंग।
- अनुसंधान (Research) में प्रतिभागियों की बौद्धिक क्षमता का आकलन।
- क्लिनिकल एवं शैक्षिक मूल्यांकन में सहायता।

परीक्षण की संरचना- WASI में कुल 4 उप-परीक्षण (Subtests) होते हैं:

1. शब्दावली(Vocabulary)

2. समानताएँ(Similarities)

3. ब्लॉक डिज़ाइन/ Block Design

4. मैट्रिक्स रीजनिंग/Matrix Reasoning

मुख्य स्कोर- WASI निम्नलिखित स्कोर प्रदान करता है:

- मौखिक बुद्धिलब्धि-Verbal IQ (VIQ)
- प्रदर्शन बुद्धिलब्धि- Performance IQ (PIQ)
- समग्र बुद्धिलब्धि- Full Scale IQ (FSIQ)

5 . स्टैनफोर्ड-बिनेट—पांचवां संस्करण (SB-5)/ Stanford–Binet Intelligence Scales – Fifth Edition (SB-5(थॉर्नडाइक, हेगन और सैटलर, 1986/2005)

एक मानकीकृत बुद्धिलब्धि (IQ) परीक्षण है, जिसका उपयोग 2 वर्ष से लेकर 85 वर्ष या उससे अधिक आयु के व्यक्तियों की बौद्धिक एवं संज्ञानात्मक क्षमताओं के आकलन के लिए किया जाता है।

उद्देश्य

- बुद्धिलब्धि (IQ) का आकलन करना।
- बौद्धिक दिव्यांगता (Intellectual Disability) की पहचान करना।
- प्रतिभाशाली (Gifted) बच्चों की पहचान करना।

- सीखने की कठिनाइयों एवं संज्ञानात्मक क्षमताओं का मूल्यांकन करना।

SB-5 के पाँच प्रमुख संज्ञानात्मक क्षेत्र- SB-5 पाँच प्रमुख संज्ञानात्मक कारकों का मूल्यांकन करता है:

- तरल तर्क क्षमता (Fluid Reasoning) – नई समस्याओं का समाधान करने की क्षमता।
- ज्ञान (Knowledge)– अर्जित ज्ञान एवं सामान्य जानकारी।
- मात्रात्मक तर्क (Quantitative Reasoning) – गणितीय एवं संख्यात्मक सोच।
- दृश्य–स्थानिक प्रसंस्करण (Visual–Spatial Processing)– आकृतियों एवं स्थानिक संबंधों को समझने की क्षमता।
- कार्यशील स्मृति (Working Memory)– जानकारी को अल्प समय तक याद रखकर उसका उपयोग करने की क्षमता।

SB-5 से निम्नलिखित प्रमुख स्कोर प्राप्त होते हैं:

- Full Scale IQ (FSIQ)
- Verbal IQ (VIQ)
- Nonverbal IQ (NVIQ)

पाँचों संज्ञानात्मक क्षेत्रों के पृथक स्कोर- इन स्कोरों का औसत (Mean) 100 तथा मानक विचलन (SD) 15 होता है।

उपयोग

- व्यक्तिगत (Individual) रूप से प्रशासित परीक्षण।
- भाषा पर कम निर्भर अमौखिक (Nonverbal) भाग भी उपलब्ध।

- छोटे बच्चों से लेकर वयस्कों तक उपयोगी।
- शिक्षा, नैदानिक मनोविज्ञान तथा विशेष शिक्षा में व्यापक उपयोग।

सीमाएँ

- परीक्षण का संचालन एवं व्याख्या केवल प्रशिक्षित मनोवैज्ञानिक द्वारा की जानी चाहिए।
- यह पश्चिमी देशों के मानकों पर आधारित है अन्य देशों में उपयोग करते समय सांस्कृतिक एवं भाषाई अंतर को ध्यान में रखना आवश्यक है।

कॉफ़मैन ब्रीफ़ इंटेलिजेंस टेस्ट (KBIT-2)

कॉफ़मैन ब्रीफ़ इंटेलिजेंस टेस्ट (KBIT-2) एक संक्षिप्त (Brief) एवं मानकीकृत (Standardized) बुद्धिलब्धि (Intelligence) परीक्षण है। यह 20 मिनट का एक तेज़ परीक्षण है इसका उपयोग किसी व्यक्ति की मौखिक (Verbal) और अमौखिक (Nonverbal) बुद्धि का शीघ्र आकलन करने के लिए किया जाता है। इस परीक्षण का निर्माण प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक Alan S. Kaufman and Nadeen L. Kaufman द्वारा किया गया। ये 4 वर्ष से 90 वर्ष तक के बच्चों, किशोरों और वयस्कों के लिए। प्रकाशन वर्ष (Publication Year): 2004

रेवेन्स प्रोग्रेसिव मैट्रिसेस/ Raven's Progressive Matrices - RPM

रेवेन्स प्रोग्रेसिव मैट्रिसेस (Raven's Progressive Matrices - RPM) मनोविज्ञान में सबसे प्रसिद्ध और व्यापक रूप से इस्तेमाल किया जाने वाला एक गैर-मौखिक बुद्धि परीक्षण (Non-verbal Intelligence Test) है। इसका विकास 1936 में ब्रिटिश मनोवैज्ञानिक जॉन सी. रेवेन (John C. Raven) द्वारा किया गया था। यह परीक्षण किसी व्यक्ति की अमूर्त सोच (Abstract Reasoning), तार्किक क्षमता और पैटर्न पहचानने की योग्यता को मापने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

मुख्य विशेषताएँ

- संस्कृति-मुक्त परीक्षण (Culture-Fair Test): इसमें शब्दों, भाषा या गणितीय आंकड़ों का उपयोग नहीं होता। इसलिए इसे किसी भी भाषा, पृष्ठभूमि या संस्कृति के व्यक्ति पर आसानी से लागू किया जा सकता है।
- दृश्य पैटर्न (Visual Patterns): परीक्षण में एक ज्यामितीय आरेख या पैटर्न दिया गया होता है, जिसमें से एक टुकड़ा गायब (Missing) होता है। परीक्षार्थी को 6 से 8 विकल्पों में से सही उत्तर चुनकर उस पैटर्न को पूरा करना होता है।
- प्रगतिशील स्तर (Progressive Difficulty): इसे "प्रोग्रेसिव" इसलिए कहा जाता है क्योंकि प्रश्नों का कठिनाई स्तर धीरे-धीरे बढ़ता जाता है। शुरुआत के प्रश्न आसान होते हैं और अंत के काफी जटिल।'g' कारक का मापन: चार्ल्स स्पीयरमैन के द्वि-कारक सिद्धांत (Spearman's Two-Factor Theory) के अनुसार, यह टेस्ट व्यक्ति की सामान्य बुद्धि (General Intelligence या 'g' factor) को मापता है।

RPM के मुख्य प्रकाररेवेन ने विभिन्न आयु वर्गों और क्षमताओं के लिए इसके मुख्य रूप से तीन संस्करण तैयार किए हैं:

- मानक प्रगतिशील मैट्रिसेस (Standard Progressive Matrices - SPM): यह मूल और सबसे आम संस्करण है।इसमें कुल 60 प्रश्न होते हैं, जिन्हें 5 सेटों (A, B, C, D, E) में बांटा जाता है। यह 6 वर्ष के बच्चों से लेकर वयस्कों तक के लिए उपयुक्त है।
- रंगीन प्रगतिशील मैट्रिसेस (Coloured Progressive Matrices - CPM):यह मुख्य रूप से 5 से 11 वर्ष के छोटे बच्चों, बुजुर्गों और बौद्धिक या मानसिक रूप से

असमर्थ व्यक्तियों के लिए बनाया गया है।इसमें प्रश्नों को आकर्षक बनाने के लिए रंगों का उपयोग किया जाता है। इसमें 36 प्रश्न होते हैं।

- उन्नत प्रगतिशील मैट्रिसेस (Advanced Progressive Matrices - APM):यह औसत से अधिक बुद्धि (Above Average Intelligence) वाले व्यक्तियों, किशोरों और वयस्कों के लिए बनाया गया है।इसका उपयोग अक्सर उच्च पदों पर भर्ती, प्रतियोगी परीक्षाओं या प्रतिभा पहचान (Giftedness) के लिए किया जाता है।

लेटर इंटरनेशनल परफ़ॉर्मेंस स्केल–थर्ड एडिशन (Leiter-3)/ Leiter International Performance Scale–Third Edition (Leiter-3)

लेटर इंटरनेशनल परफ़ॉर्मेंस स्केल–थर्ड एडिशन (Leiter-3) एक पूरी तरह से गैर-मौखिक बुद्धि और संज्ञानात्मक क्षमता परीक्षण (Non-verbal Intelligence and Cognitive Test) है। इसे विशेष रूप से 3 से 75+ वर्ष की आयु के व्यक्तियों के लिए डिज़ाइन किया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य उन व्यक्तियों की बौद्धिक क्षमता का निष्पक्ष आकलन करना है, जो भाषा, सुनने, बोलने या सांस्कृतिक बाधाओं के कारण पारंपरिक IQ टेस्ट (जैसे Wechsler या Stanford-Binet) नहीं दे पाते।

Leiter-3 की मुख्य विशेषताएँ

- पूर्णतः गैर-मौखिक (100% Non-verbal): इसमें न तो परीक्षण देने वाले को बोलना पड़ता है और न ही परीक्षण लेने वाले को। सभी निर्देश हाथ के इशारों (Gestures) और विजुअल डेमोंस्ट्रेशन के माध्यम से दिए जाते हैं।

- संस्कृति और भाषा निरपेक्ष (Culture & Language Fair): चूंकि इसमें किसी भी भाषा या पढ़ने-लिखने के ज्ञान की आवश्यकता नहीं होती, यह दुनिया की किसी भी संस्कृति या पृष्ठभूमि के व्यक्ति के लिए उपयुक्त है।
- कोई समय सीमा नहीं (Un-timed Power Test): संज्ञानात्मक भाग में समय की कोई पाबंदी नहीं होती, जिससे परीक्षार्थी बिना किसी तनाव के अपनी क्षमता के अनुसार उत्तर दे सकता है।

परीक्षण की संरचना (Structure & Domains)Leiter-3 को मुख्य रूप से दो प्रमुख उप-बैटरी (Sub-batteries) में विभाजित किया गया है:

1. संज्ञानात्मक पैमाना(Cognitive Scale)

यह व्यक्ति के वैश्विक IQ (Global IQ) और अमूर्त तर्क क्षमता का आकलन करता है। इसमें 5 मुख्य उप -परीक्षण शामिल हैं:

- दृश्यीकरण (Visualization):
- जटिल पृष्ठभूमि में से विशिष्ट आकृतियों को पहचानना।(Figure-Ground)
- अधूरे टुकड़ों को जोड़कर पूरी आकृति की कल्पना करना।((Form Completion)
- वस्तुओं और आकृतियों के बीच संबंधों व श्रेणियों को समझना। (Classification & Analogies)
- आकृतियों या पैटर्न के क्रम और अनुक्रम को पहचानना। (Sequential Order)

2. ध्यान और स्मृति स्केल (Attention & Memory Scale)यह कार्यकारी कार्यों (Executive Functions) और न्यूरोसाइकोलॉजिकल क्षमताओं को मापता है:

- ध्यान केंद्रित करने और अवांछित जानकारी को रोकने की क्षमता।(Non-verbal Stroop)
- गैर-मौखिक रूप से चीजों को याद रखने और जोड़ने की क्षमता।(Associative Memory)
- विजुअल पैटर्न को सीधे और उल्टे क्रम में याद रखना।(Forward & Reverse Memory)
- लंबे समय तक किसी दृश्य कार्य पर ध्यान बनाए रखना।(Attention Sustained)

7.7 सामाजिक, व्यवहारिक, भाषा एवं वाणी आकलन उपकरण तथा अ न्य भारतीय आकलन उपकरण/ Social, Behavioural, Language and Assessment Tools and other Indian Tools:

बौद्धिक एवं विकासात्मक दिव्यांगता (Intellectual and Developmental Disabilities–IDD) वाले बच्चों के विकास का आकलन केवल उनकी बुद्धिलब्धि (IQ) के आधार पर नहीं किया जा सकता। इन बच्चों में अक्सर सामाजिक कौशल, व्यवहार, भाषा, वाणी तथा संचार से संबंधित कठिनाइयाँ भी होती हैं, जो उनके दैनिक जीवन, शिक्षा, आत्मनिर्भरता और सामाजिक सहभागिता को प्रभावित करती हैं। इसलिए इन सभी क्षेत्रों का व्यापक एवं व्यवस्थित मूल्यांकन आवश्यक है। भारत में बच्चों के सामाजिक व्यवहार, भाषा, वाणी, संचार तथा विकासात्मक विकारों के मूल्यांकन के लिए कई मानकीकृत उपकरण विकसित किए गए हैं। प्रमुख भारतीय उपकरण निम्नलिखित हैं:

7.7.1 सामाजिक, व्यवहारिक आकलन उपकरण

सामाजिक आकलन (Social Assessment) से यह जाना जाता है कि बच्चा परिवार, विद्यालय और समुदाय में अन्य लोगों के साथ किस प्रकार संपर्क स्थापित करता है, सामाजिक नियमों का पालन करता है तथा दैनिक जीवन में कितना स्वतंत्र है।

सामाजिक व्यवहार आकलन (Social Behaviour Assessment)- इस आकलन का उद्देश्य यह जानना है कि बच्चा समाज में दूसरों के साथ किस प्रकार व्यवहार करता है।

आकलन के प्रमुख क्षेत्र

नेत्र संपर्क (Eye Contact)

सामाजिक सहभागिता (Soc ial Interaction)

साथियों के साथ खेलना

बारी (Turn Taking) का पालन

सहयोग एवं साझा करना

सामाजिक नियमों का पालन

आत्मनिर्भरता एवं सामाजिक जिम्मेदारी

प्रमुख उपकरण

Vineland Social Maturity Scale (VSMS) – भारतीय अनुकूलित संस्करण

परिचय (Introduction): Vineland Social Maturity Scale (VSMS) सामाजिक परिपक्वता (Social Maturity) एवं अनुकूलन व्यवहार (Adaptive Behaviour) का आकलन करने वाला एक मानकीकृत मनोवैज्ञानिक परीक्षण है। इसे मूल रूप से एडगर ए. डॉल (Edgar A. Doll) ने 1935 में विकसित किया था। भारत में इसका पहला सांस्कृतिक अनुकूलन रेव. फादर डॉ. ए. जे. मालिन (A. J. Malin) ने किया तथा बाद में

डॉ. जे. भरत राज (J. Bharath Raj) ने इसका विस्तारित एवं संशोधित भारतीय संस्करण प्रकाशित किया।

भारतीय अनुकूलित संस्करण (Indian Adaptation)- भारतीय बच्चों की सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियाँ पश्चिमी देशों से भिन्न हैं। इसलिए मूल VSMS के कई व्यवहार भारतीय परिवेश के अनुरूप नहीं थे। इसी कारण भारतीय परिस्थितियों, भाषा, परिवार व्यवस्था तथा दैनिक जीवन के अनुसार इसका अनुकूलन किया गया।

भारतीय रूपांतरण की विशेषताएँ:

- भारतीय संस्कृति के अनुरूप संशोधित।
- भारतीय बच्चों एवं युवाओं के लिए मानकीकृत।
- सामाजिक आयु (Social Age) एवं सामाजिक भागफल (Social Quotient) का विश्वसनीय आकलन।
- भारत में अस्पतालों, विशेष विद्यालयों, मनोवैज्ञानिक क्लीनिकों एवं पुनर्वास केन्द्रों में व्यापक उपयोग।

आयु सीमा (Age Range)- 0 से 15 वर्ष तक के बच्चों के लिए उपयुक्त। कुछ परिस्थितियों में कम बौद्धिक स्तर वाले बड़े व्यक्तियों के सामाजिक व्यवहार के आकलन में भी उपयोग किया जा सकता है।

परीक्षण का प्रकार

- व्यक्तिगत (Individual Test)
- साक्षात्कार एवं अवलोकन आधारित (Interview and Observation Based)
- स्क्रीनिंग एवं नैदानिक दोनों उद्देश्यों के लिए उपयोगी।

क्षेत्र (Eight Social Areas)-VSMS में सामाजिक परिपक्वता का मूल्यांकन निम्न 8 क्षेत्रों में किया जाता है—

क्रम	क्षेत्र
1	सामान्य स्व-देखभाल/ Self Help General (SHG)
2	भोजन संबंधी स्व-देखभाल/ Self Help Eating (SHE)
3	कपड़े पहनने की क्षमता/ Self Help Dressing (SHD)
4	आत्म-निर्देशन एवं निर्णय क्षमता/ Self Direction (SD)
5	कार्य एवं जिम्मेदारी/ Occupation (OCC)
6	संचार कौशल/ Communication (COM)
7	चलना-फिरना एवं गतिशीलता/ Locomotion (LOM)
8	सामाजिक सहभागिता एवं व्यवहार/ Socialization (SOC)

इन सभी क्षेत्रों को मिलाकर बच्चे की सामाजिक परिपक्वता का समग्र स्तर निर्धारित किया जाता है।

परीक्षण की संरचना- कुल 89 आइटम। प्रत्येक आयु स्तर के अनुसार व्यवहारिक कार्य दिए गए हैं।

प्रत्येक कार्य के लिए "पास" या "फेल" अंकित किया जाता है।

आवश्यकता होने पर आधा (½) अंक भी दिया जा सकता है

प्रशासन (Administration)

- प्रशिक्षित मनोवैज्ञानिक या विशेष शिक्षक द्वारा किया जाता है।
- बच्चे का प्रत्यक्ष अवलोकन किया जाता है।
- माता-पिता/अभिभावक से साक्षात्कार भी लिया जाता है।
- बच्चे के दैनिक जीवन के व्यवहार के आधार पर उत्तर दर्ज किए जाते हैं।

अंकन (Scoring)

पास किए गए स्कोर (पूरे और आधे) को जोड़ें। VSMS मैनुअल के अपेंडिक्स-1 से सोशल एज (SA) पता करें। SA को CA से भाग देकर और 100 से गुणा करके सामाजिक लब्धि (SQ) निकालें। VSMS के नियमों के आधार पर आठ सोशल क्षेत्र में से हर एक के लिए SA और SQ के हिसाब से मैच्योरिटी लेवल का आकलन करें और सोशल मैच्योरिटी कॉन्स्टेलेशन रिकॉर्ड के कॉलम में दर्ज करें

सबसे पहले बच्चे की सामाजिक आयु (SA) निकाली जाती है।

फिर निम्न सूत्र से सामाजिक लब्धि (SQ) निकाला जाता है

SQ = (Social Age ÷ Chronological Age) × 100

उदाहरण:

वास्तविक आयु (CA) = 10 वर्ष

सामाजिक आयु (SA) = 8 वर्ष

SQ = (8 ÷ 10) × 100 = 80

SQ की व्याख्या (Interpretation)

SQ	व्याख्या
110 एवं अधिक	उच्च सामाजिक परिपक्वता
90–109	सामान्य सामाजिक परिपक्वता
70–89	औसत से कम
50–69	मध्यम सामाजिक विलंब
50 से कम	गंभीर सामाजिक विलंब

SQ की व्याख्या हमेशा अन्य नैदानिक जानकारी एवं परीक्षणों (जैसे MISIC, DST आदि) के साथ की जाती है।

बौद्धिक रूप से अक्षम भारतीय बच्चों के लिए व्यवहार संबंधी आकलन पैमाना/ BASIC-MR Behavioural Assessment Scales for Indian Children with Mental Retardation:

BASIC-MR एक मानकीकृत आकलन उपकरण है जिसे भारत में रीता पेशावरिया और एस. वेंकटेशन ने 'नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर द मेंटली हैंडीकैप्ड' (वर्तमान में 'नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर द एम्पावरमेंट ऑफ़ पर्सन्स विद इंटेलेक्चुअल डिसेबिलिटीज़' या NIEPID कहा जाता है) में विकसित किया था। पहली बार 1992 में प्रकाशित, इसे बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों में अनुकूलन कौशल (adaptive skills) और व्यवहार संबंधी कठिनाइयों का आकलन करने के लिए डिज़ाइन किया गया था, ताकि व्यक्तिगत शैक्षिक और पुनर्वास योजना में मदद मिल सके।

भाग A: कौशल व्यवहार

BASIC-MR का भाग A बच्चे के अनुकूलन या कार्यात्मक कौशल को मापता है। IQ पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय यह इस बात का आकलन करता है कि बच्चा रोज़मर्रा की ज़िंदगी में असल में क्या कर सकता है। यह आकलन मानदंड-आधारित है जिसका अर्थ है कि प्रदर्शन की तुलना अन्य बच्चों से करने के बजाय अपेक्षित कार्यात्मक कौशल से की जाती है। इस में 280 पद (Item) हैं जिन्हें सात क्षेत्रों में बांटा गया है:

- गत्यात्मक कौशल (Motor Skills)
- दैनिक जीवन की गतिविधियाँ (Activities of Daily Living – ADL)
- भाषा (Language)
- पढ़ना-लिखना (Reading–Writing)
- संख्या एवं समय (Number–Time)
- घरेलू एवं सामाजिक कौशल (Domestic–Social)
- पूर्व-व्यावसायिक एवं धन प्रबंधन (Prevocational–Money)

अंकन प्रणाली (Part A)

प्रत्येक आइटम को 0–5 के पैमाने पर अंकित किया जाता है

5 स्वतंत्र रूप से करता है (Independent)

4 संकेत (Clueing) से करता है

3 मौखिक संकेत (Verbal Prompt) से करता है

2 शारीरिक सहायता (Physical Prompt) से करता है

1 पूर्णतः आश्रित (Totally Dependent)

0 लागू नहीं (Not Applicable)

भाग B: समस्याग्रस्त (अवांछित) व्यवहार

BASIC-MR का भाग B ऐसे कुअनुकूलन (maladaptive) या अवांछित व्यवहारों का आकलन करता है जो सीखने, सामाजिक भागीदारी या दैनिक कामकाज में बाधा डाल सकते हैं। क्षमताओं को मापने के बजाय, यह चुनौतीपूर्ण व्यवहारों की आवृत्ति या गंभीरता पर ध्यान केंद्रित करता है जिनके लिए व्यवहार संबंधी हस्तक्षेप की आवश्यकता हो सकती है।

यह आकलन समस्याग्रस्त व्यवहार की 10 श्रेणियों को कवर करता है जिनमें शामिल हैं

हिंसक और विनाशकारी व्यवहार/ Violent and destructive behavior

- गुस्से में नखरे दिखाना / Temper tantrums
- दूसरों के साथ दुर्व्यवहार/ Misbehavior with others
- खुद को नुकसान पहुँचाने वाला व्यवहार/ Self-injurious behavior
- बार-बार दोहराए जाने वाले या अजीब व्यवहार /Repetitive or odd behaviors
- अत्यधिक सक्रियता/Hyperactivity
- विद्रोही व्यवहार/ Rebellious behavior

- समाज-विरोधी व्यवहार /Antisocial behavior
- डर या भय/ Fears
- मानसिक या भावनात्मक परेशानियाँ/ Psychological or emotional disturbances

अंकन (Scoring)

हर व्यवहार को 3-पॉइंट स्केल पर आंका जाता है:

0 – कभी नहीं

1 – कभी-कभी

2 – अक्सर

समस्यापूर्ण व्यवहार जाँच-सूची/Problem Behaviour Checklist (PBC):

यह एक भारतीय व्यवहार आकलन उपकरण है जिसे डॉ. रीता पेशावरिया और सहयोगियों ने बौद्धिक दिव्यांगता (Intellectual Disability) वाले बच्चों में समस्या व्यवहारों की पहचान के लिए विकसित किया। इसका उपयोग घर और विद्यालय दोनों परिवेशों में किया जाता है। यह बाद में विकसित BASIC-MR Part B के विकास का आधार भी बना।

आकलन के प्रमुख क्षेत्र (Domains)

इस में निम्न प्रकार के व्यवहारों का आकलन किया जाता है:

- दूसरों के प्रति शारीरिक आक्रामकता (Physical violence towards others)

- संपत्ति को नुकसान पहुँचाना (Damage to property)
- गुस्सा या टेम्पर टैन्त्रम (Temper tantrums)
- अत्यधिक सक्रियता/बेचैनी (Hyperactivity/Restlessness)
- ध्यान की कमी (Inattention/Distractibility)
- आज्ञा न मानना/जिद्दी व्यवहार (Disobedience/Obstinacy)
- घर या स्कूल से भटक जाना (Wandering/Truancy)
- गाली-गलौज या आक्रामक भाषा (Abusive or angry language)
- दूसरों पर हावी होना (Bossing/Manipulating others)
- समूह में अनुचित व्यवहार (Misbehaviour in group settings)
- झूठ बोलना या धोखा देना (Lying/Cheating)
- रूढ़िबद्ध व्यवहार (Stereotyped behaviours)
- स्वयं को चोट पहुँचाना (Self-injurious behaviours)
- अनुचित यौन व्यवहार (Sexual behaviour problems)
- असामान्य/विचित्र व्यवहार (Odd behaviours)
- भय एवं फोबिया (Fears)
- अन्य समस्या व्यवहार (Others)

अंकन (Scoring)

प्रत्येक व्यवहार को उसकी आवृत्ति के आधार पर अंकित किया जाता है:

0 कोई समस्या नहीं (No Problem/Never)

1 कभी-कभी (Occasionally)

2 अक्सर (Frequently)

उच्च कुल स्कोर का अर्थ है कि बच्चे में समस्या व्यवहार अधिक हैं।

अनुकूलीत व्यवहार पैमाना (भारतीय संशोधन) – गुन्थे एवं उपाध्याय (Adaptive Behaviour Scale – Indian Revision by Gunthey & Upadhyaya) –

यह उपकरण मूल रूप से AAMD (American Association on Mental Deficiency) की Adaptive Behaviour Scale (ABS) पर आधारित है, जिसे भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश और आवश्यकताओं के अनुसार डॉ. एस. के. गुंठे (Dr. S. K. Gunthey) और डॉ. एस. उपाध्याय (Dr. S. Upadhyaya) द्वारा भारतीय संदर्भों में अनुकूलित (Adapted) और मानकीकृत (Standardized) किया गया। यह 1982 में विकसित एक व्यवहार आकलन उपकरण है। इसे विशेष रूप से बौद्धिक दिव्यांगता (Intellectual Disability) वाले तथा सामान्य बच्चों के अनुकूलन व्यवहार (Adaptive Behaviour) की तुलना और आकलन के लिए तैयार किया गया था। यह भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप विकसित शुरुआती अनुकूलन व्यवहार मापों में से एक है।

अनुकूलन व्यवहार (Adaptive Behaviour)

अनुकूलन व्यवहार से तात्पर्य उन दैनिक जीवन कौशलों से है जो व्यक्ति को अपने परिवार, विद्यालय और समाज में स्वतंत्र एवं उत्तरदायी ढंग से कार्य करने में सक्षम

बनाते हैं। इसमें संचार, स्वयं-देखभाल, सामाजिक सहभागिता, घरेलू कार्य, सुरक्षा तथा सामुदायिक जीवन से जुड़ी क्षमताएँ शामिल होती हैं।

प्रमुख क्षेत्र (Domains)

यह मापदंड बच्चे के व्यवहार को दो मुख्य भागों में बांटकर आंकता है:

1. कौशलात्मक और दैनिक जीवन व्यवहार (Personal Independence Skills)

स्वयं की देखभाल (Self-Help Skills): बिना किसी मदद के खाना खाना, कपड़े पहनना, नहाना और शौचालय का प्रयोग करना।

संचार कौशल (Communication Skills): अपनी जरूरतों को व्यक्त करना (बोलकर या इशारों से) और दूसरों की बातों को समझना।

समाजिकीकरण (Socialization): दोस्तों, परिवार के सदस्यों और अजनबियों के साथ घुलना-मिलना।

गामक विकास (Motor Skills): सूक्ष्म और स्थूल गामक क्षमताएं (जैसे वस्तुओं को पकड़ना, चलना, दौड़ना)।

व्यावहारिक अकादमिक क्षमता (Practical Academic Skills): पैसे, समय और दिशाओं की बुनियादी समझ।

2. समस्यात्मक और असंगत व्यवहार (Maladaptive Behaviours)

बच्चे में मौजूद अनुचित या बाधा उत्पन्न करने वाले व्यवहार (जैसे अत्यधिक गुस्सा, चिड़चिड़ापन, खुद को या दूसरों को चोट पहुंचाना, जिद्दीपन या अतिसक्रियता)।

प्रशासन (Administration)

जानकारी मुख्यतः माता-पिता, शिक्षक या देखभालकर्ता से साक्षात्कार तथा बच्चे के प्रत्यक्ष अवलोकन के आधार पर एकत्र की जाती है। परीक्षण प्रशिक्षित मनोवैज्ञानिक, विशेष शिक्षक या पुनर्वास पेशेवर द्वारा किया जाता है।

अंकन विधि (Scoring Method):प्रत्येक कौशल के लिए निम्नलिखित- 3 बिंदु रेटिंग स्केल का उपयोग किया जाता है:

भाग 'अ'

2 अंक: यदि बच्चा स्वतंत्र रूप से और नियमित रूप से उस कार्य को करता है।

1 अंक: यदि बच्चा कुछ सहायता के साथ या कभी-कभी (आंशिक रूप से) वह कार्य करता है।

0 अंक: यदि बच्चा बिल्कुल कार्य नहीं करता है या पूरी तरह से दूसरों पर निर्भर है।

भाग 'ब' (Part B: समस्याग्रस्त / कुसमायोजित व्यवहार)

2 अंक: यदि यह अवांछित व्यवहार बहुत अधिक (Frequent) या गंभीर रूप में मौजूद है।

1 अंक: यदि यह व्यवहार कभी-कभार (Occasional) या हल्के रूप में होता है।

0 अंक: यदि यह व्यवहार बच्चे में बिल्कुल नहीं देखा जाता है।

कुल अंक और व्याख्या (Total Score & Interpretation)सभी क्षेत्रों के अंकों को जोड़कर एक कच्चा स्कोर (Raw Score) निकाला जाता है।इस रॉ स्कोर को उम्र के मानदंडों (Age Norms) के अनुसार सामाजिक आयु (Social Age) और सामाजिक भागफल (Social Quotient - SQ) में परिवर्तित किया जाता है।

SQ= Social Age

Chronological Age 100

7.7.2 भाषा और वाणी आकलन (Speech and language Assessment)-

भाषा आकलन में बच्चे की ग्रहणशील भाषा (Receptive Language) अर्थात भाषा को समझने की क्षमता तथा अभिव्यक्त भाषा (Expressive Language) अर्थात अपने विचारों, भावनाओं और आवश्यकताओं को व्यक्त करने की क्षमता का आकलन किया जाता है। वाणी आकलन के अंतर्गत उच्चारण (Articulation), ध्वनि उत्पादन, आवाज़ (Voice), प्रवाह (Fluency) तथा वाणी की स्पष्टता (Speech Intelligibility) का परीक्षण किया जाता है। आवश्यकता होने पर श्रवण (Hearing) और वैकल्पिक एवं सहायक संचार (AAC) की भी जाँच की जाती है।

प्रमुख उपकरण

भाषा और वाणी आकलन उपकरण (Language Assessment Tool – LAT)

भाषा आकलन उपकरण (LAT) भारत में विकसित एक मानकीकृत (Standardized) भाषा आकलन उपकरण है। इसका विकास 1992 में टी. ए. सुब्बा राव (T. A. Subba Rao) द्वारा नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर द मेंटली हैंडीकैप्ड (NIMH), सिकंदराबाद (वर्तमान नाम National Institute for the Empowerment of Persons with Intellectual Disabilities – NIEPID) में किया गया था। LAT का उद्देश्य छोटे बच्चों में भाषा (Language) और वाक् (Speech) के प्रारंभिक विकास का आकलन करना है। इसे विशेष रूप से विकासात्मक विलंब (Developmental Delay) तथा बौद्धिक दिव्यांगता (Intellectual Disability) वाले बच्चों के लिए विकसित किया गया लेकिन सामान्य बच्चों के भाषा विकास की जानकारी प्राप्त करने में भी इसका उपयोग किया जा सकता है।

आकलन के क्षेत्र- LAT दो प्रमुख भागों में विभाजित है:

(क) ग्रहणशील भाषा (Receptive Language) 48 आइटम

(ख) अभिव्यक्त भाषा (Expressive Language)47 आइटम

अंकन (Scoring)

प्रत्येक आइटम को तीन श्रेणियों में दर्ज किया जाता है:

- उपस्थित/ Present
- अनुपस्थित/ Absent
- निश्चित नहीं /Not Sure

इन परिणामों के आधार पर यह निर्धारित किया जाता है कि बच्चे का भाषा विकास उसकी आयु के अनुरूप है या उसमें विलंब है।

REELS (रिसेप्टिव-एक्सप्रेसिव इमर्जेंट लैंग्वेज स्केल):

यह एक भाषा विकास (Language Development) का आकलन करने वाला उपकरण है जिसका उपयोग मुख्यतः जन्म से लगभग 3 वर्ष तक के बच्चों में भाषा के विकास का आकलन करने के लिए किया जाता है।

REELS के दो मुख्य भाग

1. ग्रहणशील भाषा (Receptive Language) इसमें देखा जाता है कि बच्चा आवाज़ पर प्रतिक्रिया देता है या नहीं। अपना नाम पहचानता है या नहीं। सरल निर्देश समझता है (जैसे "इधर आओ", "गेंद लाओ")। परिचित वस्तुओं और लोगों को पहचानता है। इशारों और शब्दों का अर्थ समझता है आदि

2. अभिव्यक्त भाषा (Expressive Language) इसमें देखा जाता है कि बच्चा कूइंग (cooing) और बबलिंग (babbling) करता है या नहीं। ध्वनियाँ और शब्द बोलता है या नहीं। अपनी ज़रूरतें शब्दों या इशारों से बताता है या नहीं।दो या अधिक शब्दों को जोड़कर बोलना शुरू करता है या नहीं। उम्र के अनुसार वाक्य बनाने की क्षमता विकसित कर रहा है या नहीं आदि

प्रशासन - यह मुख्यत माता-पिता/ देखभाल करने वाले (caregiver) से साक्षात्कार और बच्चे के अवलोकन (observation) पर आधारित होता है। परीक्षक बच्चे की आयु के अनुसार प्रश्न पूछता है और उत्तरों के आधार पर भाषा विकास का आकलन करता है।

REELS का उपयोग कहाँ होता है?

- स्पीच-लैंग्वेज पैथोलॉजी (Speech-Language Pathology)
- बाल विकास केंद्र
- प्रारंभिक हस्तक्षेप (Early Intervention) कार्यक्रम
- बाल रोग (Pediatrics) क्लिनिक
- विशेष शिक्षा (Special Education)

REELS के लाभ

- भाषा में देरी (Language Delay) की शुरुआती पहचान में मदद करता है।
- उपचार (Speech Therapy) की योजना बनाने में उपयोगी है।
- समय-समय पर बच्चे की प्रगति का आकलन किया जा सकता है।

वाणी और भाषा कौशल के लिए आकलन चेकलिस्ट/Assessment Checklist for Speech and Language Skills (AC-SLS)

AC-SLS एक मानकीकृत नैदानिक आकलन उपकरण है जिसका उपयोग बच्चों में वाक् और भाषा के विकास का आकलन करने के लिए किया जाता है। भारत में इसका उपयोग स्पीच-लैंग्वेज पैथोलॉजिस्ट (SLP) भाषा विकास में देरी या विकार की पहचान तथा विवरण देने में करते हैं। यह चेकलिस्ट बच्चों में बोलने और समझने और शब्दों को जोड़ने से जुड़ी योग्यताओं को मापने का एक अनौपचारिक तरीका है इसे अक्सर माता-पिता या शिक्षकों द्वारा 3 से 9 साल के बच्चों के विकास को ट्रैक करने के लिए भरा जाता है

आकलन के प्रमुख क्षेत्र

- ग्रहणशील भाषा: बोले गए शब्दों, आदेशों और प्रश्नों को संसाधित करने, समझने और उन पर प्रतिक्रिया देने की क्षमता।

- अभिव्यंजक भाषा: शब्दों, व्याकरण और वाक्य संरचना के माध्यम से विचारों, आवश्यकताओं और भावनाओं को प्रभावी ढंग से संप्रेषित करने की क्षमता।

- वाक् एवं उच्चारण: बोधगम्यता, आवाज की तीव्रता और व्यंजन एवं मिश्रित ध्वनियों की सटीकता।

- व्यवहारिक/सामाजिक उपयोग: आंखों से संपर्क बनाना, बातचीत में बारी-बारी से भाग लेना और वस्तुओं की मांग करना।

- धाराप्रवाह बोलना: बोलने की गति और हकलाहट, रुकावट या चेहरे के भावों की उपस्थिति का आकलन करना।

अंकन (Scoring)

हाँ = 2 अंक

कभी-कभी = 1 अंक

नहीं = 0 अंक

परिणाम का विश्लेषण: सभी सवालों के अंक जोड़कर कुल योग निकालें।उच्च स्कोर (जैसे कुल का 80% या उससे अधिक) भाषा और भाषण का विकास सामान्य है। मध्यम स्कोर बच्चे को कुछ क्षेत्रों में मदद की जरूरत है ये कौशल 'विकासशील' हैं निम्न स्कोर बच्चे में गंभीर देरी या विकार होने की आशंका है

लिंग्विस्टिक प्रोफ़ाइल टेस्ट (LPT) भारतीय स्पीच-

भाषाई प्रोफाइल परीक्षण (Linguistic Profile Test - LPT) भारत में वाणी एवं भाषा विकारों (Speech and Language Disorders) के सटीक निदान हेतु विकसित एक प्रमुख नैदानिक उपकरण (Diagnostic Tool) है। इसका मूल विकास डॉ. प्रतिभा करंथ द्वारा किया गया था तथा बाद में अलि यावर जंग राष्ट्रीय वाक् एवं श्रवण दिव्यांगजन संस्थान (AYJNISHD) द्वारा हिंदी सहित कई भारतीय भाषाओं में इसका मानकीकरण और रूपांतरण किया गया हिंदी भाषी बच्चों में व्याकरण (Syntax), शब्दार्थ (Semantics) और भाषा संरचना के आकलन हेतु प्रयोग किया जाता है

7.8विशेष शिक्षा में मानदंड-संदर्भित परीक्षण (Criterion-Referenced Test: CRT) का उपयोग, निर्माण एवं कार्यक्रम निर्माण के संदर्भ में विकास के लिए बरती जाने वाली सावधानियाँ

विशेष शिक्षा (Special Education) में मानदंड-संदर्भित परीक्षण (CRT) का उपयोग किसी छात्र के कौशल और ज्ञान का आकलन पूर्व-निर्धारित लक्ष्यों के आधार पर करने के लिए किया जाता है न कि अन्य छात्रों के प्रदर्शन से तुलना करके विशेष शिक्षा में CRT का अत्यधिक महत्व है क्योंकि प्रत्येक दिव्यांग विद्यार्थी की सीखने की गति, क्षमता और आवश्यकता अलग-अलग होती है। इसलिए इनके आकलन के लिए व्यक्तिगत उपलब्धि पर आधारित परीक्षण अधिक उपयुक्त माना जाता है।

1-विशेष शिक्षा में CRT का उपयोग (Uses of CRT in Special Education)

विशेष शिक्षा में इसका उपयोग किसी रैंक या ग्रेड देने के लिए नहीं, बल्कि उपचारात्मक शिक्षण (Remedial Teaching) के लिए किया जाता है

सटीक आधारभूत स्तर (Baseline Level) की पहचान: इससे यह पता चलता है कि बच्चा वर्तमान में किस स्तर पर है। उदाहरण के लिए, "क्या बच्चा बिना किसी मदद के 1 से 10 तक गिनती लिख सकता है?"

व्यक्तिगत शैक्षणिक कार्यक्रम (IEP) का निर्माण: विशेष शिक्षा में हर बच्चे की ज़रूरतें अलग होती हैं। CRT से मिले परिणाम शिक्षकों को बच्चे के लिए विशिष्ट, मापने योग्य और प्राप्त करने योग्य लक्ष्य (Goals) तय करने में मदद करते हैं।

कार्य विश्लेषण (Task Analysis): इसके माध्यम से किसी बड़े कार्य को छोटे-छोटे चरणों में तोड़कर यह देखा जा सकता है कि बच्चा किस विशेष चरण पर अटक रहा है।

प्रगति की निगरानी (Progress Monitoring): समय-समय पर CRT का उपयोग करके यह जांचा जाता है कि दी जा रही थेरेपी या विशेष शिक्षण तकनीक काम कर रही है या नहीं।

2. मानदंड-आधारित परीक्षण का निर्माण (Construction of CRT)

विशेष शिक्षा के लिए एक प्रभावी CRT का निर्माण करने के लिए एक व्यवस्थित प्रक्रिया का पालन करना होता है

A: विशिष्ट व्यवहार या कौशल का चयन (Domain Identification)

सबसे पहले उस विशिष्ट क्षेत्र को चुनें जिसका परीक्षण करना है। उदाहरण के लिए: 'स्वयं की देखभाल' (Daily Living Skills), 'सामाजिक कौशल', या 'शैक्षिक कौशल' (जैसे: दो अंकों का जोड़)।

B: व्यवहारपरक उद्देश्यों का निर्धारण (Behavioral Objectives)

उद्देश्य बिल्कुल स्पष्ट और मापने योग्य होने चाहिए।

गलत उद्देश्य: "बच्चे को पैसे की समझ होनी चाहिए।"

सही उद्देश्य: "बच्चा 10, 20 और 50 रुपये के नोटों को देखकर उनकी सही पहचान कर सकेगा।"

C: कार्यों विश्लेषण (Task Analysis)

विशेष बच्चों के लिए किसी भी कौशल को बहुत छोटे चरणों में विभाजित करना पड़ता है। यदि परीक्षण 'जूते के फीते बांधने' का है तो परीक्षण में इसके हर एक चरण (जैसे: फीता पकड़ना, क्रॉस करना, लूप बनाना) को एक अलग परीक्षण टेस्ट आइटम के रूप में रखा जाना चाहिए।

D: परीक्षण वस्तुओं (Test Items) का विकास

ऐसे प्रश्न या कार्य तैयार करें जो सीधे तौर पर निर्धारित उद्देश्य को मापते हों। इसमें मौखिक प्रश्न, व्यावहारिक कार्य (Performance Tasks), या अवलोकन (Observation) शामिल हो सकते हैं।

E: मानदंड का स्तर तय करना (Setting Criteria)

सफलता का एक पैमाना तय किया जाता है, जैसे कि "4 में से 3 बार सही करने पर" या "80% सटीकता के साथ कार्य पूरा करने पर" बच्चे को उस कौशल में निपुण माना जाएगा।

3.कार्यक्रम निर्माण और विकास के संदर्भ में बरती जाने वाली सावधानियां (Precautions in Programming & Development)

जब आप CRT के परिणामों के आधार पर बच्चे के लिए कार्यक्रम निर्माण (शिक्षण योजना/पाठ्यक्रम का विकास) कर रहे हों या खुद उपकरण विकसित कर रहे हों तो निम्नलिखित सावधानियां बरतना अनिवार्य है:

A. बच्चे की अक्षमता के अनुसार लचीलापन (Adaptation & Accommodations)- परीक्षण की सामग्री या तरीका बच्चे की विशिष्ट दिव्यंगता (जैसे- दृष्टिबाधित, बधिर, ऑटिज़्म या बौद्धिक अक्षमता) के आड़े नहीं आना चाहिए। यदि बच्चा बोल नहीं सकता (Non-verbal) तो परीक्षण में ऐसे आइटम रखें जहां वह इशारे से, चित्रों (Flashcards) के माध्यम से या AAC (Alternative and Augmentative Communication) उपकरण का उपयोग करके उत्तर दे सके।

B. सांस्कृतिक और पर्यावरणीय प्रासंगिकता (Cultural & Environmental Relevance)-परीक्षण में ऐसे उदाहरण या कार्य न रखें जो बच्चे के परिवेश से मेल न खाते हों। यदि बच्चा ग्रामीण पृष्ठभूमि से हैतो मेट्रो ट्रेन या एस्केलेटर से जुड़े सामाजिक कौशलों का परीक्षण करने के बजाय स्थानीय परिवेश (जैसे: बस में चढ़ना, दुकान से सामान लेना) से जुड़े कौशलों का परीक्षण करें।

C. कृत्रिम बनाम वास्तविक वातावरण (Artificial vs. Natural Environment)- विशेष बच्चे अक्सर एक बंद कमरे या क्लिनिक में तो कार्य कर लेते हैं लेकिन वास्तविक जीवन में उसे दोहरा नहीं पाते (सामान्यीकरण या Generalization की कमी)। कार्यक्रम निर्माण करते समय केवल कागज़-पेंसिल परीक्षण पर भरोसा न करें। बच्चे का आकलन उसके स्वाभाविक वातावरण (कक्षा, खेल का मैदान या घर) में भी करें।

D. थकावट और ध्यान भटकाव (Fatigue and Distraction Factors)- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का ध्यान लगाने की अवधि कम हो सकती है या वे जल्दी थक सकते हैं।परीक्षण सत्र (Test Sessions) बहुत लंबे नहीं होने चाहिए। परीक्षण को छोटे-छोटे टुकड़ों में विभाजित करें और बच्चे को पर्याप्त आराम (Breaks) दें।

E. अत्यधिक कठोर मानदंडों से बचना (Avoid Rigid Criteria)- सफलता का स्तर (Criterion) इतना ऊंचा या कठिन न रखें कि बच्चा बार-बार असफल महसूस करे, और न ही इतना आसान कि उसकी वास्तविक क्षमता का पता न चले। मानदंड को बच्चे की सीखने की गति (Pace) के अनुसार क्रमिक (Progressive) रखें। शुरुआत 50% सफलता के मानदंड से करके धीरे-धीरे इसे 80% तक ले जाएं।

विशेष शिक्षा में मानदंड-संदर्भित परीक्षण एक मार्गदर्शक की तरह है। इसका मुख्य उद्देश्य बच्चे की कमियों को उजागर करना नहीं बल्कि उसकी वर्तमान क्षमताओं को पहचान कर आगे का रास्ता तैयार करना है। इसमें बरती गई थोड़ी सी भी असावधानी बच्चे के पूरे शैक्षणिक विकास को प्रभावित कर सकती है इसलिए इसमें संवेदनशीलता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण दोनों का होना आवश्यक है।

7.9 सारांश

बौद्धिक अक्षमता से प्रभावित बच्चों का आकलन केवल उनके बौद्धिक स्तर (IQ) को मापने या उन्हें कोई 'लेबल' (Label) देने की प्रक्रिया नहीं हैबल्कि यह उनकी वास्तविक क्षमताओं, सीमाओं और व्यक्तिगत आवश्यकताओं (Individual Needs) को गहराई से समझने का एक माध्यम है। विकासात्मक आकलन किसी भी बच्चे या व्यक्ति की समग्र क्षमता, चुनौतियों और विशिष्ट आवश्यकताओं को समझने की आधारशिला है। बौद्धिक, सामाजिक, व्यावहारिक और भाषाई विकास एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। इनमें से किसी भी एक क्षेत्र में देरी या असंतुलन बच्चे के समग्र विकास और आत्मनिर्भरता को प्रभावित कर सकता है। बौद्धिक क्षमता और विकासात्मक स्तर का सटीक आकलन किसी भी व्यक्ति की वास्तविक सोच, समस्या-समाधान क्षमता और सीखने की दर को समझने की दिशा में पहला और सबसे महत्वपूर्ण कदम है। बुद्धिमत्ता केवल एक अंक (IQ Score) नहीं है बल्कि यह वातावरण के साथ अनुकूलन करने और जटिल परिस्थितियों को समझने की एक बहुआयामी क्षमता है। उपयुक्त और वैज्ञानिक बौद्धिक उपकरणों का प्रयोग बच्चे की सीमाओं को आंकने के लिए नहीं बल्कि उसकी अंतर्निहित क्षमताओं (Potentials) की पहचान करके उसके सर्वांगीण विकास और आत्मनिर्भर भविष्य का

मार्ग प्रशस्त करने के लिए किया जाता है। सामाजिक-व्यावहारिक (Social-Behavioural) और वाक्-भाषा (Speech-Language) विकास एक-दूसरे से पूरी तरह जुड़े हुए हैं। इनमें से किसी एक क्षेत्र को नजरअंदाज करने से बच्चे की पुनर्वास प्रक्रिया अधूरी रह जाती है। विशेष शिक्षा और बौद्धिक विकासात्मक दिव्यांगता (IDD) के क्षेत्र में मानदंड-संदर्भित परीक्षण (CRT) केवल मूल्यांकन का एक माध्यम नहीं है बल्कि यह कार्यक्रम निर्माण और शिक्षण की आधारशिला है। विशेष शिक्षा में CRT का सफल निर्माण और कार्यक्रम निर्माण इस बात पर निर्भर करती है कि हम परीक्षण को बच्चे के अनुकूल बनाते हैंन कि बच्चे को परीक्षण के। जब CRT का निर्माण सूक्ष्म सावधानियों और सटीक कार्य विश्लेषण के साथ किया जाता है तो यह बौद्धिक विकासात्मक दिव्यांगता (IDD) से प्रभावितबच्चों के लिए आत्मनिर्भरता और सर्वांगीण विकास का सबसे सशक्त माध्यम बनता है। आकलन का अंतिम उद्देश्य किसी बच्चे को केवल एक लेबल या अंक देना नहीं है बल्कि उसकी अद्वितीय क्षमताओं का पता लगाकर उसे समाज में एक स्वतंत्र, सक्षम और सम्मानजनक जीवन जीने के योग्य बनाना है।

7.10 शब्दावली

विकासात्मक आकलन- विकासात्मक आकलन (Developmental Assessment) एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके ज़रिए यह देखा और समझा जाता है कि कोई बच्चा अपनी उम्र के हिसाब से शारीरिक, मानसिक, भाषाई और सामाजिक रूप से सही गति से बढ़ रहा है या नहीं।

प्रारम्भिक पहचान- प्रारंभिक पहचान (Early Identification) का अर्थ है — बच्चे के विकास में होने वाली किसी भी देरी, बीमारी, या विशेष आवश्यकता (जैसे सीखने में कठिनाई, ऑटिज्म, या शारीरिक रुकावट) को शुरुआती उम्र में ही पहचान लेना।

बौद्धिक आकलन उपकरण- बौद्धिक आकलन उपकरण (Intellectual Assessment Tools) वे मानकीकृत मनोवैज्ञानिक परीक्षण (Psychological Tests) हैं, जिनका

उपयोग किसी व्यक्ति या बच्चे की बौद्धिक क्षमता (IQ - Intelligence Quotient), सोचने-समझने की शक्ति, तर्क क्षमता और समस्या निवारण कौशल को मापने के लिए किया जाता है।

व्यवहारिक आकलन- व्यवहारिक आकलन (Behavioral Assessment) एक ऐसी वैज्ञानिक प्रक्रिया है, जिसके ज़रिए किसी व्यक्ति (विशेषकर बच्चे) के व्यवहार, उसकी आदतों और उसके कारणों का व्यवस्थित रूप से अध्ययन किया जाता है।

7.11 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1-B

2-B

3-A

4-सही

5-सही

6-A

7-B

8-

7.12 संदर्भ

https://www.scribd.com/document/537376020/VSMS-doc-1

https://www.worldwidejournals.com/indian-journal-of-applied-research-(IJAR)/fileview/malins-intelligence-scale-for-indian-children-

misic-the-erroneous-practice-of-six-percent-proration_June_2021_2010268245_2312117.pdf

https://www.studocu.com/in/document/dr-vishwanath-karad-mit-world-peace-university/clinical-psychology/dst-report/78610666?sid=cac8d49d-b06c-4398-a60e-541d685b159f1783935008

https://indianmentalhealth.com/pdf/2020/vol7-issue3/6-Review-Article_Binet-Kamat-test.pdf

https://www.indianpediatrics.net/aug2014/aug-627-635.htm

https://indianmentalhealth.com/pdf/2020/vol7-issue3/6-Review-Article_Binet-Kamat-test.pdf

7.13 निबंधात्मक प्रश्न

1- बौद्धिक विकासात्मक दिव्यांगता (IDD) से ग्रसित बच्चों के आकलन की मुख्य विधियों और उपकरणों का विस्तार से वर्णन कीजिए।

2- और प्रारंभिक पहचान (Early Identification) से आप क्या समझते हैं? विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के संदर्भ में इसके महत्व, प्रक्रियाओं और उपकरणों का विस्तार से वर्णन कीजिए।

3- बौद्धिक आकलन उपकरणों (Intellectual Assessment Tools) से आप क्या समझते हैं? भारत में प्रयोग किए जाने वाले प्रमुख बौद्धिक परीक्षणों का वर्गीकरण करते हुए उनका विस्तार से वर्णन कीजिए।

4- बौद्धिक विकासात्मक दिव्यांगता (IDD) से ग्रस्त बच्चों के लिए वाणी एवं भाषा आकलन (Speech and Language Assessment) के मुख्य उपकरणों और चरणों का विस्तार से वर्णन कीजिए।

5- मानदंड-संदर्भित परीक्षण (CRT) से आप क्या समझते हैं? विशेष शिक्षा में इसके उपयोग, महत्व और विशेषताओं का विस्तार से वर्णन कीजिए।

इकाई 8 शैक्षिक और व्यावसायिक आकलन तथा उपयुक्त उपकरणों का उपयोग Educational and vocational assessment and use of appropriate tools

8.1 प्रस्तावना

8.2 उदेश्य

8.3 शैक्षिक आकलन / Educational assessment

8.4 शैक्षिक आकलन के उपकरण / Educational assessment tools

8.4.1 उपनयन/ Upanayan

8.4क्रॉस डिसबिलिटी के लिए शुरुआती हस्तक्षेप और विद्यालय की तैयारी हेतु पाठ्यचर्या रूपरेखा (RCI)/Curricular Framework for cross disability early intervention and

school readiness.

8.4.3 NIMH - आरंभ (शुरुआती बचपन की विशेष शिक्षा और समावेशी पैकेज)/ NIMH - Aarambh (Early Childhood Special Education Inclusive Package

8.4.4 पोर्टेज गाइड का भारतीय रूपांतरण/ Indian adaptation of portage guide

8.4.5 मद्रास डेवलपमेंटल प्रोग्रामिंग सिस्टम्स/ Madras Developmental Programming Systems

8.4.6 NIMH-प्रोग्रामिंग फॉर फंक्शनल असेसमेंट चेकलिस्ट (FACP)/ NIMH-Functional Assessment Checklists forProgramming (FACP)

8.5व्यावसायिकआकलन / Vocational assessment

8.6व्यावसायिक आकलन के साधन/ Vocational assessment tools

8.7अन्य संबंधित साधन/ other relevant tools

8.8 बौद्धिक अक्षमता से प्रभावित वयस्कों के लिए व्यापक आकलन साधन (NIEPID)/ Comprehensive assessment tool for adults with intellectual disability (NIEPID)

8.9 समावेशी संदर्भों में ऊपर बताई गई बातों का महत्व/ Implications of the above in inclusive contexts

8.10 सारांश

8.11 शब्दावली

8.12 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

8.13 संदर्भ ग्रंथ सूची

8.14 निबंधात्मक प्रश्न

8.1 प्रस्तावना

शैक्षिक आकलन मुख्य रूप से स्कूल में सीखने के कई पहलुओं और स्कूल में प्रदर्शन पर असर डालने वाले दूसरे कारकों पर ध्यान देता है। इसमें शैक्षिक, भाषा और सामाजिक कौशल की जाँच की जाती है। छात्र के सीखने के व्यवहार और सीखने के तरीकों का विश्लेषण करने के साथ-साथ पर्यावरण से जुड़े कारकों पर भी विचार

कियाजाता है।बौद्धिक रूप से अक्षम बच्चों को परीक्षण देने के लिए विस्तृत शैक्षिक आकलन और व्यवसायिक आकलन की आवश्यकता होती है। बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों के लिए व्यवस्थित सुधारात्मक कार्यक्रम विकसित करने और आकलन करने के लिए कई व्यवसायिक और शैक्षिक परीक्षण विकसित करने के प्रयास किए गए हैं।

8.2 उदेश्य

इस इकाई के अध्यन के पश्चात आप

- शैक्षिक और व्यावसायिक आकलन की अवधारणा एवं महत्व कोसमझ सकेंगे।
- विद्यार्थियों के ज्ञान, कौशल, अभिरुचि और क्षमताओं का सही आकलन कर सकेंगे।
- शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में सुधार के लिए आकलन के परिणामों का उपयोग कर सकेंगे।
- शैक्षिक और व्यावसायिक आकलन उपकरणों के प्रभावी उपयोग को समझ सकेंगे ।
- शैक्षिक और व्यावसायिक आकलन उपकरणों का उपयोग कर सकेंगे ।
- समावेशी शिक्षा के अंतर्गत प्रत्येक विद्यार्थी, विशेषकर दिव्यांग बच्चों, के लिए निष्पक्ष और लचीली आकलन प्रणाली विकसित कर सकेंगे ।

8.3 शैक्षिक आकलन (Educational Assessment)

शैक्षिक आकलन (Educational Assessment) एक व्यवस्थितप्रक्रिया है जिसमें छात्र के ज्ञान (Knowledge), कौशल (Skills), दृष्टिकोण (Attitudes) और विश्वासों के बारे में जानकारी या आंकड़े एकत्र किए जाते हैंउनका विश्लेषण किया जाता है और उसके आधार पर शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में सुधार किया जाता है।इसका मुख्य लक्ष्य छात्र को अनुत्तीर्ण (Fail) या उत्तीर्ण करना नहींबल्कि उसकी सीखने की क्षमता और शिक्षकों की पढ़ाने की रणनीति दोनों को बेहतर बनाना है। बौद्धिक अक्षमता (Intellectual

Disabilities) से ग्रसित बच्चों के लिए शैक्षिक आकलन एक ऐसी प्रक्रिया हैजिसके माध्यम से बच्चे की सीखने की क्षमताओं, आवश्यकताओं, शक्तियों (Strengths) और कठिनाइयों का व्यवस्थित रूप से आकलन किया जाता है।यह पारंपरिक परीक्षाओं (जैसे - अंक या ग्रेड देना) से अलग होता है। इसका मुख्य उद्देश्य बच्चे की तुलना दूसरों से करना नहींबल्कि उसकी अपनी वर्तमान क्षमता का स्तर (Baseline) जानना

शैक्षिक आकलन के मुख्य उद्देश्य (Key Objectives)

सीखने का स्तर जानना: यह पहचानना कि छात्र ने किसी विषय में कितना ज्ञान प्राप्त किया है।

कमियों और कठिनाइयों की पहचान: यह जानना कि छात्र को कहाँ सीखने में परेशानी आ रही है (Diagnostic evaluation)।

शिक्षण पद्धति में सुधार: शिक्षकों को यह समझने में मदद मिलती है कि उनका पढ़ाया हुआ तरीका प्रभावी है या उसमें बदलाव की ज़रूरत है।

व्यक्तिगत सहायता: विशेष आवश्यकताओं वाले या धीमी गति से सीखने वाले बच्चों के लिए व्यक्तिगत शिक्षण योजना (IEP) तैयार करना।

प्रगति का रिकॉर्ड रखना: छात्र के सर्वांगीण विकास (Holistic Development) को समय के साथ ट्रैक करना।

8.4 शैक्षिक आकलन के उपकरण/Educational assessment tools

8.4.1 उपनयन/ Upanayan

उपनयन – बौद्धिक रूप से पिछड़े बच्चों के विकास के लिए एक परीक्षण कार्यक्रम

यह छोटे बच्चों के लिए एक आकलन उपकरण है। इस कार्यक्रम में 0-6 साल की उम्र के बच्चे शामिल हैं। इस कार्यक्रम में एक चेकलिस्ट, एक उपयोगकर्ता नियमावली, गतिविधि कार्ड का एक सेट और आकलन परीक्षण के लिए ज़रूरी सामान शामिल है।

विवरण

चेकलिस्ट में विकास के पाँच क्षेत्र शामिल हैं: गत्यात्मक ,खुद की देखभाल, भाषा, संज्ञनात्मक और सामाजिक। हर क्षेत्र में 50 पद (आइटम) हैं, यानी कुल मिलाकर 250 पद हैं। इन पद को सामान्य विकास के क्रम के आधार पर व्यवस्थित किया गया है।

संचालन

हर क्षेत्र को दूसरों से अलग दिखाने के लिए गतिविधि काड्र्स को अलग-अलग रंगों में कोड किया गया है। मैनुअल में आकलन के दौरान इस्तेमाल होने वाले सामान की सूची दी गई है। पृष्ठभूमि की जानकारी और समय-समय पर आकलन आकंडों को नोट करने के लिए रिकॉर्ड फ़ॉर्मेट दिए गए हैं। अगर बच्चा कोई गतिविधि करता है, तो उसे "A" मार्क किया जाता है और अगर बच्चा वह काम नहीं करता है, तो उसे "B" मार्क किया जाता है।

यह कार्यक्रम कंप्यूटराइज्ड है ताकि माता-पिता को उनके बच्चे की परीक्षण के लिए ज़रूरी गतिविधि कार्ड दिए जा सकें। यह कार्यक्रम घर पर और सेंटर-बेस्ड इंटरवेंशन (सुधार के तरीकों) के तहत घर पर परीक्षण देने के लिए बनाया गया है।

8.4.2 क्रॉस-डिसेबिलिटी के लिए शुरुआती हस्तक्षेप और स्कूल की तैयारी हेतु पाठ्यचर्या की रूपरेखा।/Curricular Framework for cross disability early intervention and school readiness. (RCI)

भारतीय पुनर्वास संस्था (RCI) और सहयोगी संस्थाओं द्वारा क्रॉस-डिसेबिलिटी के लिए शुरुआती मदद और स्कूल की तैयारी के लिए बनाया गया ढांचा दो मुख्य कार्यक्रमों पर आधारित है: PEHAL और NIPUN । इसका मकसद जन्म से 6 साल तक के बच्चों के लिए समान और समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देना है।

क्रियान्वयन और सेवाएँ

परिवार-केंद्रित दृष्टिकोण: इसमें मिल-जुलकर सीखने, घर पर परीक्षण देने और माता-पिता की सक्रियकाउंसलिंग पर ज़ोर दिया जाता है।

अलग-अलग क्षेत्रों के बीच जुड़ाव: यह खास तौर पर बनाए गए 'क्रॉस-डिसेबिलिटी अर्ली इंटरवेंशन सेंटर्स' (CDEICs) के ज़रिए स्वास्थ्य, सामाजिक न्याय और शिक्षा के क्षेत्रों को आपस में जोड़ता है।

अगले चरण की तैयारी: यह विकास में देरी या विकलांगता से प्रभावित बच्चों को मुख्यधारा के स्कूलों में दाखिले और समावेशी कक्षाओं के लिए तैयार करता है

1. पहल रूपरेखा (PEHAL Framework)

आयु सीमा: जन्म से 3 वर्ष (Birth to 3 Years)

मुख्य उद्देश्य: प्रारंभिक हस्तक्षेप (Early Intervention) एवं पारिवारिक सहायता

पहलमुख्य रूप से बच्चे के जीवन के पहले 1000 दिनों पर ध्यान केंद्रित करता है, जो मस्तिष्क और शारीरिक विकास के लिए सबसे महत्वपूर्ण होते हैं।

व्यक्तिगत हस्तक्षेप (Individualized Family Service Plan - IFSP): बच्चे के साथ-साथ उसके परिवार की ज़रूरतों को समझकर एक योजना बनाई जाती है, ताकि माता-पिता घर पर भी गतिविधियों को जारी रख सकें।

संवेदी और गामक विकास (Sensory & Motor Skills): बच्चे के देखने, सुनने, छूने और संतुलन बनाने की क्षमताओं में सुधार करना।

दैनिक जीवन के मूलभूत कौशल (Self-care Skills): सही तरीके से निगलना, खाना, बैठना और पकड़ बनाना सिखाना।

सहायक उपकरणों की पहचान (Assistive Technology Assessment): यदि बच्चे को किसी विशेष उपकरण (जैसे हियरिंग एड, कैलीपर्स या व्हीलचेयर) की आवश्यकता है, तो उसकी शुरुआती चरण में ही पहचान करना।

2- निपुण समावेशी रूपरेखा (NIPUN Inclusive Framework)

आयु सीमा: 3 से 6 वर्ष (3 to 6 Years)

मुख्य उद्देश्य: विद्यालय की तैयारी (School Readiness) एवं समावेशी शिक्षा

निपुण रूपरेखा भारत सरकार के 'निपुण भारत मिशन' (NIPUN Bharat) के साथ एकीकृत हैताकि विशेष आवश्यकता वाले बच्चे सामान्य बच्चों के साथ प्री-स्कूल और प्राथमिक विद्यालय में आसानी से जुड़ सकें।

बुनियादी साक्षरता (Foundational Literacy): चित्र पहचान, ध्वनियों को समझना (Phonemic Awareness), और सांकेतिक या ब्रेल माध्यम से शुरुआती भाषा कौशल का विकास।

बुनियादी संख्यात्मकता (Foundational Numeracy): आकृतियों की पहचान, वर्गीकरण (Sorting), क्रमबद्ध करना और 1 से 10 तक की बुनियादी गिनती।

यूनिवर्सल डिजाइन फॉर लर्निंग (UDL): कक्षाओं में ऐसा माहौल बनाना जहाँ हर बच्चा अपनी गति से सीख सके (जैसे दृष्टिबाधित बच्चे के लिए स्पर्श योग्य/Tactile सामग्री और श्रवणबाधित के लिए दृश्य/Visual सामग्री)।

सामाजिक-भावात्मक कौशल (Social-Emotional Readiness): अन्य बच्चों के साथ बातचीत करना, अपनी बारी का इंतजार करना और भावनाओं को व्यक्त करना सिखाना ताकि वे सामान्य कक्षा में समायोजन कर सकें।

दोनों रूपरेखा के बीच अंतर

विशेषता	PEHAL (पहल)	NIPUN Inclusive (निपुण समावेशी
मुख्य ध्यान	स्वास्थ्य, चिकित्सा और बुनियादी विकास	शिक्षा, साक्षरता और सामाजिक सहभागिता
केंद्रबिंदु	घर एवं थेरेपी सेंटर	प्री-स्कूल एवं समावेशी कक्षा
मुख्य भूमिका	माता-पिता और थेरेपिस्ट	विशेष शिक्षक, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता और प्री-स्कूल शिक्षक

8.4.3 NIMH - आरंभ (शुरुआती बचपन की विशेष शिक्षा और समावेशी पैकेज)/ NIMH - Aarambh (Early Childhood Special Education Inclusive Package

'आरंभ' छोटे बच्चों के लिए शुरुआती बचपन की विशेष शिक्षा और विकासात्मक जांच का एक पैकेज हैजिसे UNICEF के सहयोग से नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर द मेंटली हैंडीकैप्ड (जिसे अब NIEPID कहा जाता है) ने विकसित किया है। इसका मकसद 3 से 6 साल की उम्र के बच्चों (और 0-6 साल की उम्र में व्यापक शुरुआती हस्तक्षेप) पर ध्यान केंद्रित करना हैताकि विकास में होने वाली देरी का जल्द पता लगाया जा सके और समावेशी प्री-स्कूल शिक्षा को बढ़ावा दिया जा सके।

पैकेज के मुख्य हिस्से

जांच चेकलिस्ट: छोटे बच्चों में विकास से जुड़ी खास देरी या विकलांगता की पहचान करती है।

कौशल के क्षेत्र: इसमें स्थूल गत्यात्मक,सूक्ष्म गत्यात्मक,खुद से जुड़े काम (जैसे कपड़े पहनना, तैयार होना, खाना-पीना), भाषा और सामाजिक मेलजोल जैसे मुख्य क्षेत्र शामिल हैं।

पुस्तिका और गतिविधि कार्ड: शिक्षकों, माता-पिता और नीति बनाने वालों के लिए व्यावहारिक मार्गदर्शिका (Practical Guide)और व्यवस्थित उपकरण उपलब्ध कराते हैं।

मुख्य लक्ष्य

- शुरुआती पहचान: जीवन की शुरुआत में ही शारीरिक, संवेदी या बौद्धिक अक्षमताओं का पता लगाना।
- समावेशी शिक्षा: विशेष ज़रूरतों वाले बच्चों को मुख्यधारा या प्री-स्कूल परिवेश में शामिल होने के लिए तैयार करना।
- देखभाल करने वालों का प्रशिक्षण: परिवारों और अग्रिम पंक्ति के कार्यकर्ता (Frontline workers)को घर पर आसानी से अपनाई जा सकने वाली हस्तक्षेप तकनीकें सिखाना।

आकलन का तरीका: चेकलिस्ट को एक आसान ढांचे (रूब्रिक) के आधार पर ग्रेड किया जाता है: 'हासिल किया' / 'आंशिक रूप से हासिल किया'/'हासिल नहीं किया'। अगर कोई बच्चा अपनी उम्र के हिसाब से तय मानकों में कई बार 'हासिल नहीं किया' वाली श्रेणी में आता है, तो मैनुअल के अनुसार आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं या प्री-स्कूल शिक्षकों को उस बच्चे को औपचारिक नैदानिक जांच के लिए ज़िला पुनर्वास केंद्र या बाल रोग विशेषज्ञ के पास भेजना चाहिए।

8.4.4 पोर्टेज गाइड का भारतीय रूपांतरण/ Indian adaptation of portage guide

शुरुआती शिक्षा के लिए पोर्टेज गाइड (Portage Guide to Early Education)

इसे S.M. ब्लुमा, M. शीरर, A.H. फ्रोहमन और जीन M. हिलियार्ड (USA) ने विकसित किया है। यह मुख्य रूप से उन प्री-स्कूल बच्चों को कौशल सिखाने का एक सिस्टम है जिनके विकास में देरी है। पोर्टेज प्रोजेक्टयह घर पर आधारित प्रशिक्षण प्रणाली है जिसमें माता-पिता सीधे तौर पर अपने बच्चों की शुरुआती शिक्षा (यानी 0-6 साल की उम्र) में शामिल होते हैं। यह परीक्षण किसी खास तौर पर प्रशिक्षित शिक्षक या सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता द्वारा दी जाती हैजिन्हें बच्चों के विकास के क्षेत्र में खास प्रशिक्षण और अनुभव होता है। हालाँकि घर पर आधारित इस कार्यक्रम में मुख्य भूमिका माता-पिता/परिवार के सदस्यों की होती है।

इसका इस्तेमाल पैरा-प्रोफेशनल (जैसे आंगनवाड़ी, बालवाड़ी के कर्मचारी),नॉन-प्रोफेशनल (जैसे माता-पिता, भाई-बहन) और प्रोफेशनल (जैसे प्री-स्कूल शिक्षक, मनोवैज्ञानिक और डॉक्टर) कर सकते हैं।

विवरण

पोर्टेज चेकलिस्ट में शिशु को उद्दीपन(Stimulation) देना, खुद काम करना (सेल्फ-हेल्प), गत्यात्मक (शारीरिक गतिविधि), संज्ञनात्मक (मानसिक क्षमता), भाषा और समाजीकरण जैसे क्षेत्र शामिल हैं। हर क्षेत्र में, गतिविधियाँ उम्र के हिसाब से एक क्रम में दी गई हैं। चेकलिस्ट के अलावा, हर कौशल के लिए गतिविधि कार्ड भी हैंजिनमें छात्र को सिखाने के लिए इस्तेमाल होने वाली सामग्री और तरीके के बारे में बताया गया है। चेकलिस्ट में हर काम के लिए उम्र के मानक (age norms) भी किनारे पर दिए गए हैंजो प्रशिक्षक को छात्र की कार्यक्षमता की उम्र के बराबर स्तर का अंदाज़ा लगाने में मदद करते हैं।

संचालन

पहला कदम सभी क्षेत्रों में सूचीबद्ध कौशलों की जाँच करना और प्रवेश व्यवहार (Entry behavior) कॉलम के तहत हर कौशल पर छात्र के प्रदर्शन को रिकॉर्ड करना है। इसमें उपलब्धि की तारीख औरटिप्पणी दर्ज करने का भी प्रावधान है। गतिविधियों, उपलब्धियों और लक्ष्यों को रिकॉर्ड करने के लिए एक अलग प्रावधान (एक्टिविटी चार्ट) भी है। चूँकि इस फॉर्मेट में रोज़ाना और साप्ताहिक प्रगति को रिकॉर्ड किया जा सकता है, इसलिए बारीकी से निगरानी की जा सकती है।

8.4.5 मद्रास डेवलपमेंटल प्रोग्रामिंग सिस्टम्स/ Madras Developmental Programming Systems (MDPS)

यह भारत का पहला व्यापक व्यवहार पैमाना (बिहेवियरल स्केल) है जिसे 1975 में चेन्नई (तब मद्रास) में विकसित किया गया था। इसका इस्तेमाल मानसिक रूप से अक्षम बच्चों की व्यवहार क्षमता का आकलन करने और उनके लिए प्रोग्राम बनाने के लिए किया जाता है। इस पैमाने का इस्तेमाल हमारे देश में किसी भी उम्र, लिंग और अक्षमता के स्तर वाले बच्चों के लिए किया जा सकता है। यह एक मानदंड-आधारित आकलन पैमाना है, जिसमें समय-समय पर आकलन के लिए एक अंतर्निहित प्रणाली (In-built system) होती है। यह बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों के लिए विशेष शिक्षा और उससे जुड़ी सेवाओं की योजना बनाने, उन्हें लागू करने और उनकी निगरानी करने में मदद करता है।

विवरण

इस पैमाने का इस्तेमाल व्यक्तिगत शैक्षिक कार्यक्रम और कक्षा में पढ़ाने के लिए किया जा सकता है। इस पैमाने में 18 क्षेत्र हैं और हर क्षेत्र में 20पद (Items) हैं। ज़्यादातर क्षेत्र में पद एक क्रम में व्यवस्थित हैं।

क्षेत्र:

1. स्थूल गत्यात्मक गतिविधियाँ

2. सूक्ष्म गत्यात्मक गतिविधियाँ

3. भोजन के समय की गतिविधियाँ।

4. कपड़े पहनना।

5. तैयार होना (ग्रूमिंग)।

6. शौचालय का इस्तेमाल।

7. ग्रहणशील भाषा

8. अभिव्यंजक भाषा

9. सामाजिक मेलजोल।

10. पढ़ना।

11. लिखना।

12. संख्याएँ।

13. समय।

14. पैसा।

15. घरेलू गतिविधियाँ।

16. सामुदायिक जानकारी

17. मनोरंजन और खाली समय की गतिविधियाँ।

18. व्यावसायिक

संचालन

इस पैमाने का संचालन बहुत आसान है। इस्तेमाल करने वाले के पास क्षेत्र के अलग-अलग पद (Items) के लिए एकआकलन किट तैयार होनी चाहिए। जानकारी (a) सीधे देखकर (ऑब्जर्वेशन), और (b) माता-पिता, देखभाल करने वालों और अन्य अनौपचारिक स्रोतों से रिपोर्ट लेकर इकट्ठा की जाती है। जो पद छात्र पहले ही सीख चुका है, उसे 'A' से और जो नहीं सीख पाया है, उसे 'B' से चिह्नित किया जाता है। संचालन के अंत में, हर क्षेत्र डोमेन में सभी 'A' और 'B' की गिनती की जाती है और उन्हें क्षेत्र के दाईं ओर वाले कॉलम में लिखा जाता है। 'A' को नीले रंग से और 'B' को लाल रंग से चिह्नित किया जाता है। नीला हिस्सा छात्र के प्रदर्शन को दिखाता है और लाल हिस्सा उन क्षेत्रों को दिखाता है जहाँ प्रशिक्षण देने की ज़रूरत है।

उपयोग

इस पैमाने का इस्तेमाल कक्षा में व्यक्तिगत शैक्षिक कार्यक्रम,आकलन और प्रबंधन के लिए बड़े पैमाने पर किया जाता हैक्योंकि इसमें कई खास खूबियां हैंजैसे:

1. इसमें व्यवहार से जुड़े कई पहलू शामिल हैं।

2. हर पहलू में शामिल पद की पूरी जानकारी।

3. कई पहलुओं की चीज़ों को एक क्रम में व्यवस्थित किया गया है।

4. इसे इस्तेमाल करना आसान है।

5. यह पाठ्यक्रम बनाने में मदद करता है।

6. यह बच्चों की शैक्षिक समूह और योगात्मक मूल्यांकनमें मदद करता है।

7. यहपाठ्यक्रम के क्रियान्वयन केरचनात्मक मूल्यांकन में मदद करता है।

8. यह विशेष शैक्षिक सेवाएं की निगरानी में मदद करता है।

9. इसका इस्तेमाल छात्र की पूरी विद्यालय शिक्षा के दौरान किया जा सकता है।

8.4.6 FACP – NIMHप्रोग्रामिंग फॉर फंक्शनल असेसमेंट चेकलिस्ट /Functional Assessment Checklists forProgramming

FACP-NIMH/कार्यक्रम के लिए कार्यात्मक आकलन चेकलिस्ट

प्रोग्रामिंग के लिए फंक्शनल असेसमेंट चेकलिस्ट (FACP-NIMH) को NIMH के विशेष शिक्षा विभाग में डॉ. जयंती नारायण की देखरेख में विकसित किया गया था। इसे इस बात को ध्यान में रखकर बनाया गया था कि इससे सही प्रोग्रामिंग हो सकेगी। इसमें प्रगति को मॉनिटर करने और कार्यक्रम में बदलाव करने के लिए समय-समय पर आकलन की सुविधा भी शामिल थी। यह छात्रों की प्रगति का मात्रात्मक (quantitative) और गुणात्मक (qualitative) माप भी प्रदान करता है। FACP के कई हिस्से हैं। ये हैं:

1. प्री-प्राइमरी।

2. प्राइमरी-I।

3. प्राइमरी-II।

4. सेकेंडरी।

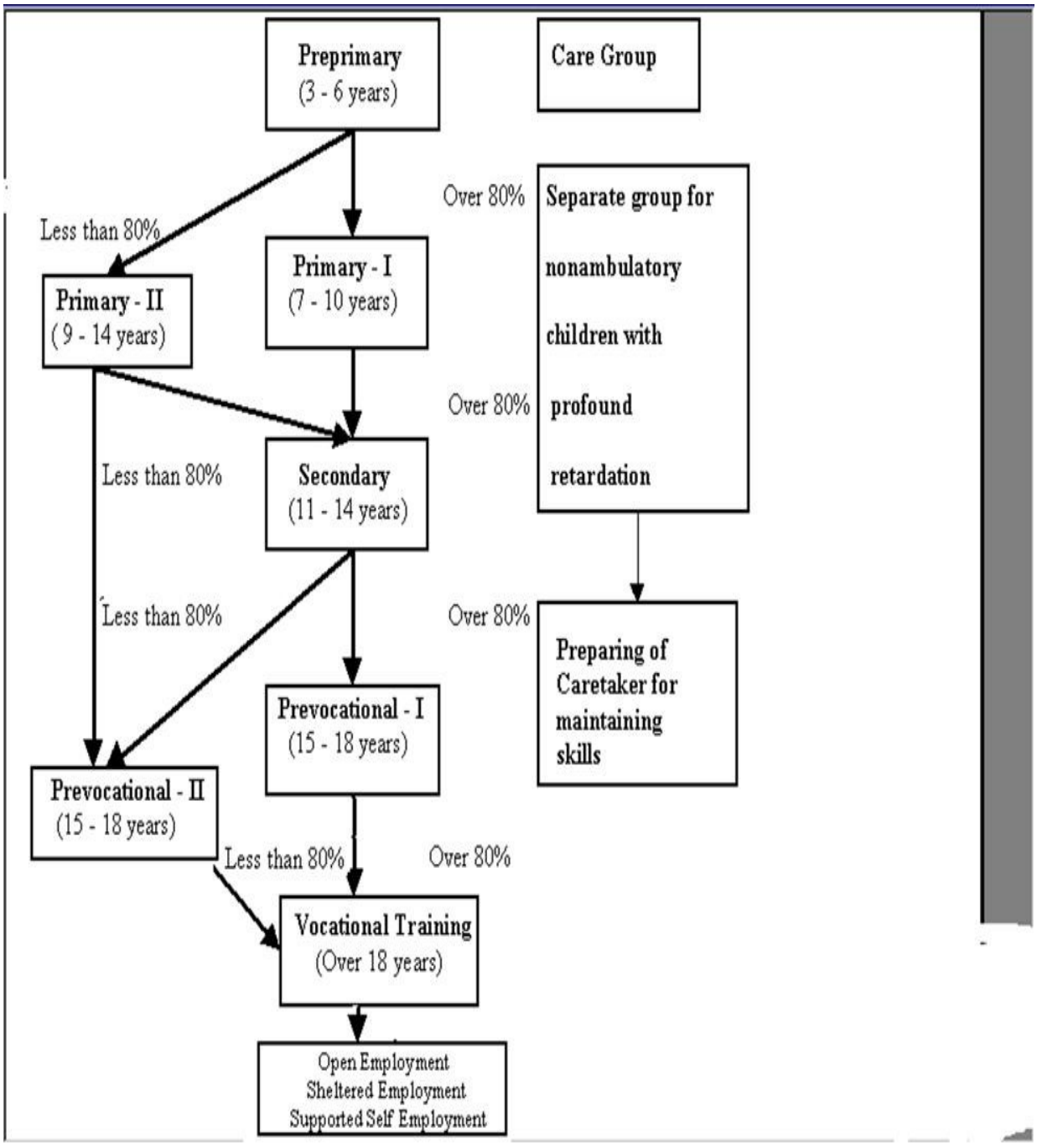
5. प्री-वोकेशनल-I।

6. प्री-वोकेशनल-II।

7. केयर ग्रुप।

इस चेकलिस्ट का प्रयोगबौद्धिक अक्षमता से प्रभावित बच्चों के लिए विशेष विद्यालय में पाठ्यक्रम को लागू करने के उद्देश्य से की जाती है। अलग-अलगकक्षा के लिए अलग-अलग चेकलिस्ट बनाई गई हैं। किसी खास चेकलिस्ट में उस कक्षा के लिए ज़रूरी कम से कम कौशल और चेकलिस्ट के हर क्षेत्र के लिए ज़रूरी पद शामिल करने की गुंजाइश होती है। कौन से पद शामिल करने हैंयह आकलन में शामिल विशेष शिक्षक तय करताहै। यह छात्र की ज़रूरत और उसके सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अनुसार किया जाता है। किसी खास कक्षा में तय परीक्षण पूरी होने के बादप्रोन्नति का फ़ैसला लिया जाता है।प्रोन्नति की प्रक्रिया आकलन के ज़रिए आसानी से की जा सकती है। किसी खास ग्रुप में तय किए गए 80 प्रतिशत से ज़्यादा कार्य पूरे करने के बाद छात्र को अगली कक्षा में प्रोन्नति किया जा सकता है।

प्रोन्नतिकी प्रक्रिया



हर चेकलिस्ट में 5 क्षेत्र (डोमेन) होते हैं। ये हैं

1. व्यक्तिगत।

2. सामाजिक।

3. शैक्षणिक।

4. व्यावसायिक।

5. मनोरंजक।

चेकलिस्ट का इस्तेमाल

हर पद (item) पर छात्र के प्रदर्शन को नोट किया जाना चाहिए। छात्र के प्रदर्शन के बारे में जानकारी गतिविधियों के ज़रिए देखकर, माता-पिता, देखभाल करने वालों और पिछले रिकॉर्ड से इकट्ठा की जा सकती है। प्रदर्शन को नीचे दिए गए कोड के रूप में रिकॉर्ड किया जा सकता है:

छात्रों के प्रदर्शन को व्यक्तिगत, सामाजिक, शैक्षणिक और व्यावसायिक क्षेत्रों के आधार पर दर्ज करना।

प्रदर्शन	कोड	विवरण
हां	+	छात्र बिना किसी मदद के काम कर सकता है।
कभी-कभी होने वाले कारण	C	कभी कभी संकेत- जिनमें किसी काम को पूरा करने के लिए उन्हें सोचने की ज़रूरत होती है।

मौखिकसंकेत	VP	ट्रेनी को हर उप-कार्य बोलकर बताना जैसे हाथ धोना, 'साबुन उठाओ' लगाना वगैरह।
शारीरिक संकेत	PP	छात्र को काम पूरा करने में शारीरिक मदद करना।
नहीं	-	छात्र पूरी तरह से काम पर निर्भर होता है, इसलिए छात्र के लिए काम पूरी तरह से करना होता है।
कोई संपर्क नहीं	NE	सीखने के मौके की कमी।

मनोरंजक गतिविधियों का अंकन

कोड	विवरण
A	खुद पहल करता है और अच्छे से भाग लेता है।
B	जब कोई और पहल करता है, तब भाग लेता है।
C	खुद शामिल होता है लेकिन नियमों की जानकारी नहीं होती।
D	दिलचस्पी से देखता है।
E	कोई दिलचस्पी नहीं (उदासीन)
NE	कोई अनुभव नहीं

FACP की उपयोगिता

1. इसमें दी गई चीज़ों को समझना आसान है।

2. ज़रूरी गतिविधियों की सूची दी गई है।

3. किसी खासकक्षा के लिए ज़रूरी चीज़ों पर ध्यान देना होता है।

4. इसमें खास सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले छात्रों के लिए किसी खास क्षेत्र में ज़रूरी चीज़ों को शामिल करने की गुंजाइश है।

5. उनके प्रदर्शन को सही महत्व दिया जा सकता है।

6. इसमें निगरानी और मूल्यांकन की गुंजाइश है।

7. इसका इस्तेमाल पाठ्यक्रम को लागू करने और प्रोन्नति के लिए संदर्भ (Reference) के तौर पर किया जा सकता है।

अभ्यास प्रश्न

1- बौद्धिक अक्षमता से प्रभावित बच्चों के शैक्षिक आकलन का प्राथमिक उद्देश्य क्या होना चाहिए?

A.छात्रों की तुलना करना

B.IEP के लिए आधार तैयार करना

C.छात्रों को ग्रेड प्रदान करना

D.पाठ्यक्रम को कठिन बनाना

2- बौद्धिक अक्षमता से प्रभावित बच्चों के सामाजिक और व्यावहारिक कौशल को मापने के लिए किस उपकरण का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है?

A.शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण

B.VSMS (वाइनलैंड सोशल मैच्योरिटी स्केल)

C.बुद्धि लब्धि (IQ) परीक्षण

D.विजुअल मोटर गेस्टाल्ट परीक्षण

3- FACP (Functional Assessment Checklist for Programming) का उपयोग किस स्तर के बच्चों के लिए किया जाता है?

A.प्रतिभाशाली बच्चों के लिए

B.व्यस्क साक्षरता कार्यक्रमों के लिए

C.बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों के लिए

D.केवल सुनने की अक्षमता वालों के लिए

8.5 व्यावसायिक आकलन / Vocational assessment

बौद्धिक अक्षमता से प्रभावित लोगों के पुनर्वास के लिए व्यावसायिक आकलन बहुत महत्वपूर्ण है। व्यावसायिक आकलन और जांच पुनर्वास के लिए पात्रता तय करने में अहम भूमिका निभाते हैं और इसलिए ये व्यावसायिक पुनर्वास का एक ज़रूरी हिस्सा हैं।

परिभाषा

व्यावसायिक आकलन को मोटे तौर पर "सही परीक्षण के फैसले लेने के लिए किसी कर्मचारी के कौशल और प्रदर्शन के बारे में जानकारी पाने की प्रक्रिया (बेलामी, हॉर्नर और इनामन, 1979) के तौर पर बताया जा सकता है।

व्यावसायिक आकलन एक पूरी प्रक्रिया है जो व्यवस्थित तरीके से काम, असली या नकली, को आकलन और व्यावसायिक खोज के लिए मुख्य केंद्र के तौर पर इस्तेमाल करती है, जिसका मकसद लोगों को व्यावसायिक विकास में मदद करना है।

व्यावसायिक आकलन में व्यावसायिक प्रशिक्षण और पुनर्वास के लिए लक्ष्य चुनने हेतु चिकित्सीय, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, शैक्षिक, व्यावसायिक, सांस्कृतिक और आर्थिक आकड़ें शामिल होता है।

व्यावसायिक आकलन के उदेश्य

व्यावसायिक आकलन का मुख्य मकसद आकलन में मदद करना है किसी व्यक्ति के कौशल और क्षमताओं का आकलन करना और भविष्य के व्यावसायिक कार्यक्रमों के लिए उनकी खूबियों और कमियों की पहचान करना।

व्यावसायिक आकलन में चार मुख्य बातों पर ध्यान देने की ज़रूरत होती है,जैसे:

1. सेवाओं के लिए पात्रता,

2. व्यावसायिक क्षमता, जिसमें बौद्धिक क्षमता, शैक्षणिक उपलब्धि, रुझान और रुचियों का आकलन शामिल है,

3. सामाजिक अनुकूलन और मनोवैज्ञानिक व भावनात्मक कामकाज का स्तरऔर

4. ऐसी समस्याओं के प्रमाण जिनके लिए हस्तक्षेप या मदद की ज़रूरत हो।

व्यावसायिक आकलन के कुछ महत्वपूर्ण सिद्धांतों में शामिल हैं:

1. व्यावसायिक आकलन पर्यावरण या परिवेश से जुड़ा होना चाहिए। आकलन करते समय, मापी जा रही काम से जुड़ी क्षमताओं और कौशलों का अन्य संबंधित कारकों के संदर्भ में संबंध ध्यान में रखा जाना चाहिए। व्यावसायिक आकलन प्रारूप में चार मुख्य घटक शामिल होने चाहिए व्यक्ति, महत्वपूर्ण अन्य लोग (जैसे परिवार या दोस्त), भौतिक वातावरण और सांस्कृतिक कारक।

2. व्यावसायिक आकलन ऐसी जगहों पर किया जाना चाहिए जहाँ काम की स्थिति में स्वाभाविक रूप से मिलने वाले पर्यावरणीय संकेतों के आधार पर व्यक्ति की प्रतिक्रिया का आकलन किया जा सके।

3. आकलन के तरीकों में 'प्रेडिक्टिव वैलिडिटी' (भविष्यवाणी करने की क्षमता) होनी चाहिए, ताकि यह पता चल सके कि व्यक्ति संभावित काम के माहौल में किसी गतिविधि को लगभग हर बार कितनी अच्छी तरह कर सकता है।

4. व्यावसायिक आकलन में मात्रात्मक (quantitative) और गुणात्मक (qualitative) दोनों तरह के घटक शामिल होने चाहिए। मात्रात्मक आकड़ों में वस्तुनिष्ठ (objective) माप शामिल होते हैंजबकि गुणात्मक आकड़ों कम वस्तुनिष्ठ हो सकते हैंलेकिन अवलोकनमाता-पिता से मिली जानकारी और नियोक्ताओं (employers) से मिले प्रतिपुष्टि के ज़रिए उपयोगी जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

5. व्यावसायिक आकलन में वर्तमान और भविष्य के काम के माहौल में नौकरी मिलने के अवसरों को ध्यान में रखा जाना चाहिए। आकलन के तरीकों में ऐसी क्षमताओं को शामिल किया जाना चाहिए जो समुदाय में रोज़गार की स्थितियों में सफलतापूर्वक काम करने के लिए ज़रूरी हैं।

6. व्यावसायिक आकलन का ध्यान काम से जुड़े उन कौशलों और व्यवहारों पर होना चाहिए जो रोज़गार के अवसरों में बाधा डाल सकते हैं। विकलांग व्यक्ति अक्सर आकलन काम के कार्यों को करने में असमर्थता के बजाय व्यवहार में काम से जुड़ी कमियों के कारण बेरोज़गार रहते हैं। संवेदनशील आकलन उपकरणों को काम से जुड़े व्यवहारों का आकलन

करना चाहिएजैसे सह-कर्मियों के साथ बातचीत और सामान्य व्यक्तित्व विशेषताएँजो नौकरी बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण संकेतक हैं।

7. जैसे-जैसे व्यक्ति लाभकारी रोज़गार के लिए तैयारी करता है, व्यावसायिक आकलन को सामान्य (global) से विशिष्ट (specific) उपायों की ओर बढ़ना चाहिए। प्रारंभ मेंव्यक्ति की व्यावसायिक क्षमताओं के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए मानदंड-आधारित आकलन किया जाना चाहिए। इसके बादरचनात्मक आकलन व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम से संबंधित जानकारी पर केंद्रित होना चाहिए। अंतिम चरण में कार्यस्थल पर आकलन शामिल है।

व्यावसायिक आकलन के तरीके या प्रकार

आकलन के दो तरीके प्रचलित हैं पारंपरिक और समकालीन दृष्टिकोण के तरीके। पारंपरिक रूप सेव्यावसायिक क्षमता का प्रोफ़ाइल प्राप्त करने के लिए व्यावसायिक आकलन में मानक तकनीकों—जैसे कि बुद्धि परीक्षण, अभिक्षमता माप, रुचि सूचियाँ और मानक-संदर्भित उपकरण—पर निर्भर रहा जाता था। हाल के वर्षों में आकलन और प्रशिक्षण गतिविधियों के बीच एक करीबी और परस्पर संवादात्मक संबंध बनाने की चिंता के कारण आकलन के आधुनिक तरीकों की ओर झुकाव बढ़ा है। ये तरीके मुख्य रूप से स्थिति-आधारित आकलन, पारिस्थितिक इन्वेंट्री और मानदंड-आधारित माप उपायों पर निर्भर करते हैं।आमतौर पर, पारंपरिक आकलन का तरीका व्यावसायिक सेवा और प्रशिक्षण के लए योग्यता तय करने में इस्तेमाल किया जाता हैजबकि आजकल का आकलन व्यावसायिक योजना और कार्यस्थल पर आकलन में उपयोगी है।

व्यावसायिक आकलन का पारंपरिक तरीका

व्यावसायिक आकलन के पारंपरिक तरीकों में मुख्य रूप से मनोवैज्ञानिक मापन तकनीकें, मनोगत्यात्मक कौशल का आकलन और कार्य के नमूने शामिल हैं। बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्तियों के प्रदर्शन का अनुमान लगाने करने के लिए विभिन्न मनोवैज्ञानिक कारकों—जैसे बुद्धिमत्ता, व्यावसायिक योग्यता और व्यावसायिक रुचि का उपयोग किया गया है।

'वर्क सैंपल अप्रोच' व्यावसायिक आकलन में इस्तेमाल की जाने वाली सबसे लोकप्रिय व्यावसायिक रणनीति है। वर्क सैंपल का मतलब किसी वास्तविक स्थिति या पेशे की गतिविधि और अन्य ज़रूरतों का सैंपल लेना है (राइट, 1980)। व्यावसायिक आकलन के लिए वर्क सैंपल में जिन उपकरणों की सिफारिश की जाती हैवे अच्छी तरह से परिभाषित कार्य गतिविधि से जुड़े होते हैंजिनमें ऐसे काम, सामग्री और उपकरण शामिल होते हैं जो असल नौकरी या नौकरियों के समूह में इस्तेमाल होने वाले उपकरणों जैसे ही या मिलते-जुलते होते हैं। अन्य कौशल जिनका आकलन किया जाता है, उनमें गिनती करना, मापना और पढ़ना शामिल है। कुछ लोकप्रियकार्य नमूना(Work Sample) में मैकेरन-डायल वर्क इवैल्यूएशन सिस्टम, JEVS वर्क सैंपल, टॉवर सिस्टम और वोकेशनलइन्फॉर्मेशन और इवैल्यूएशन कार्य नमूना शामिल हैं। कार्य-नमूना कार्यप्रणाली का इस्तेमाल करने के कुछ फायदे हैंजैसे

1. ये असल ज़िंदगी की काम की स्थितियों के करीब होते हैं।

2. ये कार्यकर्ता की विशेषताओं का आकलन करते हैंजैसे निर्देशों का पालन करना उपकरण का इस्तेमाल और काम से जुड़े व्यवहार।

3. ये काफी हद तक निष्पक्ष होते हैं।

व्यावसायिक आकलन का समकालीन दृष्टिकोण

बौद्धिक रूप से अक्षम लोगों के व्यावसायिक आकलन के आधुनिक तरीकों में तीन नए विकसित क्षेत्र शामिल हैं। ये हैं: अनुकूलनशील व्यवहार (adaptive behaviour) का आकलन, जीवन-निर्वाह कौशल (survival skills) और प्रक्रिया-आधारित आकलन का तरीका।

अनुकूलनशील व्यवहार का मतलब है अलग-अलग सामाजिक स्थितियों में सही व्यवहार करना। AAMD "अनुकूलनशील व्यवहार" को इस तरह परिभाषित करता है: "वह प्रभावशीलता या स्तर जिसके द्वारा कोई व्यक्ति अपनी उम्र और सांस्कृतिक समूह के हिसाब से व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामाजिक जिम्मेदारी के मानकों को पूरा करता है।"

सबसे ज़्यादा इस्तेमाल किए जाने वाले अनुकूलनशील व्यवहार आकलन उपकरण हैं: AAMD एडेप्टिव बिहेवियर स्केल, वाइनलैंड एडेप्टिव बिहेवियर स्केल, सैन फ्रांसिस्को वोकेशनल कॉम्पिटेंसी स्केल, और वोकेशनल बिहेवियर चेकलिस्ट।

जीवन-निर्वाह कौशल का मतलब उन व्यावसायिक और सामाजिक व्यवहारों से है जो नौकरी पाने और उसे बनाए रखने में मदद करते हैं। अभी इस्तेमाल किए जा रहे व्यावसायिक आकलन उपकरणों में 'वोकेशनल असेसमेंट एंड करिकुलम गाइड' और 'वोकेशनल प्रॉब्लम बिहेवियर इन्वेंट्री' शामिल हैं।

प्रक्रिया-आधारित तरीका (process approach) असल क्षमताओं के सीधे आकलन पर ज़ोर देता हैजबकि उत्पाद-आधारित तरीका (product approach) प्रदर्शन का अंदाज़ा लगाने के लिए मापदंडों पर निर्भर करता है। प्रक्रिया-आधारित मूल्यांकन में मुख्य रूप से दो तरीके शामिल हैं सीखने की क्षमता का आकलन (learning potential assessment) और व्यवहार का कार्यात्मक विश्लेषण (functional analysis of behaviour)। इसलिए, जीवन-निर्वाह कौशल और सामाजिक क्षमता के आकलन के साथ प्रक्रिया-आधारित आकलन का तरीका, व्यावसायिक आकलन और व्यावसायिक प्रशिक्षण के बीच एक कार्यात्मक संबंध बनाता है। पारंपरिक और आधुनिकदोनों तरह के आकलन तरीके व्यावसायिक पुनर्वास में निर्णय लेने के लिए मूल्यवान जानकारी देते है

व्यावसायिक आकलन के क्षेत्र

बौद्धिक रूप से अक्षम लोगों के व्यावसायिक आकलन के लिए कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रों का प्रयोग एक ढांचे के तौर पर किया जा सकता है। इनमें सामान्य बौद्धिक क्षमता, कौशल का स्तर, भाषा और बातचीत, अनुकूल व्यवहार, रोज़मर्रा की ज़िंदगी के कौशल, सामाजिक क्षमता, आत्मनिर्भरता का स्तर और समाज में घुलने-मिलने का स्तर शामिल हैं। इन पैमानों को सही आकलन तकनीकों का इस्तेमाल करके मापा जा सकता है। इससे व्यावसायिक योजना बनाने, प्रगति पर नज़र रखने और कार्यक्रम की प्रभावशीलता का आकलन करने में मदद मिलेगी। काम में रुचि और योग्यता के बारे में जानकारी से किसी

व्यक्ति को ऐसी नौकरी दिलाने में मदद मिल सकती है जो न सिर्फ़ मुमकिन हो, बल्कि कर्मचारी की रुचि के भी अनुकूल हो। इस तरह, व्यावसायिक आकलन कौशल के स्तर और नौकरी की ज़रूरतों के बीच के तालमेल को ध्यान में रख सकता है, जिससे व्यावसायिक प्रशिक्षण और व्यावसायिक पुनर्वास के बारे में और जानकारी मिल सकती है।

8.6 आकलन (Assessment) के लिए परीक्षण और तकनीकें

आकलन एक ऐसा तरीका है जिसमें अलग-अलग क्षेत्रों में किसी व्यक्ति की क्षमता और व्यवहार का आकलन या जांच करने के लिए कई तरह की तकनीकों और आकलन उपकरण का इस्तेमाल किया जाता है। अलग-अलग क्षेत्रों में इस्तेमाल होने वाली आम आकलन तकनीकें ये हैं

सामाजिक कार्यकर्ता द्वारा मनो-सामाजिक जांच

सामाजिक कार्यकर्तामाता-पिता और परिवार के सदस्यों से व्यक्ति पृष्ठभूमि की पूरी जानकारी लेता है। सामाजिक कार्यकर्ता जानकारी इकट्ठा करने के लिए घर का दौरा भी करता हैजिससे मनोसामाजिक निदान में मदद मिलती है और व्यक्ति और उसके परिवार के सदस्यों के बीच आपसी बातचीत, व्यक्ति से परिवार की उम्मीदों, मूल्यों, मान्यताओं और बातचीत के तरीकों का पता चलता है। ऊपर दी गई जानकारी व्यक्ति के लिए प्रशिक्षण और काम (वोकेशन) चुनने में मदद करती है।

मनोवैज्ञानिक जांच

मनोवैज्ञानिक व्यक्ति की सोचने-समझने की क्षमता, दृश्य गत्यात्मक क्षमता (विज़ुओ-मोटर फंक्शनिंग), खुद के बारे में सोच, भावनाओं और दूसरों के साथ रिश्तों के बारे में जानकारी पाने के लिए कई तरह के मानक परीक्षण का इस्तेमाल करते हैं। जैसे- स्टैनफोर्ड-बिनेट इंटेलिजेंस टेस्ट, बेंडर गेस्टाल्ट टेस्ट, ड्रॉ-अ-पर्सन टेस्ट और थीमैटिक एपर्सेप्शन टेस्ट।

व्यावसायिक परीक्षण

व्यावसायिक परीक्षण कई तरह की जाँच तकनीकों और तरीकों का इस्तेमाल करते हैं ताकि किसी व्यक्ति के स्वतंत्र रूप से काम करने, शारीरिक अक्षमता, काम करने की क्षमता, निजी-सामाजिक कार्योंऔरइंद्रियों और गति व समझ और गति कामकाज के बारे में जानकारी मिल सके। व्यावसायिक थेरेपिस्टकाम के नमूने की जाँच के तरीके का इस्तेमाल करके यह पता लगाते हैं कि कोई व्यक्ति कार्यस्थल के माहौल में काम करने में कितना सक्षम है।वर्क-सैंपलिंग तरीका वह है जिसमें व्यावसायिक थेरेपिस्ट कार्यस्थल में ही काम का माहौल बनाते हैं और फिर व्यक्ति को उस माहौल में रखकर उसकी जाँच करते हैं।

ऑक्यूपेशनल थेरेपिस्ट 'वर्कशॉप ऑब्जर्वेशन स्केल' (जिसे अहमदाबाद के B.M. इंस्टीट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ ने गुडविल इंडस्ट्रीज की 'सुपरवाइजरी ऑब्जर्वेशन गाइड' से अपनाया है) का भी इस्तेमाल करते हैं। इससे व्यक्ति के काम के प्रति नजरिए, काम की गुणवत्ता, सुपरवाइजर और साथ काम करने वालों के प्रति प्रतिक्रिया, व्यक्तित्व की विशेषताओं और सामान्य व्यवहार के बारे में जानकारी मिलती है।

अवलोकन-आधारित आकलन

अवलोकन आकलन का एक व्यापक रूप से इस्तेमाल किया जाने वाला तरीका है। कक्षा में छात्र के व्यवहार का व्यवस्थित अवलोकन बहुत सारी जानकारी देता हैजो इन कामों में मदद करता है

1. शिक्षण कार्यक्रमों को तय करने और उनका आकलन करने में अवलोकन से मिले आकड़ों को उपयोगी बनाना।

2. शैक्षणिक और गैर-शैक्षणिक गतिविधियों में व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रम (IEP) विकसित करना और उनकी निगरानी करना।

अवलोकन की तकनीकें

1. अवलोकन की तकनीकों को औपचारिक या अनौपचारिक के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है।

2. औपचारिक तरीकों में एक अवलोकन पैकेज शामिल होता है जिसमें आमतौर पर विशिष्ट कोडिंग और अंकन व्यवस्था होते हैं।

3. अनौपचारिक तरीकों में व्यवस्था के बाहर से पर्यवेक्षक द्वारा अवलोकन और व्यवस्था में मौजूद न होने वाले पर्यवेक्षक द्वारा अवलोकन शामिल है। इस प्रकार के अनौपचारिक तरीके विशेष रूप से तब प्रासंगिक होते हैं जब छात्र के व्यवहार का अवलोकन किया जा रहा हो।

विशेष शिक्षा के तहत आकलन

विशेष शिक्षक द्वारा की जाने वाली विशेष शिक्षा आकलन में पढ़ने, लिखने, हिसाब-किताब (गणित), सामान्य ज्ञान, व्यक्ति की अपने आस-पास के माहौल से समझ, समय और पैसे की समझ, और भाषा की क्षमता जैसे कौशल का आकलन शामिल होता है।

इसके अलावा और भी कई आकलन और जाँच के तरीके हैं, जैसे

1.अनुकूलन व्यवहार पैमाना: यह पैमाना 'अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ मेंटल डेफिशिएंसी' ने बनाया है। अहमदाबाद के B.M. इंस्टीट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ ने भारतीय लोगों के हिसाब से इसमें कुछ बदलाव किए हैं। यह पैमाना निजी-सामाजिक अनुकूलन के बारे में जानकारी देता है और व्यक्ति के गलत व्यवहार (जो माहौल के अनुकूल न हो) को बताता है। यह पैमाना लगातार होने वाली जाँच की सुविधा देता है, जो व्यक्ति की आगे की परीक्षण के लिए गाइडलाइन बन सकता है।

2. पूर्वव्यवसायिक और पाठ्यक्रम गाइड: यह पैमाना भी 'एडेप्टिव बिहेवियर स्केल' जैसा ही है, यानी यह भी व्यक्ति की लगातार होने वाली आकलन की जानकारी देता है। इसे 1978 में मिथन, मार और स्टीवर्ट ने बनाया था। यह पैमाना उपस्थिति/सहनशक्ति, व्यक्ति की आत्मनिर्भरता, उत्पादन, सीखने का व्यवहार, बातचीत के कौशल और सामाजिक कौशल के बारे में जानकारी देता है।

3. काम का विश्लेषण करने का तरीका: यह वह तरीका है जिसमें किसी खास काम का विश्लेषण शैक्षणिक कौशल, काम से जुड़े कौशल और व्यवहार से जुड़े कौशल के आधार पर किया जाता है। इसमें किसी खास व्यक्ति की जाँच की जाती है। निम्नकौशलों और ज़रूरतों के आधार पर, व्यक्तियों की क्षमताओं और कमियों के बारे में जानकारी इकट्ठा की जाती है।

सिलाई के काम के लिए: माप (measurement) की जानकारी होनी चाहिए, सुरक्षा की समझ होनी चाहिए, सिलाई के दौरान योजना बनाने की क्षमता होनी चाहिए, निर्देशों को समझने की क्षमता होनी चाहिए, आदि।

काम से जुड़ी स्किल्स: आँखों और हाथों का तालमेल (eye-hand coordination), कपड़े मोड़ना, सिलाई मशीन का बेसिक कामकाज, धूल और रेशे (lint) हटाना, मशीन की ऑयलिंग/लुब्रिकेशन, गति (speed) पर नियंत्रण और बैठने का सही तरीका (posture), धागे का तनाव (tension) बनाए रखना, सही सुई चुनना, धागा डालना, बॉबिन लगाना, मशीन से सिलाई और हाथ से सिलाई करना।

व्यवहार से जुड़ी स्किल्स: अच्छा ध्यान और एकाग्रता, निराशा को संभालने की क्षमता (frustration tolerance), अच्छे आपसी संबंध (inter-personal relationships), आदि।

व्यावसायिक आकलन पैकेज सरल, आसान और किफायती होना चाहिए। आमतौर पर भारतीय संदर्भ में VAPS का इस्तेमाल करते हैंजो बौद्धिक रूप से अक्षम लोगों के लिए है।व्यावसायिक आकलन और कार्यक्रम प्रणाली' (Vocational Assessment and Programming System')

NIMH-बौद्धिक रूप से अक्षम लोगों के लिए व्यावसायिक आकलन और कार्यक्रम प्रणाली' VAPS

यह पैमाना (scale) 1998 में NIMH में सुश्री ए.टी. थ्रेसिया कुट्टी की देखरेख में विकसित किया गया था। यह पैमाने बौद्धिक रूप से अक्षम वयस्कों की सामान्य क्षमता, व्यावसायिक क्षमता और काम के दौरान उनके व्यवहार का आकलन करने के लिए बनाया गया है। इसका उद्देश्य बौद्धिक अक्षमता (ID) वाले वयस्क की व्यावसायिक क्षमता का आकलन करना और व्यावसायिक प्रशिक्षण की योजना बनाने और उसे लागू करने में मदद करना है। यह काम के लिए ज़रूरी कौशल के बारे में जानकारी देता है और समुदाय में उपयुक्त नौकरियों की पहचान करने में मदद करता है।

यह व्यावसायिक प्रशिक्षण के रचनात्मक (प्रशिक्षण के दौरान) और योगात्मक (प्रशिक्षण के बाद) आकलन के लिए भी उपयोगी है। इसका इस्तेमाल संस्थान में प्रशिक्षण व्यवस्था, शेल्टर वर्कशॉप, कार्यशाला या नौकरी के प्रशिक्षण के दौरान खुली रोजगार प्रणाली(Open Employment System) में किया जा सकता है।

विवरण

इस पैमाने को मुख्य रूप से 4 भागों में बांटा गया है:

1. व्यावसायिक प्रोफ़ाइल।

2. सामान्य कौशल आकलन चेकलिस्ट।

3. कार्य विश्लेषण प्रारूप।

4. कार्य व्यवहार आकलन चेकलिस्ट।

सामान्य कौशल आकलन चेकलिस्ट/Generic Skills Assessment Checklist

व्यक्तिगत	04
संचार	05
सामाजिक व्यवहार	10
व्यावहारिक शैक्षणिक कौशल	30
सुरक्षा कौशल	07
घरेलू व्यवहार	13
आवागमन और हाथों का कामकाज	05
व्यावसायिक कौशल	06
कुल	80

कार्य विश्लेषण प्रारूप/Job Analysis Format

काम का मुख्य क्षेत्र।

अतिरिक्त ज़िम्मेदारियाँ।

काम से जुड़ी स्किल्स।

व्यक्तिगत जानकारी।

शिक्षा।

मनोरंजन।

स्वतंत्र रूप से रहने की स्किल्स।

काम के दौरान व्यवहार/Work Behaviour

रोजगार की ज़रूरतें।

रोजगारप्रशिक्षण की प्रक्रियाएँ।

प्रशिक्षुक की ज़िम्मेदारियाँ।

माता-पिता का सहयोग।

काम के व्यवहार का आकलन करने वाली चेकलिस्ट/Work Behaviour-Assessment Checklist

- शारीरिक दिखावट।
- लोगों से बातचीत/व्यवहार।
- नियमितता और समय की पाबंदी।
- बातचीत/सामाजिक तौर-तरीके।
- काम की क्वालिटी और मात्रा।

अंक प्रणाली (Scoring System)

प्रशिक्षुक द्वारा हर काम के प्रदर्शन को देखना होगा और नीचे दिए गए निर्देशों के अनुसार हर काम के लिए कोड देने होंगे:

विवरण	कोड
हमेशा	3
ध्यान देना	2
कभी-कभी	1
कभी नहीं	0

उपयोग

- चुने गए कामों के बारे में जानकारी देता है।
- उन क्षेत्रों की पहचान करता है जिनमें प्रशिक्षण की ज़रूरत है।
- काम के दौरान प्रशिक्षण पर ज़ोर देता है।
- काम से जुड़े कौशल और काम के व्यवहार का आकलन करता है।
- आकलन किए गए सभी प्रशिक्षुक के लिए रोज़गार का लक्ष्य रखता है।
- नौकरी बनाए रखने में मदद करता है।

8.7 अन्य संबंधित उपकरण /Other relevant tools

ग्रेड लेवल असेसमेंट डिवाइस (Grade Level Assessment Device - GLAD)

विशेष शिक्षा (Special Education) और समावेशी शिक्षा में उपयोग किया जाने वाला एक महत्वपूर्ण आकलन उपकरण है। इसे डॉ. जयंती नारायण द्वारा 1997 में राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान (NIMH, अब NIEPID, सिकंदराबाद) में विकसित किया गया था। इसका मुख्य उद्देश्य सामान्य प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ रहे बच्चों की सीखने की कठिनाइयों (Learning Problems/Disabilities) की पहचान करना और उनके वास्तविक कक्षा-स्तर (Grade Level) का पता लगाना है। यह बच्चे को उपचारात्मक शिक्षण (remedial teaching) के लिए रेफर करने में मदद करता है। इसका प्रयोग कक्षा I से IV तक के बच्चों के लिए किया जा सकता है। इस परीक्षण के दो प्रारूप हैं। प्रारूप I में कक्षा I से IV तक के लिए हिंदी, अंग्रेजी और गणित की वर्कशीट के रूप में परीक्षण बुकलेट होती हैं। इसमें सवालों के मौखिक और लिखित जवाब देने होते हैं। प्रारूप II: इसका इस्तेमाल तब किया जाता है जब बच्चा प्रारूप I पर काम कर रहा हो और उसकी गतिविधियों को नोट करना हो। इसमें तीन भाग होते हैं। भाग -I में बच्चे की

निजी जानकारी, पारिवारिक इतिहास, स्कूल का इतिहास आदि शामिल होते हैं। भाग - II में टीचर को संवेदी-गतिक कौशल के बारे में जानकारी नोट करनी होती हैजो चिकित्सकीय रेफरल के लिए उपयोगी होगी। भाग-III में हर विषय से संभावित गलतियों का जिक्र होता है ताकि उन्हें नोट करने के बाद शिक्षक उन विषयों से जुड़ी प्रक्रिया संबंधित कमियों को समझ सके।

परीक्षण की विशेषताएं:

- प्राप्त जानकारी का इस्तेमाल पाठ्यक्रम के हिसाब से सीखने में आने वाली दिक्कतों को पहचानने के लिए किया जा सकता है।
- हिंदी, अंग्रेजी और गणित में ग्रेड लेवल का पता लगाना संभव हो पाता है।
- मिली जानकारी का इस्तेमाल प्राइमरी कक्षा स्तर में खास सीखने की दिक्कतों के निदान और प्रबंधन में किया जा सकता है।
- यह विश्वसनीय,वैध और इस्तेमाल करने और समझने में आसान है।

अंकन

70% से ज़्यादा- इंडिपेंडेंट लेवल

40% to 69% के मध्य - इंस्ट्रक्शन लेवल

40% से कम - फ्रस्ट्रेशन लेवल

NIMH वोकेशनल प्रोफ़ाइल और प्लेसमेंट चेकलिस्ट

यह चेकलिस्ट बौद्धिक अक्षम वयस्कों के लिए कार्यक्रम की योजना बनाने में मदद करने के लिए, नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर द मेंटली हैंडीकैप्ड, सिकंदराबाद के व्यवसायिक प्रशिक्षण विभाग द्वारा तैयार की गई है। इस प्रशिक्षण का हिंदी अनुवाद डिगदर्शिका इंस्टीट्यूट ऑफ़ रिसर्च एंड रिहैबिलिटेशनभोपाल ने किया है।

इस प्रशिक्षण के दो हिस्से हैं। पहले हिस्से में आठ भाग हैं। इस भाग में खुले सवालों (ओपन-एंडेड सवालों) के ज़रिए सामान्य तैयारी कौशल, खास कौशल, रोज़मर्रा की दिनचर्या का विवरण, रोज़गार के अनुभव, रोज़गार के संभावित विकल्प और मदद की ज़रूरत वाले क्षेत्रों के बारे में जानकारी ली जाती है।दूसरे भाग में व्यवसायिक प्लेसमेंट रेटिंग चेकलिस्ट है। इस चेकलिस्ट में 8 क्षेत्र शामिल हैं खुद की मदद (सेल्फ़-हेल्प), बातचीत (कम्युनिकेशन), सामाजिक व्यवहार,कार्यात्मक शिक्षा(फ़ंक्शनल एकेडमिक्स), सुरक्षा कौशल, घरेलू व्यवहार, गत्यात्मक मोटर और व्यावसायिक कौशल। चेकलिस्ट के हर क्षेत्र में शामिल पद (आइटम) की संख्या 4 से 30 के बीच है। चेकलिस्ट में कुल 97 पद (आइटम) हैं।

चेकलिस्ट के हर पद को एक वर्णनात्मक पैमाने (डिस्क्रिप्टिव स्केल) पर अंकन किया जाता है, जैसे: स्वतंत्र (1), संकेत की ज़रूरत (C), मौखिक संकेत की ज़रूरत (VP), शारीरिक संकेत की ज़रूरत (PP), पूरी तरह निर्भर (TD), और शारीरिक रूप से अक्षम (PT)। चेकलिस्ट में हर व्यक्ति का समय-समय पर तीन मौकों पर आकलन करने की भी सलाह दी गई है शुरुआती स्तर, समय-समय पर होने वाले (रचनात्मक आकलन) और अंतिम (योगात्मक आकलन) आकलन ।

वोकेशनल ट्रेनिंग स्कूल और रिहैबिलिटेशन सेंटर के लिए असेसमेंट और करिकुलम गाइडलाइंस

व्यावसायिक प्रशिक्षण विद्यालय और पुनर्वास केंद्र के लिए आकलन और पाठ्यक्रम संबंधी दिशानिर्देशइस परीक्षण को 1992 में जय वकील स्कूल के दिलीप कुरानी, लियोनामिरांडा, नीलेश शेन और टी.डी. श्रॉफ ने बनाया था। इस परीक्षण का मुख्य मकसद मानसिक रूप से अक्षम व्यक्ति की नौकरी पाने की तैयारी का आकलन करना है, ताकि उन्हें सफलतापूर्वक नौकरी मिल सके।इस परीक्षण में 6 मुख्य क्षेत्रों के तहत 93 पद(आइटम) शामिल हैं गत्यात्मक, खुद की देखभाल, मनो -सामाजिक, बातचीत, सोचने-समझने की क्षमता और व्यवसायिक हर क्षेत्र में पद की संख्या 7 से 22 के बीच

होती है। इस परीक्षण के दो हिस्से हैं। पहले हिस्से में 93 पद की एक रेटिंग चेकलिस्ट है। पद का एक वर्णनात्मक अंकन पद्धति पर आकलन किया जाता हैजिसमें 'स्वतंत्र' से लेकर 'शारीरिक रूप से अक्षम' तक के स्तर शामिल हैं। दूसरे हिस्से मेंचेकलिस्ट के हर पद को व्यवहार के 5 पैटर्न में बांटा गया है इनमें से उस एक विकल्प पर टिक किया जाता है जो उस व्यक्ति के व्यवहार से सबसे ज़्यादा मेल खाता है जिसका आकलन किया जा रहा है।यह व्यावसायिक अनुदेशक को मानसिक रूप से अक्षम वयस्कों के लिए कार्यक्रम की योजना बनाने में मदद करता है। इस पैमाने की विश्वसनीयता, वैधता और क्षेत्र-परीक्षण के बारे में जानकारी अभी तक उपलब्ध नहीं है।

BASAL-MR - Behavioural Assessment Scale for Adult Living-Mental Retardation (वयस्क जीवन के लिए व्यवहार आकलन पैमाना - मानसिक मंदता)।

रीता पेशवारिया, डी.के. मेनन, डॉन बेली और अन्य द्वारा यह पैमाना सिकंदराबाद में नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर द मेंटली हैंडीकैप्ड(वर्तमान NIEPID) में विकसित किया गया है। यह साधन 18 साल से ज़्यादा उम्र के बौद्धिक अक्षमता वाले वयस्कों के अनुकूलित (Adaptive) और समस्यात्मक (Maladaptive) व्यवहार का आकलन करने के लिए बनाया गया है।

BASAL-MR कौशल-संबंधी व्यवहारों और समस्या-संबंधी व्यवहारों का एक रूपरेखा देता हैजबकि समस्या-व्यवहार चेकलिस्ट का मकसद केवल बौद्धिक अक्षमता वाले वयस्क व्यक्ति के समस्या-संबंधी व्यवहारों को मापना है। यह साधन एक मानक आकलन साधन है और देश भर में इसका बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया जाता है।

BASAL-MR में ये क्षेत्र शामिल हैं:

हिस्सा: A

●व्यक्तिगत देखभाल

- खाने-पीने का प्रबंधन
- घर के काम और ज़िम्मेदारियाँ
- समुदाय और खाली समय की गतिविधियाँ
- सेक्स से जुड़ी बातें
- काम-काज
- रोज़मर्रा की ज़िंदगी में ज़रूरी पढ़ना-लिखना
- सामाजिक बातचीत/सम्प्रेषण

हिस्सा - B

- दूसरों को शारीरिक नुकसान पहुँचाना
- संपत्ति को नुकसान पहुँचाना
- दूसरों के साथ बुरा बर्ताव करना
- गुस्से में आपा खोना/गुस्से का दौरा पड़ना
- खुद को नुकसान पहुँचाने वाला व्यवहार
- बार-बार एक ही काम करना
- अजीब व्यवहार
- गलत सामाजिक व्यवहार
- गलत यौन व्यवहार
- बागी या विद्रोही व्यवहार
- बहुत ज़्यादा चंचलता/हाइपरएक्टिविटी
- डर

BASAL-MR (भाग-A) का अंकन

प्रतिक्रियाएँ	अंकन
लागू नहीं	0
पूरी तरह निर्भर	1
शारीरिक मदद	2
बोलकर मदद	3
संकेत/मॉडलिंग	4
स्वतंत्र	5

BASAL MR (भाग B) की स्कोरिंग

1. तीन-पॉइंट रेटिंग स्केल पर अंकन किया जाता हैं

a) अगर बताई गई समस्या वाला व्यवहार व्यक्ति में "कभी नहीं" देखा या बताया गया है, तो 0 स्कोर दें।

b) अगर बताई गई समस्या वाला व्यवहार कभी-कभी होता है, यानी कभी-कभार या बीच-बीच में, तो इसे "कभी-कभी" (Occasionally) माना जाता है और 1 स्कोर दिया जाता है।

c) अगर बताई गई समस्या वाला व्यवहार अक्सर या आदत के तौर पर होता है, तो इसे "अक्सर" (frequently) माना जाता है और 2 स्कोर दिया जाता है।

इस तरह, BASAL-MR (भाग B) के हर आइटम के लिए, बौद्धिक अक्षमता वाले वयस्क को उस समस्या वाले व्यवहार की बारंबारता (frequency) के आधार पर 0 से 2 के

बीच कोई भी स्कोर मिल सकता है। हर आइटम के लिए व्यक्ति को मिले सही स्कोर को संबंधित बॉक्स में लिखें।

2. BASAL-MR (भाग B) पर किसी व्यक्ति के लिए अधिकतम संभव स्कोर 240 है।

8.8 CAT-AID (बौद्धिक अक्षमता से प्रभावित वयस्कों के लिए व्यापक आकलन उपकरण- NIEPID)

परीक्षण का परिचय

"बौद्धिक अक्षमता वाले वयस्कों के लिए व्यापक आकलन परीक्षण (CAT-AID) एक मानक आकलन परीक्षण है। यह बौद्धिक अक्षमता वाले लोगों के लिए कौशल परीक्षण, रोज़गार पाने की क्षमता और स्वतंत्र जीवन जीने के लिए ज़रूरी कौशल, क्षमताओं, रुचियों और काम से जुड़ी योग्यताओं का व्यापक आकलन करता है। इस परीक्षण में वे सभी हिस्से शामिल हैं जो बौद्धिक अक्षमता वाले लोगों के लिए व्यावसायिक आकलन कार्यक्रम की योजना बनाने, कौशल परीक्षण नौकरी दिलाने और पुनर्वास में मदद करते हैं। यह परीक्षण 18 से 58 साल की उम्र के बौद्धिक अक्षमता वाले लोगों के लिए बनाया गया है।

इस परीक्षण में मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, शैक्षिक, शारीरिक और व्यावसायिक प्रशिक्षण से जुड़े पहलू/ज़रूरतें शामिल हैं। यह परीक्षण इन पहलुओं/ज़रूरतों पर ध्यान केंद्रित करता है क्योंकि ये लगातार विकसित और बदल रहे हैं, और वयस्कों के स्वतंत्र जीवन के लिए बुनियादी से लेकर व्यापक स्तर तक इनकी आवश्यकता होती है।

"बौद्धिक अक्षमता वाले वयस्कों के लिए व्यापक आकलन परीक्षण को विभिन्न नौकरी क्षेत्रों के लिए क्षमताओं, रुझानों, कौशल और कार्य-दक्षताओं का आकलन करने के लिए विकसित किया गया है।

इस परीक्षण के 3 हिस्से हैं:

भाग-A में 8 क्षेत्र हैं जो मुख्य आकलन मानदंड बनाते हैं। इनमें व्यक्तिगत देखभाल, सम्प्रेषण, सामाजिक-भावनात्मक परिपक्वता, संज्ञानात्मक -गत्यनात्मक, काम से जुड़ी पढ़ाई-लिखाई, यौन शिक्षा और खुद के लिए आवाज़ उठाने (सेल्फ-एडवोकेसी) के कौशल से जुड़े सवाल/बिंदु शामिल हैं।

भाग-B में 2 हिस्से हैं जिनमें व्यावसायिक क्षमता और व्यावसायिक रुचियों से जुड़े बयान और काम के व्यवहार की चेकलिस्ट शामिल है।

भाग-C में 2 हिस्से हैं जिनमें बौद्धिक अक्षमता वाले वयस्कों के लिए NSQF स्तर के साथ SCPWD द्वारा मंज़ूर कार्य भूमिकाएँ की सूची और अलग-अलग सेक्टर में विभिन्न उत्पादों के लिए जॉब एड्स (काम में मदद करने वाली चीज़ों) की सूची शामिल है।

परीक्षण की उपयोगिता

यह किसके लिए उपयोगी है:

- सफल व्यावसायिक प्रशिक्षण और स्वतंत्र जीवन जीने के लिए बौद्धिक अक्षमता वाले वयस्क।
- व्यावसायिक पुनर्वास के क्षेत्र में काम करने वाले पेशेवर, जिनमें व्यावसायिक प्रशिक्षक भी शामिल हैं।
- बौद्धिक अक्षमता वाले वयस्कों के लिए नौकरी के अवसर देने वाले नियोक्ता

यह कब उपयोगी होगा:

- प्री-वोकेशनल (काम-पूर्व) से वोकेशनल (काम-संबंधी) स्तर पर और कौशल प्रशिक्षण से रोज़गार तक के बदलाव के दौरान

- 18 साल और उससे ज़्यादा उम्र के बौद्धिक अक्षमता वाले लोगों के लिए व्यावसायिक आकलन, प्रशिक्षण और प्लेसमेंट सेवाओं के लिए रेफरल

आवेदन कहाँ किया जा सकता है:

- **व्यावसायिक पुनर्वास केंद्रों में प्रशिक्षण के लिए पात्रता निर्धारण**
- **कार्यस्थल पर आवश्यक सुविधाएं प्रदान करना**
- **रोजगार आरक्षण**
- **सामाजिक और वित्तीय लाभ**
- **सुविधाओं और कार्यस्थल समायोजन से संबंधित कानूनी मुद्दों का समाधान**

इस परीक्षण का इस्तेमाल कैसे किया जाएगा:

- कौशल, क्षमताओं, रुझानों और रुचियों का आकलन करने के लिए
- काम के माहौल में कमियों का आकलन करने के लिए
- काम/ट्रेड की उपयुक्तता तय करने के लिए
- काम के माहौल को फिर से व्यवस्थित करने के लिए
- बेहतर रोज़गार नतीजों के लिए काम के प्रदर्शन को आसान बनाने के लिए
- नौकरी मिलने और काम की जगह तक पहुँचने में आने वाली बाधाओं को दूर करने के लिए
- सरकारी और निजी दोनों क्षेत्रों में दिव्यांग-अनुकूल काम का माहौल बनाने के लिए
- नौकरी के लिए चयन का क्रम तय करने के लिए
- व्यावहारिक रूप से सही प्लेसमेंट का फ़ैसला लेने के लिए

परीक्षण का समय:

अक्षमता के स्तर और उम्र के आधार पर, किसी एक व्यक्ति के लिए टूल के भाग-A को पूरा करने में औसतन 35-50 मिनट लगते हैं। भाग-B और भाग-C को अलग-अलग सत्रों में पूरा किया जा सकता है।

अभ्यास प्रश्न

4- बौद्धिक अक्षमता से प्रभावित बच्चों के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण केवल 18 वर्ष की आयु पूरी करने के बाद ही शुरू किया जाना चाहिए।

(क) सत्य

(ख) असत्य

5- बौद्धिक अक्षमता से प्रभावित बच्चों को व्यावसायिक प्रशिक्षण देते समय उनकी व्यक्तिगत क्षमताओं और रुचियों का ध्यान रखना आवश्यक नहीं है।

(क) सत्य

(ख) असत्य

6- व्यावसायिक प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य IDD बच्चों को केवल व्यस्त रखना है, उन्हें आत्मनिर्भर बनाना नहीं।

(क) सत्य

(ख) असत्य

7- कागज़ के बैग बनाना, पैकिंग करना और लिफाफे सजाना IDD बच्चों के लिए उपयुक्त व्यावसायिक गतिविधियों के उदाहरण हैं।

(क) सत्य

(ख) असत्य

8.9 समावेशी संदर्भों में ऊपर बताई गई बातों का महत्व/ Implications of the above in inclusive contexts

समावेशी शिक्षा और आकलन

NCF2005 में कहा गया है कि बच्चों के अधिगम पर लिखी गई एक सार्थक रपट को समावेशी होना चाहिए। हमें मूल्यांकन और प्रतिपुष्टि को पुनः परिभाषित करने और नये मानक ढूँढने की जरूरत है। इसके अलावा हमें आँकलन में सीखने के प्रति अभिवृत्तियों, रूचि और खुद से सीखने की क्षमता को भी शामिल करना होगा।

आकलन आयोजित किये गये शैक्षणिक कार्यक्रम को लागू करने के बाद उसकी प्रभावशीलता का आकलन करने के लिए किया जाता है। एक अच्छी आकलन पद्धति सीखने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग बन सकती है जिसमें शिक्षा ग्रहण करने वाले और शिक्षा देने वाले दोनों को ही विवेचनात्मक और आलोचनात्मक प्रतिपुष्टि से फायदा हो सकता है। इसलिए सतत व समावेशी आकलन को ही एक सार्थक आकलन माना गया है। समावेशी आकलन को जानने से पहले हमें समावेशी शिक्षा को जानना आवश्यक है।

'समावेशी या " समावेशन " का अर्थ है सम्मिलित करना शिक्षा के सन्दर्भ में यदि हम इसका प्रयोग करे तो प्रत्येक बच्चे को शिक्षा की मुख्य धरा में सामान्य शिक्षा प्रणाली में सम्मिलित करने से है। वास्तव में 'समावेशी शिक्षा शिक्षण की ऐसी प्रणाली है जिनमे विशेष आवश्यकता वाले बच्चो को सामान्य बच्चो के साथ मुख्य धरा के स्कूलों में पठन - पाठन और आत्मनिर्भर बनाने का मौका मिलता है। ताकि वे समाज की मुख्य धरा में शामिल हो सके। ' इसमें पठन - पाठन के अलावा दिव्यांग बच्चो के लिए बाधा रहित स्कूली माहौल का निर्माण कार्य भी शामिल है। शिक्षण की इस नविन प्रणाली से हाशिये पर के वैसे बच्चे लाभान्वित होते है जिन्हे अपनी दिनचर्या से लेकर पढाई पूरा करने के लिए विशेष देखभाल की आवश्यकता पड़ती है।

यू एन सी आर पी डी(UNCRPD) अगस्त 2006 में लिखित रूप में आया व 3 मार्च 2008 को लागू हुआ। इसके आने से सम्पूर्ण विश्व में समावेशी शिक्षा में एक प्रभाव पूर्ण

बदलाव आया। इसका मुख्य उद्देश्य है की प्रत्येक व्यक्ति समस्त अक्षम व्यक्तियों के सभी मानव अधिकरों और मौलिक स्वतंत्रताओं को एक सामान और सम्पूर्ण आनंद को सुनिश्चित संरक्षित और प्रोत्साहित करे और उनकी जन्मजात प्रतिष्ठा केआदर को प्रोत्शाहन दे। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के इन विकासक्रमों ने ऐसी स्तिथि पैदा कर दी कोई भी देश "समावेशी शिक्षा " को कार्य रूप दिए बगैर अपनी तरक्की ही नहीं कर सकता इसलिए इसे अपनाने में भारत भी पीछे नहीं रहा।

वर्तमान में मुख्यधारा की आकलन प्रक्रियाओं में बदलाव लाने पर बहुत ध्यान दिया जा रहा है और कई देशों में 'सार्वभौमिक आकलन (universal assessment) की ओर कदम बढ़ाए जा रहे हैं। इसमें आकलन सामग्री को इस तरह से तैयार किया जाता है कि वे ज़्यादा से ज़्यादा छात्रों के लिए सुलभ हों और बाद में उनके इस्तेमाल के समय उनमें किसी और बदलाव की ज़रूरत न पड़े। हालाँकियह स्पष्ट है कि देशों में एक व्यापक अवधारणा उभर रही है जिसे समझने की ज़रूरत हैऔर वह है 'समावेशी आकलन (inclusive assessment)। समावेशी आकलन का मुख्य लक्ष्य यह है कि सभी आकलन नीतियाँ उन सभी छात्रों के सफल समावेश और भागीदारी का समर्थन और उन्हें बेहतर बनाएँ जो अलग-थलग किए जाने (exclusion) के जोखिम में हैंजिनमें विशेष आवश्यकता छात्र भी सम्मिलित हैं

समावेशी आकलन का उद्देश्य —

- समावेशी आकलन का उद्देश्य मुख्यधारा के माहौल में सभी छात्रों के सीखने की प्रक्रिया को बेहतर बनाना
- आकलन की सभी प्रक्रियाओं, तरीकों और साधनों से शिक्षण और सीखने में मदद मिलनी चाहिए और शिक्षकों को उनके काम में सहयोग मिलना
- समावेशी आकलन में कई तरह की आकलन प्रक्रियाएं शामिल हो सकती हैं जो शिक्षण और सीखने में मदद करने के अलावा अन्य उद्देश्यों को भी पूरा करती हैं। ये उद्देश्य योगात्मक आकलन (summative assessment), विशेष शैक्षिक

आवश्यकताओंकी शुरुआती पहचान और शैक्षिक मानकों की निगरानी से संबंधित हो सकते हैं।

समावेशी आकलन प्रारूप हेतु रूपरेखा

चरण 1: सीखने के स्पष्ट उद्देश्यों से शुरुआत करें

किसी भी आकलन को तैयार करने से पहले, खुद से पूछें: "मैं असल में क्या मापना चाहता हूँ?" यह स्पष्टता आपके लिए एक मार्गदर्शक (North Star) का काम करती हैजिससे आप ज़रूरी कौशल और ऐसी बाधाओं के बीच फ़र्क कर पाते हैं जो मुख्य उद्देश्य से जुड़ी नहीं हैं।

चरण 2: लर्निंग के लिए यूनिवर्सल डिज़ाइन (UDL) के सिद्धांतों को अपनाएं

UDL शिक्षा में पहुंच के लिए तीन बुनियादी सिद्धांत देता है

जानकारी देने के कई तरीके: जानकारी को अलग-अलग तरीके से पेश करें

- लिखित, ध्वनि, दृश्य और संवादात्मक विकल्प
- एडजस्ट होने वाले फ़ॉन्ट साइज़ और कॉन्ट्रास्ट लेवल
- ज़रूरत पड़ने पर कई भाषाओं में मदद

जुड़ने के कई तरीके: अलग-अलग रुचियों और प्रेरणाओं से जुड़ें

- विषयों या संदर्भों को चुनने की आज़ादी
- सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक उदाहरण
- अकेले या मिलकर काम करने के विकल्प

काम करने और अपनी बात कहने के कई तरीके: छात्रों को अलग-अलग तरीकों से अपनी सीख दिखाने दें

- लिखित, मौखिक, दृशयात्मक याप्रदर्शन -आधारित जवाब

- तकनीकी उपकरण और ज़रूरी सुविधाएं
- लचीला समय और गति

चरण 3: अलग-अलग तरह की परीक्षण रणनीतियाँ अपनाएँ

अलग-अलग तरह की परीक्षण का अर्थ अलग मानक नहीं है—इसका अर्थ है सीखने के उन्हीं लक्ष्यों को दिखाने के अलग-अलग तरीके। इन तरीकों पर विचार करें:

पसंद-आधारित आकलन

विद्यार्थी को अपनी जानकारी दिखाने के लिए कई विकल्प दें:

- पारंपरिक लिखित परीक्षा
- दृश्य साधनों के साथ मौखिक प्रस्तुति
- सोच-समझकर किए गए काम के साथ रचनात्मक परियोजना
- साथियों को सिखाने का मौका

लचीला समय और माहौल

- जिन विद्यार्थी को ज़रूरत होउन्हें ज़्यादा समय दें
- आसानी से ध्यान भटकने वाले विद्यार्थी के लिए शांत जगहें
- ध्यान केंद्रित करने में मुश्किल वाले विद्यार्थी के लिए बीच-बीच में ब्रेक
- चिंता वाले विद्यार्थी के लिए अलग अनुसूची

तकनीक का इस्तेमाल

सहायक तकनीक और AIउपकरण का इस्तेमाल करें:

- पढ़ने में मुश्किल होने पर टेक्स्ट-टू-स्पीच
- लिखने में मुश्किल होने पर वॉइस-टू-टेक्स्ट
- जटिल जानकारी के लिए दृश्य आयोजक
- AI-पावर्ड फीडबैक सिस्टम जो तुरंत और व्यक्तिगत सहायता निर्देश देते है

समावेशी माहौल में आकलन के नए तरीके

टीम आकलन

टीम आकलन के लिए काफ़ी समयपेशेवर प्रतिबद्धता और आपसी बातचीत की ज़रूरत होती है (कौफ़ल, 1993)।

समावेशी कक्षा में आकलन के सबसे उपयोगी तरीकों में से एक है टीम आकलन । यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें आकलन में सभी शिक्षक शामिल होते हैंन कि सिर्फ़ वे विशेष शिक्षक जो खास तौर पर दिव्यांग छात्रों की परीक्षण और श्रेणी निर्धारण (ग्रेडिंग) से जुड़े होते हैं।टीम आकलन के उन पहलुओं में से एक जिन पर शिक्षकों को ध्यान देना चाहिएवह यह है कि आकलन टीम के सदस्य आपस में कितनी अच्छी तरह मिलकर काम करते हैं। आकलनआकड़ें इकट्ठा करने और उसे समझने में टीम के सभी सदस्यों की सक्रिय भागीदारी एक अहम बात है। टीम आकलन का फ़ायदा यह है कि सबसे सही शैक्षिक माहौल में छात्र की ज़रूरतों का पूरा आकलन हो पाता है।

साथियों द्वारा आकलन

किसी छात्र द्वारा की गई गतिविधि का आकलन साथियों और शिक्षक दोनों द्वारा किया जा सकता है। समूह की आपसी निर्भरता को बढ़ावा देने और पीयर आकलन को प्रोत्साहित करने का एक तरीका यह है कि गतिविधियों/प्रस्तुति को इस तरह से तैयार किया जाए कि सभी सदस्यों को उस गतिविधि/सामग्री को सीखना पड़े जिसे प्रस्तुत किया जा रहा है।रेटिंगप्रणाली में प्रस्तुति की गुणवत्ता, प्रस्तुति से पैदा हुई रुचि, संगठन, रचनात्मकता, मौलिकता और साथियों की भागीदारी का आकलन करने के लिए बिंदु शामिल होने चाहिए।

समूह का आकलन

असल ज़िंदगी में किसी संगठन की सफलता अक्सर किसी व्यक्ति की सफलता के बजाय टीम के प्रदर्शन पर निर्भर करती है। इसी वजह से, स्कूल में सीखने के आकलन में समूह रिपोर्ट, प्रदर्शनी, प्रदर्शन और प्रेजेंटेशन शामिल होने चाहिए, जिनमें छात्र मिलकर काम करें और उन्हें समूह के तौर पर ग्रेड दिया जाए। आकलन और ग्रेडिंग पूरी होने के बादसीखने के पाठों के अंत में समूह का जश्न मनाया जाना चाहिए। समूह छात्रों को अपनी सफलता का जश्न मनाने और सीखने के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए उन्होंने कितनी अच्छी तरह सहयोग कियाइस पर विचार करने का मौका देते हैं।समूह के सदस्यों के सीखने के प्रयासों और दूसरों के सीखने में उनके योगदान को पहचाननासमूह की आपसी निर्भरता को पुरस्कृत करने का एक महत्वपूर्ण पहलू है।

खेल-आधारित आकलन

विकास के सभी क्षेत्रों का आकलन करने के लिए इस तरीके की बहुत ज़्यादा सिफारिश की जाती है और इस बात की बहुत संभावना होती है कि बच्चा इस माहौल में अपनी असली क्षमताएं दिखाएगा। खेल-आधारित आकलन से ऐसी जानकारी मिलती है जिससे बच्चेपरिवार और आकलन टीम के लिए लक्ष्यों या परिणामों की सिफारिश करने और हस्तक्षेप की योजना बनाने में मदद मिलती है। कुछ खास खेल के ज़रिए आकलन के तरीके होते हैं जिनका इस्तेमाल व्यवसायिक कर सकते हैं। जैसे, 'प्ले ऑब्ज़र्वेशन स्केल' (रोज़र्स, 1986), जो खेल के भाषाई, संज्ञानात्मक (सोचने-समझने की क्षमता) और सामाजिक पहलुओं पर आधारित 10-चरणों वाले क्रम को बताता है।

शिक्षण अधिगम व आकलन प्रक्रिया में अनुकूलन की प्रक्रिया

संज्ञानात्मक व अधिगम अक्षमता वाले छात्रों के लिए-

1.संज्ञानात्मक रणनीतियों का विकास।

2.विषय का दृष्टिगत व सजीव वर्णन।

3.अध्यापकों को विशेष प्रशिक्षण संबंधी और आकलन रणनीतियों में प्रशिक्षण प्रदान किया जाए।

4.सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का प्रयोग।

व्यवहारात्मक व भावात्मक विकारों से संबंधित छात्रों के लिए-

1. इनके उचित आकलन के लिए इन्हें कला से संबंधी क्रियाओं में भाग लेने के अवसर उपलब्ध कराये जा सकते हैं।

2.सामूहिक कार्य व सामाजिक पारस्परिक व्यवहार के अवसर उपलब्ध कराना।

3.परामर्शदाता व मनोचिकित्सक की सेवायें उपलब्ध कराना।

4.सजग अध्यापक की नियुक्ति।

श्रवणबाधित छात्रों के लिए-

1.सांकेतिक भाषा अनुवादक की नियुक्ति।

2.दृश्य, संकेत व प्रतीक चिन्ह स्पष्ट होने चाहिए।

3.दृश्य सामग्रियों के द्वारा शिक्षण अधिगम व मूल्यांकन को प्रभावी बना सकते हैं!

4.फर्श को ध्वनि अवशोषी होना चाहिए।

5.कक्षा में प्रकाश की उचित व्यवस्था।

दृष्टि बाधित छात्रों के लिए-

1.दृष्टि बाधित बच्चों का अधिगम व आकलन बोलतीकिताबें, ज्यामितीय आकृतिया , पहेलिया, खिलौने, बिल्डिंग ब्लाक, माडल, वास्तविक वस्तुएं और त्रिआयामी शिक्षण और मूल्यांकनकर्ता सहायक सामग्री द्वारा हो सकता हैं

2.कक्षा में प्रयोग होने वाली सामग्री जैसे-मानचित्र, ग्राफ, बड़ा प्रिंट में प्रयोग करना। इन सामग्रियों को ब्रेल में बदल कर प्रयोग कर सकते हैं।

आकलन को समोवशी बनाने के लिए शिक्षा मंत्रालय के प्रयास-

शिक्षा मंत्रालय ने आकलन पद्धति को समावेशी बनाने के लिए कई कदम उठाये हैं जिससे आकलन विभिन्न क्षमता वाले अधिगमकर्ताओं के लिए उपयोगी हो।

सी.बी.एस.ई द्वारा आयोजित दसवीं और बारहवीं कक्षा की परीक्षाओं के लिए बेंचमार्क दिव्यागं व्यक्तियों को छूट/रियायतें

1- लेखक की सुविधा और प्रतिपूरक समय व्यक्तियों के अधिकार अधिनियम 2016 में परिभाषित दिव्यागं उम्मीदवारों को प्रतिपूरक समय
- 3 घंटे की अवधि के पेपर के लिए 60 मिनट
- ढाई घंटे की अवधि के पेपर के लिए 50 मिनट
- 2 घंटे की अवधि के पेपर के लिए 40 मिनट
- डेढ़ घंटे की अवधि के पेपर के लिए 30 मिनट

2- तीसरी भाषा से छूट
3- विषयों के चयन में लचीलापन
4- वैकल्पिक प्रश्न/अलग सवाल
5- प्रैक्टिकल घटक के स्थान पर प्रश्न पत्र
6- उपस्थिति में छूट (अनुरोध पर)
7- परीक्षा के दौरान सहायक उपकरणों की अनुमति (डाॅक्टर की सलाह से)
8- परीक्षाओं के लिए पंजीकरण शुल्क माफ करना

अन्य सामान्य निर्देश/सुविधाएं

- परीक्षा में आसान पहुँच की सुविधा के लिए कुछ चयनित स्कूलों को विशेष छात्रों के लिए परीक्षा केन्द्र बनाया जाता है।
- दृष्टि बाधित स्कूलों के लिए शिक्षकों को विशेष परीक्षा में सहायक अधीक्षक (निरीक्षक) के रूप में नियुक्त किया जाता है।
- बेंचमार्क वाले अभ्यर्थियों की उत्तर पुस्तिकाऐं दिव्यांगताओं को केन्द्र अधीक्षकों द्वारा संबंधित क्षेत्रीय कार्यालय को अलग से भेजा जाता है।

- अल्प दृष्टि बाधित उम्मीदवार को मैग्नीफाइंग ग्लास/पोर्टेबल विडियो मैग्निफायर की भी अनुमति है।
- वैकल्पिक प्रश्न की सुविधा
- सामाजिक विज्ञान विषय में दृष्टि बाधित अभ्यर्थियों के लिए दृश्य इनपुट वाले प्रश्नों के आधार पर वैकल्पिक प्रकार के प्रश्न उपलब्ध कराए जाते हैं।
- 2020 से उम्मीद्ववारों को बड़े फाॅन्ट वाले प्रश्न पत्रों के स्थान पर आवर्धकलेंस/पोर्टेबल वीडियो का उपयोग करने की अनुमति दी जायेगी।
- अभ्यर्थी कम्प्यूटर/लैपटाप का उपयोग केवल उसी उद्देश्य के लिए करेगा जिसके लिए अनुमति ली गई है।
- यदि दिव्यागं छात्र लेखक की सुविधा नहीं चाहता है तो प्रश्न पत्र पढ़ने लिए रीडर की व्यवस्था की अनुमति दी जाएगी लेकिन इसकी भूमिका ऐसा व्यक्ति प्रश्न पत्र पढ़ने तक ही सीमित रहेगा।

उपरोक्त रियायतें देश के अन्य प्रदेश शिक्षा परिषदों ने भी अपने विद्यालयों में लागू किये हैं जिससे समावेशी मूल्यांकन और समावेशी शिक्षा को लागू कर सकें।

अभ्यास प्रश्न

8- दिव्यांग छात्रों के आकलन में कौन-सी सुविधा दी जा सकती है?

A) अतिरिक्त समय

B) लेखक (Scribe)

C) वैकल्पिक प्रश्न

D) उपरोक्त सभी

9- समावेशी शिक्षा में शिक्षक की प्रमुख भूमिका क्या होती है?

A) केवल पाठ पढ़ाना

B) सभी छात्रों की आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षण करना

C) केवल परीक्षा लेना

D) अनुशासन बनाए रखना

10- समावेशी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य क्या है?

A) केवल मेधावी छात्रों को पढ़ाना

B) सभी बच्चों को समान अवसर प्रदान करना

C) केवल दिव्यांग बच्चों को पढ़ाना

D) केवल ग्रामीण छात्रों को पढ़ाना

8.10 सारांश

बौद्धिक अक्षमता (ID) से प्रभावित छात्रों का आकलन एक व्यवस्थित और व्यापक प्रक्रिया है जिसे छात्र की सोचने-समझने की क्षमता, पढ़ाई-लिखाई ,सामाजिक और अनुकूलन क्षमता का आकलन करने के लिए बनाया गया है। इस प्रक्रिया का उदेश्य छात्र की खूबियों और ज़रूरतों की पहचान करना है ताकि उनके लिए एक विशेष शैक्षिक कार्यक्रम (IEP) तैयार किया जा सके और उन्हें आवश्यकता के हिसाब से मदद और सहायता दी जा सके। इसमें मानक परीक्षण , अवलोकन के तरीके और गुणात्मक आकलन का इस्तेमाल किया जाता है जिसमें छात्र, शिक्षकों और माता-पिता के साथ बातचीत भी शामिल होती है। इसका लक्ष्य एक ऐसा समावेशी शैक्षिक माहौल बनाना है जो बौद्धिक अक्षमता वाले छात्रों के शैक्षिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास को बढ़ावा दे।

बौद्धिक अक्षमता (ID) से प्रभावित बच्चों के लिए शैक्षिक और व्यावसायिक आकलन उनकी क्षमताओं, आवश्यकताओं, रुचियों और विकास के स्तर को समझने का महत्वपूर्ण माध्यम है। इन बच्चों के आकलन का उद्देश्य केवल उनकी कमियों को पहचानना नहीं, बल्कि उनकी ताकत, संभावनाओं और सीखने की क्षमता को पहचानकर उनके समग्र विकास को बढ़ावा देना है। बौद्धिक अक्षमता (ID) वाले बच्चों के लिए आकलन लचीला, सतत, समावेशी, व्यक्ति-केंद्रित और क्षमता-आधारित होना चाहिए। उपयुक्त आकलन उपकरणों का सही उपयोग शिक्षकों, अभिभावकों और विशेषज्ञों को बच्चे की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षण एवं प्रशिक्षण की योजना बनाने में सहायता करता है। इससे बच्चों का आत्मविश्वास, स्वतंत्र जीवन कौशल, सामाजिक सहभागिता और भविष्य में रोजगार की संभावनाएँ बढ़ती हैं तथा वे समाज में अधिक सक्रिय और सम्मानजनक जीवन जीने के लिए सक्षम बनते हैं।

8.11शब्दावली

व्यावसायिक आकलन- व्यावसायिक आकलन (Vocational Assessment) वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से किसी व्यक्ति के ज्ञान, कौशल, रुचि, क्षमता, योग्यता तथा कार्य निष्पादन (Performance) का आकलन किया जाता है।

शैक्षिक आकलन- शैक्षिक आकलन वह व्यवस्थित प्रक्रिया है जिसके माध्यम से विद्यार्थियों के ज्ञान, कौशल, समझ, अभिवृत्ति, सीखने की प्रगति तथा उपलब्धियों का आकलन किया जाता है।

समावेशन- समावेशन का अर्थ है सभी व्यक्तियों को बिना किसी भेदभाव के समान अवसर, सम्मान और भागीदारी प्रदान करना।

कार्यात्मक आकलन- कार्यात्मक आकलन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी व्यक्ति या विद्यार्थी की दैनिक जीवन, शिक्षा, कार्य तथा सामाजिक परिस्थितियों में कार्य करने की वास्तविक क्षमता (Functional Skills) का आकलन किया जाता

8.12 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1- B

2- B

3- C

4- क

5- ख

6- ख

7- क

8- D

9- B

10- B

8.13 संदर्भ

https://www.wbnsou.ac.in/online_services/SLM/BED/C-12_MR.pdf

https://www.scribd.com/document/384828500/Behavioural-Assessment-Scales-for-Adult-Living

https://www.jetir.org/papers/JETIR2412227.pdf

https://www.evelynlearning.com/blog/the-ultimate-guide-to-creating-inclusive-assessment-strategies-practical-steps-for-supporting-all-learners

Abhra M. Principles of vocational training kanishka publishers distributors new delhi-110002

Pati N.C. Causes,prevention,identification and assessment of mental retardation kanishka publishers distributors new delhi-110002

8.14 निबंधात्मक प्रश्न-

1-बौद्धिक अक्षमता से प्रभावित बच्चों के लिए शैक्षिक आकलन की अवधारणा, उद्देश्य, महत्व तथा उपयुक्त आकलन उपकरणों का विस्तार से वर्णन कीजिए।

2-बौद्धिक अक्षमता से प्रभावित बच्चों के व्यावसायिक आकलन में प्रयुक्त विभिन्न उपकरणोंका विस्तार से वर्णन कीजिए।

3-कार्यात्मक आकलन (Functional Assessment) क्या है? बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों के शैक्षिक एवं व्यावसायिक विकास में इसकी भूमिका तथा उपयोगिता का विस्तार से वर्णन कीजिए।

4-बौद्धिक अक्षमता से प्रभावित बच्चों के लिए समावेशी एवं क्षमता-आधारित आकलन प्रणाली की आवश्यकता को विस्तारपूर्वक बताए।

इकाई-9 आँकलन संबंधी जानकारी का उपयोग

9.0 प्रस्तावना
9.1 उद्देश्य

9.2 बौद्धिक अक्षम छात्रों के आँकलन संबंधी जानकारियाँ एवं उपयोग

9 .2.1 चिकित्सीय आँकलन संबंधी जानकारियों का उपयोग

9.2.2 विशेष शैक्षिक आँकलन संबंधी जानकारियों का उपयोग

9.2.3 मनोवैज्ञानिक आँकलन संबंधी जानकारियों का उपयोग

9.2.4 नैदानिक आँकलन संबंधी जानकारियों का उपयोग

9.2.5 व्यवसायिक आँकलन संबंधी जानकारियों का उपयोग

9.3 बौद्धिक अक्षम छात्रों के आँकलन संबंधी जानकारियों की विश्लेषण

9.3.1 बौद्धिक अक्षम छात्रों के प्रशिक्षण हेतु लक्ष्य निर्धारण करने के लिए आँकलन संबंधी जानकारियों का विश्लेषण

9.3.2 बौद्धिक अक्षम छात्रों के प्रशिक्षण हेतु कार्यक्रम तैयार करने के लिए आँकलन संबंधी जानकारियों का विश्लेषण

9.4. व्यक्ति-केंद्रित योजना तैयार करने में सहायता आवश्यकताओं के आकलन का उपयोग

9.5 सारांश

9.6 शब्द सूची

9.7 बौध प्रश्न एवं उत्तर

9.8 अभ्यास प्रश्न

9.9 संदर्भ ग्रंथ सूची

9.0 प्रस्तावना

विशेष आवश्यकता वाले छात्रों क शिक्षण और अधिगम की प्रक्रिया में आँकलन संबंधी जानकारी का उपयोग बेहद महत्वपूर्ण है। एक शिक्षक के लिए ये आँकड़े यह समझने का प्राथमिक साधन होता हैं। इस जानकारी का विश्लेषण करके शिक्षक छात्रों के लिए लिलक्ष्यों का नर्धारण करता है, कार्यक्रम तैयार करता है, शिक्षण सामग्री एवं शिक्षण विधियों का चयन करता है तथा अधिगम आँकलन के विधयोन का चयन करता है। आँकलन के आधार पर शिक्षक अपनी शिक्षण विधियों में सुधार करते हैं, कठिन विषयों को दोबारा पढ़ाते हैं। साथ ही प्रत्येक छात्र की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार अपनी रणनीति बदलते हैं। इस प्रक्रिया मुख्य उद्देश्य छात्रों के सीखने के स्तर को अधिकतम स्तर तक ले जाना है।

दूसरी ओर बौद्धिक अक्षम माता-पिता अथवा अविभावक के लिए भी आँकलन संबंधी जानकारियाँ एक मार्गदर्शक की तरह काम करती है। इसके माध्यम से उन्हें अपने बच्चे की ताकत और कमजोरियों का पता चलता है। साथ ही, बौद्धिक अक्षम बच्चों के आँकलन संबंधी जानकारियाँ स्कूल प्रशासन और अभिभावकों को छात्र की प्रगति से अवगत कराने में मदद करती है। सही समय पर मिली फीडबैक से छात्रों, अविभावकों एवं शिक्षकों का आत्मविश्वास बढ़ता है। परिणाम स्वरूप वे अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सही दिशा में प्रयास करने के लिए प्रेरित होते हैं।

9.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप

- विभिन्न आँकलन संबंधी जानकारियों को समझ सकेंगे
- बौद्धिक अक्षम छात्रों के लिए विभिन्न प्रकार के आँकलन संबंधी जानकारियों के उपयोग का वर्णन कर सकेंगे
- बौद्धिक अक्षम छात्रों के प्रशिक्षण हेतु लक्ष्य निर्धारण करने के लिए आँकलन संबंधी जानकारियों का विश्लेषण कर सकेंगे
- बौद्धिक अक्षम छात्रों के प्रशिक्षण हेतु कार्यक्रम तैयार करने के लिए आँकलन संबंधी जानकारियों का विश्लेषण कर सकेंगे
- व्यक्ति-केंद्रित योजना तैयार करने में सहायता आवश्यकताओं के आकलन का उपयोग कर सकेंगे

9.2 बौद्धिक अक्षम छात्रों के आँकलन संबंधी जानकारियाँ एवं उपयोग

आँकलन (Assessment) एक ऐसी निरंतर और व्यवस्थित प्रक्रिया है जिसके माध्यम से किसी व्यक्ति की क्षमताओं, सीमाओं, व्यवहार और विकासात्मक स्तरों के बारे में सूचनाओं एवं साक्ष्यों को एकत्रित किए जाते हैं। विशेष शिक्षा, पुनर्वास, चिकित्सा और मनोविज्ञान के क्षेत्रों में आँकलन केवल एक औपचारिक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह किसी व्यक्ति के जीवन को बेहतर बनाने की पहली सीढ़ी है। बौद्धिक अक्षमता (Intellectual Disability) से ग्रसित छात्रों की सीखने की गति, सामाजिक व्यवहार

और दैनिक जीवन के कौशल सामान्य बच्चों से भिन्न होते हैं। ऐसे छात्रों की विशिष्ट आवश्यकताओं को समझने और उनके शैक्षणिक विकास के लिए एक सटीक और व्यवस्थित आँकलन (Assessment) प्रक्रिया बेहद अनिवार्य है।

- **आँकलन के प्रमुख प्रकार**

बौद्धिक अक्षम छात्रों के विभिन्न प्रकार के आँकलन किया जाता है। साथ ही इस आँकलन हेतु अलग-अलग आँकलन उपकरण का उपयोग किया जाता है। बौद्धिक अक्षम छात्रों का मुख्य रूप से निम्नलिखित आँकलन किया जाता है।

मनोवैज्ञानिक आँकलन: बौद्धिक अक्षम छात्रों के कई तरह के मनोवैज्ञानिक आँकलन किये जाते यही। मुख्य रूप से इस आँकलन में मानकीकृत परीक्षणों (जैसे वैक्सलर इंटेलिजेंस स्केल) द्वारा बौद्धिक अक्षम छात्रों के संज्ञानात्मक क्षमताओं (बुद्धि लब्धि) का आँकलन किया जाता है।

अनुकूलित व्यवहार आँकलन: इस आँकलन में बौद्धिक अक्षम छात्रों के दैनिक जीवन के कौशल, जैसे बातचीत करना, व्यक्तिगत स्वच्छता और सामाजिक मेलजोल का आँकलन किया जाता है।

शैक्षिक आँकलन: इस आँकलन में बौद्धिक अक्षम छात्रों के शैक्षिक क्षमता जैसे पढ़ना, लिखना तथा गणितीय कौशल का आँकलन किया जाता है।

नैदानिक आँकलन: इस आँकलन में बौद्धिक अक्षम छात्रों के नैदानिक आवश्यकताओं का आँकलन किया जाता है।

चिकित्सीय आँकलन: इस आँकलन में बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के चिकित्सीय स्थितियों का आँकलन किया जाता है।

व्यवसायिक आँकलन: इस आँकलन में बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के व्यवसायिक रुचि, व्यवसाय से संबंधित, कार्य क्षमता, सामान्य कौशल तथा व्यवसाय संबंधित विशिष्ट कौशलों का आँकलन किया जाता है।

- **आँकलन के मुख्य उद्देश्य**

बौद्धिक अक्षम छात्रों के आँकलन का मुख्य उद्देश्य उन्हें किसी श्रेणी में बांटना नहीं, बल्कि उनके लिए लक्ष्य निरदधारण करने, कार्यक्रम तैयार करने, अधगम विधि तथा अधिगम सामग्री का चयन करने, मूल्यांकन विधि का चयन करने आदि में सहायता करता है। बौद्धिक अक्षम छात्रों के आँकलन का मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है।

- बौद्धिक अक्षम छात्रों के क्षमताओं और सीमाओं की पहचान करना।
- बौद्धिक अक्षम छात्रों पर विशेष शिक्षा और थेरेपी का क्या प्रभाव पड़ रहा है उसका निगरानी रखना।
- बौद्धिक अक्षम छात्रों के विशेष रुचियों का (जैसे संगीत, चित्रकारी या शिल्प) का पता लगाना।

- बौद्धिक अक्षम छात्रों के आँकलन के व्यावहारिक उपयोग

बौद्धिक अक्षम छात्रों के आँकलन से प्राप्त जानकारियों का उपयोग छात्र के समग्र विकास के लिए निम्नलिखित रूपों में किया जाता है।

- बौद्धिक अक्षम छात्रों के लिए व्यक्तिगत शैक्षणिक योजना (IEP) का निर्माण करने में।
- बौद्धिक अक्षम छात्रों के शिक्षण विधियों में बदलाव करने में।
- बौद्धिक अक्षम छात्रों को उसके क्षमता के अनुसार आत्मनिर्भर बनाने के लिए व्यावसायिक कौशल (जैसे मोमबत्ती बनाना, सिलाई, या कंप्यूटर का बुनियादी ज्ञान) में प्रशिक्षण देने में।
- बौद्धिक अक्षम छात्रों के माता-पिता को यह बताने के लिए कि वे घर पर बच्चे के व्यवहार और सीखने में कैसे मदद कर सकते हैं।

9 .2.1 चिकित्सीय आँकलन संबंधी जानकारियों का उपयोग

बौद्धिक अक्षम छात्रों के चिकित्सीय आँकलन (Medical Assessment) किसी भी पुनर्वास या शैक्षणिक कार्यक्रम की आधारशिला का काम करता है। इसमें डॉक्टरों, न्यूरोलॉजिस्ट, बाल रोग विशेषज्ञों और अन्य चिकित्सकों द्वारा बौद्धिक अक्षम व्यक्ति के शारीरिक, उपापचयी एवं जैविक स्वास्थ्य का परीक्षण किया जाता है। इन सूचनाओं का उपयोग निम्न प्रकार से किया जाता है।

- बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के निदान और अंतर्निहित कारणों की पहचान करने तथा बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के स्थिति (जैसे- सेरेब्रल पाल्सी, ऑटिज्म, डाउन सिंड्रोम या बौद्धिक अक्षमता) के सटीक कारणों और उसकी गंभीरता के स्तर (Mild, Moderate, Severe, Profound) का पता लगाने ले किया जाता है।
- बौद्धिक अक्षम बच्चों या वयस्कों को अक्सर सह-रुग्णता (Co-morbidities) जैसे मिर्गी के दौरे (Seizures), अतिसक्रियता (ADHD), या मानसिक तनाव होता है। चिकित्सीय आँकलन से डॉक्टर सही दवा, उसकी खुराक एवं दवाई देने का सही समय तय करने मे मदद मिलता है।
- बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के लिए सही सहायक उपकरणों (Assistive Devices) जैसे व्हीलचेयर, कैलिपर्स, बैसाखी या श्रवण यंत्र (Hearing Aids) आदि की आवश्यकता का निर्धारण करने में मदद मिलता है।
- इस आँकलन से बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के लिए सही सुरक्षात्मक उपाय और सावधानियाँ रखने में मदद मिलता है।
- बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के जांच करने में उपयोग होता है।
- बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के बीमारियों के सही इलाज करने हेरौ उपयोग होता है।
- बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के शिक्षा से जुड़े सही फ़ैसले लेने में मदद मिलता है।
- बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के लिए सही शैक्षिक जगह तय करने में मदद मिलता है।

- बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के लिए सही शैक्षिक कार्यक्रम की योजना बनाने में मदद मिलता है।
- बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के लिए हस्तक्षेप हेतु सही शैक्षिक समय-सारणी बनाने में मदद मिलता है।
- बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के लिए सही शैक्षिक रणनीतियों एवं शिक्षण सामग्रियों का चयन करने में मदद मिलता है।
- बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के लिए शैक्षिक गतिविधियों में उचित स्तर की भागीदारी सुनिश्चित करने में मदद मिलत

इस प्रकार चिकित्सीय आँकलन से प्राप्त जानकारी यह सुनिश्चित करती है कि बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों पर किसी भी अन्य प्रकार का हस्तक्षेप (जैसे शैक्षिक या व्यावसायिक) शुरू करने से पहले वह शारीरिक और जैविक रूप से स्थिर और सुरक्षित हो।

9.2.2 विशेष शैक्षिक आँकलन संबंधी जानकारियों का उपयोग

विशेष शैक्षिक आँकलन (Special Educational Assessment) मुख्य रूप से बौद्धिक अक्षम छात्रों के सीखने की क्षमता, वर्तमान शैक्षणिक स्तर और कक्षा के वातावरण में उसकी भागीदारी पर केंद्रित होता है। विशेष शिक्षक विभिन्न अनौपचारिक और औपचारिक आँकलन उपकरणों का उपयोग करके छात्रों के पढ़ने, लिखने, गणना करने के साथ-साथ विभिन्न कौशल क्षेत्रों का आँकलन करते हैं। इस आँकलन सूचना के

आधार पर व्यक्तिगत शैक्षणिक कार्यक्रम तैयार कर बौद्धिक अक्षम छात्रों को प्रशिक्षण दिया जाता है। इसके अतिरिक्त इन सूचनाओं का उपयोग निम्न प्रकार से किया जाता है।

- बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के शैक्षिक वर्गीकरण के लिए यह आँकलन अत्यंत महत्वपूर्ण है।
- बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के शैक्षिक कार्य-क्षमता का स्तर जानने के लिए यह आँकलन अति महत्वपूर्ण है।
- बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के लिए सही शैक्षिक निर्णय के लिए यह आँकलन मददगार सिद्ध होता है।
- बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के सही शैक्षिक प्लेसमेंट के लिए शैक्षिक आँकलन आती महत्वपूर्ण है।
- बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के लिए सही शैक्षिक सामग्री/पाठ्यक्रम विकास के लिए शैक्षिक आँकलन सूचनाओं का उपयोग किया जाता है।
- बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के लिए व्यक्तिगत शैक्षणिक योजना (Individualized Education Program) तैयार करने के लिए यह आँकलन सबसे महत्वपूर्ण आधार है। इसके बिना बच्चे के लिए वार्षिक लक्ष्य तय नहीं किए जा सकता है।
- इस आँकलन से विशेष शिक्षक को बौद्धिक अक्षम व्यक्ति के वर्तमान स्तर का तथा बौद्धिक अक्षम व्यक्ति किस कक्षा या स्तर के पाठ्यक्रम को समझने में सक्षम है, इसका पता लगाने में मदद मिलता है।

- बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के लिए सही शैक्षिक कार्यक्रम की योजना बनाने में इस आँकलन से मदद मिलता है।
- इस आँकलन से बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के लिए सही शैक्षिक हस्तक्षेप रणनीतियों और सामग्रियों के चयन करने में विशेष शिक्षक को मदद मिलता है।
- इस आँकलन से बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के शैक्षिक गतिविधियों में भागीदारी के उचित स्तर सुनिश्चित करने में मदद मिलता है।
- विशेष शिक्षक इस आँकलन सूचनाओं का उपयोग करके पाठ्यक्रम को बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के छोटा या सरल बनाता है।

इस आँकलन सूचनाओं का उपयोग करके शिक्षा को समावेशी और सुलभ बनाया जाता है, जिससे कि प्रत्येक बच्चा अपनी गति और क्षमता के अनुसार सीख सके।

9.2.3 मनोवैज्ञानिक आँकलन संबंधी जानकारियों का उपयोग

बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के मनोवैज्ञानिक आँकलन (Psychological Assessment) उसके संज्ञानात्मक (Cognitive), संवेगात्मक (Emotional), व्यवहारिक एवं अन्य पहलुओं को समझने के लिए किया जाता है। इसमें बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के नैदानिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा बुद्धि लब्धि (IQ) परीक्षण, अनुकूलित व्यवहार (Adaptive Behavior) का आँकलन और व्यक्तित्व परीक्षण किया जाता हैं। मनोवैज्ञानिक आँकलन सूचनाओं का उपयोग निम्न प्रकार से किया जाता है।

- मनोवैज्ञानिक आँकलन में बुद्धि-लबद्धि, अनुकूलित व्यवहार और समस्यात्मक व्यवहार का आकलन किया जाता है। जिससे बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के वर्तमान स्थिति का पता चलता है।
- मनोवैज्ञानिक द्वारा बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के किये गए बुद्धि लब्धि (IQ) परीक्षण के आधार पर बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के मनोवैज्ञानिक वर्गीकरण किया जाता है।
- मनोवैज्ञानिक द्वारा बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के किये गए बुद्धि लब्धि (IQ) परीक्षण के आधार पर बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों को विकलांगता प्रमाण पत्र दिया जाता है।
- मनोवैज्ञानिक आँकलन के आधार पर बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के लाइ विशेष शिक्षक उचित शैक्षिक स्थान (व्यक्तिगत/समूह) का निर्धारण करता है।
- मनोवैज्ञानिक आँकलन के आधार पर विशेष शिक्षक को बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के लिए उचित शैक्षिक सामग्री/पाठ्यक्रम विकास या चयन करने में मदद मिलता है।
- मनोवैज्ञानिक आँकलन के आधार पर विशेष शिक्षक को बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के लिए उचित शैक्षिक कार्यक्रम नियोजन करने में मदद मिलता है।
- मनोवैज्ञानिक आँकलन के आधार पर विशेष शिक्षक को बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के लिए उचित शैक्षिक हस्तक्षेप रणनीतियों और सामग्रियों के चयन करने में मदद मिलता है।

- मनोवैज्ञानिक आँकलन के आधार पर विशेष शिक्षक को बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के लिए शैक्षिक गतिविधियों में उचित स्तर की भागीदारी सुनिश्चित करने में मदद मिलता है।
- बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों में कभी-कभी चुनौतीपूर्ण व्यवहार (जैसे- स्वयं को चोट पहुँचाना, आक्रामकता, या तंत्र-मंत्र करना) देखे जाते हैं। मनोवैज्ञानिक आँकलन के आधार पर विशेष शिक्षक को बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के लिए उचित व्यवहार संशोधन कार्यक्रम तैयार करने में मदद मिलता है।
- अक्सर बच्चों में अक्षमता या विफलता के कारण व्यक्ति या उसके परिवार में अवसाद, चिंता या कम आत्मसम्मान की भावना उत्पन्न हो जाती है। मनोवैज्ञानिक आँकलन के आधार पर सही थेरेपी और परामर्श देने में मदद मिलता है।

मनोवैज्ञानिक आँकलन व्यक्ति के आंतरिक संसार और मानसिक स्वास्थ्य को समझने के लिए आवश्यक होता है, जो व्यक्ति के समग्र विकास के लिए आवश्यक है।

9.2.4 नैदानिक आँकलन संबंधी जानकारियों का उपयोग

बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के नैदानिक आँकलन (Clinical Assessment) चिकित्सा और मनोविज्ञान का एक मिलाजुला रूप है, जो किसी बीमारी, विकार या अक्षमता के लक्षणों के विशिष्ट स्वरूप को समझने पर केंद्रित होता है। इसमें स्पीच थेरेपिस्ट, ऑक्यूपेशनल थेरेपिस्ट, फिजियोथेरेपिस्ट एवं अन्य द्वारा किए गए गहन

नैदानिक परीक्षण संमलिट होता हैं। नैदानिक आँकलन सूचनाओं का उपयोग निम्न प्रकार से किया जाता है।

- नैदानिक आँकलन (Clinical Assessment) में कई तरह की नैदानिक समस्याओं का आँकलन सम्मलित होता है।
- सही नैदानिक आँकलन बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के उपचारात्मक हस्तक्षेप के लिए आवश्यक होता है।
- नैदानिक आँकलन से बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के सही शैक्षिक प्लेसमेंट (व्यक्तिगत/समूह) में मदद मिलता है।
- नैदानिक आँकलन से बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के लिए सही शैक्षिक पाठ्यक्रम विकासत करने में मदद मिलता है।
- नैदानिक आँकलन से विशेष शिक्षक को बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के लिए सही शैक्षिक कार्यक्रम तैयार करने में मदद मिलता है।
- नैदानिक आँकलन से विशेष शिक्षक को बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के लिए सही शैक्षिक हस्तक्षेप, रणनीतियों एवं सामग्रियों के चयन में मदद मिलता है।
- नैदानिक आँकलन से विशेष शिक्षक को बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के लिए सही शैक्षिक गतिविधियों में बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के उचित स्तर के भागीदारी सुनिश्चित करने में मदद मिलता है।
- नैदानिक आँकलन के आधार पर थेरेपिष्ट उचित नैदानिक योजना बनाने में मदद मिलता है।

- नैदानिक आँकलन के आधार पर ऑक्यूपेशनल थेरेपिष्ट को संवेदी प्रसंस्करण (Sensory Processing Issues) और सूक्ष्म गामक कौशल (Fine Motor Skills - जैसे बटन लगाना, पेन पकड़ना) को सुधारने के लिए रणनीतियाँ बनाने में मदद मिलता है।
- नैदानिक आँकलन से थेरेपिष्ट को थेरेपी के शुरू होने के बाद समय-समय पर नैदानिक आँकलन यह दिखाता है कि दी जा रही थेरेपी का कोई सकारात्मक असर हो रहा है या नहीं, या फिर नैदानिक योजना में किसी बदलाव की जरूरत है।
- थेरेपिष्ट के द्वारा शिशुओं और छोटे बच्चों में विकासात्मक देरी (Developmental Delay) की पहचान करके विकास के शुरुआती दौर में ही विकास के मील के पत्थरों (Milestones) की कमी को पकड़कर 'शीघ्र हस्तक्षेप' (Early Intervention) प्रदान किया जाता है।

नैदानिक आँकलन बौद्धिक अक्षम एवं अन्य व्यक्तियों के कार्यात्मक स्वतंत्रता (Functional Independence) को बढ़ाने के लिए विशिष्ट और सटीक हस्तक्षेप का मार्ग प्रशस्त करता है।

9.2.5 व्यवसायिक आँकलन संबंधी जानकारियों का उपयोग

विशेष आवश्यकता वाले व्यक्ति खास तौर पर बौद्धिक अक्षम व्यक्ति जैसे-जैसे वयस्कता की ओर बढ़ते हैं, उनके आत्मनिर्भर होने और समाज की मुख्यधारा से जुड़ने के लिए उनका व्यावसायिक आँकलन (Vocational Assessment) अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। इसका उद्देश्य व्यक्ति की कार्य क्षमताओं, रुचियों और काम के माहौल में उसकी अनुकूलनशीलता को मापना है। व्यवसायिक आँकलन संबंधी सूचनाओं का उपयोग निम्न प्रकार से किया जाता है।

- व्यवसायिक आँकलन संबंधी सूचनाओं के सही विश्लेषण से बौद्धिक अक्षम व्यक्ति के लिए सही व्यावसायिक निर्णय लेने में मदद मिलता है।
- व्यवसायिक आँकलन से बौद्धिक अक्षम व्यक्ति के कार्य-क्षमता का स्तर जानने में मदद मिलता है। व्यवसायिक आँकलन से बौद्धिक अक्षम व्यक्ति के
- व्यवसायिक आँकलन से बौद्धिक अक्षम व्यक्ति के लिए सही व्यावसायिक पाठ्यक्रम चयन करने में उपयोगी साबित होता है।
- व्यवसायिक आँकलन से बौद्धिक अक्षम व्यक्ति के लिए बाजार की जरूरतों के अनुसार सही व्यावसायिक कार्यक्रम की योजना बनाने में मदद मिलती है।
- व्यवसायिक आँकलन सूचनाएँ बौद्धिक अक्षम व्यक्ति के लिए सही व्यावसायिक हस्तक्षेप रणनीतियाँ और सामग्री चुनने में मार्गदर्शन प्रदान करती है।
- व्यवसायिक आँकलन सूचनाएँ बौद्धिक अक्षम व्यक्ति के लिए व्यावसायिक गतिविधियों में उचित स्तर की भागीदारी सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

- व्यवसायिक आँकलन सूचनाएँ बौद्धिक अक्षम व्यक्ति के सही व्यावसायिक प्लेसमेंट व्यवस्था में मदद करता है।
- व्यवसायिक आँकलन सूचनाओं से बौद्धिक अक्षम व्यक्ति एवं उसके माता-पिता को बौद्धिक अक्षम व्यक्ति के लिए उनके रुचियों और कौशलों के आधार पर सही प्रकार के रोज़गार चुनने में मदद मिलता है।
- व्यवसायिक आँकलन के आधार पर बौद्धिक अक्षम व्यक्ति के लिए उनके शारीरिक एवं बौद्धिक स्तर के अनुरूप कार्यस्थल बदलाव किया जाता है।

व्यावसायिक आँकलन बौद्धिक अक्षम एवं अन्य किसी भी व्यक्ति के आत्म-निर्भरता, सम्मानजनक जीवन एवं आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करने का एक व्यावहारिक साधन है।

9.3 बौद्धिक अक्षम छात्रों के आँकलन संबंधी जानकारियों की विश्लेषण

आँकलन संबंधी जानकारियों की विश्लेषण का अर्थ है आँकलन के दौरान इकट्ठा की गई सूचनाओं का सही अर्थ समझना। आँकलन के माध्यम से एकत्र की गई कोई भी सूचनाएँ (Raw Data) तब तक उपयोगी नहीं होत है, जब तक कि उसका सही तरीके से विश्लेषण (Analysis) न किया जाए। सूचनाओं के विश्लेषण का अर्थ है कि विभिन्न विशेषज्ञों द्वारा दी गई रिपोर्टों को एक साथ जोड़कर देखना, उनके बीच के अंतर्संबंधों को समझना और एक सार्थक निष्कर्ष पर पहुँचना।

बौद्धिक अक्षम व्यक्ति के आँकलन संबंधी जानकारियों की विश्लेषण की प्रक्रिया में उस व्यक्ति की ताकतों (Strengths) और उसकी कमजोरियों (Weaknesses) की एक सूची बनाई जाती है। उदाहरण स्वरूप यदि एक बौद्धिक अक्षम छात्र का शैक्षणिक आँकलन के आधार पर पता चलता है कि वह गणित में कमजोर है, लेकिन मनोवैज्ञानिक आँकलन से पता हालत है कि उसका ध्यान केंद्रित करने का स्तर अच्छा है, ऐसी स्थिति में इन दोनों जानकारियों को मिलाकर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यदि सही रणनीतियों का उपयोग किया जाय तो वह गणित सीख सकता है।

बौद्धिक अक्षम व्यक्ति के आँकलन संबंधी जानकारियों की विश्लेषण से हमें यह तय करने में मदद मिलता है कि व्यक्ति के लिए कौन सी समस्या सबसे गंभीर है और किस समस्या पर सबसे पहले काम करने की आवश्यकता है। उदहरण स्वरूप पढ़ाई से पहले उसके व्यवहारिक मुद्दों या मिर्गी के दौरों को नियंत्रित करना।

9.3.1 बौद्धिक अक्षम छात्रों के प्रशिक्षण हेतु लक्ष्य निर्धारण करने के लिए आँकलन संबंधी जानकारियों का विश्लेषण

बौद्धिक अक्षम छात्रों के लिए लक्ष्य निर्धारण (Goal Setting) किसी भी पुनर्वास या शिक्षण कार्यक्रम का सबसे महत्वपूर्ण चरण मन जाता है। बौद्धिक अक्षम व्यक्ति के आँकलन संबंधी जानकारियों की विश्लेषण के आधार पर बौद्धिक अक्षम छात्रों के प्रशिक्षण हेतु लक्ष्य निर्धारण करने में निम्न तरीके से मदद करता है।

- बौद्धिक अक्षम छात्रों के आँकलन संबंधी जानकारियों का विश्लेषण करने के पश्चययात आँकलन रिपोर्ट तैयार किया जाता है।
- आँकलन रिपोर्ट के आधार पर बौद्धिक अक्षम छात्रों के लिए दीर्घकालिक (Long-term) एवं अल्पकालिक (Short-term) लक्ष्यों का निर्धारण किया जाता है।
- लक्ष्य निर्धारण के बाद आँकलन संबंधी जानकारियों के आधार पर बौद्धिक अक्षम छात्रों के लिए विशिष्ट उद्देश्य (Specific objective) लिखा जाता है।
- बौद्धिक अक्षम छात्रों के लिए विशिष्ट हमेशा देखने योग्य (Observable), मापने योग्य (Measurable), प्राप्त करने योग्य (Achievable), प्रासंगिक (Relevant) एवं समयबद्ध (Time-bound) होता है। उदहरण स्वरूप "तीन महीना शर्ट के बटन लगाना सीखने के बाद, शर्ट पहनने पर श्याम अपने-आप दस में से आठ शर्ट के बटन लगा लेगा।"
- बौद्धिक अक्षम छात्रों के आँकलन संबंधी जानकारियों का विश्लेषण करने के आधार पर बौद्धिक अक्षम छात्रों के तात्कालिक आवश्यकताओं की पहचान कर लक्ष्य का निर्धारण किया जाता है, जिससे कि छात्र का सर्वांगीण विकास के लिए वर्तमान समय में जो सबसे जरूरी है वही सिखाया जाय। उदहरण स्वरूप यदि कोई बौद्धिक अक्षम छात्र अपनी भावनाओं को व्यक्त नहीं कर पा रहा है, तो पहला लक्ष्य 'संचार' (Communication) विकसित करना होना चाहिए, न कि 'शैक्षिक लेखन'।

- बौद्धिक अक्षम छात्रों के आँकलन संबंधी जानकारियों का विश्लेषण के आधार पर उसके लिए लक्ष्य के सही कठिनाई स्तर का चुनाव किया जाता है। यदि लक्ष्य बहुत कठिन होता है तो छात्र निराश हो सकता है। जबकि लक्ष्य यदि बहुत सरल होता है तो उसका विकास अवरूद्ध हो सकता है। आँकलन का विश्लेषण बिल्कुल सटीक कठिनाई स्तर चुनने में मदद करता है।

आँकलन संबंधी जानकारियों का सही विश्लेषण यह सुनिश्चित करता है कि बौद्धिक अक्षम छात्रों के निर्धारित किए गए लक्ष्य वास्तविक, व्यावहारिक और व्यक्ति की वास्तविक क्षमता के अनुरूप है।

9.3.2 बौद्धिक अक्षम छात्रों के प्रशिक्षण हेतु कार्यक्रम तैयार करने के लिए आँकलन संबंधी

जानकारियों का विश्लेषण

आँकलन संबंधी जानकारियों का सही विश्लेषण के पश्यत बौद्धिक अक्षम छात्रों के लिए एक बार लक्ष्य तय हो जाने के बाद, अगला कदम उन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक विस्तृत प्रशिक्षण कार्यक्रम (Training Program/Curriculum) तैयार करना होता है। आँकलन संबंधी जानकारियों का सही विश्लेषण यहाँ एक पुल का काम करता है जो 'लक्ष्य' को 'कार्यप्रणाली' से जोड़ता है। यह बौद्धिक अक्षम छात्रों के लिए कार्यक्रम तैयार करने में निम्न तरीके से मदद करता है।

- आँकलन संबंधी जानकारियों के विश्लेषण के पश्यत बौद्धिक अक्षम छात्रों के लिए उसके आवश्यकता, दिलचस्पी एवं क्षमता के अनुरूप कार्यक्रम तैयार किया जाता है।
- बौद्धिक अक्षम छात्रों के लिए चयनित लक्ष्य के लिए विषय वस्तु का निर्धरण आँकलन संबंधी जानकारियों के विश्लेषण के आधार पर किया जाता है।
- बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के शैक्षिक वर्गीकरण के लिए यह आँकलन अत्यंत महत्वपूर्ण है।
- बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के शैक्षिक कार्य-क्षमता का स्तर जानने के लिए आँकलन संबंधी जानकारियों के विश्लेषण अति महत्वपूर्ण है।
- बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के लिए सही शैक्षिक सामग्री/पाठ्यक्रम विकास के लिए आँकलन संबंधी जानकारियों के विश्लेषण से प्राप्त जानकारियों का उपयोग किया जाता है।
- बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के लिए सही शैक्षिक कार्यक्रम की योजना बनाने में इस आँकलन संबंधी जानकारियों के विश्लेषण से मदद मिलता है।
- बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के लिए सही शैक्षिक हस्तक्षेप रणनीतियों और सामग्रियों के चयन करने में विशेष शिक्षक को आँकलन संबंधी जानकारियों के विश्लेषण से काफी मदद मिलता है।
- बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के शैक्षिक गतिविधियों में भागीदारी के उचित स्तर सुनिश्चित करने में आँकलन संबंधी जानकारियों के विश्लेषण से मदद मिलता है।

- विशेष शिक्षक इस आँकलन संबंधी जानकारियों के विश्लेषण का उपयोग करके पाठ्यक्रम को बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के छोटा या सरल बनाता है।

इस प्रकार अच्छी तरह से आँकलन संबंधी जानकारियों के विश्लेषण से समय और ऊर्जा की बर्बादी को रोकता है और प्रशिक्षण को अत्यधिक प्रभावी बनाता है।

9.4. व्यक्ति-केंद्रित योजना तैयार करने में सहायता आवश्यकताओं के आकलन का उपयोग

व्यक्ति-केंद्रित योजना (Person-Centered Planning) एक ऐसा आधुनिक दृष्टिकोण है जो यह मानता है कि हर व्यक्ति विशिष्ट है और उसकी योजना उसके स्वयं के सपनों, इच्छाओं, क्षमताओं और पसंद पर आधारित होनी चाहिए, न कि किसी सेवा प्रदाता या संस्था की उपलब्धता पर। इसमें व्यक्ति स्वयं अपनी योजना का केंद्र बिन्दु होता है।

सहायता आवश्यकताओं का आकलन (Support Needs Assessment)

यह आँकलन पारंपरिक आँकलन से थोड़ा भिन्न है। इस आँकलन में केवल यह नहीं देखा जाता है कि व्यक्ति में क्या कमी है, बल्कि यह देखा जाता है कि "इस व्यक्ति को समाज में एक सामान्य और स्वतंत्र जीवन यापन के लिए किस प्रकार की बाहरी सहायता (Supports) की आवश्यकता है?" व्यक्ति-केंद्रित योजना तैयार करने में सहायता आवश्यकताओं के आकलन का उपयोग निम्न प्रकार से किया जाता है।

व्यक्ति-केंद्रित योजना तैयार करने में सहायता आवश्यकताओं के आकलन का उपयोग

- व्यक्ति-केंद्रित योजना में व्यक्ति (यदि संभव हो) और उसके परिवार के सदस्यों को शामिल किया जाता है। सहायता आवश्यकताओं के आकलन से मिली जानकारियाँ उनकी प्राथमिकताओं और इच्छाओं को साकार करने का आधार बनती हैं।
- व्यक्ति-केंद्रित योजना में व्यक्ति के सहायता के स्तर का वर्गीकरण चार स्तरों पर किया जाता है:

➢ **आंतरायिक (Intermittent) सहायता:** जब बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों को कभी-कभार सहायता की आवश्यकता पड़ती तो उसे आंतरायिक सहायता कहा जाता है।

➢ **सीमित (Limited) सहायता:** जब बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों को कुछ समय के लिए लगातार सहायता (जैसे नौकरी की शुरुआत में) की आवश्यकता पड़ती तो उसे सीमित सहायता कहा जाता है।

➢ **व्यापक (Extensive) सहायता:** जब बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों को दैनिक जीवन के कुछ क्षेत्रों में नियमित सहायता की आवश्यकता पड़ती तो उसे व्याप सहायता कहा जाता है।

➢ **पूर्ण (Pervasive) सहायता:** जब बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों को हर समय, जीवन रक्षक सहायता की आवश्यकता पड़ती तो उसे पूर्ण सहायता कहा जाता है।

- व्यक्ति-केंद्रित योजना में सहायता आवश्यकताओं के आकलन से मिली जानकारियाँ के आधार पर केवल पेशेवर ही नहीं, बल्कि परिवार, मित्र, पड़ोसी और सहकर्मियों को भी शामिल किया जाता है ताकि व्यक्ति को समाज में एक स्वाभाविक स्वीकृति मिल सके। इस तरह एक प्राकृतिक सहायता प्रणालियों (Natural Supports) सिस्टम विकसित किया जाता है।
- सहायता आवश्यकताओं के आकलन से मिली जानकारियाँ के आधार पर व्यक्ति-केंद्रित योजना तैयार किया जाता है। यह व्यक्ति-केंद्रित योजना व्यक्ति के रहने की जगह (स्वतंत्र या समूह गृह), उसकी नौकरी, उसकी सामाजिक गतिविधियों और उसकी व्यक्तिगत खुशियों को ध्यान में रखकर बनाई जाती है। इससे जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में समावेशनको बढ़ावा मिलता है।

इस प्रकार व्यक्ति-केंद्रित योजना में सहायता आवश्यकताओं का आँकलन व्यक्ति को मात्र एक 'मरीज' या 'छात्र' के रूप में नहीं, बल्कि एक ऐसे 'इंसान' के रूप में देखता है जिसे सम्मान, अधिकार और अपनी पसंद का जीवन जीने का पूरा हक है। यह उसके जीवन की गुणवत्ता (Quality of Life) को बढ़ाने का सर्वोत्तम माध्यम मन जाता है।

9.5 सारांश

इस ईकई में बौद्धिक अक्षम छात्रों के शिक्षण एवं प्रशिक्षण में आँकलन संबंधी जानकारियों के महत्वों एवं उनके उपयगों का विस्तार से चर्चा किया गया है। आँकलन

एक निरंतर चलने वाली एवं व्यवस्थित प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से छात्रों की क्षमताओं, सीमाओं, आवश्यकताओं तथा विकासात्मक स्तर का पता लगाया जाता है। इन जानकारियों के आधार पर विशेष शिक्षक शिक्षण लक्ष्य निर्धारित करते हैं, व्यक्तिगत शैक्षणिक योजना (IEP) बनाते हैं, उपयुक्त शिक्षण सामग्री एवं रणनीतियों का चयन करते हैं तथा छात्रों की प्रगति का मूल्यांकन करते हैं। साथ ही, चिकित्सीय, मनोवैज्ञानिक, शैक्षिक, नैदानिक तथा व्यावसायिक आँकलन से प्राप्त सूचनाएँ छात्र की स्वास्थ्य स्थिति, संज्ञानात्मक क्षमता, व्यवहारिक, शैक्षिक उपलब्धि, कार्य-कौशल एवं रोजगार संबंधी संभावनाओं को समझने में सहायता करती हैं। आँकलन संबंधी जानकारियाँ अभिभावकों, शिक्षकों एवं अन्य विशेषज्ञों को मिलकर छात्र के समग्र विकास के लिए प्रभावी निर्णय लेने में सक्षम बनाती हैं।

इस ईकई में यह भी बताया गया है कि आँकलन संबंधी जानकारियों का सही विश्लेषण बौद्धिक अक्षम छात्रों के लिए यथार्थवादी लक्ष्य निर्धारण, उपयुक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम तैयार करने तथा व्यक्ति-केंद्रित योजना विकसित करने का आधार है। आँकलन संबंधी जानकारियों का सही विश्लेषण के माध्यम से छात्र की शक्तियों, कमजोरियों एवं प्राथमिक आवश्यकताओं की पहचान कर उसके अनुरूप शिक्षण, थेरेपी और व्यावसायिक प्रशिक्षण की योजना बनाई जाती है। सहायता आवश्यकताओं के आकलन से यह

निर्धारित किया जाता है कि छात्र को किस स्तर की सहायता की आवश्यकता है, जिससे उसकी आत्मनिर्भरता, सामाजिक समावेशन, सम्मानजनक जीवन तथा जीवन की गुणवत्ता में सुधार हो सके। इस प्रकार, आँकलन केवल छात्र की स्थिति जानने का साधन नहीं, बल्कि उसके समग्र विकास, समावेशी शिक्षा और सफल पुनर्वास की आधारशिला मन जाता है।

9.6 शब्द सूची

आँकलन (Assessment): किसी व्यक्ति की क्षमताओं, सीमाओं, आवश्यकताओं और प्रगति के बारे में व्यवस्थित रूप से जानकारी एकत्रित करने, उसका विश्लेषण करने तथा निर्णय लेने की प्रक्रिया को आँकलन कहा जाता है।

बौद्धिक अक्षमता : एक विकासात्मक विलंब की स्थिति जिसमें व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता (बुद्धि लबद्धि) 70 से काम होता है तथा दैनिक जीवन के अनुकूलित कौशल व्यवहार में उसी उम्र के सामान्य व्यक्ति से कमी पाई जाती हैं।

विशेष आवश्यकता वाले छात्र: ऐसे छात्र जिन्हें सीखने, व्यवहार, संचार या दैनिक जीवन में अतिरिक्त सहायता एवं विशेष शिक्षण की आवश्यकता होती है विशेष आवश्यकता वाले छात्र कहलाता है। ।

शिक्षण: छात्रों को ज्ञान, कौशल और व्यवहार सिखाने की योजनाबद्ध प्रक्रिया को शिक्षण कहा जाता है।

शिक्षण सामग्री : शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए उपयोग किए जाने वाले साधन एवं संसाधन शिक्षण सामग्री कहलाता है।

मनोवैज्ञानिक आँकलन : मनोवैज्ञानिक द्वारा व्यक्ति की बुद्धि, व्यवहार, भावनाओं एवं मानसिक क्षमताओं का परीक्षण करने की प्रक्रिया को मनोवैज्ञानिक कहा जाता है।

संज्ञानात्मक क्षमता : किसी व्यक्ति के सोचने, समझने, याद रखने, तर्क करने और समस्या समाधान करने की क्षमता को संज्ञानात्मक क्षमता कहा जाता है।

शैक्षिक आँकलन: किसी व्यक्ति के पढ़ने, लिखने, गणना तथा अन्य शैक्षणिक कौशलों का आँकलन शैक्षिक आँकलन कहलाता है।

नैदानिक आँकलन: किसी व्यक्ति के बीमारी, विकार या अक्षमता की पहचान एवं उपचार की योजना बनाने हेतु किया जाने वाला आँकलन नैदानिक आँकलन कहलाता है।

चिकित्सीय आँकलन: किसी व्यक्ति के शारीरिक एवं चिकित्सीय स्वास्थ्य का परीक्षण चिकित्सीय आँकलन कहलाता है।

व्यावसायिक आँकलन: किसी व्यक्ति के कार्य क्षमता, रुचि एवं रोजगार संबंधी कौशल का आँकलन व्यावसायिक आँकलन कहलाता है।

व्यक्तिगत शैक्षणिक योजना: विशेष आवश्यकता वाले छात्र के लिए उसकी क्षमता एवं आवश्यकता के अनुसार तैयार की गई व्यक्तिगत शिक्षण योजना व्यक्तिगत शैक्षणिक योजना कहलाता है।

शैक्षिक हस्तक्षेप: छात्र की कठिनाइयों को दूर करने हेतु अपनाई गई विशेष शिक्षण रणनीतियाँ शैक्षिक हस्तक्षेप कहलाता है।

व्यवहार संशोधन: किसी व्यक्ति के अनुचित व्यवहार में सुधार हेतु अपनाई जाने वाली वैज्ञानिक तकनीकों का उपयोग करके उसका व्यवहार परिमार्जन व्यवहार संशोधन कहलाता है।

सूक्ष्म गामक कौशल : किसी व्यक्ति के हाथों एवं उँगलियों की छोटी एवं सटीक गतिविधियाँ करने की क्षमता को सूक्ष्म गामक कौशल कहते है।

विकासात्मक विलंब: व्यक्ति के आयु के अनुसार अपेक्षित विकासात्मक उपलब्धियों में देरी होना विकासात्मक विलंब कहलाता है।

शीघ्र हस्तक्षेप: किसी व्यक्ति के विकासात्मक समस्याओं को दूर करने हेतु प्रारम्भिक अवस्था में दी जाने वाली विशेष सेवाएँ शीघ्र हस्तक्षेप कहलाता है।

विकास के मील के पत्थर (Developmental Milestones): व्यक्ति जिस विभिन्न आयु में सामान्य विकासात्मक कौशल प्राप्त करता है उस आयु को विकास के मील के पत्थर कहा जाता है।

अल्पकालीन लक्ष्य : विशेष छात्रों के लिए अल्प समय में प्राप्त किए जाने वाले निर्धारित उद्देश्य अल्पकालीन लक्ष्य कहलाता है।

विशिष्ट उद्देश्य: विशेष छात्रों के लिए चयनित स्पष्ट, अवलोकनीय एवं मापनीय योग्य निश्चित शिक्षण उद्देश्य विशिष्ट उद्देश्य कहलाता है।

व्यक्ति-केंद्रित योजना: किसी व्यक्ति की इच्छाओं, आवश्यकताओं एवं क्षमताओं के अनुरूप बनाई गई विकास योजना व्यक्ति-केंद्रित योजना कहलाता है।

सहायता आवश्यकताओं का आँकलन: किसी व्यक्ति को स्वतंत्र एवं सम्मानजनक जीवनयापन के लिए किस प्रकार की सहायता की आवश्यकता है उसका आँकलन करना ही सहायता आवश्यकताओं का आँकलन कहलाता है।

आंतरायिक सहायता: किसी व्यक्ति को आवश्यकता पड़ने पर समय-समय पर दी जाने वाली सहायता को आंतरायिक सहायता कहा जाता है।

सीमित सहायता: किसी व्यक्ति को निश्चित अवधि तक नियमित रूप से दी जाने वाली सहायता को सीमित सहायता कहा जाता है।

व्यापक सहायता: किसी व्यक्ति को दैनिक जीवन के अनेक क्षेत्रों में निरंतर आवश्यक सहायता प्रदान करने की प्रक्रिया को व्यापक सहायता कहा जाता है।

पूर्ण सहायता: किसी व्यक्ति को जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में हर समय आवश्यक सहायता प्रदान करने की प्रक्रिया को पूर्ण सहायता कहा जाता है।

समावेशन: विशेष आवश्यकता वाले व्यक्तियों को समाज एवं सामान्य शिक्षा प्रणाली में समान अवसर प्रदान करने की प्रक्रिया को समावेशन कहा जाता है।

कार्यात्मक कौशल: किसी व्यक्ति के दैनिक जीवन को सफलतापूर्वक संचालित करने के लिए आवश्यक व्यावहारिक कौशल को कार्यात्मक कौशल कहा जाता है।

9.7 बौध प्रश्न एवं उत्तर

1. विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के शिक्षण में आँकलन संबंधी जानकारी का उपयोग अत्यंत महत्वपूर्ण है। सही/गलत
   उत्तर: सही।
2. आँकलन के आधार पर शिक्षक शिक्षण विधियों में सुधार कर सकते हैं। सही/गलत
   उत्तर: सही।
3. आँकलन का उद्देश्य केवल छात्रों को श्रेणीबद्ध करना है। सही/गलत
   उत्तर: गलत।

4. मनोवैज्ञानिक आँकलन में बुद्धि-लब्धि (IQ) का परीक्षण किया जाता है।

   सही/गलत

   उत्तर: सही।

5. अनुकूलित व्यवहार आँकलन में केवल गणितीय कौशल का मूल्यांकन किया जाता है। सही/गलत

   उत्तर: गलत।

6. शैक्षिक आँकलन में पढ़ना, लिखना एवं गणितीय कौशल का मूल्यांकन किया जाता है। सही/गलत

   उत्तर: सही।

7. व्यवसायिक आँकलन का उद्देश्य व्यक्ति की कार्यक्षमता और रुचियों का पता लगाना है। सही/गलत

   उत्तर: सही।

8. आँकलन संबंधी जानकारियों के विश्लेषण से छात्र की ताकत और कमजोरियों का पता चलता है। सही/गलत

   उत्तर: सही।

9. व्यक्तिगत शैक्षणिक योजना आँकलन संबंधी जानकारी के आधार पर तैयार की जाती है। सही/गलत

   उत्तर: सही।

10. लक्ष्य निर्धारण बिना आँकलन रिपोर्ट के किया जाना चाहिए। सही/गलत

उत्तर: गलत।

11. व्यक्ति-केंद्रित योजना में व्यक्ति और उसके परिवार की भागीदारी महत्वपूर्ण होती है। सही/गलत

उत्तर: सही।

12. पूर्ण सहायता उन व्यक्तियों के लिए होती है जिन्हें हर समय सहायता की आवश्यकता होती है। सही/गलत

उत्तर: सही।

13. नैदानिक आँकलन थेरेपी की प्रभावशीलता का पता लगाने में सहायक सिद्ध होता है। सही/गलत

उत्तर: सही।

14. आँकलन संबंधी जानकारियों का सही विश्लेषण प्रभावी प्रशिक्षण कार्यक्रम बनाने में सहायक होता है। सही/गलत

उत्तर: सही।

9.8 अभ्यास प्रश्न

1. विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के शिक्षण एवं अधिगम में आँकलन संबंधी जानकारी के महत्वों को विस्तार से लिखिए।
2. बौद्धिक अक्षम छात्रों के विभिन्न प्रकार के आँकलनों का वर्णन करते हुए उनके उद्देश्यों को स्पष्ट कीजिए।

3. चिकित्सीय आँकलन संबंधी जानकारियों का बौद्धिक अक्षम छात्रों के शिक्षण एवं पुनर्वास में उपयोग विस्तार से लिखिए।
4. विशेष शैक्षिक आँकलन क्या है? इसके प्रमुख उपयोगों एवं महत्वों को विस्तार से वर्णन कीजिए।
5. मनोवैज्ञानिक आँकलन संबंधी जानकारियों का बौद्धिक अक्षम छात्रों के शैक्षिक एवं व्यवहारिक विकास में क्या उपयोग है?
6. नैदानिक आँकलन की अवधारणा स्पष्ट कीजिए तथा इसके विभिन्न उपयोगों का विस्तार से चर्चा कीजिए।
7. व्यवसायिक आँकलन क्या है? बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के आत्मनिर्भर जीवन में इसकी भूमिकाओं को स्पष्ट कीजिए।
8. बौद्धिक अक्षम छात्रों के आँकलन संबंधी जानकारियों के विश्लेषण से आप क्या समझते है?
9. बौद्धिक अक्षम छात्रों के प्रशिक्षण कार्यक्रम तैयार करने में आँकलन संबंधी जानकारियों के विश्लेषण की भूमिका पर विस्तार से चर्चा कीजिए।
10. व्यक्ति-केंद्रित योजना क्या है? सहायता आवश्यकताओं के आकलन का इसमें किस प्रकार उपयोग किया जाता है?
11. व्यक्ति-केंद्रित योजना में सहायता के विभिन्न स्तरों का वर्णन कीजिए।
12. बौद्धिक अक्षम छात्रों के लिए आँकलन संबंधी जानकारियों का उपयोग शिक्षण सामग्री, शिक्षण विधियों एवं मूल्यांकन विधियों के चयन में किस प्रकार किया जाता है?

9.9 संदर्भ ग्रंथ सूची

- अमेरिकन एसोसिएशन ऑन इंटेलेक्चुअल एंड डेवलपमेंटल डिसएबिलिटीज़ (AAIDD). (2021). बौद्धिक अक्षमता: परिभाषा, वर्गीकरण एवं सहायता

प्रणालियाँ (12वाँ संस्करण). अमेरिकन एसोसिएशन ऑन इंटेलेक्चुअल एंड डेवलपमेंटल डिसएबिलिटीज़.

- अमेरिकन साइकियाट्रिक एसोसिएशन. (2022). मानसिक विकारों का नैदानिक एवं सांख्यिकीय मार्गदर्शिका (DSM-5-TR). अमेरिकन साइकियाट्रिक पब्लिशिंग.
- किर्क, एस. ए., गैलाघर, जे. जे., कोलमैन, एम. आर., एवं अनास्तासिउ, एन. जे. (2015). विशेष बच्चों का शिक्षण (13वाँ संस्करण). सेनगेज लर्निंग.
- गार्गिउलो, आर. एम., एवं बौमा, सी. (2021). विशेष शिक्षा: समकालीन समाज में परिचय (7वाँ संस्करण). सेज पब्लिकेशन्स.
- निपिड (NIEPID). (2020). बौद्धिक दिव्यांगता वाले व्यक्तियों के मूल्यांकन एवं हस्तक्षेप हेतु प्रशिक्षण मॉड्यूल. राष्ट्रीय बौद्धिक दिव्यांगजन सशक्तिकरण संस्थान सिकंदराबाद।
- बंटिंक, सी., एवं शालॉक, आर. एल. (2010). जीवन की गुणवत्ता के आधार पर बौद्धिक अक्षमता की अवधारणा. जर्नल ऑफ पॉलिसी एंड प्रैक्टिस इन इंटेलेक्चुअल डिसएबिलिटीज, 7(4), 275–283.

- ब्राउन, एल., ब्रैनस्टन-मैकलीन, एम., बॉमगार्ट, डी., विन्सेंट, एल., फाल्वे, ई., एवं श्रेग, एम. (1979). सेवियर इंटेलेक्चुअल डिसएबिलिटी वाले विद्यार्थियों के लिए कार्यात्मक पाठ्यक्रम. जर्नल ऑफ द एसोसिएशन फॉर द सेवियरली हैंडीकैप्ड, 4(4), 274–280.
- भारत सरकार. (2016). दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार।
- भारत सरकार. (2017). दिव्यांगजन अधिकार नियम, 2017. सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी). (2006). समावेशी शिक्षा: शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण मॉड्यूल।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी). (2023). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा–विद्यालय शिक्षा (NCF–SE 2023)।
- विश्व स्वास्थ्य संगठन. (2001). कार्यप्रणाली, दिव्यांगता एवं स्वास्थ्य का अंतरराष्ट्रीय वर्गीकरण (ICF). विश्व स्वास्थ्य संगठन।
- विश्व स्वास्थ्य संगठन. (2022). रोगों का अंतरराष्ट्रीय वर्गीकरण (ICD-11). विश्व स्वास्थ्य संगठन।

- शालॉक, आर. एल., लकलासन, आर., एवं टासे, एम. जे. (2021). बौद्धिक अक्षमता: परिभाषा, निदान, वर्गीकरण एवं सहायता प्रणालियाँ (12वाँ संस्करण). अमेरिकन एसोसिएशन ऑन इंटेलेक्चुअल एंड डेवलपमेंटल डिसएबिलिटीज़।
- स्नेल, एम. ई., एवं ब्राउन, एफ. (2014). गंभीर दिव्यांगता वाले विद्यार्थियों का शिक्षण (7वाँ संस्करण). पियर्सन।
- हेवर्ड, डब्ल्यू. एल. (2019). असाधारण बच्चों का परिचय (11वाँ संस्करण). पियर्सन।
- हॉलाहन, डी. पी., कॉफमैन, जे. एम., एवं पुल्लेन, पी. सी. (2022). असाधारण शिक्षार्थी: विशेष शिक्षा का परिचय (15वाँ संस्करण). पियर्सन।

इकाई-10 आँकलन आख्या (रिपोर्ट) लेखन

10.0 प्रस्तावना

10.1 उद्देश्य

10.2 आँकलन आख्या (रिपोर्ट)

10.2.1 आँकलन आख्या (रिपोर्ट) का अर्थ, प्रकृति एवं महत्व

10.2.2 आकलन आख्या (रिपोर्ट) की परिभाषा एवं इसके मूल सिद्धांत

10.2.3 बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के लिए आँकलन आख्या (रिपोर्ट) की संवेदनशीलता

10.3 आँकलन आख्या (रिपोर्ट) लेखन

10.3.1 प्रशासनिक उद्देश्यों के लिए आँकलन आख्या (रिपोर्ट) लेखन

10.3.2 शैक्षिक कार्यक्रम (प्रोग्रामिंग) के लिए आँकलन आख्या (रिपोर्ट) लेखन

10.3.3 संदर्भन (रेफ़रल) के लिए आँकलन आख्या (रिपोर्ट) लेखन

10.3.4 वैकल्पिक स्थानन (प्लेसमेंट) के लिए आँकलन आख्या (रिपोर्ट) लेखन

10.4 समावेशी संदर्भों में आकलन आख्या (रिपोर्ट) के निहितार्थ

10.5 सारांश

10.6 शब्द सूची

10.7 बौध प्रश्न एवं उत्तर

10.8 अभ्यास प्रश्न

10.9 संदर्भ ग्रंथ सूची

10.0 प्रस्तावना

विशेष शिक्षा, पुनर्वास और नैदानिक मनोविज्ञान के क्षेत्रों में 'आँकलन' करना एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। किसी भी व्यक्ति, विशेषकर बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों की क्षमताओं, सीमाओं, कौशलों एवं उनकी अद्वितीय आवश्यकताओं को समझने के लिए आँकलन किया जाता है। लेकिन यह आँकलन तब तक अधूरा और प्रभावी नहीं होता है जब तक कि इसके परिणामों को एक व्यवस्थित, तार्किक एवं लिखित रूप में प्रस्तुत न किया जाए। इसी लिखित प्रस्तुतीकरण को 'आँकलन आख्या' या 'असेसमेंट रिपोर्ट' (Assessment Report) कहा जाता है।

आँकलन आख्या केवल आंकड़ों या अंकों का संग्रह नहीं होत, बल्कि यह किसी व्यक्ति के जीवन का एक ऐसा दर्पण होत है जो उसके वर्तमान स्तर और भविष्य की संभावनाओं को दर्शाता है। जब कोई विशेषज्ञ या विशेष शिक्षक किसी बच्चे का परीक्षण करता है, तो वह कई तरह के औपचारिक (Formal) और अनौपचारिक (Informal) उपकरणों का उपयोग करता है। इन उपकरणों से प्राप्त गुणात्मक और मात्रात्मक जानकारियों को संकलित करके एक ऐसी आख्या रिपोर्ट (रिपोर्ट) तैयार की जाती है जिसे माता-पिता, शिक्षक, विशेष शिक्षक, विशेषज्ञ, चिकित्सक एवं नीति निर्धरक आसानी से समझ सकें।

इस ईकई में आप यह अध्ययन कारेगें कि एक प्रभावी रिपोर्ट कैसे लिखी जाए जो न केवल वैज्ञानिक रूप से सटीक हो, बल्कि मानवीय दृष्टिकोण से संवेदनशील भी हो।

आज के समय में, जहाँ समावेशी शिक्षा एवं दिव्यांगजनों के अधिकारों पर विशेष बल दिया जा रहा है, वहाँ आँकलन आख्या लेखन की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ जाती है। आँकलन आख्या एक ऐसे सेतु का कार्य करती है जो नैदानिक निष्कर्षों को व्यावहारिक हस्तक्षेप (Intervention) योजनाओं में बदलती है। संक्षेप में हम यह कह सकते है कि आँकलन आख्या (रिपोर्ट) लेखन एक कला और विज्ञान दोनों है, जो विशेष आवश्यकता वाले व्यक्तियों के पुनर्वास की दिशा तय करता है।

10.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप

- आँकलन आख्या (रिपोर्ट) की अवधारणा को समझ सकेंगे।
- आँकलन आख्या (रिपोर्ट) की प्रकृति एवं महत्वों का वर्णन कर सकेंगे।
- बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के लिए आँकलन आख्या (रिपोर्ट) की संवेदनशीलता को समझ सकेंगे।
- प्रशासनिक उद्देश्यों, शैक्षिक प्रोग्रामिंग, संदर्भन (रेफ़रल), वैकल्पिक स्थानन (प्लेसमेंट) के लिए आँकलन आख्या (रिपोर्ट) लिख सकेंगे।
- समावेशी संदर्भों में आकलन आख्या (रिपोर्ट) के निहितार्थों का वर्णन कर सकेंगे।

10.2 आँकलन आख्या (रिपोर्ट)

आँकलन आख्या (रिपोर्ट) एक आधिकारिक, कानूनी एवं नैदानिक दस्तावेज है। यह दस्तावेज़ किसी व्यक्ति विशेष, खास कर बौद्धिक अक्षम व्यक्ति के व्यवहार, संज्ञान,

भाषा, सामाजिक-भावनात्मक एवं शारीरिक विकास के व्यवस्थित आँकलन का परिणाम होता है। आँकलन निरंतर चलने वाली पुनर्वास प्रक्रिया है। इसमें व्यक्ति के जनसांख्यिकीय विवरण (Demographic Details), इतिहास (Case History), परीक्षण के दौरान उसका व्यवहार, उपयोग किए गए उपकरण, प्राप्त परिणाम एवं अंत में विशेषज्ञ की सिफारिशें शामिल होती हैं।

10.2.1 आँकलन आख्या (रिपोर्ट) का अर्थ, प्रकृति, प्रकार एवं महत्व

आँकलन आख्या (रिपोर्ट) का अर्थ

आँकलन आख्या का तात्पर्य आँकलन की प्रक्रिया से प्राप्त निष्कर्षों को एक तार्किक, संरचित एवं लिखित रूप में प्रस्तुत करना। आँकलन आख्या एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा एक विशेषज्ञ अपने निष्कर्षों को दूसरे पेशेवरों एवं परिवार के सदस्यों के साथ साझा करता है।

आँकलन आख्या (रिपोर्ट) की प्रकृति

आँकलन आख्या (रिपोर्ट) प्रकृति निम्नलिखित विंदुओं से प्रदर्शित होता है।

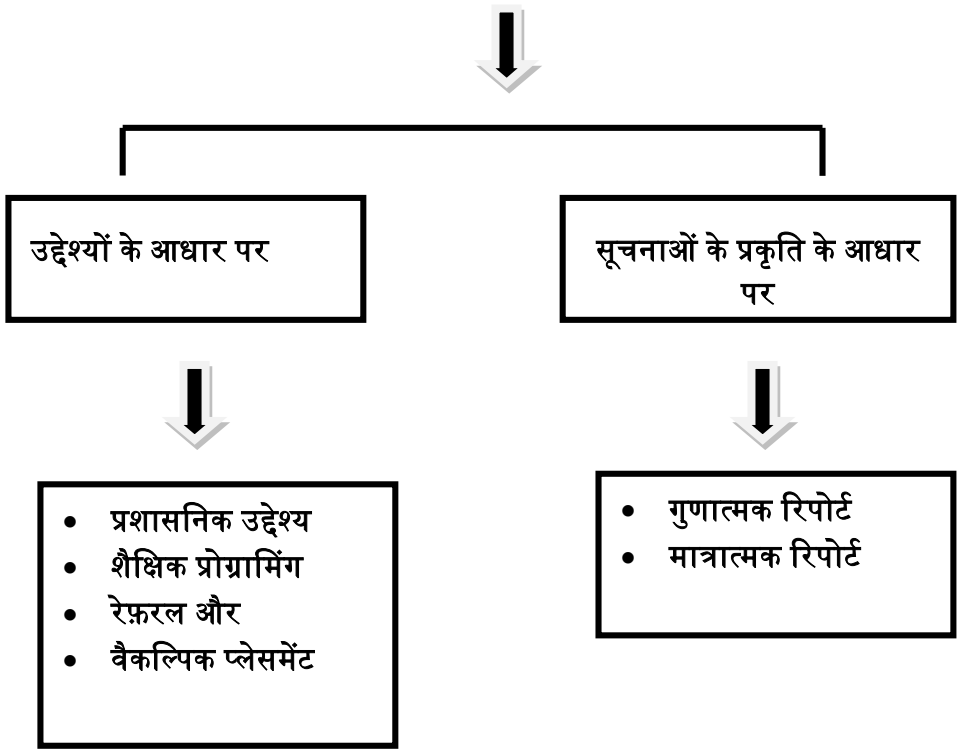
- आँकलन आख्या (रिपोर्ट) प्रकृति पूरी तरह से साक्ष्यों और प्रामाणिक उपकरणों पर आधारित होती है।

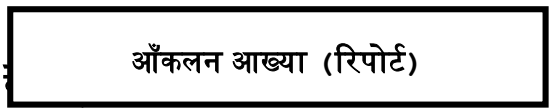
- आँकलन आख्या (रिपोर्ट) में विशेषज्ञ के व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों के लिए कोई स्थान नहीं होता।
- आँकलन आख्या (रिपोर्ट) एक स्थिर दस्तावेज़ नहीं है। जैसे-जैसे बच्चा बढ़ता है और नई चीजें सीखता है, रिपोर्ट के निष्कर्ष और सिफारिशें गालती रहती है।
- आँकलन आख्या (रिपोर्ट) एक अत्यंत निजी दस्तावेज़ होता है जिसे केवल अधिकृत व्यक्तियों के साथ ही साझा किया जाना चाहिए।
- बौद्धिक अक्षम व्यक्ति के आँकलन आख्या (रिपोर्ट) में बहु-विषयक टीम के विचारों का समन्वय होती है।
- आँकलन आख्या (रिपोर्ट) के प्रारूप, रूप-रेखा, विषय-वस्तु एवं तथ्य आँकलन आख्या (रिपोर्ट) के उद्देश्य के अनुरूप बदल जाता है।

आँकलन आख्या (रिपोर्ट) के प्रकार

बौद्धिक अक्षम व्यक्ति के आँकलन आख्या (रिपोर्ट) को विभिन्न आधार पर बाँटा गया है। उद्देश्यों के आधार पर बौद्धिक अक्षम व्यक्ति के आँकलन आख्या (रिपोर्ट) को मुख्य रूप से प्रशासनिक उद्देश्य, शैक्षिक प्रोग्रामिंग, संदर्भन (रेफ़रल) तथा वैकल्पिक प्लेसमेंट इन चार भागों में बँटा गया है। जबकि आँकड़े एवं सूचनाओं के प्रकृति के आधार पर गुणात्मक रिपोर्ट एवं मात्रात्मक रिपोर्ट में बँटा गया है। बौद्धिक अक्षम व्यक्ति के सभी प्रशासनिक उद्देश्य, शैक्षिक प्रोग्रामिंग, संदर्भन (रेफ़रल) तथा वैकल्पिक स्थानन (प्लेसमेंट) आँकलन आख्या (रिपोर्ट) में गुणात्मक एवं मात्रात्मक दोनों तथ्यों का समायोजन होता

है। बौद्धिक अक्षम व्यक्ति के आँकलन आख्या (रिपोर्ट) के प्रकार को नीचे चित्र के द्वारा दर्शाया गया है।



आँकलन आख्या (रिपोर्ट) 

आँकलन आख्या एक लिखित दस्तावेज है। आँकलन आख्या के आधार पर विशेषज्ञ एवं विशेष शिक्षक अपने निष्कर्षों को दूसरे पेशेवरों एवं परिवार के सदस्यों के साथ साझा करता है। इस दस्तावेज के मतव निम्नलिखित है।

- आँकलन आख्या एक आधारभूत दस्तावेज़ है जिसके आधार पर बौद्धिक अक्षम बच्चों के लिए भावी योजनाएँ (जैसे व्यक्तिक शैक्षिक कार्यक्रम) तैयार किया जाता है।
- आँकलन आख्या बच्चों के प्रगति के मापनकार्य करता है। यह समय के साथ बच्चे में होने वाले सुधार या बदलाव को मापने का एक बेंचमार्क प्रदान करता है।
- आँकलन आख्या बच्चों के कानूनी एवं वित्तीय साक्ष्य को प्रदर्शित करता है। सरकारी सुविधाओं, छात्रवृति, दिव्यांगता प्रमाण पत्र और कानूनी अधिकारों को प्राप्त करने के लिए यह एक अनिवार्य साक्ष्य होता है।
- आँकलन आख्या सार्थक संचार के लिए आवश्यक आधार होता है। यह माता-पिता और पेशेवरों के बीच सूचनाओं के करने का माध्यम होता है।

10.2.2 आँकलन आख्या (रिपोर्ट) की परिभाषा एवं इसके मूल सिद्धांत

विभिन्न मनोवैज्ञानिकों और विशेष शिक्षा विशेषज्ञों के द्वारा आँकलन आख्या (रिपोर्ट) को अलग-अलग तरीके से परिभाषित किया गया है। "आँकलन आख्या एक औपचारिक, लिखित संचार माध्यम है जो किसी व्यक्ति की शक्तियों और कमजोरियों का

आँकलन करके, विशिष्ट साक्ष्यों के आधार पर उसके उपचार, शिक्षा और पुनर्वास के लिए स्पष्ट दिशा-निर्देश प्रदान करता है।"

"आँकलन रिपोर्ट वह प्रक्रिया है जिसमें शिक्षार्थियों और उनके शिक्षकों द्वारा यह तय करने के लिए साक्ष्य (Evidence) की खोज और व्याख्या की जाती है कि शिक्षार्थी अपने सीखने में कहाँ हैं, उन्हें कहाँ जाने की आवश्यकता है और वहाँ सबसे अच्छी तरह कैसे पहुँचा जाए।"

असेसमेंट रिफॉर्म ग्रुप-2002

"मूल्यांकन या आँकलन रिपोर्ट को एक ऐसी व्यवस्थित प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो यह निर्धारित करती है कि छात्रों द्वारा शैक्षिक उद्देश्यों को किस सीमा तक प्राप्त किया गया है।"

डैंडेकर

" आँकलन रिपोर्ट सावधानीपूर्वक किए गए मूल्यांकन के माध्यम से किसी चीज़ के मूल्य, क्षमता या मात्रा को जांचने या आंकने की एक औपचारिक प्रक्रिया है।"

गुड्स

"आँकलन रिपोर्ट शिक्षार्थी के ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण और विश्वासों को मापने योग्य शब्दों में दर्ज करने की एक व्यवस्थित प्रक्रिया का परिणाम है।"

डेलक्लोस-1992

"आँकलन रिपोर्ट वह दस्तावेज़ है जो चुनिंदा मूल्यांकन विधियों, कमियों के विवरण, निष्कर्षों के सारांश एवं सुधारात्मक कार्रवाइयों के लिए प्राथमिक सिफारिशों को एक साथ प्रस्तुत करता है।"

लेइगटन जॉनसन-2020

इस प्रकार विभिन्न विद्वानों द्वारा अलग-अलग तरह से आँकलन आख्या (रिपोर्ट) को परिभाषित किया गया है।

आँकलन आख्या (रिपोर्ट) के मूल सिद्धांत

आँकलन आख्या (रिपोर्ट) विभिन्न उद्देश्यों तथा विभिन्न तरीकों से लिखा जाता है। इन सभी आँकलन आख्या (रिपोर्ट) लिखते समय कुछ प्रमुख सिद्धांतों का पालन करना आवश्यक हो जाता है। आँकलन आख्या (रिपोर्ट) लिखने हेतु कुछ प्रमुख सिद्धांतों का वर्णन निम्नलिखित है।

- **यथार्थ एवं स्पष्टता का सिद्धांत:** आँकलन आख्या (रिपोर्ट) हमेशा यथार्थ पर आधारित तथा उसकी भाषा स्पष्ट होनी चाहिए। वाक्य छोटे और सीधे होने चाहिए ताकि किसी भी प्रकार का भ्रम उत्पन्न न हो।
- **सकारात्मकता और समर्थता का सिद्धांत**: आँकलन आख्या (रिपोर्ट) में हमेशा बच्चे के सकारात्मकता और समर्थता पर बल देना छिए न कि हमेशा उनके कमियों या अक्षमताओं पर बल देना चाहिए।
- **साक्ष्य-आधारिता का सिद्धांत**: आँकलन आख्या (रिपोर्ट) में प्रत्येक निष्कर्ष के पीछे एक ठोस साक्ष्य होना चाहिए। मनगढ़ंत बातें नहीं लिखी जानी चाहिए।
- **सरलता का सिद्धांत**: आँकलन आख्या (रिपोर्ट) में अत्यधिक तकनीकी या 'जार्गन' शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए। यदि तकनीकी शब्द आवश्यक होंउसका उपयोग करना चाहिए अन्यथा सरल भाषा का उपयोग करना चाहिए।
- **प्रासंगिकता का सिद्धांत**: आँकलन आख्या (रिपोर्ट) में केवल वही जानकारी शामिल किये जाने चाहिए जो बच्चे की समस्या एवं उसके समाधान से संबंधित हो।
- **समयबद्धता का सिद्धांत**: आँकलन के पूरा होने के तुरंत बाद तुरंत बाद आँकलन आख्या (रिपोर्ट) लिखी जानी चाहिए ताकि अवलोकन और निष्कर्ष ताज़ा और प्रासंगिक रहें।

इस प्रकार आँकलन आख्या (रिपोर्ट) लिखने के कई सिद्धांत है इनमे से कुछ प्रमुख सिद्धांतों का वर्णन किया गया है जिसका पालन किया जाना अति महत्वपूर्ण है।

10.2.3 बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के लिए आँकलन आख्या (रिपोर्ट) की संवेदनशीलता

बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के लिए जब कोई आँकलन आख्या (रिपोर्ट) तैयार की जाती है, तो वहाँ संवेदनशीलता का महत्व कई गुना बढ़ जाता है। इस वर्ग के व्यक्तियों की मानसिक आयु उनकी वास्तविक आयु से कम होती है जिसके कारण समाज में उनके प्रति कई रूढ़िवादिताएँ बनी हुई हैं। एक संवेदनशील रिपोर्ट इस रूढ़िवादिता को तोड़ने का काम करती है। अतः बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के लिए आँकलन आख्या (रिपोर्ट) लिखते समय निम्नलिखित बिंदुओं का ध्यान रखना अतिआवश्यक हो जाता है।

- आँकलन आख्या (रिपोर्ट) में हमेशा गरिमापूर्ण भाषा का उपयोग करना चाहिए।
- आँकलन आख्या (रिपोर्ट) का उद्देश्य बच्चे पर किसी अक्षमता ठप्पा लगाना नहीं होना चाहिए बल्कि उसकी व्यावहारिक समस्याओं को समझना होना चाहिए।
- आँकलन आख्या (रिपोर्ट) में यथार्थवादी लेकिन आशावादी दृष्टिकोण होना चाहिए। आँकलन आख्या में बच्चों की सीमाओं को ईमानदारी से प्रस्तुत करना चाहिए। आँकलन आख्या में एक सकारात्मक और आशावादी दृष्टिकोण भी रखना चाहिए कि सही प्रशिक्षण से उसमें सुधार संभव है।
- आँकलन आख्या (रिपोर्ट) में माता-पिता की भावनाओं का सम्मान करना चाहिए। अक्सर माता-पिता अपने बच्चे की इस स्थिति के कारण मानसिक तनाव या दुख में

होते हैं। आँकलन आख्या की भाषा ऐसी होनी चाहिए जो उन्हें हतोत्साहित करने के बजाय एक संबल और मार्गदर्शन प्रदान करे।

10.3 आँकलन आख्या (रिपोर्ट) लेखन

आँकलन आख्या (रिपोर्ट) लेखन एक कौशलयुक्त कार्य है। अलग-अलग उद्देश्यों के लिए रिपोर्ट का प्रारूप, उसकी भाषा एवं उसकी विषय वस्तु बदल जाती है। एक पेशेवर को यह भली-भांति पता होना चाहिए कि वह किसके लिए और किस उद्देश्य से रिपोर्ट लिख रहा है। उसी उद्देश्य के अनुरूप आँकलन आख्या (रिपोर्ट) का प्रारूप, उसकी भाषा एवं उसकी विषय वस्तु का चयन करना कहिए। नीचे आँकलन आख्या (रिपोर्ट) के चार प्रमुख वर्गीकरणों की चर्चा विस्तृत रूप से किया से गया है।

10.3.1 प्रशासनिक उद्देश्यों के लिए आँकलन आख्या (रिपोर्ट) लेखन

प्रशासनिक उद्देश्यों के लिए लिखी जाने वाली आँकलन आख्या (रिपोर्ट) मुख्य रूप से सरकारी विभागों, संगठनों, न्यायालयों या पुनर्वास संस्थानों के लिए होती है। इस आँकलन आख्या (रिपोर्ट) उपयोग मुख्य रूप से नीतिगत निर्णय लेने या आधिकारिक प्रक्रियाओं को पूरा करने के लिए होता है। प्रशासनिक आँकलन आख्या (रिपोर्ट) का मुख्य विशेषताएं और घटक निम्नलिखित है।

- प्रशासनिक आँकलन आख्या (रिपोर्ट) अत्यधिक औपचारिक होता है। प्रशासनिक आँकलन आख्या आमतौर पर सरकार द्वारा निर्धारित एक निश्चित प्रारूप पर भरी जाती है।

- प्रशासनिक आँकलन आख्या व्यक्ति की दिव्यांगता की श्रेणी (जैसे– बौद्धिक अक्षमता, ऑटिज्म, सेरेब्रल पाल्सी आदि) और उसका सटीक प्रतिशत स्पष्ट रूप से लिखा होता है। इसी के आधार पर विभिन्न प्रशासनिक निर्णय लिए जाते हैं।
- प्रशासनिक आँकलन आख्या व्यक्ति के कानूनी और वित्तीय पात्रता तय करती है कि व्यक्ति सरकारी योजनाओं, जैसे कि दिव्यांगता पेंशन, मुफ्त बस/रेल पास, सहायक उपकरण वितरण, टैक्स में छूट आदि के लिए पात्र है या नहीं।
- प्रशासनिक अधिकारियों के पास लंबी रिपोर्ट पढ़ने का समय नहीं होता, इसलिए यह प्रशासनिक आँकलन आख्या अत्यंत संक्षिप्त, बिंदुवार और साक्ष्य–आधारित होनी चाहिए। इसमें नैदानिक विवरणों के बजाय अंतिम निष्कर्षों और स्कोर पर अधिक ध्यान दिया जाता है।

10.3.2 शैक्षिक कार्यक्रम के लिए आँकलन आख्या (रिपोर्ट) लेखन

शैक्षिक कार्यक्रम के लिए लिखी जाने वाली रिपोर्ट का सीधा संबंध बच्चों खास तौर पर बौद्धिक अक्षम बच्चों की स्कूली शिक्षा, कक्षा के वातावरण और उसके सीखने की प्रक्रियाओं से होता है। यह रिपोर्ट मुख्य रूप से विशेष शिक्षकों, सामान्य शिक्षकों एवं स्कूल के प्रधानाचार्यों के लिए लिखी जाती है। शैक्षिक कार्यक्रम के लिए लिखी जाने वाली आख्या (रिपोर्ट) की मुख्य विशेषताएं एवं घटक निम्नलिखित है।

- शैक्षिक कार्यक्रम के लिए लिखी जाने वाली आख्या (रिपोर्ट) में बौद्धिक अक्षम बच्चों के पढ़ने, लिखने, गणितीय कौशल एवं सामाजिक व्यवहार के वर्तमान स्तर का विस्तृत विवरण होना आती आवश्यक हो जाता है।
- शैक्षिक कार्यक्रम के लिए लिखी जाने वाली आख्या (रिपोर्ट) व्यक्तिगत शैक्षिक कार्यक्रम तैयार करने का मुख्य आधार बनती है। इसमें स्पष्ट रूप से बताया जाता है कि बच्चे के लिए अल्पकालिक एवं दीर्घकालिक लक्ष्य क्या होना चाहिए।
- शैक्षिक कार्यक्रम के लिए लिखी जाने वाली आख्या (रिपोर्ट) के आधार पर अनुकूलन और संशोधन किया जाता है। इस रिपोर्ट में शिक्षक को यह सुझाव दिए जाते हैं कि कक्षा में बच्चे के बैठने की व्यवस्था कैसी हो, उसे अतिरिक्त समय दिया जाए या नहीं, या उसके पाठ्यक्रम को कैसे सरल बनाया जाए iका उल्लेख होना आवश्यक होता है।
- शैक्षिक कार्यक्रम के लिए लिखी जाने वाली आख्या (रिपोर्ट) में उन विशिष्ट रणनीतियों एवं शिक्षण पद्धतियों, जैसे- विजुअल एड्स, टास्क एनालिसिस आदि का उल्लेख होता है जिनसे बच्चा आसानी से सीख सकता है। यह रिपोर्ट अत्यधिक विस्तृत और व्यावहारिक होती है।

10.3.3 संदर्भन (रेफ़रल) के लिए आँकलन आख्या (रिपोर्ट) लेखन

संदर्भन (रेफ़रल) **के लिए आँकलन आख्या (रिपोर्ट)** तब लिखी जाती है जब एक विशेषज्ञ को लगता है कि बच्चों की समस्या उसके कार्यक्षेत्र से बाहर की है या उसे

किसी अन्य क्षेत्र के विशेषज्ञ की गहन जांच की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, एक विशेष शिक्षक किसी बच्चे में सुनने की समस्या देखकर उसे 'ऑडियोलॉजिस्ट' (Audiologist) के पास भेज सकता है। संदर्भन (रेफ़रल) के लिए आँकलन आख्या (रिपोर्ट) की मुख्य विशेषताएं एवं घटक निम्नलिखित है।

- संदर्भन (रेफ़रल) के लिए आँकलन आख्या (रिपोर्ट) में सबसे पहले और सबसे स्पष्ट रूप से किसी विशिष्ट विशेषज्ञ के पास संदर्भन (रेफ़रल) का कारण लिखा होना चाहिए।
- संदर्भन (रेफ़रल) के लिए आँकलन आख्या (रिपोर्ट) में बच्चे का संक्षिप्त इतिहास और वर्तमान आँकलन के वे निष्कर्ष शामिल होना चाहिए जिसके कारण रेफ़रल की आवश्यकता पड़ी।
- संदर्भन (रेफ़रल) के लिए आँकलन आख्या (रिपोर्ट) में प्राप्तकर्ता पेशेवर से पूछे जाने वाले विशिष्ट प्रश्न या अपेक्षाएं स्पष्ट होना चाहिए। उदाहरण स्वरूप "सुनने की अक्षमता का मूल्यांकन करने की आवश्यकता है।"
- संदर्भन (रेफ़रल) के लिए आँकलन आख्या (रिपोर्ट) में भाषा बहुत ही पेशेवर और सम्मानजनक होनी चाहिए क्योंकि यह दो विशेषज्ञों के बीच अंतर-व्यावसायिक संचार का माध्यम होता है।

10.3.4 वैकल्पिक स्थानन (प्लेसमेंट) के लिए आँकलन आख्या (रिपोर्ट) लेखन

वैकल्पिक स्थानन (प्लेसमेंट) के लिए आँकलन आख्या (रिपोर्ट) के आधार पर यह सुनिश्चित किया जाता है कि बौद्धिक अक्षम बच्चे के विकास एवं शिक्षा के लिए सबसे

उपयुक्त वातावरण कौन सा होगा। बच्चे को एक सामान्य स्कूल में भेजा जाए, एक समावेशी स्कूल में, एक विशेष स्कूल में या फिर उसे व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र में भेजा जाए। वैकल्पिक स्थानन (प्लेसमेंट) के लिए आँकलन आख्या (रिपोर्ट) की मुख्य विशेषताएं एवं घटक निम्नलिखित है।

- वैकल्पिक स्थानन (प्लेसमेंट) के लिए आँकलन आख्या (रिपोर्ट) में बौद्धिक अक्षम बच्चे के क्षमताओं की तुलना विभिन्न वातावरणों की आवश्यकताओं से जाती है।
- वैकल्पिक स्थानन (प्लेसमेंट) के लिए आँकलन आख्या (रिपोर्ट) में बौद्धिक अक्षम बच्चे के क्षमताओं के अनुरूप न्यूनतम प्रतिबंधात्मक पर्यावरण में रखे जाने की बात की जाती है, जिससे बच्चे को ऐसे वातावरण में मिले जहाँ उसे आगे बढ़ने की पूरी आज़ादी मिले और वह समाज से अलग-थलग न हो।
- वैकल्पिक स्थानन (प्लेसमेंट) के लिए आँकलन आख्या (रिपोर्ट) में बच्चे के स्वतंत्र जीवन कौशल, सामाजिक कौशल एवं व्यावसायिक झुकाव का गहन मूल्यांकन होता है।
- वैकल्पिक स्थानन (प्लेसमेंट) के लिए आँकलन आख्या (रिपोर्ट) के अंत में विशेषज्ञ एक स्पष्ट और तर्कसंगत सिफारिश करता है कि बच्चे के लिए सबसे उपयुक्त वातावरण समावेशी स्कूल होगा।

10.4 समावेशी संदर्भों में आकलन आख्या (रिपोर्ट) के निहितार्थ

समावेशी शिक्षा तात्पर्य बिना किसी भेदभाव के सभी बच्चों (सामान्य और विशिष्ट दोनों) को एक ही छत के नीचे एक साथ शिक्षा देना होता है। समावेशी संदर्भों में आकलन आख्या (रिपोर्ट) के निहितार्थ बहुत गहरे और दूरगामी होते हैं। यह रिपोर्ट केवल एक नैदानिक पर्चा नहीं बल्कि समावेशन को सफल बनाने का एक उपकरण बन जाता है। समावेशी संदर्भों में आकलन आख्या (रिपोर्ट) के प्रमुख निहितार्थ निम्नलिखित हैं।

- समावेशी संदर्भों में आकलन आख्या (रिपोर्ट) के प्रमुख निहितार्थ सामान्य शिक्षकों का सशक्तिकरण होता है। सामान्य विद्यालयों के शिक्षकों के पास आमतौर पर विशेष बच्चों को पढ़ाने का प्रशिक्षण नहीं होता है। एक अच्छी रिपोर्ट इन शिक्षकों के लिए एक 'गाइडबुक' का काम करती है। यह उन्हें बताती है कि बच्चे की समस्या क्या है तथा उसे कक्षा में कैसे संभालना है।
- समावेशी संदर्भों में आकलन आख्या (रिपोर्ट) समावेशी कक्षा में दिव्यांग बच्चों के प्रति सहानुभूति के बजाय समानुभूति का माहौल तैयार करता है। यह रिपोर्ट कक्षा में बच्चे के प्रति 'तरस' या दया की भावना को हटाकर समानुभूति एवं समझ का माहौल बनाती है। यह सहपाठियों और शिक्षकों को यह समझने में मदद करती है कि यह बच्चा भी उन्हीं की तरह सीख सकता है, बस उसका तरीका थोड़ा अलग है।
- समावेशी संदर्भों में आकलन आख्या (रिपोर्ट) समावेशी कक्षा में संसाधनों का सही आवंटनके लिए अतिआवश्यक है। यह स्कूल प्रशासन को यह समझने में मदद करती है कि बच्चे के लिए किस प्रकार के संसाधनों की आवश्यकता है। उदहरण

स्वरूप रिसोर्स रूम, रैंप की व्यवस्था, विशेष सॉफ्टवेयर एवं 'शेडो टीचर' की उपलब्धता आदि।

- समावेशी संदर्भों में आकलन आख्या (रिपोर्ट) समावेशी कक्षा में सहयोगात्मक शिक्षण को बढ़ावा देता है। यह रिपोर्ट विशेष शिक्षक, सामान्य शिक्षक, अन्य थेरेपिस्ट एवं माता-पिता को एक मंच पर लाने में सहायक सिद्ध होता है। सभी पेशेवर रिपोर्ट के निष्कर्षों के आधार पर एक साझा रणनीति बनाकर काम किया जाता हैं।
- समावेशी संदर्भों में आकलन आख्या (रिपोर्ट) समावेशी कक्षा में भेदभाव और अलगाव को काम या समाप्त करने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जब यह रिपोर्ट बच्चे की शक्तियों को उजागर करता है, तो स्कूल में उसे अलग-थलग करने की प्रवृत्ति कम होती है। यह बच्चे के आत्मविश्वास को बढ़ाता है तथा उसे स्कूल की सभी गतिविधियों जैसे खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि में भाग लेने के समान अवसर प्रदान करत है।

अतः संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि समावेशी संदर्भ में आँकलन आख्या का सबसे बड़ा निहितार्थ यह है कि इसमें बच्चों के 'अक्षमता' के बजाय 'क्षमता' एवं 'विविधता के उत्सव' पर बल दिया जाता है।

10.5 सारांश

आँकलन आख्या विशेष शिक्षा, पुनर्वास एवं नैदानिक मनोविज्ञान में एक महत्वपूर्ण औपचारिक, कानूनी एवं नैदानिक दस्तावेज है। इसका उद्देश्य व्यक्ति, विशेषकर बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों की क्षमताओं, सीमाओं, व्यवहार, संज्ञानात्मक, भाषा, सामाजिक, भावनात्मक तथा शारीरिक विकास को व्यवस्थित रूप से समझना और उसके आधार पर भविष्य की योजनाएँ बनाना है। इसमें व्यक्ति का इतिहास, पारिवारिक विवरण, परीक्षण के दौरान व्यवहार, प्रयुक्त उपकरण, प्राप्त परिणाम तथा विशेषज्ञ की सिफारिशें सहम्मलित होता हैं। एक अच्छा आँकलन आख्या का साक्ष्य-आधारित, स्पष्ट, सरल, प्रासंगिक, निष्पक्ष एवं समयबद्ध आवश्यक होता है। आँकलन आख्या में बच्चे की कमियों के बजाय उसकी क्षमताओं एवं संभावनाओं पर भी ध्यान देना चाहिए। बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों के लिए रिपोर्ट लिखते समय गरिमापूर्ण, संवेदनशील और आशावादी भाषा का प्रयोग करना आवश्यक होता है, जिससे कि रिपोर्ट का बच्चे पर किसी प्रकार का नकारात्मक ठप्पा लगाने के बजाय उसके विकास और पुनर्वास में सहायक सिद्ध हो।

आँकलन आख्या का उपयोग मुख्यतः प्रशासनिक कार्यों, शैक्षिक कार्यक्रमों, संदर्भन (रेफ़रल) एवं वैकल्पिक स्थानन (प्लेसमेंट) के लिए किया जाता है। प्रशासनिक रिपोर्ट सरकारी योजनाओं एवं कानूनी अधिकारों के निर्धारण में सहायक होती है, जबकि

शैक्षिक रिपोर्ट बच्चे के वर्तमान शैक्षिक स्तर, व्यक्तिगत शैक्षिक कार्यक्रम, लक्ष्य निर्धारण तथा आवश्यक शिक्षण-अनुकूलन तय करने का आधार बनता है। संदर्भन रिपोर्ट बच्चे को आवश्यकतानुसार अन्य विशेषज्ञों तक पहुँचाने में तथा प्लेसमेंट रिपोर्ट उसके लिए सबसे उपयुक्त एवं न्यूनतम प्रतिबंधात्मक शैक्षिक वातावरण चुनने में सहायता करती है। समावेशी शिक्षा में आँकलन आख्या सामान्य एवं विशेष शिक्षकों, अभिभावकों और अन्य विशेषज्ञों के बीच सहयोग बढ़ाती है साथ ही आवश्यक संसाधनों की पहचान करती है। यह भेदभाव और अलगाव को कम करने में सहायक होती है। इस प्रकार, प्रभावी आँकलन आख्या केवल बच्चे की अक्षमता का विवरण नहीं, बल्कि उसकी क्षमताओं, आवश्यकताओं और संभावनाओं के आधार पर शिक्षा, पुनर्वास और समावेशन की दिशा निर्धारित करने वाला महत्वपूर्ण माध्यम होता है।

10.6 शब्द सूची

आँकलन: किसी व्यक्ति की क्षमताओं, सीमाओं, कौशलों, व्यवहारों एवं आवश्यकताओं को व्यवस्थित रूप से समझने की प्रक्रिया को आँकलन कहते हैं।

आँकलन आख्या: आँकलन से प्राप्त निष्कर्षों, सूचनाओं और सिफारिशों को तार्किक, व्यवस्थित एवं लिखित रूप में प्रस्तुत करने वाले दस्तावेज़ को आँकलन आख्या कहते हैं।

औपचारिक आँकलन: मानकीकृत एवं प्रमाणित परीक्षणों और निश्चित प्रक्रियाओं के आधार पर किया गया आँकलन औपचारिक आँकलन कहलाता है।

अनौपचारिक आँकलन: अवलोकन, बातचीत, दैनिक गतिविधियों एवं सामान्य व्यवहार के आधार पर किया गया आँकलन अनौपचारिक आँकलन कहलाता है।

गुणात्मक जानकारी: व्यक्ति के व्यवहार, अनुभव, गुण, कौशल और प्रदर्शन का वर्णनात्मक रूप में प्राप्त विवरण गुणात्मक जानकारी कहलाता है।

मात्रात्मक जानकारी: अंकों, स्कोर, प्रतिशत या संख्याओं के रूप में प्राप्त जानकारी को मात्रात्मक जानकारी कहते हैं।

बहु-विषयक टीम: विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों (विशेष शिक्षक, मनोवैज्ञानिक, चिकित्सक एवं थेरेपिस्ट आदि) द्वारा मिलकर व्यक्ति का आँकलन एवं पुनर्वास करने वाली टीम को बहु-विषयक टीम कहते हैं।

प्रशासनिक आँकलन आख्या: सरकारी विभागों, न्यायालयों, संस्थानों या अन्य प्रशासनिक कार्यों के लिए तैयार की गई औपचारिक आँकलन रिपोर्ट को प्रशासनिक आँकलन आख्या कहते हैं।

शैक्षिक आँकलन आख्या: बच्चे की सीखने की क्षमता, शैक्षिक कौशल, व्यवहार एवं आवश्यकताओं के आधार पर शिक्षण योजना बनाने के लिए तैयार की गई रिपोर्ट को शैक्षिक आँकलन आख्या कहते हैं।

संदर्भन आख्या (Referral Report): किसी बच्चे को आगे की जाँच या विशेष सहायता के लिए दूसरे विशेषज्ञ के पास भेजने के उद्देश्य से तैयार की गई रिपोर्ट संदर्भन आख्या कहलाती है।

प्लेसमेंट आख्या: बच्चे के लिए सबसे उपयुक्त स्कूल, कक्षा, विशेष विद्यालय या प्रशिक्षण केंद्र का चयन करने में सहायता देने के लिए तैयार किया गया रिपोर्ट को प्लेसमेंट आख्या कहते हैं।

न्यूनतम प्रतिबंधात्मक पर्यावरण (Least Restrictive Environment): ऐसा शैक्षिक वातावरण जिसमें विशेष आवश्यकता वाले बच्चे को उसकी आवश्यक सहायता मिलते हुए अन्य बच्चों के साथ अधिकतम संभव रूप से सीखने और भाग लेने का अवसर मिले, न्यूनतम प्रतिबंधात्मक पर्यावरण कहलाता है।

स्वतंत्र जीवन कौशल: व्यक्ति द्वारा दैनिक जीवन के कार्यों को अधिकतम संभव स्वतंत्रता के साथ करने की क्षमताओं को स्वतंत्र जीवन कौशल कहते हैं।

समावेशी शिक्षा: बिना भेदभाव के सामान्य और विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों को एक साथ उपयुक्त सहायता एवं सुविधाओं के साथ शिक्षा देना समावेशी शिक्षा कहलाता है।

समानुभूति (Empathy): दूसरे व्यक्ति की भावनाओं और परिस्थितियों को समझने तथा उसके दृष्टिकोण को महसूस करने की क्षमता समानुभूति कहलाती है।

सहानुभूति (Sympathy): किसी व्यक्ति की कठिनाई या दुख के प्रति दया, संवेदना या चिंता व्यक्त करना सहानुभूति कहलाता है।

संसाधन कक्ष (Resource Room): विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों को अतिरिक्त शैक्षिक सहायता और प्रशिक्षण देने के लिए विद्यालय में बनाया गया विशेष कक्ष संसाधन कक्ष कहलाता है।

अनुकूलन: बच्चे की आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षण सामग्री, वातावरण या कार्य करने के तरीके में आवश्यक परिवर्तन करना अनुकूलन कहलाता है।

निहितार्थ (Implications): किसी निष्कर्ष या प्रक्रिया के आधार पर उत्पन्न होने वाले प्रभाव, उपयोगिता या परिणाम को निहितार्थ कहते हैं।

10.7 बौध प्रश्न एवं उत्तर

1. आँकलन आख्या एक आधिकारिक, कानूनी एवं नैदानिक दस्तावेज है। सही/गलत

   उत्तर: सही।
2. आँकलन आख्या केवल आँकड़ों और अंकों का संग्रह होती है। सही/गलत

   उत्तर: गलत।
3. आँकलन आख्या में विशेषज्ञ के व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों के लिए स्थान होना चाहिए। सही/गलत

   उत्तर: गलत।
4. आँकलन आख्या साक्ष्यों और प्रमाणिक उपकरणों पर आधारित होनी चाहिए। सही/गलत

   उत्तर: सही।

5. आँकलन आख्या एक स्थिर दस्तावेज होती है, जिसमें समय के साथ कोई परिवर्तन नहीं होता। सही/गलत

   उत्तर: गलत।

6. बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों की आँकलन आख्या में बहु-विषयक टीम के विचारों का समन्वय किया जाता है। सही/गलत

   उत्तर: सही।

7. आँकलन आख्या का उपयोग बच्चों के लिए भावी शैक्षिक योजनाएँ बनाने में किया जाता है। सही/गलत

8. उत्तर: सही।

9. आँकलन आख्या सरकारी सुविधाओं और दिव्यांगता संबंधी अधिकारों के लिए साक्ष्य के रूप में उपयोगी हो सकती है। सही/गलत

   उत्तर: सही।

10. आँकलन आख्या में अत्यधिक तकनीकी शब्दावली का प्रयोग करना अनिवार्य है। सही/गलत

    उत्तर: गलत।

11. आँकलन आख्या में बच्चे की कमजोरियों पर ही ध्यान देना चाहिए। सही/गलत

    उत्तर: गलत।

12. प्रशासनिक उद्देश्यों के लिए तैयार की गई रिपोर्ट सामान्यतः औपचारिक और संक्षिप्त होती है। सही/गलत

उत्तर: सही।

13. शैक्षिक कार्यक्रम के लिए तैयार की गई आँकलन आख्या व्यक्तिगत शैक्षिक कार्यक्रम बनाने में सहायक होती है। सही/गलत

उत्तर: सही।

14. संदर्भन (रेफ़रल) रिपोर्ट में संदर्भन का कारण स्पष्ट रूप से लिखा जाना चाहिए। सही/गलत

उत्तर: सही।

15. वैकल्पिक स्थानन रिपोर्ट में बच्चे की क्षमताओं और विभिन्न वातावरणों की आवश्यकताओं की तुलना की जाती है। सही/गलत

उत्तर: सही।

16. समावेशी संदर्भों में आँकलन आख्या का उद्देश्य बच्चे को उसकी अक्षमता के आधार पर अलग-थलग करना होता है। सही/गलत

उत्तर: गलत।

10.8 अभ्यास प्रश्न

1. आँकलन आख्या की आवश्यकताओं को विस्तार से समझाइए।
2. आँकलन आख्या की प्रकृति का वर्णन कीजिए।
3. आँकलन आख्या की प्रमुख विशेषताओं को उदाहरण सहित समझाइए।

4. बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के संदर्भ में आँकलन आख्या के विभिन्न प्रकारों का विस्तार से वर्णन कीजिए।
5. आँकलन आख्या के महत्वों पर विस्तार से चर्चा कीजिए।
6. आँकलन आख्या अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।
7. आँकलन आख्या लेखन के मूल सिद्धांतों का वर्णन कीजिए।
8. प्रशासनिक उद्देश्यों के लिए लिखे जाने वाले आँकलन आख्या के प्रमुख विशेषताओं एवं घटकों का वर्णन कीजिए।
9. शैक्षिक कार्यक्रम के लिए लिखे जाने वाले आँकलन के प्रमुख विशेषताओं एवं घटकों का वर्णन कीजिए।
10. संदर्भन (रेफ़रल) के लिए लिखे जाने वाले आँकलन आख्या के प्रमुख विशेषताओं एवं घटकों का वर्णन कीजिए।
11. वैकल्पिक स्थानन (प्लेसमेंट) के लिए लिखे जाने वाले आँकलन आख्या के प्रमुख विशेषताओं एवं घटकों का वर्णन कीजिए।
12. समावेशी शिक्षा के संदर्भ में लिखे जाने वाले आँकलन आख्या के प्रमुख विशेषताओं एवं घटकों का वर्णन कीजिए।
13. समावेशी विद्यालय में आँकलन आख्या सामान्य शिक्षकों को किस प्रकार सशक्त बनाती है? विस्तार से समझाइए।

14. आँकलन आख्या किस प्रकार विशेष शिक्षक, सामान्य शिक्षक, चिकित्सक, थेरेपिस्ट एवं माता-पिता के बीच सहयोगात्मक कार्य को बढ़ावा देती है?

15. "समावेशी संदर्भ में आँकलन आख्या का उद्देश्य अक्षमता पर नहीं, बल्कि व्यक्ति की क्षमता एवं विविधता पर बल देना है।" इस कथन की व्याख्या कीजिए।

10.9 संदर्भ ग्रंथ सूची

- अनास्तासी, ए., एवं उर्बिना, एस. (1997)। मनोवैज्ञानिक परीक्षण। अपर सैडल रिवर, न्यू जर्सी: प्रेंटिस हॉल।
- अमेरिकन एसोसिएशन ऑन इंटेलेक्चुअल एंड डेवलपमेंटल डिसएबिलिटीज (AAIDD)। (2021)। बौद्धिक अक्षमता: परिभाषा, निदान, वर्गीकरण एवं सहायता प्रणालियाँ। वॉशिंगटन, डी.सी।
- अमेरिकन साइकियाट्रिक एसोसिएशन। (2013)। मानसिक विकारों का निदान एवं सांख्यिकीय मैनुअल: पाँचवाँ संस्करण (DSM-5)। वॉशिंगटन, डी.सी.: अमेरिकन साइकियाट्रिक पब्लिशिंग।
- पुनर्वास परिषद् भारत (RCI)। बौद्धिक अक्षमता के मूल्यांकन, हस्तक्षेप एवं पुनर्वास से संबंधित व्यावसायिक दिशानिर्देश। नई दिल्ली: आर. सी. आई.

- भारतीय पुनर्वास परिषद् । विशेष शिक्षा एवं पुनर्वास से संबंधित पाठ्य-सामग्री एवं दिशानिर्देश। नई दिल्ली: पुनर्वास परिषद् भारत।
- भारत सरकार। (2006)। दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र अभिसमय नई दिल्ली: सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय।
- भारत सरकार। (2016)। दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 नई दिल्ली: सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय।
- भारत सरकार। (2020)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020। नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय।
- भारत सरकार। (2016)। दिव्यांगजन अधिकार नियम एवं संबंधित अधिसूचनाएँ। नई दिल्ली: सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय।
- राष्ट्रीय न्यास। बौद्धिक एवं विकासात्मक दिव्यांगताओं के लिए पुनर्वास एवं सहायता संबंधी दिशानिर्देश। नई दिल्ली: सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (NCERT)। (2005)। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005। नई दिल्ली: एनसीईआरटी।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (NCERT)। (2006)। समावेशी शिक्षा के लिए शिक्षक शिक्षा: संसाधन सामग्री। नई दिल्ली: एनसीईआरटी।

- विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO)। (2001)। कार्य, अक्षमता और स्वास्थ्य का अंतरराष्ट्रीय वर्गीकरण (ICF)। जिनेवा: विश्व स्वास्थ्य संगठन।
- विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO)। (2022)। रोगों का अंतरराष्ट्रीय वर्गीकरण, 11वाँ संशोधन (ICD-11)। जिनेवा: विश्व स्वास्थ्य संगठन।
- सैलकाइंड, एन. जे. (2017)। मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मूल्यांकन के सिद्धांत और अनुप्रयोग। बोस्टन: पियर्सन।
- UNESCO। (2020)। वैश्विक शिक्षा निगरानी रिपोर्ट: समावेश एवं शिक्षा—सभी का अधिकार। पेरिस: यूनेस्को।
- हेवर्ड, डब्ल्यू. एल. (2013)। मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मूल्यांकन। नई दिल्ली: पीयर्सन एजुकेशन।
- हॉलाहन, डी. पी., कॉफमैन, जे. एम., एवं पुलन, पी. सी. (2018)। असाधारण शिक्षार्थी: विशेष बच्चों का परिचय। बोस्टन: पियर्सन।

इकाई 11 मानवाधिकारों और कानूनी प्रावधानों का आलोचनात्मक विश्लेषण-- अंतरराष्ट्रीय समझौते, भारतीय कानून और नीतियों की वकालत

11.1 प्रस्तावना
11.2 उद्देश्य
11.3 मानवधिकार क्या है ?
11.4 बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के लिए प्रमुख मानवाधिकार
11.4.1 भारत में बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों से संबन्धित मानवाधिकार समस्याएं
11.5 मानवाधिकार की रक्षा करने वाले संवैधानिक प्रावधान: समालोचनात्मक विश्लेषण
11.6 बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों से संबंधित राष्ट्रीय कानून एवं नीतियाँ: समालोचनात्मक विश्लेषण
11.6.1 भारतीय पुर्नवास परिषद अधिनियम-1992
11.6.2 राष्ट्रीय न्यास अधिनियम-1999
11.6.3 शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009
11.6.4 दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम-2016
11.6.5 नीतियाँ
11.6.5.1 दिव्यांग व्यक्तियांें के लिए राष्ट्रीय नीति-2006
11.6.5.1 राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020
11.7 बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के लिए अन्तराष्ट्रीय घोषनाएं एवं अभिसमय
11.7.1 मानवाधिकारों का सार्वभौमिक घोषणा 1948
11.7.2 बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के अधिकारों के घोषणा 1971
11.7.3 दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारों की घोषणा 1975

11.7.4 बाल अधिकार अधिनियम 1989
11.7.5 सभी के लिए शिक्षा पर विश्व घोषणा 1990
11.7.6 सालामनका घोषणा एवं कार्य रूप रेखा 1994
11.7.7 संयुक्त राष्ट्र दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकार अभिसमय 2006
11.7.8 सतत विकास लक्ष्य 2015
11.8 बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों में लैगिंक एवं सामाजिक आर्थिक वंचनाओं से संबंधित वकालत के मुद्दे
11.8.1 सामूहिक अथवा बलपूर्वक नसबंदी
11.8.2 यौन शोषण व लैंगिक हिंसा
11.8.3 शिक्षा से वंचित करना
11.8.4 गरीबी एवं आर्थिक वंचना
11.8.5 सामाजिक कलंक व भेदभाव
11.8.6 सरकारी योजनाओं तक सीमित पहुँच
11.9 सारांश
11.10 शब्दावली
11.11 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
11.12 संदर्भ ग्रन्थ सूची
11.13 निबन्धात्मक प्रश्न

11.1 प्रस्तावना

यह सर्वविदित है कि बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के साथ दुव्र्यवहार होने की संभावना अन्य व्यक्तियों के तुलना में अधिक होती है। ऐतिहासिक रूप में बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों को दी जाने वाली सेवाओं में भी मानवाधिकार का उल्लंघन देखा गया है जिसमें अत्यधिक दवाई देना, महिलाओं तथा पुरूषों का वंध्याकरण,घर-परिवार से दूर संस्थाओं में कैद कर रखना मुख्य है। इसके अतिरिक्त इन व्यक्तियों को अक्सर विवाह करने, संतान उत्पन्न करने, काम करने, शिक्षा प्राप्त करने को अधिकार से वंचित कर दिया जाता है।

इसी कारण अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न संधियाँ तथा भारत में उनके हितों के लिए अनेक कानूनों को लाया गया है ताकि विकलांग व्यक्तियों के समानता, गरिमा, सुरक्षा, सहभागिता तथा समावेशन के अधिकारों की रक्षा की जा सके। इस इकाई में आप विकलांग व्यक्तियों के संदर्भ में अंर्तराष्ट्रीय कानूनी प्राविधानों जैसे संयुक्त राष्ट्र बाल अधिकार अभिसमय (यू0एन0सी0आर0सी0) 1989, संयुक्त राष्ट्र विकलांग व्यक्तियों के अधिकार संबंधी अभिसमय (यू0एन0सी0आर0पी0डी0) 2006, भारतीय प्रमुख कानूनी प्राविधानों जैसे भारतीय पुर्नवास परिषद अधिनियम 1993, राष्ट्रीय न्यास (बालकों की देखभाल एवं संरक्षण) अधिनियम 2015 दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016, शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009 से अवगत होंगे तथा उसके समालोचनात्मक विश्लेषण कर सकेंगे। इसके अतिरिक्त इस इकाई में आप बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों में लिंग और सामाजिक आर्थिक असमानाताओं से संबंधित मुद्दों से भी परिचित होंगे।

11.2 उद्देश्य:

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप -

1. विकलांग व्यक्तियों के मानव अधिकार तथा कानून प्राविधानों (अंर्तराष्ट्रीय प्रावधानों तथा भारतीय काननूगो से अवगत होंगे तथा उसका समालोचनात्मक विश्लेषण कर सकेंगे।

2. बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों में लिंग तथा सामाजिक आर्थिक असमानताओं से संबंधित नीतियाँ तथा मुझे को समझ सकेंगे।

11.3 मानवाधिकार क्या है?

मानवाधिकार वे मौलिक अधिकार एवं स्वतंत्रताएं हैं जो प्रत्येक व्यक्ति को जन्म से प्राप्त होते हैं। ये अधिकार जाति, धर्म, लिंग, भाषा, राष्ट्रीयता, आर्थिक स्थित या

विकलांगता के आधार पर नहीं बदलते। इसका उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति का गरिमा, समानता, स्वतंत्रता न्याय तथा सुरक्षा के साथ जीवन जीने का अवसर प्रदान करना है।

मानवाधिकार की परिभाषाएं:

मानवाधिकार की सार्वभौम घोषणा (1948) के अनुसार

"सभी मनुष्य जन्म से स्वतंत्र तथा सम्मान और अधिकारों में समान है।"

संयुक्त राष्ट्र विकलांग व्यक्तियों के अधिकार संबंधी अभिसमय 2006 के अनुसार।

विकलांग व्यक्तियों को अन्य व्यक्तियों के समान सभी मानवाधिकार एवं मौलिक स्वतंत्रताओं को पूर्ण और समान रूप से उपभोग करने का अधिकार है।

मानवाधिकार की प्रमुख विशेषताओं:

1. मानवाधिकार अनिवार्य और आवश्यक है। मानवाधिकारों के अभाव में किसी भी व्यक्ति का शारीरिक, सामाजिक आध्यात्मिक कल्याण असंभव है। मानवाधिकार भी आवश्यक है क्योंकि वे लोगों के भौतिक और नैतिक उत्थान के लिए उपयुक्त परिस्थितियाँ प्रदान करता है।

2. मानवाधिकार मानवीय गरिमा से संबंधित है। किसी व्यक्ति के साथ गरिमापूर्ण व्यवहार करना चाहिए वह पुरूष हो या महिला, अमीर हो या गरीब।

3. मानवाधिकार अविभाज्य है - मानवधिकार किसी व्यक्ति को उसके अस्तित्व की प्रकृति के कारण प्रदान किये जाते हैं। ये सभी व्यक्तियों में उसकी जाति, धर्म, लिंग और राष्ट्रीयता की परवाह किये बिना अंतर्निहित होते हैं।

4. मानवाधिकार अपरिवर्तनीय है: इन्हें किसी भी शक्ति या प्राधिकरण द्वारा छीना नहीं जा सकता।

5. मानवधिकार जीवन के उद्देश्य की पूर्ति के लिए आवश्यक है।

6. मानवधिकार सार्वभौमिक है।

7. मानवाधिकार गतिशील है - राज्य के भीतर सामाजिक आर्थिक-सांस्कृतिक एवं राजनीतिक विकास के साथ मानवाधिकारों का विस्तार होता रहता है।

11.4 बौद्धिक अथवा व्यक्तियों के प्रमुख मानवाधिकार

- अन्य समान नागरिक के रूप में व्यवहार किये जाने का अधिकार।
- हिंसा और दुव्र्यवहार से सुरक्षित रहने का अधिकार।
- परिवार में रहने तथा नया परिवार शुरू करने का अधिकार।
- निजता का अधिकार।
- सम्मान एवं गरिमा के साथ जीवन जीने का अधिकार।
- समावेशी शिक्षा का अधिकार।
- रोजगार व आजीविका का अधिकार।
- न्याय तक पहुँच का अधिकार।
- स्वास्थ्य व पुर्नवास सेवाओं का अधिकार।

11.4.1 भारत में बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों से संबंधित मानवाधिकार समस्याएं:

भारत में बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के अधिकारों के रक्षा के लिए दिव्यागंजन अधिकार अधिनियम-2016, राष्ट्रीय न्यास अधिनियम-1999 जैसे महत्वपूर्ण कानून बनाये गये हैं इसके बावजूद व्यवहारिक स्तर पर अनेक मानवाधिकार संबंधी समस्याएं अभी भी बनी हुई है जैसे-

1. भेदभाव तथा सामाजिक कलंक:

समाज में अनेक लोग बौद्धिक अक्षमता को एक बीमारी या अक्षमता के रूप में देखते है जिसके फलस्वरूप ऐसे व्यक्तियों को परिवार, विद्यालय, कार्यस्थल या समुदाय में समान सम्मान नहीं मिलता।

2. समावेशी शिक्षा से वंचित होना अनेक बच्चों को सामान्य विद्यालयों में प्रवेश नहीं मिलता तथा उचित शैक्षिक सहायता उपलब्ध नहीं कराई जाती है। प्रशिक्षित शिक्षकों संसाधन कक्षों के अभाव के कारण समावेशी ाि◌शक्षा का उद्देश्य पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं हो पता।

3. स्वास्थ्य सेवाओं तक सीमित पहुँच:

स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच भी एक महत्वपूर्ण चुनौती है। कई बच्चों में बौद्धिक दिव्यांगता की पहचान देर से होती है जिससे शीघ्र हस्तक्षेप का लाभ नहीं मिल पाता। ग्रामीण क्षेत्रों में विशेषज्ञ चिकित्सकों, मनोवैज्ञानिकों, विशेष शिक्षकों, पुर्नवास सेवाओं की कमी के कारण परिवारों को कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है।

4. शोषण, हिंसा एवं उपेक्षा:

बौद्धिक अक्षम व्यक्ति शोषण, हिंसा, उपेक्षा तथा र्दुव्यवहार के अधिक जोखिम में रहते है।। संप्रेषण संबंधी कठिनाईयों और दूसरों पर निर्भरता के कारण के अपने साथ होने वाले अन्याय की शिकायत नहीं कर पाते। विशेष रूप से बौद्धिक अक्षम लड़कियाँ व महिलाएं यौन शोषण तथा लैंगिक भेदभाव की अधिक शिकार होती है।

5. रोजगार के अवसरों की कमी:

रोजगार और आजीविका के क्षेत्र में भी अनेक कठिनाईयाँ है। कौशल विकास के सीमित अवसर, नियोक्ताओं की नकारात्मक सोच तथा कार्य स्थलों पर उचित सुविधाओं का अभाव के कारण बहुत कम बौद्धिक अक्षम व्यक्ति सम्मानजनक रोजगार प्राप्त कर पाते है। परिणाम स्वरूप वे आर्थिक रूप से परिवार पर निर्भर रहते है।

6. न्याय तक पहुँच में कठिनाई:

न्याय तक पहुँच भी एक गंभीर मानवाधिकार समस्या है। कानूनी प्रक्रियाओं की जटिलता, सुलभ संचार व्यवस्था का अभाव तथा कानूनी सहायता की कमी के कारण बौद्धिक अक्षम व्यक्ति अपने अधिकारों की प्रभावी रक्षा नहीं कर पाते।

7. बौद्धिक अक्षम व्यक्ति के परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्तर:

इन परिवारों की दयनीय आर्थिक स्थित स्वास्थ्य सेवा, विशेष शिक्षा तक पहुँच को सीमित कर देती है जिससे विकलांगता और भी बढ़ जाती है। साथ ही देखभाल का भारी खर्च परिवारों को और भी गरीबी में धकेल देता है।

11.5 मानवधिकार की रक्षा करने वाले संवैधानिक प्रविधान-समालोचनात्मक विश्लेषण

भारतीय संविधान सर्वोच्च कानूनी ढ़ांचा है जो बौद्धिक अक्षम बच्चों सहित सभी नागरिकों के मौलिक अधिकारों की गारंटी देता है। हालांकि संविधान के मूल पाठ में विकलांग व्यक्तियों का स्पष्ट रूप से उल्लेख नहीं है, लेकिन समानता, न्याय और गरिमा के व्यापक सिद्धान्तों के तहत उन्हें संरक्षण और सहायता प्रदान करने के लिए कई अनुच्छेदों की व्याख्या की गई है।

- अनुच्छेद 15 (2): सबसे महत्वपूर्ण प्रावधानों में से एक जो विकलांगता सहित विभिन्न आधारों पर भेद-भाव को प्रतिबंधित करता है। यह सुनिश्चित करता है कि बौद्धिक अक्षम बच्चों को सार्वजनिक स्थलों, सेवाओं तथा संस्थानों तक पहुँच से वंचित नहीं किया जा सकता।
- अनुच्छेद (21): जीवन तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकार की गारंटी देता है जिसे न्यायिक रूप में विस्तारित करके इसमें गरिमापूर्ण जीवन जीने का अधिकार और स्वास्थ्य देखभाल तक पहुँच का अधिकार शामिल किया गया है। यह अनुच्छेद बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के लिए महत्वपूर्ण संवैधानिक सुरक्षा प्रदान करता है किन्तु अनेक व्यक्ति अभी भी संस्थागत देखभाल, उपेक्षा, हिंसा,

सामाजिक अलगाव एवं गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य एवं पुर्नवास सेवाओं के अभाव का समाना करते हैं।

- अनुच्छेद (21-ए): यह 6 से 14 वर्ष तक के सभी बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार देता है। समावेशी शिक्षा की व्यवस्था होने के बावजूद अधिकांश विद्यालयों में प्रशिक्षित विशेष शिक्षक, अनुकूलित शिक्षण-अधिगम सामग्री का अभाव है। परिणाम स्वरूप अनेक बौद्धिक अक्षम बच्चे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से वंचित रह जाते हैं।
- अनुच्छेद (23): यह अनुच्छेद मानव तस्करी, बंधुआ मजदूरी तथा अन्य प्रकार के शोषण पर प्रतिबंध लगाता है। बौद्धिक अक्षम व्यक्ति अपनी सीमित समझ एवं दूसरों पर निर्भरता के कारण शोषण, हिंसा, आर्थिक र्दुव्यवहार एवं यौन उत्पीड़न के प्रति अधिक संवदेनशील होते हैं। इनका प्रभाव निगरानी एवं क्रियान्वयन चुनौतीपूर्ण है।

इसके अतिरिक्त राज्य नीति के निर्देशक सिद्धान्तों के अन्तर्गत अनुच्छेद 41 राज्य को बेरोजगारी, वृद्धावस्था, बीमारी, विकलागता के मामलों में शिक्षा, रोजगार, सार्वजनिक सहायता के अधिकार को सुरक्षित करने के लिए प्रभावी प्रावधान करने का निर्देश देता है।

11.6 बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चो से संबंधित राष्ट्रीय कानून एवं नीतियाँ (मानवाधिकार की रक्षा के लिए) समालोचनात्मक विश्लेषण

भारत ने भी अंर्तराष्ट्रीय सिद्धान्तों को स्वीकारते हुए दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम-2016 बनाए। इसी प्रकार राष्ट्रीय न्यास अधिनियम-1999 , भारतीय पुर्नवास परिषद अधिनियम-1992, शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009 भी दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारों की सुरक्षा के लिए कानूनी आधार प्रदान किया है।

11.6.1 भारतीय पुर्नवास परिषद अधिनियम-1992:

भारतीय पुर्नवास परिषद अधिनियम-1992 का उद्देश्य दिव्यांगजनों के लिए कार्य करने वाले पुर्नवास पेशवरों और विशेष शिक्षकों के प्रशिक्षण, योग्यता, व्यवसायिक मानकों को विनियमित करना है। इस अधिनियम का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि दिव्यांग व्यक्तियों को केवल प्रशिक्षित एवं भारतीय पुर्नवास परिषद के पंजीकृत विशेषज्ञों के द्वारा ही गुणवत्तापूर्ण शिक्षा-प्रशिक्षण, पुर्नवास व अन्य सेवायं उपलब्ध कराई जाए।

भारतीय पुर्नवास परिषद दिव्यांग बच्चों की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा/पुर्नवास के लिए प्रशिक्षित तथा पंजीकृत विशेषज्ञों की सेवाएं सुनिश्चित करता है किन्तु यह अनियम पेशेवरों के नियमन तक ही सीमित है और स्वयं में व्यापक मानवाधिकार आधारित कानून नही है।

11.6.2 राष्ट्रीय न्यास अधिनियम-1999:

इस अधिनियम का उद्देश्य आटिज्म, सेरेब्रल पाल्सी, बौद्धिक अक्षमता तथा बहु विकलांगता से ग्रसित व्यक्तियों क अधिकारों की रक्षा करना, उनके कल्याण को सुनिश्चित करना तथा उन्हें सम्मानपूर्वक स्वतंत्र जीवन जीने में सहायता प्रदान करना है। यह अधिनियम इस सिद्धान्त पर आधारित है कि प्रत्येक विकलांग बच्चा चाहे व किसी भी गंभीरता से ग्रसित हो समान अवसर, सम्मान तथा गरिमा के साथ परिवार के बीच जीने का अधिकार रखता है।

मानवाधिकार के दृष्टिकोण से यह अधिनियम भारतीय संविधान क समानता, सामाजिक न्याय, गरिमा तथा समावेश के मूल्यों को व्यवहार में लागू करता है। यह अधिनियम पारिवारिक जीवन एवं समुदाय में जीने के अधिकार को प्राथमिकता देता है तथा साथ में उनके सामाजिक सुरक्षा के अधिकार को भी सुदृढ़ करता है।

इस अधिनियम ने वैधानिक संरक्षकता, सामुदायिक पुर्नवास, परिवार आधारित देखभाल, सामाजिक सुरक्षा तथा स्वतंत्र जीवन की अवधारणाओं को बढ़ाया है

फिर भी ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता का अभाव, उनके योजनाओं तक सीमित पहुँच, न्यास की संसाधनों की कमी/अपर्याप्त तथा राज्यों में असमान कार्यान्वयन इनकी प्रमुख कमजोरिया है।

11.6.3 शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009:

यह अधिनियम, भारत में 6 से 14 वर्ष के आयु के प्रत्येक बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार प्रदान करता है।

मानवाधिकार की सार्वभौमिक घोषणा (1948), बाल अधिकर अभिसमय (1989), विकलांग व्यक्तियों के अधिकार संबंधी संयुक्त राष्ट्र अभिसमय (2006) यह स्पष्ट करता है कि प्रत्येक बच्चों को बिना किसी भेदभाव के शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है।

विकासात्मक विकलांगताओं के संदर्भ में भी यह अधिनियम इस सिद्धान्त को स्वीकारता है कि विकलांगता किसी भी बच्चे की शिक्षा से वंचित करने का आधार नहीं हो सकती। यह अधिनियम संवैधानिक सिद्धान्तों को शिक्षा के क्षेत्र में लागू किया है जैसे समानता का अधिकार, भेदभाव से संरक्षण, गरिमा के साथ शिक्षा, समावेशी शिक्षा, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, निःशुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा, सहभागिता का अधिकार मानवाधिकारों के दृष्टिकोण से शिक्षा का अधिकार अधिनियम भारत में शिक्षा के लोकतंत्रीकरण की दिशा में ऐतिहासिक कदम है। इसने पहली बार शिक्षा को प्रत्येक बच्चे का कानूनी और मौलिक अधिकार बनाया। फिर भी बौद्धिक अक्षम बच्चों के संदर्भ में इसकी प्रभावशीलता कई चुनौतियों से प्रभावित होती है। कई विद्यालयों में प्रशिक्षित विशेष शिक्षकों का अभाव है, सामान्य शिक्षकों को समावेशी शिक्षा का पर्याप्त प्रशिक्षण नहीं मिल पाता, संसाधन कक्ष में पर्याप्त शिक्षण-अधिगम सामग्री-उपकरण उपलब्ध नहीं है।

11.6.4 दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम-2016:

यह अधिनियम संयुक्त राष्ट्र के दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारों संबंधी अभिसमय 2006 के अनुरूप बनाया गया है, जिसकी भारत वर्ष 2007 में पुष्टि की थी। यह अधिनियम ने वर्ष 1995 की विकलांग जन अधिनियम का स्थान लिया और दिव्यांगता के प्रति कल्याणकारी दृष्टिकोण से आगे बढ़कर मानवाधिकार आधारित दृष्टिकोण को अपनाया।

दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम बौद्धिक अक्षमता तथा अन्य दिव्यांगजनों को भी अन्य नागरिकों की भांति मानवाधिकार के अधिकारी माना है। यह अधिनियम समानता एवं भेदभाव रहित जीवन, गरिमा व सम्मानपूर्वक जीवन, स्वतंत्रता एवं सुरक्षा, समावेशी शिक्षा, स्वास्थ्य व पुर्नवास, समुदायिक जीवन एवं स्वतंत्र जीवन, रोजगार व आजीविका, समाजिक सुरक्षा, सहभागिता, महिलाओं व बच्चों के विशेष अधिकार, सुगम्यता का अधिकार पर विशेष बल दिया है।

मानवाधिकार के दृष्टिकोण से दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम-2016 भारत में दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारों की रक्षा हेतु एक एतिहासिक कानून है। इस अधिनियम में दिव्यांगों की संख्या को 7 से बढ़ाकर 21 की है फिर भी इसके प्रभावी क्रियान्वयन में कई चुनौतियाँ है। ग्रामीण क्षेत्र में जागरूकता का अभाव, प्रशिक्षित विशेष शिक्षकों एवं पुर्नवास कर्मी की कमी, आपत्ति वित्तीय संसाधन सुगम सेवाओं का अभाव अभी भी बड़ी बाधाएं है।

11.6.5 नीतियाँ:

भारत सरकार ने दिव्यांग बच्चों के लिए समान शिक्षा, वित्तीय सहायता रोजगार और बाधा-मुक्त बुनियादी ढांचा प्रदान करने के उद्देश्यों से विकलांग व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय नीति 2006 तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू किया है। राष्ट्रीय नीति 2016 विकलांग व्यक्तियों के लिए ग्रामीण और शहरी आऊटरीच केन्द्रों के माध्यम से रोकथाम, शीघ्र पता लगाने, शारीरिक पुर्नवास, शैक्षिक एकीकरण, रोजगार इत्यादि पर ध्यान केन्द्रित करती है वही राष्ट्रीय शिक्षा नीति

2020 लचीली स्कूली शिक्षा, विशेष शिक्षकों और सुलभ शिक्षण सामग्री का समर्थन करके समावेशी शिक्षा और समान शिक्षा को बढ़ावा देती है।

11.6.5.1 दिव्यांग व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय नीति 2006:

दिव्यांग व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय नीति 2006 भारत सरकार द्वारा तैयार की गई एक महत्वपूर्ण नीति है, जिसका उद्देश दिव्यांग व्यक्तियों को समान अवसर, सामाजिक न्याय, गरिमा सुरक्षा, पुर्नवास, शिक्षा, रोजगार तथा समाज में पूर्ण भागीदारी सुनिश्चित करना है।

बौद्धिक तथा विकासात्मक विकलांग व्यक्तियों के संदर्भ में यह नीति विशेष महत्व रखती है क्योंकि वे अक्सर शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, सामाजिक सहभागिता तथा स्वतंत्र जीवन के अवसरों से वंचित रह जाते हैं। सामाजिक पूर्वाग्रह, जागरूकता की कमी तथा अपर्याप्त सेवाऐं के कारण उनके मानवाधिकारों का हनन होता हैं यह नीति इन चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत करते हुए उनके अधिकारों की रक्षा और सशक्तिकरण का मार्ग प्रस्तुत करती है। इस नीति में विकलांग बच्चों को शीघ्र पहचान, मेडिकल व पुर्नवास सेवाएं, उनकी शिक्षा, रोजगार एवं आर्थिक सशक्तिकरण, सामाजिक सुरक्षा, शोषण, उपेक्षा एवं र्दुव्यवहार के संरक्षण की सुविधा प्रदान करती है। इसी नीति ने आगे चलकर दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016 जैसे व्यापक कानून व्यवस्था के निर्माण की आधार शिला तैयार की।

फिर भी इस नीति की कुछ सीमाएं है। यह एक नीति है, इसलिए इसकी कानूनी सहायता किसी अधिनियम जैसी नहीं है। राज्यों में इसका क्रियान्वयन समान रूप से नहीं हो पाया।

11.6.5.2राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020:

यद्यपि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत की शिक्षा व्यवस्था में ं व्यापक सुधार लाने के लिए बनायी गयी थी फिर भी विकलांग बच्चों को समावेशी, समानतापूर्ण,

गुणवत्तापूर्ण लचीली तथा सभी के लिए सुलभ प्रणाली विकसित करने का यह नीति प्रयास करती है।

यह नीति भारतीय संविधान, दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016, संयुक्त राष्ट्र दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकार संबंधी अभिसमय के सिद्धान्तों के अनुरूप तैयार की गई है। यह नीति स्पष्ट करती है कि शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति का मौलिक अधिकार है और किसी भी बच्चे का उसकी दिव्यांगता के कारण शिक्षा से वंचित नहीं किया जा सकता। यदि इस नीति का प्रभावी ढ़ंग से क्रियान्वयन किया जाए। प्रशिक्षित विशेष शिक्षक उपलब्ध कराए जाए, सहायक तकनीक एवं संसाधनों का विस्तार किया जाए तो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, बौद्धिक एवं विकासात्मक अक्षमता वाले व्यक्तियों को आत्म निर्भर, सम्भावित तथा समाज का सक्रिय सदस्य बनाने में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

11.7 बौक्षिक अक्षम व्यक्तियों के लिए अंर्तराष्ट्रीय घोषनाएं एवं अभिसमय:

ऊपर उल्लेखित अधिनियमों और नीतियों के अतिरिक्त, महत्वपूर्ण अंर्तराष्ट्रीय घोषनाएं और अभिसमय है जिसका बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के पुर्नवास पर सीधा प्रभाव पड़ता है।

11.7.1 मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा 1948:

मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा 1948 संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 10 दिसम्बर 1948 को अपनाई गई। यह आधुनिक मानवाधिकार की आधारशिला मानी जाती है। यह घोषणा समानता का अधिकार, भेदभाव से मुक्ति का अधिकार, शिक्षा का अधिकार, सामाजिक सुरक्षा, रोजगार के अधिकारों की पुष्टि करता है। यह घोषणा इस सिद्धान्त को स्थापित करती है कि विकलांगता किसी भी व्यक्ति की मानवाधिकारी से वंचित करने का आधार नहीं हो सकती।

11.7.2 बौक्षिक अक्षम व्यक्तियों के अधिकारों की घोषणा 1971:

यह घोषणा कई कारणों से ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि पहली बार बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के अधिकारों को अंर्तराष्ट्रीय मान्यता मिली। इसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, पुर्नवास एवं रोजगार को मूल अधिकारों में स्वीकार किया गया। सभी सदस्य देशों को विकलांगता संबंधी नीतियाँ एवं कानून विकसित करने के लिए प्रेरित किया गया।

मानवाधिकारों के दृष्टिकोण से 1971 की घोषणा अपने समय के लिए अत्यन्त प्रगतिशील थी क्योंकि इसने पहली बार बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों को समान अधिकारों वाले व्यक्ति के रूप में स्वीकारा है।

11.7.3 दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारों की घोषणा 1975:

1975 की इस घोषणा में सभी प्रकार के दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारों को व्यापक रूप में स्वीकार किया गया। इस घोषणा में मानवीय गरिमा का सम्मान, समान नागरिक एवं राजनीतिक अधिकार, स्वास्थ्य सेवाएं, पुर्नवास, शिक्षा रोजगार, सामाजिक समोवेशन इत्यादि अधिकारों पर विशेष बल दिया गया।

11.7.4 बाल अधिकार अधिनियम 1989:

बाल अधिकार अभिसमय संयुक्त राष्ट्र द्वारा बच्चों के अधिकारों की सुरक्षा हेतु बनाया गया था इसे 20 नवम्बर 1989 को संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा अपनाया गया और 2 दिसम्बर 1990 से प्रभावी हुआ। बाल अधिकार अभिसमय का मूल सिद्धान्त यह है कि 18 वर्ष के कम आयु के प्रत्येक बच्चे चाहे वह किसी भी जाति, धर्म, लिंग, भाषा, सामाजिक आर्थिक पृष्ठ-भूमि अथवा दिव्यांगता से संबंधित हो, समान मानवाधिकारों के अधिकारी है। इसमें पहली बार दिव्यांग बच्चों को विशेष कर अनुच्छेद 23 के माध्यम से उनके विशेष अधिकारों को स्पष्ट रूप से मान्यता दी।

11.7.5 सभी के लिए शिक्षा पर विश्व घोषणा 1990:

शिक्षा के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक अंर्तराष्ट्रीय घोषणा है जो 5-9 मार्च 1990 के दौरान जोमिटियन थाइलैंड में आयोजित विश्व शिक्षा सम्मेलन में स्वीकार किया गया। इस घोषणा का मुख्य उद्देश्य था कि प्रत्येक व्यक्ति को, बिना किसी भेद-भाव के गुणवत्तापूर्ण बुनियादी शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिले। यह प्रत्येक बच्चे का मौलिक मानवाधिकार है। यह समानता एवं भेद-भाव रहित, समोवेशित शिक्षा, समुदाय के भीतर सहभागिता, शिक्षा में समान अवसर पर विशेष बल देता है।

मानवाधिकारों के दृष्टिकोण से जोमिटियन घोषणा 1990 ने शिक्षा को सार्वभौमिक मानवाधिकार ने रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। इस शिक्षा में समावेशी शिक्षा पर विशेष बल दिया गया। फिर भी कुछ सीमाएं थी जैसे-समायोजन, सहायक तकनीक, व्यैक्तिक शैक्षिक कार्यक्रम का निर्माण जैसे प्रावधानों का विस्तृत उल्लेख नहीं था।

11.7.6 सालामनका घोषणा एवं कार्य रूप रेखा 1994:

यूनेस्को द्वारा 1994 में स्वीकृत सालामनका घोषणा समावेशी शिक्षा का एक महत्वपूर्ण अंर्तराष्ट्रीय दस्तावेज है। इस घोषणा में दिव्यांग बच्चों को सामान्य विद्यालयों में शिक्षा की वकालत की गई है। इसके लिए विद्यालयों को बच्चों की व्यक्तिगत आवश्यताओं के अनुकूल बनाने शिक्षकों को समावेशी शिक्षा का प्रशिक्षण देने पर विशेष बल दिया गया है।

11.7.7 संयुक्त राष्ट्र दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकार अभिसमय 2006:

यह दिव्यांग व्यक्तियों के मानवाधिकारों से संबंधित सबसे व्यापक एवं महत्वपूर्ण अंर्तराष्ट्रीय अभिसमय है। भारत ने वर्ष 2007 में इसकी पुष्टि की।

इस अभिसमय का पहला और सबसे महत्वपूर्ण सिद्धान्त मानवीय गरिमा है, अर्थात सभी बौद्धिक अक्षम एवं अन्य विकलांगजनों को सम्मानपूर्वक जीवन जीने

का अधिकार है, उनकी इच्छाओं, व्यक्तित्व, पहचान और नियमों का सम्मान किया जाना चाहिए।

अभिसमय का दूसरा प्रमुख सिद्धान्त भेदभाव रहित समानता है। किसी भी व्यक्ति के साथ केवल उसकी दिव्यांगता के कारण शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, सामाजिक सुरक्षा अथवा अन्य सेवाओं में भेदभाव नहीं किया जा सकता।

यू0एन0सी0आर0पी0डी0 के अनुसार समावेशी शिक्षा प्रत्येक दिव्यांग व्यक्ति का मौलिक अधिकार है।

यह अभिसमय स्वास्थ्य सेवाओं के अधिकार को भी सुनिश्चित करता है। उन्हंे गुणवत्रापूर्ण सुलभ एवं सम्मानजनक स्वास्थ्य सेवाएं बिना भेदभाव के उपलब्ध कराई जानी चाहिए।

अभिसमय में स्वतंत्र जीवन, समुदाय के सहभागिता को विशेष महत्व देता है। विकलांग व्यक्तियों के संस्थानों तक सीमित रखने के बजाय परिवार एवं समुदाय के साथ रहने, अपने पसंद के अनुसार जीवन जीने तथा सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने का अवसर मिलना चाहिए।

यह अभिसमय विकलांग महिलाओं और बच्चों के अधिकारों पर भी विशेष बल दिया है। उनके लिए अतिरिक्त सुरक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य और समान अवसर सुनिश्चित किये जाने चाहिए। अभिसमय में रोजगार और आजीविका के अधिकार को भी मान्यता देता है।

11.7.8 सतत् विकास लक्ष्य 2015:

संयुक्त राष्ट्र द्वारा निर्धारित सतत् विकास लक्ष्य का मूल सिद्धान्त किसी को भी पीछे नहीं छोड़ना है। दिव्यांगता वाले व्यक्तियों के संदर्भ में सतत विकास लक्ष्य निम्नलिखित पर बल देता है -

- गुणवत्तापूर्ण समावेशी शिक्षा (लक्ष्य 4)
- सम्मानजनक रोजगार (लक्ष्य 8)

- असमानताओं में कमी (लक्ष्य 10)
- समावेशी एवं सुरक्षित समुदाय (लक्ष्य 11)
- विकास की सभी प्रक्रियाओं में समान भागीदारी

अंर्तराष्ट्रीय घोषणाएं एवं अभिसमय विकलांग व्यक्तियों के मानवाधिकारों की सुरक्षा, समानता, गरिमा, शिक्षा, स्वास्थ्य रोजगार, पुर्नवास, सामाजिक सुरक्षा, स्वतंत्र जीवन तथा समाज के सहभागिता के लिए मजबूत बौद्धिक आधार प्रदान करता है। संयुक्त राष्ट्र की सभी दस्तावेज इस बात पर बल देता है कि बौद्धिक अक्षम व्यक्ति समाज के समान अधिकार प्राप्त नागरिक है। इनकी सुरक्षा, सम्मान केवल कानूनी दायित्व ही नहीं बल्कि एक मानवीय एवं न्यायपूर्ण समाज की पहचान है।

11.8 बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों में लैंगिक एवं सामाजिक आर्थिक वचनाओं से संबंधित वकालत के मुद्दे:

वकालत का अर्थ है किसी व्यक्ति या समूह के अधिकारों की रक्षा करना, उनके हितों का प्रतिनिधित्व करना तथा यह सुनिश्चित करना कि उन्हें समाज में समान अवसर सम्मान, न्याय और आवश्यक सेवाएं प्राप्त हो। बौद्धिक अक्षम व्यक्ति अक्सर दिव्यांगता, लिंग, सामाजिक आर्थिक स्थिति के कारण बहुआयामी भेदभाव का सामना करता है। विशेष रूप से बालिकाएं, महिलाएं तथा आर्थिक रूप से कमजोर परिवार से आने वाले बौद्धिक अक्षम व्यक्ति शिक्षा, स्वास्थ्य रोजगार से अधिक वंचित रह जाते हैं। इसलिए उनके मानवाधिकारों की रक्षा और सामाजिक समावेशन के लिए प्रभावी वकालत की आवश्यकता है।

11.8.1 सामूहिक अथवा बलपूर्वक नसबंदी:

अतीत में अनेक देशों में बौद्धिक अक्षम महिलाओं की उनकी स्वतंत्र एवं सूचित सहमति के बिना नसबंदी कर दी जाती थी। यह प्रथा, प्रजनन संबंधी अधिकार, शारीरिक अखंडता (बोडिली इन्टीग्रीटी) का अधिकार, परिवार स्थापित करने का

अधिकार, स्वतंत्र निर्णय लेने का अधिकार समस्त मानवाधिकारों का गंभीर उल्लंघन है। संयुक्त राष्ट्र दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकार अभिसमय 2006 स्पष्ट रूप से बलपूर्वक नसबंदी का विरोध करता है तथा दिव्यांग महिलाओं को समान प्रजजन अधिकारों को मान्यता देता है।

वकालत के मुख्य मुद्दे:

- बलपूर्वक अथवा बिना सहमति नसबंदी पर पूर्ण प्रतिबध।
- प्रजनन एवं यौन अधिकारों का सम्मान।
- यौन व प्रजनन स्वास्थ्य शिक्षा।
- महिलाओं को उचित परामर्श एवं स्वास्थ्य सेवाएं।
- कानूनी संरक्षण।

11.8.2 यौन शोषण व लैंगिक हिंसा:

बौद्धिक अक्षम महिलाएं और बालिकाएं समाज में सबसे अधिक संवेदनशील समूहों में से एक है जिन्हें न केवल दिव्यांगता के कारण बल्कि महिला होने के कारण दोहरे भेदभाव का सामना करना पड़ता है। सीमित संप्रेषण क्षमता, दूसरों पर निर्भरता, सामाजिक अलगाव, गरीबी, अपने अधिकारों की सीमित जानकारी के कारण ये यौन शोषण तथा लैंगिक आधारित हिंसा का अधिक जोखिम उठाती है।

बौद्धिक अक्षम महिलाओं की सुरक्षा एवं अधिकारों की रक्षा के लिए निम्नलिखित वकालत आवश्यक है -

1. कानूनी संरक्षण - सभी प्रकार की हिंसा एवं शोषण के विरूद्ध कानूनों का प्रभावी क्रियान्वयन, निःशुल्क कानूनी सहायत देना।

2. यौन एवं प्रजनन शिक्षा की व्यवस्था करना।

3. स्वास्थ्य व परामर्श सेवाएं सुनिश्चि◌ित करना।

4. न्याय प्रणाली में उनकी गवाही अक्सर विश्वसनीयता की कमी के कारण खारिज कर दिया जाता है अत, संगठन समर्थित निर्णय लेने का माॅडल को बढावा देना।

11.8.3 शिक्षा से वंचित करना:

बौद्धिक अक्षम बालिकाएं शिक्षा से वंचित रह जाती है। इसका कारण दिव्यांगता ही नही बल्कि लिंग और दिव्यांगता के कारण होने वाला दोहरा भेदभाव है। गरीबी, सामाजिक पूर्वाग्रह, सुरक्षा संबंधी चिंताए, संसाधन की कमी उनकी शिक्षा में प्रमुख बाधाएं है।

शिक्षा से वंचित होने के परिणाम:

यदि बौद्धिक अक्षम बालिका शिक्षा से वंचित रहती है तो निम्न गंभीर प्रभाव हो सकते है -

- विकलांगता की गंभीरता और बढ़ेगी तथा कौशलों का विकास सीमित हो जाएगी।
- आत्म निर्भर बनने में कठिनाई।
- आत्म विश्वास में कमी।
- समस्या व्यवहार की प्रबल संभावना।
- सामाजिक अलगाव।
- शोषण एवं हिंसा का अधिक जोखिम
- आर्थिक निर्भरता में वृद्धि।

वकालत के प्रमुख मुद्दे -

बौद्धिक अक्षम बालिकाओं की शिक्षा सुनिश्चित करने के लिये निम्नलिखित क्षेत्रों में वकालत आवश्यक है:

- समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देना।

- निःशुल्क शिक्षा के साथ निःशुल्क शिक्षण सामग्री, परिवहन सुविधा।
- सुरक्षित विद्यालय वातावरण।
- परिवार व समुदाय में जागरूकता।
- कानूनों का प्रभावी क्रियान्वयन जैसे-शिक्षा के अधिकार अधिनियम 2009, दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम-2016, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020

11.8.4 गरीबी एवं आर्थिक वचना:

गरीबी के कारण भी परिवार लड़कियों को विशेष शिक्षा, पुर्नवास सेवाएं के लिए खर्च उठाने में असमर्थ होते हैं।

वकालत से प्रमुख मुद्दे -

- दिव्यांग पेंशन
- आर्थिक सहायता
- निःशुल्क व्यावसायिक प्रशिक्षण/परिवहन सुविधा

11.8.5 सामाजिक कलंक एवं भेदभाव:

समाज में व्याप्त अवधारणाएं बौद्धिक अक्षम लड़कियों को शिक्षा, रोजगार तथा समाजिक जीवन से दूर कर देती है।

वकालत के मुख्य मुद्दे -

- जन जागरूकता अभियान
- मीडिया में विकलांगता की सकारात्मक प्रस्तुति
- समावेशी समाज का निर्माण।

11.8.6 सरकारी योजनाओं तक सीमित पहुँच:

कुछ परिवारों में लड़कों को सरकारी योजनाओं का लाभ दिलाने की प्राथमिकता दी जाती है जबकि बलिकाओं की आवश्यकताओं को कम महत्व दिया जाता है।

वकालत के मुख्य मुद्दे -

- व्यापक जन जागरूकता अभियान
- विशेष कर बालिकाओं के लिए दिव्यांगता प्रमाण पत्र तथा छात्रवृत्ति के लिए प्रोत्साहन योजनाए।
- नियमित निगरानी करना जिससे यह सुनिश्चित हो कि सभी पात्र बालिकाओं तक योजनाओं का लाभ पहुँचे।

11.8.7 न्याय तक पहुँच का अभाव:

न्याय तक पहुँच आज भी कई लोगों को विशेष कर बौद्धिक अक्षम महिलाओं के लिए चिंता का विषय है। इसका प्रमुख कारण देखभाल करने वालो पर उनकी निर्भरता है। कई बौद्धिक अक्षम महिलाएं/लड़कियों के मामले में परिवार के सदस्य या देखभाल कर्ता द्वारा ही दुर्व्यवहार का शिकार होता है जिन पर वे वित्तीय या अन्य सहायता के लिए निर्भर थी।

वकालत के मुख्य मुद्दे:

- आवासीय देखभाल संस्थानों की पर्याप्त निगरानी जिससे यह सुनिश्चित हो देखभाल की गुणवत्ता बनी रहे।
- व्यापक जागरूकता अभियान।

11.8.8 लैंगिक रणनीतियाँ में अदृश्यता:

ऐतिहासिक रूप से, सामान्य लैगिंक समानता आंदोलनों व विकलांगता अधिकार आंदोलनों ने इस समूह की अनदेखी हुई है। 1960 से 2000 के दशक विकलांगता अधिकार आंदोलनों जो संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, यूरोपीय देशों में हुई उनमें बौद्धिक अक्षम महिलाओं एवं लड़कियों के लैंगिक और विकास रणनीतियों के मसौदे को सम्मिलित नहीं किया गया।

वकालत के मुख्य मुद्दे:

- राष्ट्रीय तथा अंर्तराष्ट्रीय लैंगिक और विकास रणनीतियों के मसौदे में बौद्धिक अक्षम महिलाओं के मुद्दें भी सम्मिलित हो।
- व्यापक जागरूकता अभियान।

11.9सारांश:

- मानवाधिकार वे मौलिक अधिकार एवं स्वतंत्रता हैं जो प्रत्येक व्यक्ति को जन्म से प्राप्त होते हैं। ये अधिकार जाति, धर्म, लिंग, भाषा, राष्ट्रीयता, आर्थिक स्थिति पर नहीं बदलती है।
- मानवाधिकार की प्रमुख विशेषताओं में यह अनिवार्य एवं आवश्यक है, मानवीय गरिमा से संबंधित है, अविभाज्य है, अपरीवर्तनीय है, सार्वभौमिक है तथा सदैव गतिशील है।
- बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों को अन्य सामान्य व्यक्ति के रूप में व्यवहार किये जाने का अधिकार है, उन्हें हिंसा और र्दुव्यवहार से सुरक्षित रहने का अधिकार है, परिवारजनों के साथ रहने तथा परिवार शुरू करने का अधिकार है समावेशी शिक्षा का अधिकार है, रोजगार व आजीविका का अधिकार हैं
- मानवाधिकार की रक्षा करने के लिए संविधान में प्रावधान है। जैसे अनुच्छेद 15 (2), 21 21-ए, 23
- बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के लिए कई राष्ट्रीय कानून व नीतियाँ बनाई गयी है जैसे-राष्ट्रीय न्यास अधिनियम-1999, शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009, दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम-2016, दिव्यांग व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय नीति-2006, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986, 1991, 2020.
- बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों में लैगिक व सामाजिक-आर्थिक वचनाओं से संबंधित वकालत के मुद्दों में सामूहिक अथवा बलपूर्वक नसबंदी, यौन शोषण, शिक्षा से वंचित कान को प्रमुखता दी जा सकती है।

11.10 शब्दावली:

- मानवाधिकार - सभी मनुष्य जन्म से स्वतंत्र तथा सम्मान और अधिकारों में समान है। (मानवधिकार की सार्वभौमिक घोषणा-1948)
- बाल अधिकार - अभिसमय 1989. बच्चों के अधिकारों की सुरक्षा हेतु संयुक्त राष्ट्र द्वारा 20 नवम्बर 1989 में अपनाया गया तथा 1990 से प्रभावी हुआ।

11.11 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर:

प्रश्न - भारत में बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों से संबंधित मानवाधिकारों की कोई दो समस्याएं बताए।

उत्तर - भेदभाव, सामाजिक कलंक, संसाधनों की सीमित पहुँच।

प्रश्न - राष्ट्रीय न्यास अधिनियम-1999 किस प्रकार बौद्धिक अक्षम बच्चों के मानवाधिकार की रक्षा करता है ?

उत्तर- यह अधिनियम उनके पारिवारिक जीवन तथा उन्हें समुदाय में जीने के अधिकार को प्राथमिकता देता है।

- उनके सामाजिक सुरक्षा सुदृढ़ करता है।
- यह वैधानिक संरक्षकता, सामुदायिक पुर्नवास, परिवार आधारित देखभाल, सामाजिक सुरक्षा तथा स्वतंत्र जीवन की अवधारणाओं को बढ़ाता है।

11.12 संदर्भ ग्रन्थ सूची:

- गोवरमेंट आॅफ इंडिया (1992) मिनिस्ट्री आॅफ सोसल जस्टिस एण्ड इम्पावरमेंट, रिहैबिलीटेशन काउंसिल आॅफ इंडिया एक्ट नई दिल्ली।
- गोवरमेंट आॅफ इंडिया (1999) मिनिस्ट्री आॅफ सोशल जस्टिस एण्ड इम्पावरमेंट, नेशनल ट्रस्ट एक्ट, नई दिल्ली।
- मोहित, ए (2004) डिसेबिलिटी मैनेजमेंट इन ंइंडिया, चैलेंजस एण्ड कमिटमेंट: सी0एस0 माहापात्रा (इडी) सिकन्दरा बादः एन0आई0एम0एच।

11.13 निबंधात्मक प्रश्न:

1. मानवाधिकार क्या है? भारत में बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों से संबंधित मानवाधिकार की समस्याओं को लिखे।

2. बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय कानूनों की मानवाधिकार के संदर्भ में समालोनात्मक विश्लेषण करें।

3. बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों में लैंगिक व सामाजिक आर्थिक वंचनाओं से संबंधित वकालत के मुद्दों को सूचीबद्ध करते हुए समालोचनात्मक विश्लेषण करें।

इकाई 12- तकनीकी में प्रगति और बौद्धिक अक्षमता वाले लोगों को सशक्त बनाने के लिए तकनीकी का बेहतर इस्तेमाल। समावेशी संदर्भों में इसके प्रभाव

12.1 प्रस्तावना

12.2 उद्देश्य

12.3 तकनीकी:अर्थ एवं परिभाषा

12.4 बौद्धिक अक्षमता और तकनीकी

12.5 बौद्धिक अक्षमता के क्षेत्र में विभिन्न सहायक तकनीकी

12.6 समावेशी शिक्षा में सहायक तकनीकी का प्रभाव

12.7 सारांश

12.8 शब्दावली

12.9 अभ्यास प्रश्नो के उत्तर

12.10 संदर्भ ग्रंथ सूची

12.11 निबंधात्मक प्रश्न

12.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में तकनीकी क्या है और बौद्धिक अक्षमता से ग्रसित कोई भी व्यक्ति बच्चा तकनीकी की सहायता से किस प्रकार सिखाता है या सशक्त होता है| इसके विषय में आप अध्ययन करेंगे| तकनीकी (टेक्नोलॉजी), यानी इंसानी ज़िंदगी के व्यावहारिक मक़सदों के लिए वैज्ञानिक जानकारी का इस्तेमाल—या, जैसा कि कभी-कभी कहा जाता है, इंसानी माहौल में बदलाव और उसमें हेर-फेर करना। टेक्नोलॉजी हमारी रोज़मर्रा की ज़िंदगी का अहम हिस्सा बन गई है। स्मार्टफ़ोन और इंटरनेट से लेकर ट्रांसपोर्ट और हेल्थकेयर सिस्टम तक, यह हमारे बातचीत करने, काम करने, सीखने और जीने के तरीके पर असर डालती है। समय के साथ, टेक्नोलॉजी शुरुआती इंसानों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले साधारण टूल्स से आगे बढ़कर आज के आधुनिक समाज को चलाने वाले बहुत एडवांस्ड डिजिटल सिस्टम तक विकसित हो गई है।

शिक्षा के सफ़र में, बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों को अक्सर खास तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। उनके सीखने के अनुभव को बेहतर बनाने में अडैप्टिव टेक्नोलॉजी (अनुकूलन तकनीक) अहम भूमिका निभाती है। ये टूल हर बच्चे की ज़रूरतों के हिसाब से पढ़ाई-लिखाई का सामान तैयार कर सकते हैं, जिससे बच्चे के लिए सीखना ज़्यादा आसान और दिलचस्प हो जाता है।

12.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप –

- तकनीकी के अर्थ को समझा जायेंगे|
- तकनीकी को परिभाषित कर सकेंगे|
- बौद्धिक अक्षमता के क्षेत्र में विभिन्न तकनीकीयों के प्रयोग से परिचित हो सकेंगे|
- समावेशी शिक्षा में सहायक तकनीकी के प्रभाव को जान पायेंगे|

12.3 तकनीकी:अर्थ, परिभाषा, प्रकार और उपयोगिता

तकनीकी (टेक्नोलॉजी), यानी इंसानी ज़िंदगी के व्यावहारिक मक़सदों के लिए वैज्ञानिक जानकारी का इस्तेमाल—या, जैसा कि कभी-कभी कहा जाता है, इंसानी माहौल में बदलाव और उसमें हेर-फेर करना।

'टेक्नोलॉजी' शब्द ग्रीक भाषा के दो शब्दों से मिलकर बना है: 'टेक्ने' (technē), जिसका अर्थ है "कला या शिल्प," और 'लोगोस' (logos), जिसका अर्थ है "शब्द या वाणी।" यह शब्द सबसे पहले 17वीं सदी में अंग्रेज़ी में आया और समय के साथ इसके कई अर्थ बदलते हुए यह आज के अपने वर्तमान अर्थ तक पहुँचा है।

तकनीकी (टेक्नोलॉजी) का अर्थ है वैज्ञानिक ज्ञान, टूल्स, सिस्टम और तकनीकों का इस्तेमाल करके समस्याओं को हल करना, काम करने की क्षमता को बेहतर बनाना और इंसानी ज़िंदगी को बेहतर बनाना। इसमें पहिए जैसे साधारण टूल्स से लेकर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और क्लाउड कंप्यूटिंग जैसे एडवांस्ड इनोवेशन तक सब कुछ शामिल है।

आसान शब्दों में कहें तो, टेक्नोलॉजी का मतलब है जानकारी का इस्तेमाल करके ज़िंदगी को आसान और बेहतर बनाना। इसमें ऐसे टूल्स, मशीनें और सिस्टम बनाना शामिल है जो हमें काम को ज़्यादा अच्छे से करने और रोज़मर्रा की समस्याओं को हल करने में मदद करते हैं।

टेक्नोलॉजी हमारी रोज़मर्रा की ज़िंदगी का अहम हिस्सा बन गई है। स्मार्टफ़ोन और इंटरनेट से लेकर ट्रांसपोर्ट और हेल्थकेयर सिस्टम तक, यह हमारे बातचीत करने, काम करने, सीखने और जीने के तरीके पर असर डालती है। समय के साथ, टेक्नोलॉजी शुरुआती

इंसानों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले साधारण टूल्स से आगे बढ़कर आज के आधुनिक समाज को चलाने वाले बहुत एडवांस्ड डिजिटल सिस्टम तक विकसित हो गई है।

टेक्नोलॉजी एक बहुत बड़ा और फैला हुआ विषय है। नीचे कुछ चुनिंदा उदाहरण दिए गए हैं जिनसे पता चलता है कि टेक्नोलॉजी ने हमारी दुनिया को कैसे बदला है—और 21वीं सदी में इसके विकास की रफ़्तार और भी तेज़ हो गई है।

- क्या आप जानते हैं कि इलास्टोमर क्या है? रबर के बारे में सोचिए—यह एक बहुत ज़रूरी टेक्नोलॉजी है।
- कोयला खनन, कोयले का इस्तेमाल, पेट्रोलियम का उत्पादन, पेट्रोलियम रिफाइनिंग और न्यूक्लियर पावर: इन सभी चीज़ों और ऐसी ही कई अन्य चीज़ों से पता चलता है कि एनर्जी बनाने के लिए टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल कैसे किया जाता है।
- खाना बनाने के लिए टेक्नोलॉजी बहुत ज़रूरी है। खेती की शुरुआत, कमर्शियल मछली पकड़ने, डेयरी फार्मिंग, फलों की खेती, बड़े पैमाने पर जानवरों को पालने, पशुपालन, पोल्ट्री फार्मिंग और सब्ज़ियों की खेती के बारे में और जानें। हम इंसान जो कुछ भी खाते-पीते हैं, उनमें से लगभग सब कुछ टेक्नोलॉजी की वजह से ही मुमकिन हो पाया है—कॉफ़ी और चाय से लेकर अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फ़ूड और सॉफ्ट ड्रिंक्स तक।
- पत्थर के औज़ार, बेसेमर प्रोसेस और Apple II पर्सनल कंप्यूटर में क्या संबंध है? ये सभी ऐसी टेक्नोलॉजिकल खोजें हैं जिन्होंने हमारी दुनिया को बदल दिया है।
- कंस्ट्रक्शन टेक्नोलॉजी ने हज़ारों सालों से पुलों, नहरों और अंदरूनी जलमार्गों, बांधों, बंदरगाहों और समुद्री निर्माणों, लाइटहाउस, गगनचुंबी इमारतों, सड़कों और हाईवे, और सुरंगों व ज़मीन के नीचे की खुदाई के ज़रिए धरती को बदल दिया है। सीमेंट और स्टील जैसे इंजीनियर किए गए मटीरियल ने समय के साथ इन ढांचों के बड़े और मज़बूत वर्शन बनाना मुमकिन कर दिया है।

- टेक्नोलॉजी हमें दुनिया भर में गाड़ी चलाने, हवाई जहाज़ उड़ाने और जहाज़ से यात्रा करने—और धरती को छोड़कर आगे बढ़ने में मदद करती है।
- हो सकता है कि इंटरनेट आज की सबसे ज़रूरी कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी हो (खासकर, यह एक सिस्टम आर्किटेक्चर है), लेकिन टेलीकम्युनिकेशन और टेलीकम्युनिकेशन मीडिया का इतिहास बहुत पुराना है। यह न भूलें कि टेलीफ़ोन, फ़ोटोग्राफ़ी, प्रिंटिंग और कागज़ भी कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी के ही रूप हैं, ठीक वैसे ही जैसे स्मार्टफ़ोन और मैसेजिंग ऐप्स हैं।
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का विकास मशीन लर्निंग, नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग और बड़े लैंग्वेज मॉडल के ज़रिए हुआ है। यह कई तरह के तकनीकी इनोवेशन का आधार है, जिनमें ऑटोनॉमस गाड़ियाँ और वर्चुअल असिस्टेंट व एजेंट शामिल हैं।
- कहा जा सकता है कि इंजीनियरिंग असल में टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल है। इसके कई रूप हो सकते हैं: एयरोस्पेस इंजीनियरिंग, केमिकल इंजीनियरिंग, सिविल इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रिकल और इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग, ह्यूमैनिटेरियन इंजीनियरिंग, मिलिट्री इंजीनियरिंग, न्यूक्लियर इंजीनियरिंग, पेट्रोलियम इंजीनियरिंग और टिश्यू इंजीनियरिंग इसके कुछ उदाहरण हैं।

तकनीकी (टेक्नोलॉजी) की परिभाषा

तकनीकी (टेक्नोलॉजी) को एक शब्द अथवा एक लाईन में परिभाषित नहीं किया जा सकता है| बेहतर समझ के लिए, हम टेक्नोलॉजी के बारे में कुछ मुख्य तरीकों से सोच सकते हैं:

प्रक्रिया (Process): यह समाधान बनाने का एक व्यवस्थित तरीका है, जिसमें खास लक्ष्यों को पाने के लिए प्लानिंग, डिज़ाइन और काम को पूरा करना शामिल है।

बनाई गई चीज़ें (Creations): ये वे ठोस और अमूर्त चीज़ें हैं जो इस प्रक्रिया से बनती हैं – जैसे कि टूल्स, मशीनें, सॉफ्टवेयर और तरीके।

जानकारी (Knowledge): यह वह समझ, तथ्य और तरीके हैं जिनसे यह प्रक्रिया और चीज़ें बनाना संभव हो पाता है। यह हर चीज़ के पीछे की वजह ("क्यों") और तरीका ("कैसे") है।

आखिरकार, टेक्नोलॉजी का मतलब है जानकारी और हुनर का इस्तेमाल करके ऐसे टूल्स, सिस्टम और तरीके बनाना जिनसे समस्याएँ हल हों या मनचाहे नतीजे मिलें। यह एक तेज़ी से बदलने वाला क्षेत्र है जो लगातार विकसित होता रहता है, क्योंकि हम अपनी दुनिया के साथ बातचीत करने और उसे आकार देने के नए तरीके खोजते रहते हैं। नई तरक्की, जैसे कि क्रिप्टोकरेंसी में हो रही तरक्की, को जानने से टेक्नोलॉजी के इस्तेमाल के भविष्य की एक झलक मिल सकती है।

टेक्नोलॉजी का मतलब सिर्फ़ गैजेट्स नहीं है; यह उनके पीछे इंसानी समझ और हमारे जीवन पर उनके असर के बारे में है। यह समस्या सुलझाने और नई चीज़ें बनाने (Innovation) का एक लगातार चलने वाला चक्र है।

टेक्नोलॉजी के प्रकार

टेक्नोलॉजी को कई मुख्य श्रेणियों में बांटा जा सकता है, जिनमें से हर एक का अलग उद्देश्य होता है:

1. इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी (IT)

यह डेटा को मैनेज और प्रोसेस करने के लिए इस्तेमाल होने वाले कंप्यूटर, सॉफ्टवेयर और नेटवर्क पर फोकस करती है।

2. कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी

यह लोगों के बीच बातचीत को मुमकिन बनाती है, जैसे मोबाइल फोन, इंटरनेट और मैसेजिंग प्लेटफॉर्म।

3. मेडिकल टेक्नोलॉजी

इसका इस्तेमाल हेल्थकेयर में बीमारियों का पता लगाने, इलाज करने और उनसे बचाव के लिए किया जाता है; इसमें मेडिकल डिवाइस और एडवांस्ड सर्जिकल टूल शामिल हैं।

4. इंडस्ट्रियल टेक्नोलॉजी

इसमें मैन्युफैक्चरिंग और प्रोडक्शन प्रोसेस में इस्तेमाल होने वाली मशीनरी और सिस्टम शामिल हैं।

5. एजुकेशनल टेक्नोलॉजी

इसमें सीखने की प्रक्रिया को बेहतर बनाने वाले टूल और प्लेटफॉर्म शामिल हैं, जैसे ऑनलाइन कोर्स, डिजिटल क्लासरूम और ई-लर्निंग सॉफ्टवेयर।

तकनीकी का महत्व

आधुनिक समाज में तकनीकी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसके महत्व में शामिल हैं:

बेहतर उत्पादकता: स्वचालन और उपकरण कार्यों को तेजी से पूरा करने में मदद करते हैं
बेहतर संचार: दुनिया भर में त्वरित कनेक्टिविटी
नवप्रवर्तन: नए विचारों और प्रगति को प्रेरित करता है
आर्थिक विकास: व्यवसायों और उद्योगों का समर्थन करता है
उन्नत स्वास्थ्य सेवा: निदान और उपचार में सुधार
तकनीकी के लाभ और हानि
लाभ:

- तेज़ और अधिक कुशल संचार
- स्वचालन से मानवीय कार्य कम हो जाता है
- विशाल जानकारी तक पहुंच
- बेहतर स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा

हानि:

- गोपनीयता और सुरक्षा संबंधी चिंताएँ
- स्वचालन के कारण नौकरी का विस्थापन
- प्रौद्योगिकी पर अत्यधिक निर्भरता
- क्षेत्रों के बीच डिजिटल विभाजन

12.4 बौद्धिक अक्षमता और तकनीकी

बौद्धिक अक्षमता (ID) एक ऐसी स्थिति है जो किसी व्यक्ति की ज्ञान प्राप्त करने और रोज़मर्रा के काम करने की क्षमता में बाधा डालती है। यह स्थिति जन्मजात दोषों, संक्रमणों, आनुवंशिक स्थितियों और चोटों जैसे कई कारणों से हो सकती है। बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों को बिना किसी मदद के बोलने, चलने, कपड़े पहनने या खाना खाने में मुश्किल हो सकती है। उन्हें सामाजिक संकेतों को समझने और दोस्त बनाने में भी परेशानी हो सकती है।

हालांकि ID (बौद्धिक अक्षमता) का कोई ज्ञात इलाज नहीं है, लेकिन कई ऐसे उपचार उपलब्ध हैं जो इस स्थिति वाले लोगों को एक पूर्ण और उत्पादक जीवन जीने में मदद करते हैं। शुरुआती हस्तक्षेप बहुत ज़रूरी है, और जिन बच्चों में बौद्धिक अक्षमता का पता चलता है, उन्हें विशेष शिक्षा और सहायता सेवाएँ पाने का अवसर दिया जाना चाहिए।

ID (बौद्धिक अक्षमता) का जल्द पता लगाना, असरदार इलाज और मैनेजमेंट के तरीके अपनाने के लिए ज़रूरी है। इससे हेल्थकेयर प्रोफेशनल व्यक्ति की खास ज़रूरतों के हिसाब से सही इलाज और सपोर्ट सर्विस तुरंत दे पाते हैं। समय पर किए गए उपाय, जैसे स्पीच थेरेपी, ऑक्यूपेशनल थेरेपी और खास एजुकेशनल प्रोग्राम, सोचने-समझने, भाषा, सामाजिक और अनुकूलन कौशल को बेहतर बनाने में मदद करते हैं। इसके अलावा, ऐसे प्रोग्राम उन छिपे हुए मेडिकल या जेनेटिक कारणों का पता लगाने में भी मदद करते हैं जिनकी वजह से ID हो सकती है। समय पर पहचान और इलाज से, ID वाले लोग अपनी पूरी क्षमता का इस्तेमाल कर सकते हैं और एक संतोषजनक जीवन जी सकते हैं।

शिक्षा के सफ़र में, बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों को अक्सर खास तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। उनके सीखने के अनुभव को बेहतर बनाने में अडैप्टिव टेक्नोलॉजी (अनुकूलन तकनीक) अहम भूमिका निभाती है। ये टूल हर बच्चे की ज़रूरतों के हिसाब से पढ़ाई-लिखाई का सामान तैयार कर सकते हैं, जिससे बच्चे के लिए सीखना ज़्यादा आसान और दिलचस्प हो जाता है।

किसी भी बच्चे का आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ना विकास का एक अहम पड़ाव है। बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों में आत्मनिर्भरता और स्वायत्तता को बढ़ावा देने में 'अडैप्टिव टेक्नोलॉजी' (अनुकूलन तकनीक) बहुत मददगार होती हैं। ये उपकरण रोज़मर्रा के कामों में मदद कर सकते हैं, बातचीत के कौशल को बेहतर बना सकते हैं और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा दे सकते हैं।

किसी भी तरह की 'अडैप्टिव टेक्नोलॉजी' (सहायक तकनीक) बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों के लिए बहुत फ़ायदेमंद हो सकती है। ये तकनीकें लोगों की रोज़मर्रा की ज़िंदगी, शिक्षा और बातचीत में मदद करने के लिए बनाई गई हैं। कुछ ऐसी अडैप्टिव टेक्नोलॉजी की सूची निम्नांकित है जिनका आम तौर पर इस्तेमाल किया जाता है:

सहायक संचार उपकरण (Assistive Communication Devices)

अनुकूली संचार उपकरण बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों को प्रभावी ढंग से बातचीत करने में मदद करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। इन उपकरणों में पिक्चर बोर्ड, संचार पुस्तिकाएं, स्पीच-जनरेटिंग डिवाइस और सांकेतिक भाषा के उपकरण शामिल हैं।

ऑगमेंटेटिव और अल्टरनेटिव कम्युनिकेशन (AAC) सिस्टम

ऑगमेंटेटिव और अल्टरनेटिव कम्युनिकेशन (AAC) सिस्टम ऐसे टूल और तरीके हैं जो बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों को अपनी बात कहने में मदद करते हैं। इनमें कम्युनिकेशन बोर्ड, स्पीच-जनरेटिंग डिवाइस, कंप्यूटर-आधारित सिस्टम और ऐप्स शामिल हैं।

सही ट्रेनिंग और सपोर्ट मिलने पर, बच्चे अपनी बातचीत की क्षमता को बेहतर बनाने और दूसरों के साथ ज़्यादा असरदार ढंग से बातचीत करने के लिए इन AAC सिस्टम का इस्तेमाल करना सीख सकते हैं।

जो लोग बोल नहीं पाते या जिन्हें बोलने में काफ़ी दिक़्क़त होती है, उनके लिए AAC अक्सर बहुत बड़ा बदलाव लाने वाला साबित होता है। इसमें साधारण कम्युनिकेशन बुक्स और PECS (पिक्चर एक्सचेंज कम्युनिकेशन सिस्टम) कार्ड से लेकर ऐसे

डायनामिक डिस्प्ले टैबलेट तक सब कुछ शामिल है, जो रियल-टाइम में सिंथेसाइज़्ड स्पीच (मशीन से बनी आवाज़) बनाते हैं।

पीईसीएस और वॉइस आउटपुट कम्युनिकेशन एड्स (वीओसीए) दोनों पर किए गए व्यवस्थित शोध से पता चला है कि ये दोनों तरीके विकासात्मक अक्षमताओं वाले छात्रों को अनुरोध करने में सक्षम बनाते हैं, जो एक मूलभूत संचार क्रिया है जिसके बारे में अधिकांश लोगों को कभी सोचना भी नहीं पड़ता। कई अध्ययनों से पता चलता है कि इससे वास्तविक कार्यात्मक लाभ होते हैं, न कि केवल प्रयोगशाला के प्रभाव।

टैबलेट उपकरणों ने एएसी (वैकल्पिक संचार सहायक) की स्थिति में काफी बदलाव ला दिया है। विकासात्मक अक्षमताओं वाले लोगों के लिए शिक्षण कार्यक्रमों में आईपॉड और आईपैड के उपयोग की एक व्यवस्थित समीक्षा, जिसमें 2010 के दशक की शुरुआत तक प्रकाशित अध्ययन शामिल हैं, ने संचार, दैनिक जीवन और शैक्षणिक क्षेत्रों में इनकी प्रभावशीलता पाई।

एक्सेसिबल कंप्यूटर इंटरफ़ेस

एक्सेसिबल कंप्यूटर इंटरफ़ेस ऐसी तकनीकें हैं जिन्हें बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों के लिए कंप्यूटर का इस्तेमाल आसान बनाने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इन इंटरफ़ेस में खास तरह के कीबोर्ड, स्विच, वॉइस रिकग्निशन सॉफ़्टवेयर और स्क्रीन रीडर शामिल हैं।

एक्सेसिबल कंप्यूटर इंटरफ़ेस के अलग-अलग प्रकार बच्चे के कंप्यूटर इस्तेमाल करने के अनुभव को काफ़ी बेहतर बना सकते हैं, जिससे सीखना और बातचीत करना ज़्यादा आसान और मज़ेदार हो जाता है।

12.5 बौद्धिक अक्षमता के क्षेत्र में विभिन्न सहायक तकनीकी

बौद्धिक अक्षमता (ID) वाले लोगों को अपने कामकाज और आत्मनिर्भरता के स्तर को बनाए रखने और बेहतर बनाने के लिए सहायक तकनीक (AT) की ज़रूरत होती है, जिससे उनकी भलाई को बढ़ावा मिलता है। सहायक तकनीक सोचने-समझने की क्षमता में कमी वाले लोगों की एक समावेशी समाज में भाग लेने और घुलने-मिलने की क्षमता को बढ़ाती है। सहायक तकनीक का इस्तेमाल सह-रुग्णता (comorbidities) को बेहतर ढंग से संभालने के लिए भी किया जा सकता है, और आम आबादी की तुलना में ID वाले लोगों में सह-रुग्णता की दर ज़्यादा होती है। बढ़ती उम्र की आबादी के साथ, ID वाले बुज़ुर्गों की संख्या और सहायक तकनीक तक पहुँच की माँग बढ़ने की संभावना है। फिर भी, ID वाले लोग स्वास्थ्य सेवाओं और सहायक तकनीक को पाने में असमानता से बहुत ज़्यादा प्रभावित होते हैं।

सहायक तकनीकी क्यों ज़रूरी है

"असिस्टिव टेक्नोलॉजी" (सहायक तकनीकी) शब्द में कई तरह की सेवाएँ और संसाधन शामिल हो सकते हैं।

इसका महत्व सिर्फ़ रोज़मर्रा की ज़िंदगी को आसान बनाने तक ही सीमित नहीं है; यह दिव्यांग लोगों को अपने आस-पास की दुनिया में आसानी और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने में मदद करती है, जैसे कि:

सशक्तिकरण करने में असिस्टिव टेक्नोलॉजी उन कमियों को दूर करती है जो किसी व्यक्ति की उन्नति में बाधा बन सकती हैं। ऐसा करके, यह दिव्यांग लोगों को नई चुनौतियों का

सामना करने, लक्ष्य तय करने और जो कुछ भी वे करना चाहें, उसे करने में सक्षम महसूस कराती है।

समानता में ये उपकरण यह पक्का करते हैं कि हर व्यक्ति के पास सफल होने के लिए ज़रूरी चीज़ें हों। कोई भी व्यक्ति अपनी सीमाओं या ऐसी ज़रूरतों के कारण पीछे नहीं छूटता जो उनके नियंत्रण से बाहर हों।

समावेशन में सहायक उपकरण दिव्यांग लोगों के लिए अपने समुदाय में शामिल होना आसान बनाते हैं। वे दूसरों से शारीरिक या सामाजिक रूप से अलग-थलग हुए बिना अपनी ज़रूरतों को पूरा कर सकते हैं।

स्वतंत्रता में मदद देने वाले उपकरणों की मदद से, दिव्यांग लोग अपनी ज़रूरतों को ज़्यादा आसानी और नियमित रूप से पूरा कर सकते हैं। ज़्यादा आज़ादी का मतलब अक्सर ज़्यादा आत्मविश्वास भी होता है।

सहायक तकनीकों के प्रकार और वे कैसे काम करती हैं (Types of Assistive Technologies & How They Work)

हालांकि सहायक तकनीक के इतने सारे उदाहरण हैं कि उन्हें एक बार में नहीं गिना जा सकता, लेकिन ज़्यादातर तकनीकें उनके मकसद के आधार पर अलग-अलग कैटेगरी में आती हैं।

चाहे कुछ भी हो, अपनी ज़रूरतों के हिसाब से सही समाधान खोजने के लिए पेशेवरों (जैसे डॉक्टर, शिक्षक आदि) से सलाह लेना ज़रूरी हो सकता है।

आसानी से इस्तेमाल किए जा सकने वाले शैक्षिक संसाधन

कई संसाधन, जिनमें सोचने-समझने की क्षमता (कॉग्निटिव फ़ंक्शन) का इस्तेमाल होता है, विकलांग लोगों के लिए इस्तेमाल करने में मुश्किल या चुनौतीपूर्ण हो सकते हैं।

नीचे दी गई जैसी तकनीकें संसाधनों को व्यक्ति की ज़रूरतों के हिसाब से ढालती हैं ताकि वे बिना किसी की मदद के उनका इस्तेमाल कर सकें।

- यूज़र की गति के अनुसार चलने वाला शैक्षिक सॉफ़्टवेयर

- ऐसा सॉफ़्टवेयर जो टेक्स्ट को ज़ोर से पढ़कर सुनाता है या मुश्किल कॉन्सेप्ट को आसान बनाता है
- बड़े अक्षरों वाली किताबें
- ऑडियोबुक्स
- स्क्रीन को बड़ा करने वाले प्रोग्राम
- क्लोज़्ड कैप्शनिंग और ब्रेल संसाधन

सम्प्रेषण में मदद करने वाले साधन (Communication Aids)

बातचीत में मदद करने वाला साधन कोई भी ऐसा टूल हो सकता है जो लोगों को बेहतर ढंग से बातचीत करने में मदद करे। इनका इस्तेमाल ज़्यादातर उन लोगों के लिए किया जाता है जिन्हें अपनी बात कहने के लिए बोलचाल का इस्तेमाल करने या उसे समझने में मुश्किल होती है।

इसके कुछ सामान्य उदाहरण हैं:

- तस्वीरों वाले बोर्ड और तस्वीरों के ज़रिए दिए जाने वाले निर्देश
- टैबलेट, स्मार्टफ़ोन वगैरह के लिए ऐप्स
- बोलने में मदद करने वाले सॉफ़्टवेयर या डिवाइस
- आँखों की हरकत से चलने वाले स्पीच और विज़ुअल आउटपुट डिवाइस
- ऑगमेंटेटिव और अल्टरनेटिव कम्युनिकेशन डिवाइस (AACs)
- बातचीत के लिए कार्ड

चलने-फिरने में सहायक उपकरण (Mobility Aids)

गतिशीलता में सहायक उपकरण वे सभी चीजें हैं जो चलने, शरीर की स्थिति, संतुलन और समन्वय में मदद कर सकती हैं। ये उपकरण आराम से, सुरक्षित रूप से और प्रभावी ढंग से चलने-फिरने को संभव बनाकर आत्मनिर्भरता और सशक्तिकरण को बढ़ावा देते हैं। गतिशीलता में सहायक उपकरणों के उदाहरणों में शामिल हैं:

- व्हीलचेयर
- छड़ी, चलने वाली छड़ी या वॉकर
- संशोधित वाहन
- चाल प्रशिक्षक/बेल्ट
- अनुकूलित उपकरण, जिनमें संशोधित खाने के बर्तन, लिखने के उपकरण आदि शामिल हैं।
- ऑर्थोपेडिक जूते और उपकरण

संवेदी उपकरण /सेंसरी टूल्स (Sensory Tools)

ऐसी टेक्नोलॉजी जो सेंसरी इनपुट की कमी को पूरा करती है या उसे कंट्रोल करती है, वह डेवलपमेंटल डिसऑर्डर वाले लोगों और परिवारों के बीच लोकप्रिय है। सेंसरी स्टिम्युली (संवेदी उद्दीपन) को कंट्रोल करने की क्षमता आज़ादी देने वाली और ज़रूरी, दोनों हो सकती है।

कुछ लोकप्रिय सेंसरी असिस्टिव डिवाइस (सहायक उपकरण) इस प्रकार हैं:

- नॉइज़-कैंसलिंग हेडफ़ोन
- हियरिंग एड्स
- कोक्लियर इम्प्लांट्स
- ब्लैक-आउट पर्दे
- सेंसरी या स्टिम टॉयज़

स्मार्ट टेक्नोलॉजी और कंप्यूटर टूल्स (Smart Technology and Computer Tools)

बौद्धिक और विकासात्मक अक्षमता वाले लोगों को अक्सर ऐसे टूल्स से फ़ायदा हो सकता है जो उन्हें दूसरे संसाधनों का इस्तेमाल करने में मदद करते हैं।

ये टेक्नोलॉजी कंप्यूटर, फ़ोन या किसी व्यक्ति के आस-पास की चीज़ों के इस्तेमाल को आसान बना सकती हैं। इसका मकसद उन रुकावटों को दूर करना है जो किसी व्यक्ति के

अपने आस-पास के माहौल पर नियंत्रण या उससे बातचीत करने की क्षमता को सीमित करती हैं।

कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं:

- स्मार्टवॉच
- आवाज़ से चलने वाली लाइट, थर्मोस्टेट, फ़ोन डायलर वगैरह
- अडैप्टिव कीबोर्ड
- टचस्क्रीन डिवाइस
- वॉइस रिकग्निशन सॉफ़्टवेयर
- ऑटोमेटेड होम टेक्नोलॉजी
- मेडिकल मॉनिटरिंग और ट्रैकिंग डिवाइस

अभ्यास प्रश्न

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये-

1. सहायक तकनीकी शब्द में कई तरह की .....और ..... शामिल हो सकते हैं।

2. व्हील चेयर ..... में सहायक उपकरण का एक उदहारण है|

3. टचस्क्रीन डिवाइस ..... का एक उदहारण है|

12.6 समावेशी शिक्षा में तकनीकी का प्रभाव

'इन्क्लूजन' (समावेशन) शब्द का अर्थ है 'शामिल करना' या 'मिलाना'। शिक्षा के संदर्भ में, 'समावेशी' का अर्थ है सभी छात्रों को शामिल करना और अलग-अलग तरह की विकलांगताओं के बावजूद उनकी विविधता का सम्मान करना। समावेशी शिक्षा में

विकलांग बच्चे, दूर-दराज़ के इलाकों के छात्र, अलग-अलग वर्गों, जातियों, संस्कृतियों और भाषाओं के छात्र, सड़क पर रहने वाले बच्चे, हाशिए पर रहने वाले छात्र और अनाथ बच्चे शामिल होते हैं। शिक्षा प्रणाली में समावेशन तीन तरह का होता है: पूर्ण समावेशन, आंशिक समावेशन और मुख्यधारा में लाना (मेनस्ट्रीमिंग)। एक समावेशी कक्षा में ऐसे छात्र होने चाहिए जो देखकर सीखते हैं (विज़ुअल लर्नर्स), जिनमें विकलांगता है (जैसे व्हीलचेयर का इस्तेमाल करने वाले) और जिन्हें एग्जीक्यूटिव फंक्शनिंग (काम करने की क्षमता) से जुड़ी समस्याएं हैं।

समावेशी शिक्षा का उद्देश्य यह निश्चित करना है कि सभी छात्रों को शिक्षा मिल सके। इसके लिए उनकी अलग-अलग ज़रूरतों—जिनमें विशेष आवश्यकता वाले लोग भी शामिल हैं—के हिसाब से शिक्षा व्यवस्था में बदलाव किए जाते हैं। यह शिक्षा कई बुनियादी सिद्धांतों पर आधारित है; जैसे कि आधुनिक समाज में किसी व्यक्ति का असली महत्व उसकी क्षमताओं या उपलब्धियों पर निर्भर नहीं करता है; और दिव्यांग या खास शैक्षिक ज़रूरतों वाले लोगों को शिक्षा के माहौल में शामिल किया जाना चाहिए ।

समावेशी अधिगम के वातावरण का उद्देश्य सभी छात्रों को, उनकी व्यक्तिगत भिन्नताओं के बावजूद, शिक्षा की प्रक्रिया में शामिल करना है। इनका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि हर छात्र को समान शैक्षिक अनुभव मिलें, जिसमें विविधता का सम्मान हो और बिना किसी रोक-टोक के भागीदारी को बढ़ावा मिले, साथ ही उनकी अलग-अलग ज़रूरतों और सीखने की पसंद का भी ध्यान रखा जाए

टेक्नोलॉजी छात्रों के कौशल विकास में अहम भूमिका निभाती है, जिससे सीखने, सामाजिक मेलजोल, खेल-कूद और मिल-जुलकर काम करने में आसानी होती है । हालाँकि, छात्र डिजिटल मीडिया का इस्तेमाल पसंद करते हैं, लेकिन वे असल दुनिया की गतिविधियों में भी दिलचस्पी दिखाते हैं, जो दोनों तरह के माहौल के बीच संतुलन बनाने की अहमियत को बताता है। डिजिटल साक्षरता विकसित करने और डिजिटल युग में सबको साथ लेकर चलने और भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए कम उम्र से ही डिजिटल

टेक्नोलॉजी को शामिल करना ज़रूरी है। समावेशी शिक्षा के संदर्भ में, खासकर दिव्यांग छात्रों के लिए, टेक्नोलॉजी और भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है । स्कूलों में पारंपरिक और सहायक टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल बहुत ज़रूरी हो गया है, जिससे दिव्यांगता और सीखने में आने वाली मुश्किलों का असर कम करने में मदद मिलती है और सभी छात्रों की रचनात्मकता, सीखने और खेल-कूद में भागीदारी को बढ़ावा मिलता है।

"ई-इनक्लूज़न" (E-inclusion) पढ़ाने का तरीका इस बात पर ज़ोर देता है कि शिक्षक छात्रों को सीखने के नए तरीके और उनके काम पूरे करने के लिए वैकल्पिक साधन दें, जिसमें शैक्षिक गतिविधियों में टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल किया जाए। दिव्यांग छात्रों को अपनी खूबियों का फ़ायदा उठाने और अपनी कमियों को दूर करने के लिए सहायक टेक्नोलॉजी (assistive technology) की ज़रूरत हो सकती है। समावेशी शिक्षा में सभी दिव्यांग बच्चों की इन ज़रूरतों का ध्यान रखना ज़रूरी है। सहायक टेक्नोलॉजी डिवाइस कोई भी ऐसी चीज़, उपकरण या सिस्टम हो सकता है जिसका इस्तेमाल बच्चे की काम करने की क्षमताओं को बेहतर बनाने के लिए किया जाता है। इसके अलावा, छात्रों को अपने डिवाइस का इस्तेमाल करने के तरीके के बारे में ट्रेनिंग की भी ज़रूरत होती है ।

असिस्टिव टेक्नोलॉजी (सहायक तकनीक) उन पूरी तरह से दिव्यांग शिक्षार्थियों की मदद करती है जिन्हें सीखने के दौरान और अपने बाकी जीवन में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। छात्रों की ज़रूरतों की जटिलता, लागत और तकनीकी एकीकरण के आधार पर, असिस्टिव टेक्नोलॉजी को तीन प्रकारों में बांटा गया है - लो-टेक, मिड-टेक और हाई-टेक।

लो-टेक (Low-tech): ये आसानी से मिल जाते हैं, सस्ते होते हैं और अक्सर ऐसे मैनुअल टूल होते हैं जिनके लिए किसी ट्रेनिंग की ज़रूरत नहीं होती। लो-टेक डिवाइस में पेंसिल ग्रिप, खास तरह का पेपर और मास्क शामिल हैं।

मिड-टेक (Mid-tech): इसे मुख्य रूप से स्कूल में इस्तेमाल के लिए बनाया गया है। मिड-टेक डिवाइस के उदाहरणों में हाथ में पकड़े जाने वाले स्पेलिंग डिक्शनरी और पोर्टेबल वर्ड प्रोसेसर शामिल हैं।

हाई-टेक (High-tech): हाई-टेक का मतलब है ऊंचे लेवल की टेक्नोलॉजी, जिसमें टैबलेट डिवाइस और कंप्यूटर के साथ-साथ सॉफ्टवेयर भी शामिल होते हैं। इसके उदाहरणों में टेक्स्ट-टू-स्पीच सॉफ्टवेयर, वर्ड प्रेडिक्शन और स्पीच-टू-टेक्स्ट शामिल हैं।

समावेशी शिक्षा में सहायक तकनीक की भूमिका: सहायक तकनीक एक सामान्य शब्द है। इसमें दिव्यांग लोगों के लिए सहायक, अनुकूलनशील और पुनर्वास संबंधी उपकरण शामिल हैं। वर्चुअल लर्निंग से जुड़ी कोई भी चीज़ - चाहे वह कम-तकनीक वाली हो या उच्च-तकनीक वाली - जैसे बैसाखी या पेन के लिए खास पकड़, या सुनने की मशीन (हियरिंग एड), चश्मे और डिस्लेक्सिया से पीड़ित लोगों को पढ़ने में मदद करने वाले खास सॉफ्टवेयर वाले कंप्यूटर जैसे उच्च-तकनीक वाले उपकरण - इन सभी का इस्तेमाल विशिष्ट क्षमताओं की कमी को पूरा करने के लिए किया जाता है। सहायक तकनीक, जिसमें ICT भी शामिल है, को 'तकनीकी सहायता' या 'सहायक उपकरण' भी कहा जा सकता है। इस तकनीक में ICT, सार्वभौमिक रूप से डिज़ाइन की गई तकनीकें, शैक्षिक तकनीकें, उभरती और नवीन तकनीकें तथा सुलभ तकनीकें जैसी अन्य सभी तकनीकें भी शामिल हैं। कई तरह की दिव्यांगताओं वाले लोगों को मुख्य रूप से सहायक तकनीकों के इस्तेमाल से लाभ होता है। खास तौर पर डिज़ाइन किया गया यह उपकरण पर्यावरणीय बाधाओं के असर को कम कर सकता है। सहायक तकनीक से डिज़ाइन किए गए किसी भी उपकरण के माध्यम से दिव्यांग बच्चे की कार्यक्षमता और व्यवहार संबंधी क्षमताओं को बेहतर बनाया जा सकता है।

इससे छात्रों की आत्मनिर्भरता बढ़ती है और दूसरों पर उनकी निर्भरता कम होती है। असिस्टिव टेक्नोलॉजी से स्वतंत्र रूप से काम करने की संभावना बढ़ जाती है। नतीजतन, सामान्य शिक्षा के माहौल में शामिल होने की संभावना हर कदम पर बेहतर होती है। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि असिस्टिव टेक्नोलॉजी में आने वाली सभी तकनीकें अलग-अलग तरह की विकलांगता वाले सभी लोगों के लिए उपयुक्त नहीं होती हैं। हर सीखने

वाले की अपनी खूबियां, कमियां, रुचियां, अनुभव और खास क्षमताएं होती हैं। इसलिए, किसी खास तकनीक का असर अलग-अलग सीखने वालों के लिए अलग-अलग होता है। नतीजतन, कोई खास डिवाइस जो एक मकसद के लिए फायदेमंद हो सकती है, वह दूसरे मकसद के लिए भी उपयोगी हो सकती है। सबसे पहले, विकलांग लोगों को अपनी विकलांगता या कमी की पहचान करनी चाहिए और फिर किसी खास मददगार डिवाइस को चुनना या उस पर विचार करना चाहिए। अलग-अलग तरह की असिस्टिव टेक्नोलॉजी लोगों की कमियों या विकलांगता के आधार पर उन्हें सीखने में मदद करती हैं।

12.7 सारांश

प्रस्तुत इकाई में आपने तकनीकी क्या है और बौद्धिक अक्षमता वाले लोगों को सशक्त बनाने के लिए तकनीकी का बेहतर इस्तेमाल किस प्रकार से किया जा सकता है| साथ ही समावेशी शिक्षा के संदर्भों में तकनीकी के प्रभाव विषय में आपने अध्ययन कर लिया होगा|

तकनीकी (टेक्नोलॉजी) का अर्थ है वैज्ञानिक ज्ञान, टूल्स, सिस्टम और तकनीकों का इस्तेमाल करके समस्याओं को हल करना, काम करने की क्षमता को बेहतर बनाना और इंसानी ज़िंदगी को बेहतर बनाना। इसमें पहिए जैसे साधारण टूल्स से लेकर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और क्लाउड कंप्यूटिंग जैसे एडवांस्ड इनोवेशन तक सब कुछ शामिल है।

आसान शब्दों में कहें तो, टेक्नोलॉजी का मतलब है जानकारी का इस्तेमाल करके ज़िंदगी को आसान और बेहतर बनाना। इसमें ऐसे टूल्स, मशीनें और सिस्टम बनाना शामिल है जो हमें काम को ज़्यादा अच्छे से करने और रोज़मर्रा की समस्याओं को हल करने में मदद करते हैं।

शिक्षा के सफ़र में, बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों को अक्सर खास तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। उनके सीखने के अनुभव को बेहतर बनाने में अडैप्टिव टेक्नोलॉजी

(अनुकूलन तकनीक) अहम भूमिका निभाती है। ये टूल हर बच्चे की ज़रूरतों के हिसाब से पढ़ाई-लिखाई का सामान तैयार कर सकते हैं, जिससे बच्चे के लिए सीखना ज़्यादा आसान और दिलचस्प हो जाता है। समावेशी शिक्षा में सभी दिव्यांग बच्चों की इन ज़रूरतों का ध्यान रखना ज़रूरी है। सहायक टेक्नोलॉजी डिवाइस कोई भी ऐसी चीज़, उपकरण या सिस्टम हो सकता है जिसका इस्तेमाल बच्चे की काम करने की क्षमताओं को बेहतर बनाने के लिए किया जाता है। इसके अलावा, छात्रों को अपने डिवाइस का इस्तेमाल करने के तरीके के बारे में ट्रेनिंग की भी ज़रूरत होती है ।

12.8 शब्दावली

Innovation- नवाचार

Comorbidities- सह रुग्णता

Assistive Technology- सहायक तकनीकी

Inclusion- समावेशन

12.9 अभ्यास प्रश्नो के उत्तर

12.5 (1) सेवाएँ, संसाधन, (2) चलने-फिरने, (3) स्मार्ट टेक्नोलॉजी

12.10 संदर्भ ग्रंथ सूची

https://www.britannica.com/technology/technology

https://www.intelligenthq.com/what-is-technology-simple-definition/

https://www.computertechreviews.com/definition/technology/

https://childpsy.org/adaptive-technologies-for-children-with-intellectual-disabilities/

https://neurolaunch.com/intellectual-disability-assistive-technology/

https://www.frontiersin.org/research-topics/6246/intellectual-disability-and-assistive-technology/magazine

https://neuronav.org/self-determination-blog/assistive-technology-for-intellectual-and-developmental-disabilities

https://www.researchgate.net/publication/391495338_Role_of_Assistive_Technology_to_Enhance_Learning_and_Participation_in_Inclusive_Education

12.11 निबंधात्मक प्रश्न

1. तकनीकी के अर्थ से आप क्या समझते हैं? तकनीकी को परिभाषित कीजिये?

2. बौद्धिक अक्षमता के क्षेत्र में विभिन्न सहायक तकनीकी उपागमों की क्या भूमिका है? विस्तार से वर्णन कीजिए?

3. समावेशी शिक्षा में तकनीकी के प्रभाव को विस्तार से बताईये?